National Bestseller

जीवात्मा जगत के नियम

THE LAWS OF THE SPIRIT WORLD

NOW IN HINDI

खोरशेद भावनगरी

"जीवात्मा जगत में कोई धर्म नहीं होता। हम केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं।"

JAICO

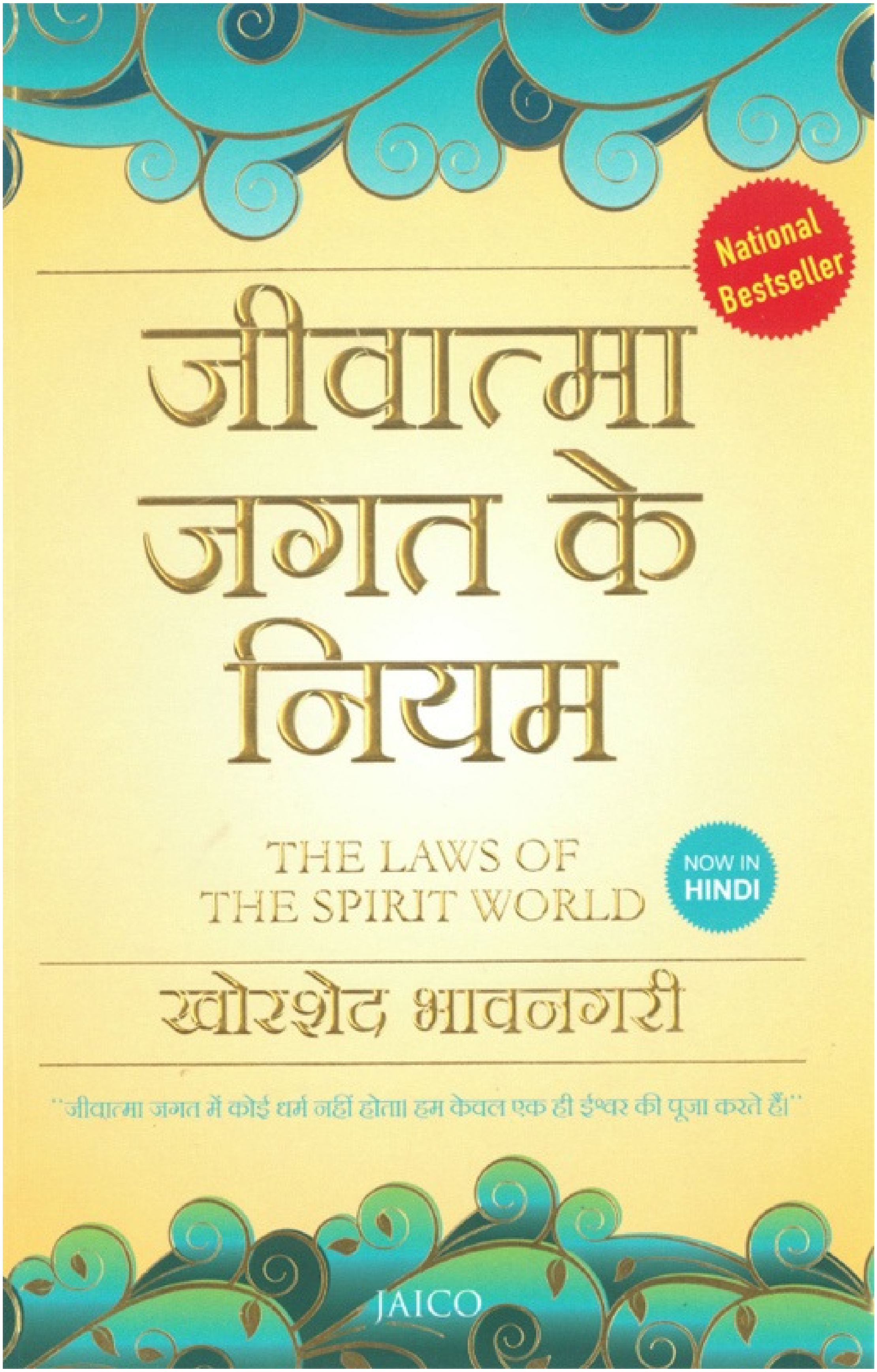
National Bestseller
जीवात्मा जगत के नियम
THE LAWS OF THE SPIRIT WORLD
NOW IN HINDI
खोरशेद भावनगरी
''जीवात्मा जगत में कोई धर्म नहीं होता। हम केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं।''
JAICO

जीवात्मा जगत के नियम

(द लॉज़ ऑफ द स्पिरिट वर्ल्ड)

"जीवात्मा जगत में कोई धर्म नहीं होता। हम केवल एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं"

खोरशेद भावनगरी

जैको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद बैंगलोर भोपाल चेन्नई
दिल्ली हैदराबाद कोलकाता मुम्बई लखनऊ

प्रकाशक
जयको पब्लिशिंग हाउस
ए-2 जश चेंबर्स, 7-ए सर फिरोजशहा महेता रोड
फोर्ट, मुंबई - 400 001
jaicopub@jaicobooks.com
www.jaicobooks.com

© श्यामक दावर

THE LAWS OF THE SPIRIT WORLD
जीवात्मा जगत के नियम
(द लॉज़ ऑफ द स्पिरिट वर्ल्ड)
ISBN 978-81-8495-258-2

पहला जयको संस्करण: 2011
सातवां जयको संस्करण: 2016

बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के इस पुस्तक का कोई भी भाग, किसी भी प्रकार से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, न कॉपी कराई जा सकती है, न रिकार्डिंग और न ही कम्प्यूटर या किसी अन्य माध्यम से स्टोर किया जा सकता है।

श्रीमती खोरशेद भावनगरी २७ सितम्बर, १९२५-१३ अगस्त, २००७

उस एकमात्र
ईश्वर को,
जिनके हम
सदैव ऋणी हैं,
और
मेरे प्यारे बेटों
विस्पी और रतू
को
समर्पित

विस्पी की प्रार्थना

मेरे सबसे प्यारे हे सर्वशक्तिमान ईश्वर,
कृपया हे प्रभु,
देना हमें हर दुष्टता से बचने की ताकत
और दुष्टों से बचाना हमें।
अपने हाथों में लेकर हमें,
कृपया हमारा मार्गदर्शन करना।
हम तुम्हारे हैं प्रभु, सदा रहेंगे तुम्हारे।
प्रभु, रखना हमें अपनी शरण में हमेशा,
ताकि आपका आशीर्वाद हम पर सदैव बना रहे
और केवल आप ही मदद करना हमारी
मार्गदर्शक बनकर हमारा।
हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, धन्यवाद आपका।

विषयसूची

प्रस्तावना
आमुख

भाग १
खोरशेद भावनगरी की दैनन्दिनी के अनुसार किये गए जीवात्मा संपर्क

ईश्वर के सच्चे नियम
आत्मविश्लेषण के जरिए सुधार लाना
न्याय
जीवात्माओं से संपर्क
बूढ़े और झरने की कहानी
ईश्वर के नियमों को समझना
हमारी मृत्यु कैसे हुई और जीवात्मा जगत के लोक
७ लोक अथवा तल
हमारा असली घर
बोझ ढोने वाले पशु
क्या सबकी मदद करना हमारा धर्म है?
दुनिया में किए जाने वाले अपराध विरूद्ध पाप कर्म
मनुष्य को अपने पापों की सजा भोगनी पड़ती है
शैतान का अस्तित्व नहीं होता
मनुष्य जो बोता है वही काटता है
पुनर्जन्म
दुष्टता से संघर्ष
केवल सच्ची इच्छाएं ही परिवर्तन लाती हैं
जीवात्मा जगत में दूसरे लोकों की यात्रा

ईश्वर का न्याय
जीवात्माओं से संपर्क
लोकों का संचालन किस प्रकार होता है
मनुष्य की आत्मिक प्रवृत्ति ही उसका असली स्वरूप होता है
रुपहली डोरी
नींद में हमें आरोग्य और मार्गदर्शन प्राप्त होता है
विभिन्न लोकों में जीवन
निम्नवर्ती लोक भर चुकें हैं
क्यों कुछ लोगों की छोटी उम्र में ही मृत्यु हो जाती है
अच्छी आत्माएं नकारात्मक आत्माओं द्वारा विचलित की जाती हैं
अपने मन को नियंत्रित करें
जीवात्मा जगत में हमारी भावनाएं
जिमी की कहानी:पृथ्वी पर लोग जैसे दिखते हैं वैसे होते नहीं
जिमी की कहानी, जारी: सर्वशक्तिमान ईश्वर को छला नहीं जा सकता
जिमी की कहानी, जारी: ईश्वर हमेशा न्याय करते हैं
जिमी की कहानी, जारी: ईश्वर सबकुछ देख रहे हैं
पृथ्वी एक पाठशाला है
पुनर्जन्म का उद्देश्य
एक भली आत्मा की कहानी जिसे एक दुष्टात्मा ने बहका दिया
अवचेतन मन प्रसुप्त हो सकता है
अपने अवचेतन मन को जगाएं
सतीश की कहानी: आपमें सुधार का साहस होना चाहिए
सूरदास की कहानी: अपने प्रियतम का साथ पाने के लिए एक आत्मा बड़ा जोखिम उठाती है
सूरदास की कहानी..जारी: सूरदास के प्रति नीलू के प्रेम की परीक्षा
सूरदास की कहानी...जारी: श्री उच्च भली आत्मा का पृथ्वी पर आगमन
सूरदास की कहानी...जारी: सूरदास का और भी नीचे गिरना
सूरदास की कहानी...जारी : दुर्बल आत्मा को साहस की प्राप्ति
सूरदास की कहानी...जारी: अहंकार का पतन होता है
सूरदास की कहानी...जारी: अवचेतन मन का फिर से जागृत होना
सूरदास की कहानी...जारी: श्री उच्च भली आत्मा का प्रकट होना
मनुष्य का असली रूप उसका अवचेतन मन है
पूर्वजन्म की बातें क्यों याद नहीं रहतीं
जीवात्मा मार्गदर्शक
जुड़वां आत्माएं
भलाई या दुष्टता का चयन आपकी अपनी इच्छा पर निर्भर है
जीवात्मा संपर्क द्वारा जीवात्माएं पृथ्वी पर अपने प्रियजनों की सहायता कर सकतीं हैं
ज्यादातर आत्माएं निम्नतर लोकों में निवास कर चुकीं हैं

जीवात्माओं से संपर्क के बारे में भ्रांतियां
क्यों कुछ लोग जीवात्माओं के संपर्क से डरते हैं
आप पृथ्वी पर जन्म लेने का निर्णय क्यों लेते हैं
आप मृत्यु से क्यों डरते हैं
आत्महत्या पाप है
उच्च भली आत्माएं
सत्कर्म क्या है?
प्रतिशोध
सुरेश की कहानी
हर आदमी के साथ एक ही जैसा बरताव नहीं किया जा सकता
अपनी समस्याओं का सामना इसी वक्त, बहादुरी और मुस्कान के साथ करें
दूसरों में कभी भी नकारात्मकता को प्रोत्साहित न करें
चीजों को आध्यात्मिक नज़रिए से देखें
राशिफलों से आप प्रभावित न हों
शक्ति को अच्छे और बुरे दोनों कामों में लगाया जा सकता है –प्रक्षेपण और प्राप्ति की शक्तियां
जीवात्माओं से मदद पाने के लिए हमेशा शांत और स्थिर रहना चाहिए
विवाह
अपनी शक्ति का विकास सही तरीके से करें
प्रार्थनाएं हमेशा संक्षिप्त और सच्ची होनी चाहिए
अहंकार मनुष्य को आध्यात्मिक अवनति की ओर ले जाता है
आप अपने पापों का हिसाब चुकाने से बच नहीं सकते

भाग २
प्रश्न और उत्तर

स्वचलित लेखन
जीवात्मा जगत
आत्मा और अवचेतन मन
स्वतंत्र इच्छा
कर्म
पृथ्वी पर आपका जीवनकार्य
आत्महत्या
ईश्वर
प्रार्थना
सकारात्मक सोच
अहंकार और विनम्रता
अक्ष का स्थानांतरण

आत्मविश्लेषण प्रपत्र
खोरशेद रूमी भावनगरी के साथ एक साक्षात्कार
शब्दावली
अनुशंसित अध्ययन
उपसंहार
लेखिका का परिचय

प्रस्तावना

मैं अपनी सारी ज़िदगी सवाल पूछता रहा हूं। मैंने चीजों को हमेशा दूसरों से अलग नज़रिए से देखा है, जो मेरी ज्ञान की प्यास का ही परिणाम था। जब मैं छोटा था, हमेशा तारों की तरफ टकटकी लगाकर देखा करता था और शायद मुझे इस बात का एहसास था कि हम इस ब्रह्मांड में अकेले नहीं हैं, और जीवात्मा जगत में मेरे दोस्त हैं-मेरे रक्षक फ़रिश्ते, जो हमेशा मुझे प्यार करते हैं और मेरी देखभाल करते हैं।

मेरे परिवार ने मुझे सभी धर्मों के प्रति आदर करना सिखाया। एक जन्मजात जिज्ञासा, जो मुझे एक यात्रा पर ले गई। इस दौरान मैं शिर्डी के साईं बाबा * का परम भक्त हो गया, और मैंने उन्हें पृथ्वी पर आध्यात्मिक गुरु की तलाश करने की इस गहरी इच्छा के बारे में बताया। इसके बाद मैं एक महिला के सम्पर्क में आया, जिनका नाम खोरशेद भावनगरी था। मैं पहले दिन उनसे मिला और उनके दो दिवंगत बेटों विस्पी और रतू से बातें की और जब उन्होंने मुझे 'छोटा भाई' कहकर पुकारा तो मुझे एहसास हुआ कि मेरा उनसे कोई बहुत गहरा संबंध है।

मृत्यु बाद की दुनिया को लेकर खोरशेद भावनगरी या कहें कि खोरशेद आंटी (जैसे मैं उन्हें बुलाया करता था) से मुझे जो जानकारियां मिलीं, वह रहस्य से कहीं बढ़कर जानी पहचानी-सी लगीं। कुछ ऐसा, जो मेरी आत्मा को पहले से पता था। मेरे लिए मौत केवल इसी ज़िंदगी का विस्तार है। हम सभी बिल्कुल एक पहिए के चक्कों की तरह हैं, जो एक ही जगह पर केन्द्रित होते हैं– यानी एकमात्र ईश्वर से जुड़े हैं। हम सभी आपस में जुड़े हुए हैं।

सीख से भरे इन २५ वर्षों में, खोरशेद आंटी मेरे लिए सिर्फ आध्यात्म के बारे में बताने वाली शिक्षिका से कहीं बढ़कर थीं। वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त थीं, जिनपर मैं भरोसा कर सकता था। एक ऐसी महिला, जो खुले विचारों वाली, आलोचनाओं से परे, जानकार, हास्य ज्ञान का अच्छा बोध रखने वाली थीं और उनमें एक अलग तेज तथा आरोग्य प्रदान करने की एक अनोखी शक्ति थी।

उन्होंने मुझे अनुभवों का मूल्य समझने में मदद की। उन्होंने मुझे बताया कि मेरे सकारात्मक

अनुभव, ईश्वर से मिले आशीर्वाद थे, जिसके लिए मुझे उनका आभारी होना चाहिए और नकारात्मक अनुभवों से भयभीत होने की जरूरत नहीं, क्योंकि वो मेरे असली शिक्षक हैं। उनके सामान्य शब्द– "ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे" और "सब अच्छा होगा", मेरी सभी परेशानियों को समाप्त करने के लिए काफ़ी थे।

मैं उनके साथ बिल्कुल खुले दिल से बातें करता और सभी चीजों पर चर्चा किया करता था-ईश्वर, मेरे सम्बंधों के बारे में, मेरा काम, धर्म और आध्यात्म के बीच का अंतर, कर्म, पिछले जन्म, पुनर्जन्म का उद्देश्य, पैगम्बर, फ़रिश्ते, आत्मा से संबंधित सारे तथ्य, अलौकिक शक्तियां, क्यों मनुष्य जाति खुद का ही विनाश करती है, मृत्यु, बुढ़ापा, अकेलापन, डर, मणियों की उपचार शक्ति, वर्तमान का महत्व, विचार, सोच और प्रार्थना की शक्ति, क्या ईश्वर दयालु है या दंड देनेवाला है, मैं कैसे इन सबका मतलब समझकर आगे बढ़ सकता था-और इस बात का अनुभव कर सकता था की इस विराट व्यवस्था और प्रणाली में मेरा स्थान तथा काम क्या है।

खोरशेद आंटी ने मेरे सभी सवालों का जवाब दिया, लेकिन आख़िर में उन्होंने मुझे हमेशा कहा है कि इस पृथ्वी पर एक अच्छा इंसान बनकर रहना और हमेशा ईश्वर की बनाई अच्छी राह पर चलना सबसे ज़रूरी है। उन्होंने मुझे एहसास दिलाया कि मेरे कर्मों के लिए मैं अकेला ही जिम्मेदार हूं और जो भी मेरे रास्ते में आए, उसके लिए मैं ईश्वर या किसी और को दोष नहीं दे सकता। उन्होंने मुझे निःस्वार्थ सेवा, मन पर काबू रखना, ईश्वर के ज्ञान को फैलाने और जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है उन्हें राह दिखाने और दिलासा देने का महत्त्व सिखाया। जब मुझे सबसे ज्यादा मार्गदर्शन की जरूरत थी, तब खोरशेद आंटी और उनके पति, रूमी अंकल ने, जिनके भी मैं काफ़ी करीब था, मुझे हमेशा एक प्यार भरा, ज्ञान और हंसी-खुशी भरा माहौल दिया, जिसमे मेरी आत्मा का पालन-पोषण प्रशिक्षण हुआ और अंततः वह मुक्त हुई।

हालांकि वो अब जीवित नहीं हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मेरी देखभाल के लिए मेरे पास जीवात्मा जगत में और दो फ़रिश्ते हैं। मुझे उनके न होने का अफ़सोस नहीं है, क्योंकि मुझे पता है कि वो मेरे साथ हर समय मौजूद हैं। इसके अलावा उन्होंने मेरे लिए इन सभी मार्गदर्शन में से जो सबसे कीमती चीज़ छोड़ी है, वह है-आध्यात्मिक ज्ञान। कृपया इस किताब को खुले मन से पढ़ें और इस तथ्य को समझें कि सच कितना साधारण और शक्तिशाली है। विस्पी हमेशा से इस बात पर जोर देते कि ये ज्ञान एक बच्चा भी आसानी से समझ सकता है और सच हमेशा ही बहुत सरल होता है।

सौभाग्य से, सिर्फ मैं ही वो अकेला इन्सान नहीं, जिसकी ज़िदगी खोरशेद आंटी और रूमी अंकल की वजह से बदली हो। २५ सालों के दौरान हजारों लोग उनके पास आए और आध्यात्मिक ज्ञान, मार्गदर्शन, समाधान और उपचार प्राप्त किये।

आशा है यह पुस्तक आपको यही सारी चीज़ें देगी!

ईश्वर आपका भला करे!

श्यामक दावर

रूमी और खोरशेद भावनगरी अपने भायखला निवास में

आमुख

खोरशेद और रूमी भावनगरी भारत में मुम्बई के भायखला में अपने दोनों बेटों, विस्पी और रतू के साथ रहते थे, जिनका जन्म क्रमशः ९ अगस्त १९५० और १३ दिसंबर १९५१ को हुआ था। बड़े होने पर, मोटरिंग के विभिन्न पहलुओं में दोनों लड़कों की गहरी रुचि जागी। अंततः, विस्पी और रतू ने गाड़ियों की मरम्मत करने वाले एक गराज़ की स्थापना की। उन्होंने कई मोटर रैलियों में भी भाग लिया।

१९८० के निर्णायक साल में, विस्पी और रतू ने एक १६३२ मील लंबी क्रॉस-कंट्री मोटर रैली में भाग लिया। रैली २३ फरवरी को शुरू होनी थी, और विस्पी और रतू ने इससे पहले अपनी गाड़ी को मुम्बई से खोपोली तक जांचने का फैसला किया। यात्रा आरंभ करने से ठीक पहले अपने दोनों बेटों के साथ घटित घटना के बारे में खोरशेदजी कहती हैं, "मुझसे कसकर लिपटकर रतू ने गुड बाय कहा और बाहर निकल गया। वह कुछ ही सीढ़ियां नीचे उतरा होगा (हम दूसरी मंजिल पर रहते थे) कि भागता हुआ दुबारा मेरे पास लौटा। दुबारा मुझसे कसकर लिपटकर उसने मुझे चूमा। मैं समझ नहीं पाई। मुझे अजीब लगा, क्योंकि रतू का ऐसा करना बड़ी असमान्य बात थी। एक मंजिल नीचे उतरने के बाद वह एक बार फिर भागता हुआ वापस आया और मुझसे कसकर लिपटकर मुझे चूमा। तबतक विस्पी भी मुझसे विदा लेने आ चुका था। मैंने उन्हें संभलकर गाड़ी चलाने की हिदायत दी। उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारी प्रतीक्षा मत करना मां, हम खोपोली तक जाकर लौट आएंगे, या फिर रातभर रुककर सुबह वापस लौटेंगे।"

दोनों के गाड़ी में बैठते ही उनकी भेंट उनके पिता से हुई। रूमी ने भी उन्हें संभलकर गाड़ी चलाने की हिदायत दी। रतू ने जवाब दिया, 'फ़िक्र क्यों करते हैं डैडी? हमने इंजन ठीक कराया है, इसलिए किसी भी तरह हम ३० (मील प्रति घंटा) से ऊपर जा ही नहीं सकते। सब ठीक-ठाक रहेगा'। इस तरह, उस रात साढे आठ बजे विस्पी और रतू बड़े उत्साह के साथ निकले। उनके साथ दो मेकैनिक और एक दोस्त थे।

जब अगली सुबह ८ बजे तक वे नहीं लौटे, खोरशेद और रूमी जी को चिंता होने लगी। ८.३० बजे के करीब विस्पी और रतू के गराज से एक मेकैनिक आया और उसने कहा खोपोली के पास

कहीं दुर्घटना हुई है और वे दोनों अस्पताल में भर्ती हैं।

रूमी ने कुछ दोस्तों को इकट्ठा किया और तुरंत दुर्घटना स्थल की ओर खोपोली रवाना हो गए। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा विस्पी और रतू की गाड़ी एक पेड़ से टकराकर चकनाचूर थी। आसपास कोई नही था, परंतु उन्हें बताया गया की दोनों को करीबी अस्पताल में ले जाया गया था। जब रूमी अस्पताल पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि विस्पी और रतू की मृत्यु घटनास्थल पर ही हो चुकी थी, लेकिन गाड़ी में सवार अन्य लोगों को मामूली चोटें आई थीं और वे सुरक्षित थे।

रूमी ने मेकैनिकों से दुर्घटना का कारण पूछा। वे बस इतना बता सके, “एक क्षण के लिए हमारी आंख लग गई और अगले ही क्षण गाड़ी टकरा चुकी थी”। रूमी को सबकुछ अवास्तविक लग रहा था। वह भाग्यशाली थे कि अस्पताल की औपचारिकताएं पूरी करने के लिए उनके साथ उनके दोस्त और पड़ोसी थे। भारी मन लिए जब वह घर लौटे तो वे समझ नहीं पा रहे थे कि उस दु:खद घटना की जानकारी पत्नी को कैसे दें।

भारी दु:ख के साथ जब वे अपने घर की सीढ़ियां चढ़ रहे थे तो ख़ुर्शीद जी ने सवालों की झड़ी लगा दी “इतनी देर क्यों हुई? विस्पी और रतू कहां हैं? आप इस तरह धीरे क्यों चल रहे हैं?” जब खोरशेद जी को सब कुछ पता चला तो वह पूरी तरह टूट गईं। उन्हें लगा अब जीने के लिए कुछ नहीं बचा।

ईश्वर पर से खोरशेदजी का भरोसा उठ गया। उन्होंने कहा, “मैं बहुत धार्मिक हुआ करती थी। अब, पहली बार मेरे मन में यह सवाल उठ रहा है कि ईश्वर हैं भी या नहीं। यदि ईश्वर हैं तो उन्होंने मेरे साथ ऐसा अनर्थ क्यों किया, क्यों मेरे बेटों को मुझसे छीन लिया जब की मैंने किसी को बाल बराबर भी दु:ख नहीं पहुंचाया? मैने ईश्वर, धर्म और अपने जीवन का त्याग करने की ठान ली थी।”

इसके बाद कुछ ऐसा घटित हुआ जो आश्चर्यजनक था। अंत्येष्टि के बाद २९ वें दिन पड़ोस में रहने वाली श्रीमती दस्तूर ने खोरशेद और रूमी जी को एक हैरतअंगेज़ कहानी सुनाई। श्रीमती दस्तूर की भाभी एक संगीत सभा में गई थी। मध्यांतर के दौरान उन्होंने एक महिला को हाल ही में हुई एक दुर्घटना में मारे गए दो लड़कों के बारे में बातें करते सुना जो अपने माता-पिता को एक संदेश भेजना चाहते थे। इसलिए श्रीमती दस्तूर की भाभी ने उस महिला का फ़ोन नम्बर लिया।

अगले दिन खोरशेद और रूमी जी ने इस महिला से संपर्क किया। उन्होंने उन दोनों को अपने घर आमंत्रित किया। उन महिला ने अपना भाई खोया था और वह श्रीमती कपाडिया नामक एक शक्तिशाली माध्यम द्वारा आयोजित आत्मा-आह्वान बैठकों के जरिए अपने भाई से संपर्क किया करती थीं। एक बार ऐसे ही एक अवसर पर, दो युवा लड़कों की चीख ने बैठक को बाधित कर दिया। लड़कों ने कहा कि उनकी मृत्यु एक दुर्घटना में हुई है और उनके माता-पिता दु:ख से टूट

चुके हैं। वे चाहते थे कि उनके माता-पिता को पता चले कि वे जीवात्मा जगत में सुखी हैं और उन्हें इस बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं क्योंकि वे दोनों उन्हें देख सकते हैं।

२२ मार्च, १९८० को खोरशेद और रूमी जी ने नेपियनसी-रोड स्थित श्रीमती कपाडिया के घर पर आयोजित सामूहिक आत्मा-आह्वन बैठक में भाग लिया। माध्यम, श्रीमती कपाडिया बीच में बैठी थी और दूसरे लोग उनके चारों ओर बैठे थे। वह एक-एक व्यक्ति के पास जाकर उन्हें उनके मृत परिजनों से संपर्क करने में मदद कर रही थीं। जब श्रीमती कपाडिया भावनगरी दंपति के पास पहुंचीं तो उनके मुंह से पहले शब्द निकले, "हेलो, मम्मी फॉटसो"। विस्पी अपनी मां को अकसर ऐसा कहा करता था। किसी अजनबी के मुंह से इस तरह निजी जीवन का सूक्ष्म वाकया सुनकर खोरशेद और रूमी जी को इस बात का प्रमाण मिला कि ये उनके बेटे ही थे, और इस घटना से उनका ईश्वर में दुबारा विश्वास जगा।

फिर, विस्पी और रतू ने अपने माता-पिता से कहा कि वे उनसे अकेले में बात करना चाहते हैं। इसलिए श्रीमती कपाडिया ने उन्हें श्रीमती ऋषि नामक एक अन्य माध्यम के बारे में बताया। कुछ दिनों बाद भावनगरी दंपतियों ने श्रीमती ऋषि के जरिए अपने बेटों से बात की। उन्होंने कहा, "मम्मी और पापा हम, विस्पी और रतू हैं। हां, मरने के कुछ ही मिनटों बाद हम जीवात्मा जगत में पहुंच गए। यह ईश्वर की इच्छा है और वह जानते हैं कि हमारे लिए क्या सबसे बेहतर है। ईश्वर अच्छे हैं। आप हमारे लिए न रोएं और न ही हमारी कमी महसूस करें, हम यहां बहुत खुश हैं। हम आपको हर वक्त देख सकते हैं और यहां से आपकी देखभाल कर रहे हैं। हम आपसे तब तक संपर्क नहीं कर सकते जब तक आप पूरी तरह निश्चिंत और खुश न हो। आपको एकाग्र होने की क्षमता विकसित करनी होगी"। उन्होंने खोरशेद जी से यह भी कहा कि उन्हें पृथ्वी पर रहकर अपने आध्यात्मिक जीवनकार्य को पूरा करना है, अर्थात् उन्हें लोगों की मदद करनी है और आध्यात्मिक जागरूकता का प्रसार करना है।

अगले कुछ महीनों में खोरशेद और रूमी जी ने अपने बेटों की मदद से पूर्ण एकाग्र और शांत होने की क्षमता विकसित कर ली, जिससे उनका अपने बेटों के साथ 'स्वयं लेखन' की विधि द्वारा प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करना संभव हुआ। एक पुस्तक पर वह हल्के हाथ से कलम पकड़ कर रखतीं, मन को संपूर्णतया एकाग्र करतीं और धीरे-धीरे उनके मृत बेटों की आत्माएं उनके हाथ का उपयोग कर कागज़ पर धीरे और टेढ़े-मेढ़े तरीके से कलम चलाती थीं। शुरू में केवल लकीरें बनती थीं, लेकिन कई दिनों के प्रयास के बाद शब्द उभरने लगे और वह मुखर होकर प्रश्न पूछतीं जिनके उत्तर कागज़ पर लिखे हुए मिलते थे।

लड़कों की मृत्यु के कुछ ही दिन बाद खोरशेद और रूमी जी के सामने एक दुर्भाग्यपूर्ण पारिवारिक समस्या आ खड़ी हुई और उन्हें कानूनी प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ा। कुछ वकीलों की सलाह के विपरीत, जिनका कहना था कि उन्हें केस नहीं लड़ना चाहिए, खोरशेद और रूमी जी ने उस वकील का चयन किया जिनकी सलाह उनके मृत बेटों ने दूरसंवेदनशक्ती के जरिए दी

थी। आश्चर्यजनक रूप से, विरोधाभासों के विपरीत मुकदमें का फैसला उनके पक्ष में हुआ। यह इस बात का एक और सबूत था कि भावनगरी दंपति को सचमुच मार्गदर्शन और सुरक्षा प्राप्त थे।

कुछ समय बाद, 'स्वयं लेखन' द्वारा और फिर दूरसंवेदनशक्ती द्वारा, विस्पी और रतू ने अपने माता-पिता को जीवात्मा जगत के नियमों के बारे में एक किताब लिखवाने की अपनी इच्छा का संदेश दिया, जिसके लिए उन्होंने उच्चतर आत्माओं की विशेष अनुमति प्राप्त की थी। उनका विचार था, कि पृथ्वी वासियों के लिए ऐसी किताब बहुत उपयोगी होगी जिसमें वे ईश्वर और जीवात्मा जगत के नियमों के बारे में जानेंगे, और अगर वे उन नियमों का पालन करेंगे तो उनकी आध्यात्मिक उन्नति होगी। यह विस्पी और रतू की इच्छा थी कि किताब लिखवाकर, उसे प्रकाशित कर, उसका बड़े पैमाने पर वितरण किया जाए। बहरहाल, विस्पी और रतू का मत स्पष्ट था कि उनकी शिक्षा और मान्यताओं से सहमत होने के लिए किसी को बाध्य न किया जाए।

दोस्तों, और यहां तक कि अजनबियों ने जब खोरशेद जी के अपने बेटों के साथ संपर्क के बारे में सुना, तो वे बड़ी संख्या में भावनगरी दंपति के घर पर जुटने लगे। खोरशेद और रूमी जी धीरे-धीरे यह महसूस करने लगे कि निःस्वार्थ भावना रखकर दूसरों के दुःख को कम करने से उनके अपने दुःख बहुत हद तक कम होने लगे थे।

बेटों की मृत्यु के बाद उनके दुःखी मन को इस तरह राहत मिली। उन्होंने युवा और वृद्ध दोनों का मार्गदर्शन किया और उन्हें सांत्वना दी। अपनी कहानी सुनाकर, उन्होंने अपनी तरह परिजनों के वियोग में तड़पते लोगों को उदासी और निराश होकर टूटने से बचाया। नशे की लत से लेकर शारीरिक यंत्रणा तक की समस्याओं के लिए उन्होंने लोगों को परामर्श दिया, लेकिन अंततः उन्होंने उन लोगों की आत्माओं को राहत पहुंचाई जिनमें आध्यात्मिक ज्ञान की असली प्यास थी और जो सही मायने में आत्मिक रूप से उन्नति चाहते थे। लोग उनके सामने आध्यात्मिक और व्यक्तिगत दोनों तरह के सवाल रखते थे। ऐसे बहुत सारे सवाल इस किताब के भाग २ में दिए गए हैं।

क्योंकि जीवात्मा जगत में कोई विशिष्ट धर्म नहीं होता, इसलिए किसी धर्म विशेष से संबंधित सवालों को इनमें शामिल नहीं किया गया है।

रूमी और खोरशेद भावनगरी क्रमशः १९९६ और २००७ में इस दुनिया से विदा हुए और जीवात्मा जगत में अपने बेटों से जा मिले।

द्रष्टव्य

खोरशेद आंटी विस्पी के साथ दिन में
कम से कम दो बार,
कभी-कभी तीन या चार बार,
केवल सूर्योदय और सूर्यास्त के
बीच संपर्क करती थीं और वे ऐसा किसी विषय या
योजना को तय किये बिना करती थीं।
उन्हें विभिन्न विषयों के बारे में संदेश
प्राप्त होते थे, जिनके वार्तालाप के स्वर और भाषा
को हू-ब-हू उसी तरह सुरक्षित रखा
गया है जैसे वे प्राप्त हुए थे।
यहां दिए गए संदेश वे संदेश
हैं जो उन्हें अंग्रेजी में प्राप्त हुए थे,
जबकि उनकी मातृभाषा गुजराती थी।

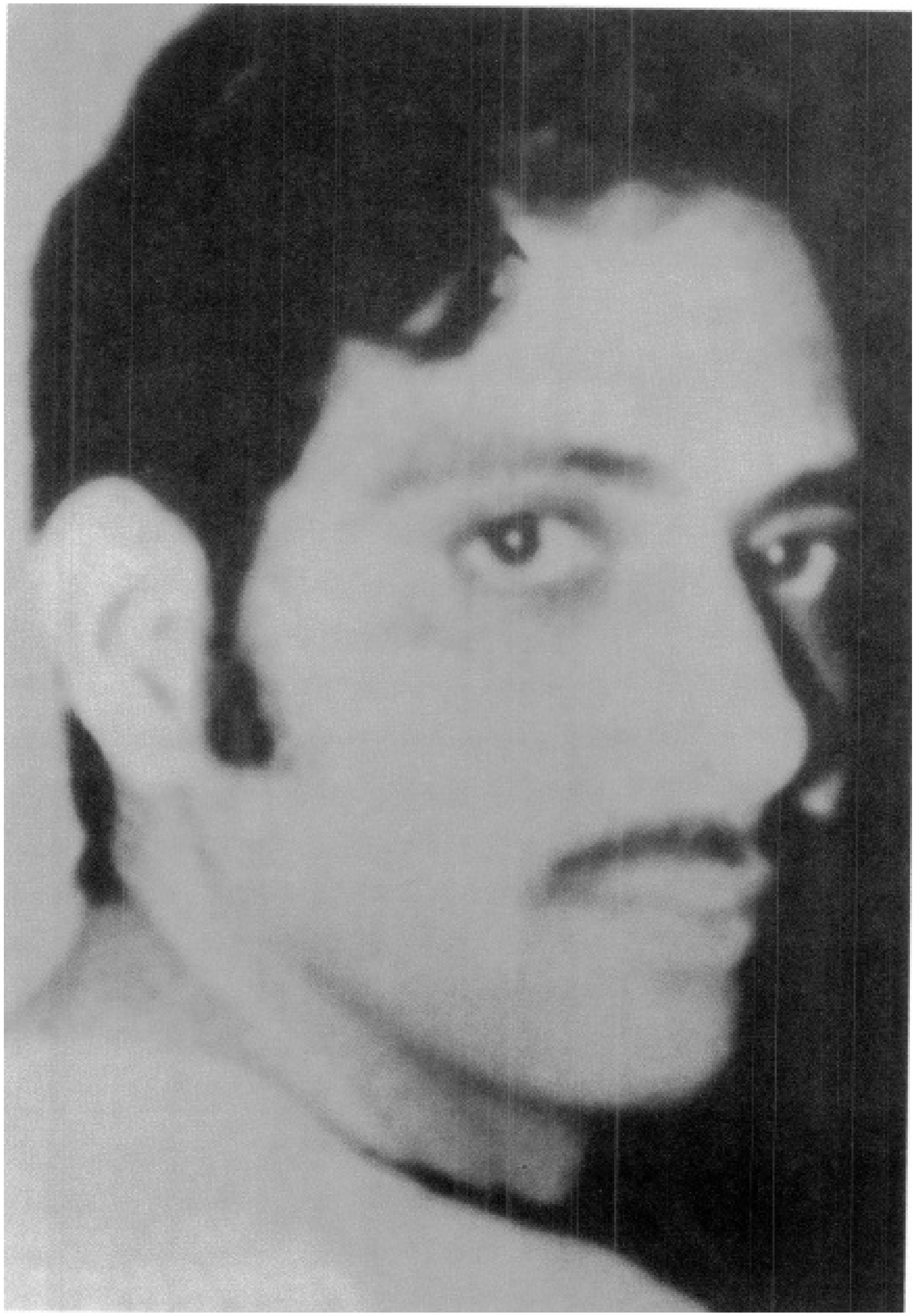

रतू भावनगरी
१३ दिसम्बर, १९५१ – २२ फरवरी, १९८०

विस्पी भावनगरी
९ अगस्त, १९५० – २२ फरवरी, १९८०

भाग १

खोरशेद भावनगरी
की दैनन्दिनी
के अनुसार
किये गए
जीवात्मा संपर्क

१४-०४-१९८१
ईश्वर के सच्चे नियम

मेरे प्यारे मम्मी-पापा, हम हैं आपके विस्पी और रतू। हम जीवात्मा जगत से पृथ्वी-वासियों को आपके जरिए यह बताना चाहते हैं कि सच्ची राह पर-उस राह पर जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की राह है-उस पर कैसे चलना चाहिए। तो, मेरी प्यारी मां, आप हमारे लिए यह किताब लिखिये और आपनी दुनिया के लोगों को जीवात्मा जगत के बारे में बताना। उन्हें ईश्वर के नियमों और कानूनों के बारे में बताना जिन्हें पृथ्वी-वासी गलत समझते हैं। उन्हें बताना जीवात्मा जगत के विभिन्न लोको [१] के बारे में।

पुरोहितों की कही हर बात का भरोसा कर लेना बिल्कुल गलत है। और इसी तरह, हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर के सच्चे न्याय के बारे में बड़े-बड़े दार्शनिक जो उपदेश देते हैं, उनपर भी भरोसा कर लेना गलत हैं। वे सब कुछ नहीं जानते। वे या आप, सच तभी जान पाओगे जब आप अपनी पृथ्वी की दुनिया छोड़कर जीवात्मा जगत में आओगे। हां, असली न्याय क्या है, इसे बताने के लिए कुछ पन्ने या कुछ अध्याय काफ़ी नहीं और न ही इसे कुछ किताबों से जाना जा सकता है। कई युग लगेंगे आपको यह जानने में कि हमारे ईश्वर हमसे सचमुच क्या चाहते हैं। इसलिए आपको बताने की हमारी यह कोशिश, हो सकता है पर्याप्त न हो।

लेकिन, हम जीवात्मा जगत से अपने प्रियजनों और सभी पृथ्वी-वासियों को यह बताना चाहते हैं कि सच क्या है। हम आप सबको यह बताना चाहते हैं कि आपसे बहुत सारी गलतियाँ हो रही हैं, जिनका कारण बेमतलब की कुछ धारणाएं हैं, अथवा उन लोगों की कही बातें हैं जिन्हें आप पवित्र और ज्ञानी (दार्शनिक) मान लेते हैं। कभी-कभी तो वे जो कहते हैं, वह हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर के सच्चे नियमों और कानूनों के बिल्कुल विरूद्ध होते हैं।

इस समय जब पृथ्वी पर दुष्ट और बुरी आत्माओं का बोलबाला है और अच्छे लोग तकलीफ़ों से घिरे हैं, हमें लगता है कि यह किताब आपको बताएगी कि क्यों-हां, क्यों-बुरे लोग सफल होते हैं और अच्छे लोग कष्ट झेलते हैं। भले लोग हमारे सबसे प्रिय सर्वशक्तिमान ईश्वर को इस बात का

दोष देते हैं कि वह उनके साथ न्याय नहीं करते। इसलिए, हमारे प्यारे पाठकों, आगे पढ़ीये, इसमें आपको बहुत सारे सवालों के जवाब मिल जाएंगे।

१५-०४-१९८१
आत्मविश्लेषण के जरिए सुधार लाना

यदि बुरी आत्माएं चाहें, तो सर्वशक्तिमान ईश्वर उनकी मदद कर सकते हैं। बुरी आत्माओं में सहज प्रवृत्ति होनी चाहिए और उन्हें अपने आप में बदलाव लाने के लिए ईश्वर से मदद के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। निश्चित रूप से सर्वशक्तिमान ईश्वर उनकी मदद करेंगे। अच्छा या बुरा होना पूरी तरह प्रत्येक आत्मा के अपने हाथ में होता है। ऐसी बुरी आत्माएं जो अपने आप को बदलना चाहती हैं, वे क्षणभर में भली आत्माओं में बदल सकती हैं। पृथ्वी पर हमने आपको कहते सुना है, "अपनी भूल स्वीकार कर लो, ईश्वर तुम्हें माफ़ कर देंगे।" यह सही है, पर अपने पापों को आप स्वयं स्वीकार करें, न कि किसी पुरोहित के सामने। किसी पुरोहित में आपको क्षमा करने की शक्ति नहीं होती। आपको क्षमा करने वाला पुरोहित कौन होता है? वह आपसे बड़ा पापी हो सकता है, इसलिए किसी पुरोहित के सामने अपनी भूल स्वीकार न करें, बल्कि यह अपने आप से करें। अपने आप से कहें कि आप बुरे हैं, सर्वशक्तिमान ईश्वर से कहें कि वे आपकी मदद करें, और आपको भरोसा रखना चाहिए कि वे ऐसा करेंगे। आपका प्रयास संपूर्ण रुप से सच्चा होना चाहिए। मैं फिर दुहराता हूं 'संपूर्ण रूप से सच्चा प्रयास'। यदि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर से आधे- अधूरे मन से कहते हैं, तो इससे कुछ नहीं होने वाला। पर अपने परिवर्तन को लेकर यदि आप पूर्ण निष्कपट और सकारात्मक हैं, तो यकीन मानिए, आपमें परिवर्तन लाने में ईश्वर तुरंत आपकी सहायता करेंगे।

अब मान लीजिए, कि एक व्यक्ति सोचता है कि वह एक भला व्यक्ति है, पर वास्तव में वह ऐसा है नहीं। ऐसी आत्माओं का क्या होगा? कई लोग सोचते हैं कि वे जो कर रहे हैं, ईश्वर के बनाए नियमों के अनुरूप कर रहे हैं। वे जरा भी यह नहीं सोचते कि वे कितने बड़े पापी हैं। वे कहेंगे, "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं। मैं धार्मिक किताबें पढ़ता हूं। मैं हर दिन प्रार्थना करता हूं। मैं प्रतिदिन या हर हफ्ते मंदिर या चर्च जाया करता हूं। मैं बहुत सारे दान-पुण्य के कार्य करता हूं। मैं गरीबों और ज़रूरतमंदों को भोजन, कपड़े बांटता हूं, उन्हें रोजगार देता हूं। लोगों को और क्या चाहिए? मैं तो स्वर्ग ही जाऊंगा।" दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि ये बेचारी आत्माएं भले ही यह सोचें कि स्वर्ग का दरवाजा उनके लिए पूरी तरह से खुला है, पर वे कभी उसकी निचली सीढ़ी तक भी नहीं पहुंच पाएंगे। दरअसल, पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा के लिए यह समझना बहुत मुश्किल है, पर यह सच है, कि वे कभी स्वर्ग की सबसे निचली सीढ़ी को भी देख नहीं पाएंगी। इसलिए खुले मन से सुनिए। हर दिन वे पूजा स्थलों पर क्यों जाते हैं? दरअसल, उनमें से कुछ अपने आस-पास के लोगों को यह दिखाने वहां जाते हैं कि वे इतने धर्मपरायण हैं कि ईश्वर के बारे में सोचते रहते हैं।

अपने आप से पूछिए, "क्या ईश्वर के साथ कभी छल किया जा सकता है?" **आप अपने आस-पास के लोगों को मूर्ख बना सकते हैं, पर आप कभी सर्वशक्तिमान ईश्वर को धोखा नहीं दे**

सकते। आप खुद को ईश्वर से डरने वाला व्यक्ति कहते हैं? पर वास्तव में यदि ऐसा होता तो क्या कभी आप ईश्वर को छलने का प्रयास करते?

कुछ लोग पूजा स्थलों पर हर दिन या हर हफ्ते इसलिए जाते हैं ताकि ईश्वर से वे अधिक धन, अधिक खुशियां और अधिक से अधिक सफलता मांग सकें। आखिर क्या है यह? दरअसल, आप वहां अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए जाते हैं-ईश्वर के लिए नहीं। आप वहां बस अपने आप के लिए जाते हैं। तो क्या ऐसे स्वार्थपूर्ण उद्देश्य के जरिए आप स्वर्ग पा सकते हैं?

चलिए मानते हैं कि आप खूब सारे दान धर्म के कार्य करते हैं। सबसे पहले अपने आप से पूछें कि आप ऐसा क्यों करते हैं? दान धर्म के कार्यों के पीछे आपका क्या उद्देश्य है? **आपका उद्देश्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।** यदि आपका उद्देश्य पूरी तरह से निःस्वार्थ है-उदाहरण के लिए यदि आपका उद्देश्य केवल औरों की मदद करना हो और यह अपने आप आता हो– तो यकीन जानिए ईश्वर खुश होते हैं और वे जानते हैं कि आप जो देते हैं, वह उन्हें खुश करने के लिए नहीं होता।

पर, कल्पना कीजिए, आपका उद्देश्य यदि ईश्वर को खुश करना है, और आप कहते हैं, “यदि मैं यह किसी गरीब को दूं, तो ईश्वर मुझे स्वर्ग भेजेंगे”, तो यकीनन ईश्वर को आपके उद्देश्य का पता चल जाता है और आपको कभी स्वर्ग नहीं मिल सकता। **आप एक-दूसरे को मूर्ख बना सकते हैं, अपने आप को मूर्ख बना सकते हैं, पर आप सर्वशक्तिमान ईश्वर को कभी मूर्ख नहीं बना पाएंगे।** इसलिए उस दान धर्म के पीछे आपका उद्देश्य बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है। आप जो भी करते हैं उसमें ईमानदार बनिये। यदि आप ईमानदार हैं, तो एक जरा-सी चीज़ भी आपको स्वर्ग पहुंचा सकती है। पर यदि आप स्वार्थी हैं, और सर्वशक्तिमान ईश्वर को धोखा देने का प्रयास करते हैं, तो बड़े से बड़ा दान भी आपको नरक में ही ले जाएगा। तो, यह पूरी तरह से हमारे हाथों में है। हैं ना?

१६-०४-१९८१
न्याय

हम ईश्वर के बहुत शुक्रगुज़ार हैं क्योंकि हमारे सही और गलत कार्यों को पहचानने के लिए उन्हें किसी सबूत की ज़रूरत नहीं होती, और उनका न्याय ही अंतिम होता है। आपकी दुनिया में होने वाले अधिकतर न्यायों में, यहां तक कि बड़े से बड़े न्यायाधीशों के निर्णय भी हमेशा सही नहीं हो सकते, पर ईश्वर का फ़ैसला सदा सही होता है, क्योंकि वे आपको अंदर से जानते हैं। यदि आप अपने लोगों से कुछ छिपाना चाहते हैं, तो वह छिप सकता है, पर ईश्वर से आप कुछ भी नहीं छिपा सकते और उनका फ़ैसला हमेशा सही होता है। यदि आपको इसमें भरोसा है, तो आप कभी गलत नहीं जाएंगे। आप इस बात का भरोसा रख सकते हैं कि यह पूरी तरह से सत्य है और आप जो भी करते या कहते हैं, हमेशा उसका रिकॉर्ड रखा जाता है। इसलिए एक नीतिपूर्ण, सच्चा तथा करुणामय जीवन जिएं।

अपने आप को सुधारने का प्रयास करें। हो सकता है आप सोचें कि इस पृथ्वी पर एक भी व्यक्ति संपूर्ण नहीं तो फिर आप कैसे हो सकते हैं? मेरे प्यारे पाठकों, यहां तक इस उच्चतर तल या लोक में रहने वाले हम भी पूर्ण नहीं, तो फिर आप कैसे हो सकते हैं?

हम अच्छाई को पाकर और बुराई को दूर कर, अपने आप को संपूर्ण बनाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं। प्रत्येक आत्मा का लक्ष्य आत्म-उन्नति होना चाहिए, ताकि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर-यानि उस 'संपूर्ण हस्ती' तक पहुंच सकें, और ऐसा होने में बहुत लंबा समय लग सकता है। इसलिए आप अपनी ज़िंदगी में अच्छा बनने, अच्छा बोलने का पूरा प्रयास करते रहें और इसका भी प्रयास जारी रखें कि लोगों को कभी हानि न पहुंचे। कभी निर्दयी मत बनिए और हमेशा प्रयत्न करें कि आप ढोंगी न बनें। यदि आप चाहें तो ऐसा कर सकते हैं, पर आपमें वास्तविक इच्छा होनी चाहिए।

चूंकि आप पृथ्वी पर हैं, तो आप खुदको सुधारने के लिए और अधिक प्रयास कर सकते हैं। एक बार जब आप जीवात्मा जगत में आ जाते हैं, तो यह सुधार बहुत धीरे-धीरे होगा। इसलिए यदि सचमुच आप अपने आप को सुधारना चाहते हैं तो इसे अभी करिए। हां, अभी करना सबसे जरूरी है।

जीवात्माओं से संपर्क

पृथ्वी पर रहने वाले आप और जीवात्मा लोक में रहने वाले हम सभी, अपने आप में सुधार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। पर हमारे बीच एक बड़ा अंतर है। आप, सभी सच्चाइयों को नहीं जानते और हमें उनमें से अधिकतर के बारे में पता है। आपको यह पता नहीं चल सकता कि आपके लोग कितने सही या कितने गलत हैं, पर कोई आत्मा कितनी सही या गलत है, इसका हमें ठीक-ठीक पता होता है।

आप एक-दूसरे के मन को नहीं पढ़ सकते। पर हम मन को एक सीमा तक पढ़ सकते हैं। आप हमें नहीं देख सकते, पर हम आपको देख सकते हैं, आपको सुन सकते हैं और यहां तक कि आपके मन और विचारों को पढ़ सकते हैं। इसलिए आप जितना अपने आप को जानते हैं, उससे कहीं बेहतर ढंग से हम आपको जान सकते हैं।

अगर आपको ये सब फ़िजूल लग रहा हो, तो आइए हम आपको एक उदाहरण देकर इसे समझाते हैं। हमारी प्यारी मां, जो कि हमारे लिए लिख रही हैं, उन्हें कभी यह पता नहीं चल पाया कि उनके आस-पास के कुछ लोग किस तरह के हैं। एक व्यक्ति के बारे में उनका बुरा ख्याल था, जो वास्तव में एक अच्छी आत्मा थी। और जिन व्यक्तियों के बारे में उनका विचार अच्छा था, हमने देखा की वे सबसे बड़े ढोंगी थे-बड़े ईर्ष्यालु और खतरनाक थे। इसलिए हमने उन्हें सलाह दी। पहले तो उन्हें हमारी बातों पर विश्वास नहीं हुआ, पर जब उन्होंने और पापा ने खोज-बीन शुरु की, तो वे हैरान रह गए कि हमने जो कहा था, वह सही था। तब उन्हें पता चला कि यदि हमने उन्हें न बताया होता, तो शायद वे नहीं जान पाते कि उनके आस-पास की कुछ आत्माएं किस हद तक बुरी थीं।

इसलिए, मेरे प्रिय पाठकों, यदि आप अपने उन प्रियजनों के साथ संपर्क कर सकें, जो जीवात्मा जगत में रहते हैं और उनका मार्गदर्शन पा सकें, तो निश्चित रूप से आप जान जाएंगे कि कौन व्यक्ति अच्छा है और कौन बुरा। इस तरह आप यह जान सकते हैं कि किस पर भरोसा करना है और किस पर नहीं।

आप सभी के मन में कई चीज़ों के प्रति एक निश्चित राय होती है, जो आपको गलत राह पर पहुंचा देती है। यही कारण है कि हम इस बातचीत के द्वारा आपको ये बाते समझा रहे हैं। दुष्ट आत्माओं को सुधारना काफी कठिन होता है, पर यदि वे आप पर विश्वास रखते हैं, तो कई अवसर ऐसे मिलेंगे जिनके द्वारा उन्हें सुधारा जा सकता है। जीवात्माओं के संपर्क से कई सारी कमाल की चीजें हुई हैं। यहां तक कि पृथ्वी की आत्माओं को उनके दिवंगत प्रियजनों के संदेश पहुंचाकर उन्हें कष्ट से बाहर निकाल सकते हैं। हर कोई जीवात्मा जगत से संदेश नहीं प्राप्त कर सकता, पर हमें विश्वास है कि जो संपर्क कर सकते हैं, वे दूसरों की मदद करना चाहते हैं। मुझे

यह कहने में दुःख हो रहा है कि पृथ्वी पर लोग कभी-कभी बहुत मूर्ख होते हैं। यहां तक कि उनके पास आई खुशहाली उन्हें ज़हर समान लगती है। वे जीवात्माओं की बातचीत, आत्माओं और मृत्यु बाद के जीवन में विश्वास न कर मूर्खता करते हैं। हमें ऐसी आत्माओं पर दुःख होता है, क्योंकि जब वे जीवात्मा जगत में आते हैं, तो स्तब्ध रह जाते हैं।

१८-०४-१९८१
बूढ़े और झरने की कहानी

अब हम आपको एक बहुत अच्छी कहानी सुनाना चाहते हैं। जो जीवात्मा जगत में हमारे साथ कुछ समय पहले घटी थी। हमने अपने पसंदीदा झरने के किनारे एक बूढ़े व्यक्ति को बैठा देखा। बूढ़े व्यक्ति यहां न के बराबर दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि आत्मा ज्योंही बुद्धिमान होती हैं, वे यहां युवा होती जाती हैं; इसलिए हम उस व्यक्ति को देखकर काफी हैरान हुए।
हमने उनसे पूछा, “क्या आप नए आए हैं, सर?”
उन्होंने कहा, “हां, नौजवान, तुम्हें यह कैसे पता?”
हमने कहा, “यह हमारा सहज बोध है!”
उन्होंने कहा, “तुम काफी बुद्धिमान लगते हो नौजवानों, इसलिए मुझे पक्का भरोसा है कि तुम मुझे अपने घर का रास्ता बता दोगे।”

हमने पूछा, “अच्छा, आपका घर कहां है?” और उन्होंने हमें पृथ्वी पर स्थित अपने घर का पता बताया।

हमने हंसते हुए उनसे कहा, “सर, इस समय आप धरती पर नहीं, बल्कि जीवात्मा जगत में हैं।” हमने उन्हें बताया कि जीवात्मा जगत में अभी वे नए हैं।

उन्होंने हमें इस तरह देखा मानो हम किसी पागलखाने से भाग कर आए हों, और बहुत धीरे से कहा, “मुझे लगा तुम बुद्धिमान हो, क्योंकि मैं किसी तरह इस छुट्टी मनाने वाली जगह पर आ गया हूं। हां, मैं इस जगह के लिए नया हूं।”

“छुट्टी?”, हमने कहा। “सर, आप छुट्टी से अपने घर वापस आए हैं।”

उन्होंने जवाब दिया, “हे भगवान, वाकई ये लोग पागल हैं, यहां से निकल लेना ही ठीक रहेगा।” और वह वहां से भाग निकले। हमें उनके बारे में काफि दु:ख हुआ, इसलिए हमने अपनी एक उच्चतर आत्मा को बुलाया और फिर हम उस व्यक्ति के पास पहुंचे।

हमें देखते ही उस व्यक्ति का चेहरा पीला पड़ गया, और उन्होंने कहा “हे भगवान अब तो ये तीन पागल मेरे पीछे पड़ गए। अब मैं क्या करूं?” इसके बाद उन्होंने किसी का नाम लेकर बेतहाशा चिल्लाना शुरु कर दिया। बाद में हमें पता चला कि यह, पृथ्वी पर उनके बेटे का नाम था। हमने उन्हें लाख समझाने की कोशिश की, के जीवात्मा जगत इतना सुंदर हो सकता है कि मरने के बाद भी आप एक खूबसूरत सी जगह में रह सकते हैं, पर वे मानने को तैयार नहीं हुए।

हमें कुछ और उच्चतर आत्माओं को बुलाना पड़ा, जो परिस्थितियों को अच्छी तरह से समझा सकते थे। हम सभी इकट्ठा हुए और उन्हें हमने एक-एक चीज़ बताई, उनके आस-पास की चीज़ों को दिखाया। थोड़े समय के बाद उन्हें हम पर भरोसा हो गया, और उन्हें इस बात पर यकीन हो गया कि हम सच कह रहे थे। तब वे हमसे काफी घुल-मिल गए, और कहा, “पृथ्वी पर हमेशा मुझे यह चिंता सताती थी कि मरने के बाद हमें एक अनंत शांति में सोना पड़ेगा, जो बंजर बादलों पर होगा जहां केवल देवदूत ही उड़ सकते हैं।”

हमें उनकी बातों पर हंसी आ गई। हमने उनसे कहा कि हमने कभी यहां किसी देवदूत को उड़ते नहीं देखा! इसपर उन्होंने कहा, “ओह, इसका मतलब ये है कि हम स्वर्ग में नहीं है? तो फिर स्वर्ग कितना सुंदर होगा!”

हम फिर हंसे और उन्हें फिर समझाया, “यह उच्च लोक है और यही स्वर्ग है। पर निश्चित रूप से उच्चतम लोक इतना सुंदर है, जो हमारी कल्पनाओं से परे है।” वे अब कुछ कम बूढ़े दिखने लगे थे, क्योंकि उनका अवचेतन मन [२] जागृत होने लगा था, और उसका द्वार खुलने लगा था। वे अब कुछ ज्ञानी होने लगे थे, पर उन्हें अब भी बहुत कुछ सीखना था। वे काफी हैरान थे कि “अनंत शांति” वाला स्थान इतना सुंदर हो सकता है और विराम में रहने की बजाए यहां हम सभी जीते-जागते, कितने उत्साह से जी रहे हैं।

इस कहानी से आप यह जान सकते हैं कि पृथ्वी पर लोग जीवात्मा जगत के प्रति कितने अज्ञानी और भयभीत हैं। और जब उन्हें सच्चाई पता चलती है, तो अचंभित रह जाते हैं। इसलिए प्रिय पृथ्वी लोक वासियो, जीवात्माओं की बातचीत के जरिए अपने-आप को जीवात्मा जगत के लिए तैयार कर लीजिए, और अपने जीवन को ईश्वरीय भले मार्ग पर ले जाने का निर्णय कर लीजिए, ताकि आप उच्चतर लोकों में पहुंच सकें।

१९-०४-१९८१
ईश्वर के नियमों को समझना

यहां निवास करने वाली हमारी साथी जीवात्माएं चाहेंगी कि हम पृथ्वी वासियों को ईश्वर के सच्चे नियम बताएं, क्योंकि वे इन नियमों से अंजान हैं। हम यह ज्ञान उन्हे देना चाहते हैं, और हमें पूरा विश्वास है कि वे हम पर भरोसा रखेंगे और इस ज्ञान का उपयोग मानवता की भलाई के लिए करेंगे। ऐसी कई झूठी धारणाएं हैं, जो आपको सर्वशक्तिमान ईश्वर के रास्ते से पूरी तरह से अलग कर देती हैं।

ईश्वर के कई नियमों को गलत तरीके से समझा गया है। आइए हम एक खेल खेलने की कोशिश करते हैं-बचपन में हम यह खेल पार्टियों में खेला करते थे। एक वृत्त में बैठ जाइए, और एक व्यक्ति अपने साथ बैठे दूसरे व्यक्ति के कान में कोई वाक्य फुसफुसाएगा। वह व्यक्ति उसे अपने बाजू वाले व्यक्ति के कान में फुसफुसाएगा। यह क्रम तबतक जारी रहेगा, जबतक वह वाक्य पहले व्यक्ति के पास तक न पहुंच जाए। जब यह वाक्य पहले व्यक्ति के पास पहुंचता है तो यह पूरी तरह से बदल जाता है। इसी प्रकार ईश्वर के नियम उस स्थान से चले हैं, जहां वे पूर्ण रूप से सही थे, पर सदियों से चलते रहने के क्रम में उनमें बदलाव आ गया। पूरी तरह से नहीं पर आंशिक रूप से तो है ही।

२०-०४-१९८१
हमारी मृत्यु कैसे हुई और जीवात्मा जगत के लोक

अब हम आपको जीवात्मा जगत के बारे में और जानकारी देंगे ताकि आप समझ सकें कि हम यहां कैसे जीते हैं और यदि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के रास्ते पर चलेंगे और एक बेहतर जीवन जीएंगे तो आपको कितनी खूबसूरत दुनिया मिलेगी। हम आपको यह भी बताना चाहेंगे कि निम्न लोक क्या हैं, बुरी आत्माओं का अंजाम क्या होगा और पुण्यात्माएं क्या आशा कर सकती हैं।

आइए हम हमारी मृत्यु से आरंभ करें ताकि आपको पता चले कि क्या हुआ था, हम कैसे जीवात्मा जगत में पहुंचे और जीवात्मा जगत कहां होती है।

हम गाड़ी से धीमी गति और एक समान रफ्तार से यात्रा कर रहे थे, क्योंकि हमें गाड़ी के इंजन को फ्री करना था, जिसपर हमने कुछ घंटे पहले ही काम किया था। हम हाईवे से होकर घर लौट रहे थे, और चूंकि मैं (विस्पी) गाड़ी धीरे चला रहा था, तो मुझे अहसास हुआ कि गाड़ी में बैठे सभी लोग सो रहे थे। चूंकि सड़क पर गहरे गड्ढे थे, मैंने गाड़ी की रफ़्तार और धीमी कर दी ताकि झटकों से लोग जाग न जाएं।

हम पृथ्वी पर अपने घर की ओर जा रहे थे, पर उस समय मुझे यह कहां पता था कि मैं और मेरा भाई रतू, पारलौकिक जीवात्मा जगत के अपने असली घर की ओर बढ़े चले जा रहे थे।

अचानक एक भयानक सी चीज– काले रंग की, विशाल और डरावनी– मेरे रास्ते में आ गई। मैंने गाड़ी को जरा बाईं ओर लेनी चाही और ब्रेक लगाना चाहा, लेकिन ब्रेक फेल थे और मेरे सामने एक पेड़ था। गाड़ी जाकर पेड़ से जा टकराई।

इसके बाद मैंने खुद को अपने भौतिक शरीर के बाहर पाया। मैंने अपने भौतिक शरीर को घास पर पड़ा पाया और मुझे पता चल गया कि अब मैं अपने भौतिक शरीर में नहीं, बल्कि हल्के जीवात्मिक शरीर में हूं। मैंने यह भी महसूस किया कि मुझे अब कोई दर्द या तकलीफ का अनुभव नहीं हो रहा। तब मैंने जाना कि पृथ्वी की दुनिया के लिए मैं मर चुका था। मैंने अपने चारों ओर देखा। आस-पास मेरे कोई नहीं था। मेरे मुंह से एक चीख निकल गई, “हे भगवान, जीवात्मा जगत में मेरा स्वागत करने कोई नहीं आया”। कुछ क्षणों बाद, मैनें अपने बगल में एक और आत्मा को खड़ा पाया और मुझे इस बात से बड़ी खुशी हुई कि वह मेरे भाई रतू जैसा दिखता था। मैने, उसे गले लगा लिया और कहा, “रतू, कम से कम हम साथ तो हैं।” उस आत्मा ने मुस्कुराकर कहा, “विस्पी, मैं रतू नहीं हूं। रतू तो उधर है, इस समय भी अपने भौतिक शरीर में

वह सांसें ले रहा है।" मैंनें रतू पर दृष्टि डाली, लेकिन वह दूसरी आत्मा इतनी मिलती-जुलती लग रही थी कि मैंने उससे विनय पूर्वक प्रार्थना की, "आप जो कोई भी हों, कृपया करके भगवान के लिए रतू को बचा लो-उसे धरती पर मरने से रोक लो क्योंकि मेरे मम्मी-पापा अकेले हो जाएंगे। उनकी देखभाल कौन करेगा?" उस आत्मा ने बड़ी विनम्रता से जबाव दिया– "विस्पी, मेरे प्यारे, यह मेरे हाथों में नहीं, ईश्वर के हाथों में है। और, विस्पी दरअसल मैं तुम्हारा नाना हूं"। तो, वह मेरी मम्मी के पिताजी थे जिन्हें हम पप्पा या पॉप्सी कहा करते थे। मैं उन्हें पहचान नहीं पाया क्योंकि १९७४ में अपनी मृत्यु के समय की तुलना में वह अब अधिक युवा दिख रहे थे। अपनी मृत्यु के समय वह ९३ साल के थे, जब की १९८० में, हमारी मृत्यु हुई उस समय वह ३० साल के दिख रहे थे और बहुत कुछ मेरे भाई रतू की तरह लग रहे थे। मैं उनसे लिपट गया और फिर से उनसे विनती करने लगा कि वह रतू को बचाने के लिए कुछ करें।

पप्पा ने फिर समझाया, "विस्पी, मेरे सबसे प्यारे, यह हमारे हाथों में बिल्कुल नहीं होता। आओ हम बस ईश्वर से प्रार्थना करें। मैं भी बहुत दुःख महसूस कर रहा हूं। मेरी प्यारी बिटिया कैसे रहेगी तुम दोनों के बिना?" ज्यों ही हमने अपने हाथ जोड़े और प्रार्थना में कहा, "हे ईश्वर..", कि रतू भी अपने भौतिक शरीर के बाहर निकल आया। हम वहां खड़े थे, उदास और दुःखी– मेरे माता-पिता के बारे में सोचते हुए।

रतू ने मुझे देखा और तब चकनाचूर गाड़ी पर उसकी दृष्टि पड़ी, लेकिन उसने घास पर पड़े हुए अपने भौतिक शरीर को नहीं देखा। वह पूरी ताकत से चीख पड़ा – उसकी आवाज तेज और खुरदरी थी – मैंने उसकी वही आवाज सुनी जो धरती पर उसकी हुआ करती थी, लेकिन उससे भी तेजः "क्या कर दिया तुमने मेरी गाड़ी को?"

तब इसके बाद उसकी नज़र पप्पा पर पड़ी और उसने उन्हें पहचान लिया। "पप्पा, आप यहां? मैं कहां हूं? पप्पा, आप तो मर चुके थे, फिर यहां क्या कर रहे हैं?" फिर, मेरी ओर देखकर बोला, "बोलो, क्या कर दिया तुमने मेरी कार को?"

हमने उसे समझाया कि पृथ्वी पर हमारी मृत्यु हो चुकी है। मेरी तरह, रतू ने भी कहा, "हे ईश्वर, मम्मी-पापा का क्या होगा?"

हम बैठे अपने भौतिक शरीर को गौर से देख रहे थे। सोच रहे थे कि काश, कोई तो ऐसा तरीका होता जिससे अपने माता-पिता और जिना (विस्पी की ढाई साल की बेटी) के लिए हम अपने शरीर में वापस जा सकें। लेकिन, हमारा तो बुलावा आ चुका था। हमारे कुछ दोस्त और रिश्तेदार भी आ गए थे और हम सब एकसाथ चलने को तैयार थे। एक उच्च भली आत्मा [3] भी हमारे साथ थी जिन्होंने कहा, "विस्पी, रतू, अपनी आंखें बंद कर लो," हमें लगा जैसे हम बड़ी तेज रफ्तार से ऊपर उठे जा रहे हों। जब हम अपनी मंजिल पर पहुंचे तो हमसे अपनी आंखें खोल लेने को कहा गया और तब हमने दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक जगह –जीवात्माओं की

खूबसूरत दुनिया को देखा।

क्योंकि हम बहुत दुःखी थे और सदमे की स्थिति में थे इसलिए हमें कुछ उच्च भली आत्माओं द्वारा एक बड़े-से हॉल में ले जाया गया। उस हॉल को **विश्राम कक्ष** कहते हैं। हमें एक मुलायम और पंख जैसे हलके अथवा यूं कहें कि बादल जैसे पलंग पर लेट जाने को कहा गया जहां हमें नींद आ गई।

कुछ देर बाद मेरी नींद खुली और मैंने पलंग पर रतू को अपने बगल में लेटा हुआ पाया। उसे कुछ किरणें दी जा रही थीं। एक उच्च भली आत्मा ने आकर मुझसे अपने पीछे आने को कहा। मैंने कहा, “मैं यहीं रहूंगा क्योंकि रतू ने अब तक ठीक से आराम नहीं किया है।” उच्च भली आत्मा ने कहा, “नहीं, तुम्हें मेरे साथ आना होगा। तुम अब यहां नहीं रुक सकते। नींद पूरी कर लेने के बाद रतू तुमसे बाहर मिलेगा।” मुझे बाहर ले जाया गया और वहां मैंने पप्पा को देखा और मेरे सभी दोस्त और रिश्तेदार विश्राम कक्ष से हमारे बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ देर बाद, हमनें रतू को भी बाहर आते देखा। तब हमने निर्णय लिया कि चूंकि हम अपने मम्मी-पापा के पास वापस नहीं जा सकते, हम उन्हें इस भयानक सदमे से बहादुरीपूर्वक बाहर निकलने में मदद करेंगे।

२१-०४-१९८१
७ लोक अथवा तल

यदि आप यहां लघु अथवा दीर्घकालीन बीमारी के बाद आए हैं तो आपके आस-पास आपके दिवंगत दोस्त और रिश्तेदार आपका स्वागत करने के लिए तैयार होंगे, लेकिन यदि आपकी मृत्यु अचानक हुई हो तो आपके स्वागत में वे थोड़ी देर से पहुंचेंगे। लेकिन आप भरोसा करें कि वे आएंगे जरूर, बशर्ते आप निम्नतर लोकों में न हों। उस स्थिति में, किसी उच्च भली आत्मा द्वारा स्वागत किए जाने की उम्मीद न रखें। बहरहाल, बुरी आत्माएं आपको निम्न लोकों में ले जाने के लिए तैयार मिलेंगी।

जीवात्मा जगत में ७ लोक अथवा तल होते हैं। प्रत्येक लोक में ०-९ तक १० स्तर होते हैं। इसलिए लोक १-० का अर्थ होगा लोक-१ स्तर-०.

प्रथम लोक (लोक-१) निम्नतम और सबसे अन्धकारपूर्ण होता है और यह पृथ्वी के सबसे नज़दीक भी होता है। यह सबसे भयानक जगह होती है। यहां बंजर चट्टाने होती हैं जहां रेंगने वाले जंतु होते हैं, जो दरअसल विकृत शरीर, दुष्ट और कुविचारों से भरे मन वाली मनुष्य आत्माएं होती हैं। उनके शरीर हमारी तुलना में बहुत भारी होते हैं और वे बंजर इलाके में रहती हैं और अत्याधिक अंधेरे में चट्टानों पर रेंगती रहती हैं। वे कभी रोशनी की एक नन्हीं किरण भी नहीं देख पातीं।

दूसरा लोक भी भयानक है लेकिन यहाँ प्रथम लोक जितना अंधेरा नहीं होता, न ही यहाँ रहने वाली आत्माओं के शरीर उतने विकृत और भारी होते हैं। वे भी पथरीली गुफाओं में रहते हैं, एक दूसरे से घृणा करते हैं और घिनौनी, भद्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। उन्हें रोशनी अथवा कोई भी अच्छी चीज नसीब नहीं होती।

तीसरा लोक कुछ बेहतर है लेकिन यहां भी रोशनी नहीं होती। यहां आत्माओं के शरीर प्रथम और दूसरे लोकों की तुलना में हल्के होते हैं। वातावरण बहुत ही भारी और कोहरे से भरा होता है। आत्माओं के शरीर देखने में मनुष्य की तरह लेकिन बूढ़े और अधूरे नज़र आते हैं। तीसरे लोक की आत्माओं में एक दूसरे के प्रति दुर्भावनाएं होती हैं और वे हर चीज के लिए एक दूसरे पर आरोप लगाती हैं। वे वहां, यानि तीसरे लोक में, पहली बार आने वाली आत्माओं को पकड़कर अपना ग़ुलाम बना लेती हैं और अपने दुष्ट कामों में मदद करने को उन्हें मजबूर करती हैं।

चौथा लोक एक मध्य लोक है। यह पृथ्वी जैसा है जहां दिन और रात दोनों होते हैं। यह ऐसा

लोक है जिसमें मनुष्य की आत्मा अपनी जीवन यात्रा शुरू करती हैं। उन्हें चौथे लोक के पांचवें स्तर से उठने या नीचे गिरने का अवसर दिया जाता है और यह पूरी तरह हम पर निर्भर करता है।

पांचवा लोक से स्वर्ग शुरू हो जाता है, जो धरती के किसी सुंदर स्थान जैसा होता है। आकाश में हमेशा एक हल्की-सी चमक रहती है। इस लोक की आत्माएं एक-दूसरे की मददगार होती हैं। उनके शरीर काफी हल्के होते हैं और उनमें कोई विकृति कहीं होती।

छठा लोक बहुत सुंदर है। यहां खूबसूरत चमकीली, हरी घास; पेड़ और ऐसे रंग-बिरंगे फूल होते हैं जो पृथ्वी पर नहीं पाए जाते। यह लोक धूप खिले दिन की तरह हमेशा रौशन रहता है। यहां आत्माएं लगभग पूर्ण होती हैं, उनके शरीर बहुत हल्के होते हैं और वे सब आपसी मेल-जोल और प्रेम के साथ रहते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं और अपनी पसंद के काम करते हैं। यदि आप छठे लोक या उससे ऊपर हैं और आपका अवचेतन मन (जिसे अंतरात्मा कहा जाता है) जो आपका वास्तविक, आध्यात्मिक मन है, वह आपको पृथ्वी पर किए जाने वाले उन पापों को नहीं करने देता जो आपको चौथे लोक से निम्नतर लोकों में ले जाते हैं।

सातवां लोक उच्चतम लोक है। पृथ्वी के लोग इसकी सुन्दरता की कल्पना भी नहीं कर सकते। सातवें लोक की सुन्दरता का, देख कर ही विश्वास किया जा सकता है। इसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। बेशक, यह लोक इतना सुन्दर है कि इसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता। इस लोक की आत्माओं के शरीर सबसे अधिक चमकीले, सबसे अधिक पूर्ण और युवा जीवात्मिक शरीर होते हैं। वे बादल जैसे हल्के होते हैं। ये आत्माएं पूर्ण ताल-मेल और प्रेम के साथ रहती हैं। यह लोक स्वर्ग से भी बढ़कर है।

सातवें लोक के बाद क्या है यह हम नहीं जानते, ठीक उसी तरह जिस तरह पृथ्वी पर रहने वाले लोग जीवात्मा जगत के बारे में ज्यादा नहीं जानते। सातवें लोक के नौवें स्तर के बाद हम आत्माएं पृथ्वी पर पुनर्जन्म नहीं लेतीं। लेकिन हमारी आध्यात्मिक यात्रा जारी रहती है।

सातवें लोक की आत्माएं लगभग पूर्ण और शुद्ध आत्माएं होती हैं। लेकिन यदि वे पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेती हैं और उनसे छोटा-सा भी पाप हो जाता है तो उन्हें पांचवें अथवा छठे लोक में उतरना पड़ता है। इसलिए यह हमेशा हर एक आत्मा के अपने ही हाथों में होता है कि वे ईश्वर के सच्चे रास्ते पर चलते हुए उठें या पाप और अंधकार की दलदल में गिरें।

२२-०४-१९८१
हमारा असली घर

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी छोड़कर जीवात्मा जगत में जाना अच्छा है। जीवात्मा जगत हमारा वास्तविक घर है। हम थोड़े समय के लिए पृथ्वी पर जाते हैं और वापस अपने घर लौट आते हैं। अनुभव हासिल करने के लिए हम पृथ्वी पर जाते हैं। पृथ्वी हमारी पाठशाला है, जहां हम सीखते हैं, अनुभव लेते हैं और उच्च स्तर की ओर बढ़ने के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करते हैं।

पृथ्वी के लोगों को अपनी असली दुनिया – जीवात्मा जगत की कोई स्मृति नहीं होती। यदि आपमें वह स्मृति हो तो आप पृथ्वी पर एक मिनट भी रहना नहीं चाहेंगे। इसलिए ईश्वर ने आपको आपकी असली दुनिया, आपके असली प्रियजनों और जीवात्मा जगत की खूबसूरती की यादों से वंचित रखा है। ईश्वर ने इस तरह सारा प्रबन्ध किया है जिससे आप पृथ्वी पर अपना प्रशिक्षण और शिक्षा पूरी किए बिना वापस लौटने की न सोचें।

जीवात्मा जगत की याद रहने पर आप पृथ्वी पर रहने की बात से घृणा करेंगे, इसे लेकर ईश्वर इतने निश्चित हैं कि उन्होंने आपके भौतिक मन से इन यादों को पूरी तरह रोक दिया है। लेकिन, आपका आध्यात्मिक मन, जिसे अवचेतन मन भी कहते हैं, जीवात्मा जगत की यादों से भरा होता है। बहरहाल, अवचेतन मन इस याद को आपके भौतिक, तार्किक मन तक नहीं पहुंचने देता है।

यदि पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य का अवचेतन मन सुप्त है तो वह ईश्वर के असली नियमों को नहीं जान पाएगा। क्योंकि पृथ्वी पर लोगों की स्थिति बद से बद्तर होती जा रही है, इसलिए हम चाहते हैं कि आप इस असलियत को जानें ताकि आप अपने अवचेतन मन को जागृत कर सकें। हम चाहते हैं कि आप सत्य को जानें और आपमें सच्चे रास्ते पर चलने का साहस हो।

२३-०४-१९८१
बोझ ढोने वाले पशु

पृथ्वी पर भली आत्माएं बहुत दुःख झेलती हैं जबकि बुरी आत्माएं बिना रोक-टोक घूमती हैं। हम अक्सर लोगों का यह रोना सुनते हैं, "क्या यही ईश्वर का न्याय है?"

अत्यंत भली आत्माओं को हर प्रकार के प्रशिक्षण और अनुभव से होकर गुजरना चाहिए। और प्रगति करने के लिए उन्हें कष्ट भोगना ही पड़ता है। बुरी आत्माएं पृथ्वी पर जितनी अधिक सफलता प्राप्त करती हैं नर्क में उनको उतना ही नीचे गिरना पड़ता है। और कोई रास्ता नहीं, क्योंकि एक दिन हर किसी को मरकर जीवात्मा जगत में ही आना है। इसलिए पृथ्वी पर बुरी आत्माएं जितनी सफलता और सुख हासिल करती हैं जीवात्मा जगत में आने पर उन्हें उतने ही खराब अनुभवों से गुजरना पड़ता है।

यदि दुष्ट या बुरी आत्माएं दूसरों को नुकसान पहुंचाने में सफल रहती हैं तो वे दया के पात्र हैं, क्योंकि जीवात्मा जगत में वे निश्चित रूप से निम्नतम लोक में जाएंगे और बहुत यातनाएं झेलेंगे। इसलिए, उनसे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए और न ही उनके लिए ऐसा कहना चाहिए कि "देखो, वह आदमी बुरा होकर भी खुशहाल और सफल है।" इसकी बजाय ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि उस व्यक्ति के लिए जो श्रेष्ठ हो, वह किया जाए। एक न एक दिन पृथ्वी पर उस आदमी की मौत होगी ही और उसे आने वाले युगों-युगों तक निम्नतम लोक में रहकर भयानक कष्ट भोगना पड़ेगा।

आप कभी यह मत कहिए कि ईश्वर के न्याय जैसी कोई चीज नहीं होती। जब बुरी आत्माएं अपनी हद से आगे बढ़ती हैं तब उन्हें सबसे ज्यादा कष्ट भोगना पड़ता है। निम्नतम लोक का अर्थ है घुप्प अंधेरे में सीलन भरी, सर्द बंजर चट्टानें जिनपर चारों ओर रेंगने वाले जंतु रहते हैं। प्रकाश की एक नन्हीं किरण अथवा किसी भी अच्छी चीज के दिखाई पड़ने की कोई उम्मीद नहीं होती। इन दुष्ट प्राणियों के अंग विकृत होते हैं और इसलिए उन्हें रेंगने के लिए मजबूर होना पड़ता है। उनके चेहरे भयानक होते हैं और उनके कपड़े फटे-पुराने चीथड़े होते हैं। वे आधे मनुष्य और आधे पशु होते हैं।

बुरी आत्माओ के लिए सजा भोगने का एक दूसरा रास्ता भी है। [४] यदि आप सच्चे रूप से पश्चाताप करते हैं और सच्चे मन से ईश्वर को पुकारते हैं तो आप बोझ ढोने वाले पशु के रूप में जन्म लेकर कष्ट सहन करते हैं। यह निम्नतम लोक में जाने से तो कई अच्छा है। **बोझ ढोने वाले पशु के रूप में, आपको पृथ्वी पर किए गए पिछले जन्म के पापों की संपूर्ण स्मृति रहती है।** अपने द्वारा किए गए प्रत्येक पाप को याद करते हुए और उसपर पश्चाताप करते हुए आप

कष्ट भोगते रहते हैं। एक बात याद रखें, ऐसी आत्माएं बोझ ढोने वाले पशु ही बनते हैं, न कि पालतू जानवर जिनके साथ दया का व्यवहार होता है। (इसका यह अर्थ नहीं कि मनुष्य को किसी प्राणी के साथ निर्दयी व्यवहार करना चाहिए।)

भली आत्माएं कभी पाप करना नहीं चाहती क्योंकि बुरी आत्माओं वाली जगह पर उन्हें रहना बिल्कुल पसंद नहीं है। यह जगह इतनी भयानक होती है कि हम इसका शब्दों में वर्णन नहीं कर सकते। यदि कर सकें तो बुरी आत्माओं को सुधारने की कोशिश कीजिए ताकि उन्हें निम्नतम लोक में न जाना पड़े। यदि वे अपने दुष्कर्मों में सफल रहते हैं तो निश्चित रूप से कुछ ही वर्षों में उनके लिए स्थिति बहुत बुरी होगी। इसलिए यह आपका कर्तव्य है कि आप उन्हें उनकी सच्चाई से परिचित कर उन्हें सुधारने के दृढ़ प्रयत्न करें। उनके प्रति अच्छा बनकर उनके कर्मों में कभी भी उन्हें प्रोत्साहन मत दिजिए, बल्कि उन्हें यह बताइए कि वे कितने ग़लत हैं।

२४-०४-१९८१
क्या सबकी मदद करना हमारा धर्म है?

सर्वशक्तिमान ईश्वर के असली नियमों को जानना बड़े सौभाग्य की बात है। आपने लोगों को यह कहते सुना होगा, "सबकी मदद करना हमारा धर्म है।" हां, बिल्कुल, दूसरों की मदद करना हमारा धर्म है लेकिन हर किसी की नहीं। अपने लोगों की मदद करना अच्छी बात है लेकिन आप अपने सभी लोगों की मदद नहीं कर सकते, क्योंकि कुछ लोग निश्चित रूप से दुष्ट होते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप यह तय करें कि किन लोगों की मदद करनी है और किनकी नहीं, क्योंकि यदि आप दुष्ट व्यक्ति की मदद करते हैं तो आप दुष्टता को बढ़ावा देते हैं। तो आप खुद ही सोचें कि क्या आपने सही किया है? क्या ईश्वर आपसे यही करवाना चाहते हैं? विचार करने पर आप समझ जाएंगे कि आप खुद के साथ-साथ उस दुष्ट आत्मा को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं। आप कहेंगे, "मैं किसी दुष्ट की मदद किसी की हत्या करने या किसी को नुकसान पहुंचाने में नहीं कर सकता।" हम भी समझते हैं आप ऐसा नहीं करेंगे, लेकिन यदि आप भोजन, धन या कपड़े देकर भी, उस दुष्टात्मा की मदद करते हैं तो क्या यह ग़लत है? हां, यह बिल्कुल ग़लत है। यह ग़लत है क्योंकि यह सब पाकर वह अपनी ताक़त बढ़ाता है और आगे भी दुष्ट कर्म करना जारी रखता है। इसलिए ऐसे लोगों की मदद करना ईश्वर के नियमों के विरुद्ध है, क्योंकि आपकी मदद करने पर वह औरों को नुकसान पहुंचाना जारी रखता है।

दुष्ट व्यक्ति के साथ दृढ़ता से व्यवहार करें। यदि आप दृढ़ नहीं होंगे तो इसका अर्थ है कि आप ऐसे लोगों को बढ़ावा दे रहे हैं। ऐसा करने से आप भी उसी पाप की श्रेणी में शामिल हो जाएंगे। मान लीजिए, आप सड़क किनारे किसी भूख से तड़पते मनुष्य के पास से गुजरते हैं और आपको लगता है कि उसे कुछ पैसे देना या खाना खिलाना आपका धर्म है। आप उससे यह नहीं पूछ सकते कि क्या वह कोई बुरा आदमी है और यदि वह बुरा हुआ भी तो निश्चित रूप से वह आपसे सच नहीं कहेगा। इसलिए आप यह नहीं जान सकते कि वह बुरा है या भला और आपका मन कहता है कि उसे कुछ न कुछ दिया जाए क्योंकि वह भूख से बेहाल है। यदि आपका मन ऐसा कहता है, तो आपको उसे कुछ ज़रूर देना चाहिए क्योंकि आप उस आदमी के चरित्र से पूरी तरह अंजान हैं। लेकिन यदि आप जानबूझ कर किसी दुष्ट आदमी को दान देते हैं या उसकी मदद करते हैं तो इसका अर्थ है कि आप खुद भी दुष्ट हैं, अन्यथा आप एक दुष्ट व्यक्ति की किसी प्रकार की मदद नहीं करते।

आप कहेंगे "लेकिन वह भूख से बेहाल था, क्या ऐसी हालत में मुझे उसे भूख से मरते हुए देखते रहना चाहिए?" नहीं, यह मानवता नहीं है, इसलिए उसे खाना खिलाइए लेकिन किसी और तरीके से उसकी मदद तब तक मत कीजिए जब तक कि वह अपने ग़लत कामों के लिए पश्चाताप न करे। इसका अर्थ यह है कि उसे अपने किए पर सचमुच पछतावा है और सही मायने

में पूरे मन से वह सुधरना चाहता है। उस स्थिति में, आप जैसे चाहें वैसे उसकी मदद कर सकते हैं। यह आपका कर्तव्य है कि आप दुष्टता से उबरने तथा उठने में उसकी मदद करें। यही वास्तविक सत्कर्म है। ऐसा व्यक्ति अगर सच्चे मन से पश्चाताप करता है और सचमुच सुधरना चाहता है तो ही आपके द्वारा उसे भरपूर सहारा दिया जाना चाहिए।

अच्छे काम करने में अच्छे लोगों की मदद कीजिए। अच्छे की मदद के लिए अपनी सीमा से बाहर भी जाना पड़े तो जाइए। लेकिन, **यह ध्यान रहे कि आप जो भी करें वह निःस्वार्थ हो। आपके कर्म शुद्ध रूप से स्वार्थ रहित होने चाहिए।** लोगों की मदद करने के बारे में ये बातें आपको जाननी चाहिए, और हमें विश्वास है कि आप कभी ग़लत नहीं कहेंगे।

२५-०४-१९८१
दुनिया में किए जाने वाले अपराध विरूद्ध पाप कर्म

कई बार हम सुनते हैं और अक्सर कहते भी हैं, "ईश्वर उनकी मदद करता है जो खुद अपनी मदद करते हैं।" यह बिल्कुल सच है। सर्वशक्तिमान ईश्वर का यही असली नियम है।

मान लीजिए आप निम्नतर लोक में हैं लेकिन आपमें उच्चतर स्तर पर जाने की सच्ची आकांक्षा है और आप सही मायने में सुधरना चाहते हैं, तो आपकी मदद के लिए ईश्वर सब कुछ करेंगे। सर्वशक्तिमान ईश्वर आपकी आध्यात्मिक उन्नति चाहते हैं। वह चाहते हैं कि आप सचमुच खुश हों, इसलिए यदि आप सुधार की थोड़ी भी इच्छा प्रकट करेंगे तो आपको भरपूर मदद मिलेगी।

निचले स्तर पर रहने वाले बहुत से लोग कहते हैं कि "हमने किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा है; हम ईश्वर से डरने वाले लोग हैं और हमने कभी अपराध नहीं किया है।" **हो सकता है कि आपने कभी कोई अपराध नहीं किया हो लेकिन आपने बहुत से पाप किए हो सकते हैं।** पृथ्वी पर लोगों द्वारा बनाए गए नियमों से ईश्वर का कोई सम्बन्ध नहीं। आपकी दुनिया में जिसे अपराध माना जाता है वह पाप हो यह जरूरी नहीं है। इसी तरह जो पाप है वह जरूरी नहीं कि अपराध भी हो। उदाहरण के लिए स्वार्थी होना अपराध नहीं है; न ही यह अपराध है कि आप अन्दर से बुरे हों और दुनिया के सामने यह दिखावा करें कि आप पुण्यात्मा हैं। नहीं, यह अपराध नहीं बल्कि यह बहुत बड़ा पाप है।

तो आपने देखा, आपके द्वारा किए गए बहुत से अपराध, अर्थात् मानव निर्मित कानूनों को तोड़ना पाप नहीं है। पाप करने का अर्थ है ईश्वर के बनाए नियमों को तोड़ता। बहुत से पाप ऐसे होते हैं जिन्हें आपकी दुनिया में ग़लत नहीं माना जाता, इसलिए धरती के लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर के असली नियमों को समझने में भूल कर जाते हैं। कई पाप ऐसे होते हैं जिन्हें लोग गंभीरता से नहीं लेते और कुछ तो ऐसे होते हैं जिन्हें पाप माना ही नहीं जाता। इसलिए, धरती पर रहने वाले लोगों के लिए क्या यह जानना अच्छा नहीं कि कौन से पाप उन्हें उनके असली घर, जीवात्मा जगत के निम्न स्तरों की ओर ले जाने वाले हैं?

२६-०४-१९८१
मनुष्य को अपने पापों की सजा भोगनी पड़ती है

अब, जो मैं बताने जा रहा हूं उस पर विशेष ध्यान दीजिए, क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसे समझने में आप बिल्कुल भी भूल न करना। कहते हैं कि यदि दुष्ट लोग अपनी दुष्टता छोड़कर सन्मार्ग पर चलें तो ईश्वर उनकी जिम्मेदारी उठा लेते हैं। हां, बिल्कुल ईश्वर जिम्मेदारी लेते हैं और उन्हें उठने में मदद करते हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मनुष्य के भला बनने की इच्छा जाहिर करते ही ईश्वर उसे माफ कर स्वर्ग में उसका स्वागत करेंगे। बिल्कुल नहीं, **चाहे जो भी हो, आपको अपने पापों का हिसाब चुकाना पड़ता है।** लेकिन, यदि खुद को बदलने की आपमें सच्ची लगन हो तो ईश्वर आपकी मदद अवश्य करेंगे। ऐसा केवल तब होता है जब आप अपने पापों के लिए सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं और ईश्वर को यह भरोसा हो कि आप अपने पुराने रास्तों पर नहीं चलेंगे, केवल तभी वह आपको तेजी से ऊपर उठने में मदद करेंगे। तेजी से उठने का अर्थ यह नहीं है कि ईश्वर आपको सीधे उच्चतर लोक में ले जाएंगे, बल्कि इसका यह अर्थ है कि वह आपका मार्गदर्शन करेंगे और आपको सही तरीके से अपने कर्मों का हिसाब चुकाना सिखाएंगे। वह आपको इस तरह राह दिखाएंगे जिससे आप उच्च स्तरों पर, किसी अन्य तरीके की तुलना में, जल्द पहुंच पाएंगे।

आप बिल्कुल यह धारणा न पालें कि यदि आप इस पल दुष्ट हैं और अगले ही पल ईश्वर के बारे में सोचने लगें और उनकी पूजा करने लगें तो आप स्वर्ग पहुंच जाएंगे। पुरोहित के आगे अपराध स्वीकार कर यह सोचना कि ईश्वर ने माफ कर दिया है, अज्ञानता है। जैसा कि मैंने पहले कहा, पुरोहित आपसे अधिक पापी हो सकता है। आपको क्षमा करने वाला वह कौन होता है? पापों के लिए क्षमा तो केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर ही कर सकते हैं, लेकिन तब तक नहीं जब तक कि आप सच्चे मन से पश्चाताप न करें।

अच्छाई के लिए खुदको बदलने की आपकी आंतरिक अभिलाषा एकमात्र महत्वपूर्ण चीज है। आपकी आंतरिक इच्छा एक सच्चे, ईमानदार और भला जीवन जीते हुए सर्वशक्तिमान ईश्वर तक पहुंचने की होनी चाहिए।

कोई व्यक्ति बहुत ही साधारण हो सकता है और हो सकता है कोई उसे दुबारा देखना पसंद न करे अथवा किसी को भी उसके मामूली लगने वाले सवालों के जवाब देने की जरूरत महसूस न हो। हो सकता है आपकी दुनिया में उसकी कोई हैसियत न हो लेकिन जीवात्मा जगत में उसका स्थान पृथ्वी पर के बड़े प्रसिद्ध हस्तियों से भी अधिक ऊंचा हो सकता है। तो इस प्रकार, पृथ्वी पर आपके लिए सचमुच की भली और दुष्ट आत्माओं के बीच फर्क करना मुश्किल होता है। इन आत्माओं के बीच भारी अंतर होता है। आप उनके बीच अंतर कर पाने में सफल नहीं होते,

क्योंकि आप उनके स्पंदन और प्रभामंडल से पूरी तरह अंजान होते हैं। हां, कौन सी आत्मा भली है और कौन सी दुष्ट, यह समझ पाना आपके लिए सबसे कठिन है।

कई बार पृथ्वी पर लोग किसी व्यक्ति को बहुत ही धार्मिक और पवित्र मान लेते हैं, लेकिन हो सकता है वह व्यक्ति बहुत ही दुष्ट हो। हमारी सलाह आपके लिए यह है कि यदि आप जीवात्मा जगत **से सुरक्षित संपर्क** कर सकें तो वहां से मार्गदर्शन प्राप्त कीजिए, ताकि दुष्ट आत्माओं की निरंतर संगति आपको भ्रमित कर निम्न स्तर की ओर न खींच सके।

२७-०४-१९८१
शैतान का अस्तित्व नहीं होता

कहा जाता है कि दुनिया में शैतान है जो लोगों की बुद्धि भ्रष्ट कर उन्हें बहला लेता है। तो, हम आपको बताएं कि **हमारे संसार में कोई शैतान नहीं होता, लेकिन यहां जीवात्मा जगत के निम्नतर स्तरों पर और साथ ही आपकी पृथ्वी पर, दुष्ट लोगों के होने के कारण शैतानों का अस्तित्व होता है।** इन शैतानों ने आपकी दुनिया को नर्क जैसा बना दिया है। पृथ्वी पर, आप सब भली, बुरी और दुष्ट आत्माएं साथ मिलकर रहती हैं, लेकिन यहां जीवात्मा जगत में भली आत्माएं बुरी अथवा दुष्ट आत्माओं के साथ नहीं रहतीं।

सारी भली आत्माएं एकसाथ।

सारी बुरी आत्माएं एकसाथ।

सारी दुष्ट आत्माएं एकसाथ।

जीवात्मा जगत में आपको इस बात से डरने की जरूरत नहीं कि कोई दुष्टात्मा आपको नुकसान पहुंचाएगी अथवा कोई बुरी आत्मा आपसे छल करेगी। यहां सभी भली आत्माएं एकसाथ मिल-जुलकर प्रेम से रहती हैं, एक दूसरे की मदद करती हैं और कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचातीं।

बुरी आत्माएं साथ रहती हैं और एक दूसरे को धोखा देती हैं। उनमें ईर्ष्या, बेईमानी और एक दूसरे के लिए दुर्भावनाएं भरी होती हैं। वे एक दूसरे को नुकसान पहुंचाती हैं, यहां तक कि मानसिक रूप से एक दूसरे को कष्ट भी पहुँचाती हैं। लेकिन जो बुरी आत्माएं खुदको सुधारना चाहती हैं उन्हें मदद के लिए सिर्फ पुकार लगानी होती है। यदि उनकी यह पुकार सच्ची है तो उच्चतर लोकों से तुरंत उन्हें मदद दी जाती है। उच्चतर लोकों की अनेक दयालु आत्माएं उनकी मदद के लिए जाती हैं और उन्हें कष्ट से बाहर निकालने की कोशिश करती हैं।

निम्नतम लोक की दुष्ट आत्माओं के लिए आध्यात्मिक विकास कठिन होता है, क्योंकि उनके आसपास रहने वाली दुष्ट आत्माएं उन्हें और भी बिगाड़ने की कोशिश करती हैं और उन्हें सुधरने नहीं देतीं। क्योंकि दुष्ट आत्माएं अच्छाई को विकसित नहीं होने देतीं, इसलिए उन सुधार चाहने वाली दुष्टात्माओं का परिवर्तन असंभव तो नहीं लेकिन बहुत मुश्किल जरूर होता है। यहां तक कि बुरी से बुरी दुष्टात्मा भी थोड़े समय में सुधर सकती हैं, लेकिन कुछ दुष्टात्माएं निम्नतम लोक

में सदियों तक रह जाती हैं क्योंकि उनमें अच्छाई की ओर बढ़ने की इच्छा बिल्कुल नहीं होती। ऐसी आत्माएं सुधार चाहने वाली आत्मा को रोकने की कोशिश करती हैं क्योंकि वे अकेले नही रहना चाहतीं। इस प्रकार निम्नतर लोकों से उठना मुश्किल है, लेकिन यदि आप सच्चे रूप से पश्चाताप करें तो यह असंभव भी नहीं।

तो प्रिय पाठकों, असली शैतान वे ही होते हैं जो दूसरों को अपनी तरह दुष्ट बनाने की पूरी कोशिश करते हैं। यदि दूसरे उच्चतर लोकों तक उठना चाहते हैं तो ऐसी बुरी आत्माएं पूरी ताकत के साथ उन्हें हतोत्साहित करती हैं और यहां तक कि यदि संभव हो, उन्हें नुकसान पहुंचाने की भी कोशिश करती हैं ताकि वे न उठ सकें।

अब, आइए सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में चर्चा करें। आपको ईश्वर के बारे में बताने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि हर आदमी उनके बारे में, अर्थात् **हमारे स्वर्ग के स्वामी और हमारे विश्व सहित अन्य अनेक विश्व के पिता के बारे में जानता है।**

ईश्वर प्रेम, करुणा, न्याय और ज्ञान की खान हैं। वह स्वर्ग के न्यायशील स्वामी हैं जो कभी किसी भी आत्मा के साथ अन्याय नहीं करते। उनकी एकमात्र इच्छा हमेशा आपकी उन्नति में मदद करने की होती है। वह आपको अपने कुविचारों से छुटकारा पाने, अपनी आत्मा को शुद्ध करने और खुद को खुशहाल बनाने में आपकी मदद करते हैं। उनके पास कई ऐसे मददगार होते हैं जो निम्नतम लोकों की आत्माओं का भी मार्गदर्शन करते हैं। इसलिए, आप इस बात को लेकर निश्चिंत रहिए कि उनकी करुणा और प्रेम कभी व्यर्थ नहीं जाते, और वे दुष्टतम आत्माओं को भी उच्चतर लोकों की ओर ले जा सकते हैं।

२८-०४-१९८१
मनुष्य जो बोता है वही काटता है

पृथ्वी पर बहुत से लोग आमतौर पर मृत्यु के बाद भी जीवन है, इस में विश्वास नहीं करते। जो विश्वास करते हैं वे शाश्वत शांति में भरोसा करते हैं, और मानते हैं कि इसका अर्थ है हमेशा-हमेशा के लिए सोते रहना। कितना मूर्खता भरा निष्कर्ष है, और कितना भ्रांत विचार!

जीवात्मा जगत में हम, पृथ्वी पर आपकी तुलना में अधिक जीवंत होते हैं, क्योंकि हम शरीर के दु:ख-दर्द से मुक्त होते हैं। हम लगभग हमेशा ही प्रसन्न रहते हैं और हम भौतिक शरीर के बोझ से मुक्त जीवात्माएं होती हैं। हम वह कार्य कर सकते हैं जो हमें पसंद है। हमारा आपस में झगड़ा नहीं होता, हम एक दूसरे को दु:ख नहीं पहुंचाते और हम कभी भी चोरी या एक दूसरे का नुकसान नहीं करते। इसलिए हमें अपने घरों की सुरक्षा करने की जरूरत नहीं पड़ती। हम पूरी तरह स्वतंत्र हैं और हमारी स्वतंत्रता सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा हमें दी गई है। यदि हम पढ़ना चाहते हैं, तो हम पढ़ते हैं; यदि हम काम करना चाहते हैं, तो हम काम करते हैं; यदि हम आराम करना चाहें तो हम आराम करते हैं; यदि हमारी इच्छा अपने किसी दोस्त से मिलने की है, तो हम उससे मिलते हैं; यदि हमारा मन प्रार्थना करना चाहता हो, तो हम प्रार्थना करते हैं। हमें जो भी करने की इच्छा होती है, हम वह करते हैं। तो क्या इसका अर्थ यह नहीं कि हम आप सबकी तुलना में अधिक स्वतंत्र हैं? क्या हम आपकी तुलना में अधिक जीवंत और अधिक जानकार नहीं हैं? और, क्या हम आपको आपकी तुलना में अधिक नहीं जानते? हम बस चाहते हैं कि आप यह ध्यान रखें कि हम जो कुछ आपसे कहेंगे, वह, आपके ज्ञान, और आपके विचार की तुलना में अधिक बेहतर है, लेकिन इसके बावजूद भी हम यह स्वीकारते हैं कि हम परिपूर्ण नहीं हैं। हम भी सीख रहे हैं। केवल ईश्वर के पास पहुंचकर ही हम अपने आपमें पूर्ण और शुद्ध हो सकते हैं। अब, जबकि आप हमें पूरी तरह समझने लगे हैं, हम जीवात्मा जगत के निवासी आपके लिए यह संदेश भेजना चाहते हैं ताकि हम आपका मार्गदशर्न कर सकें। जीवात्मा जगत की तुलना में, आप पृथ्वी जगत द्वारा एक उच्च आध्यात्मिक स्तर पर काफ़ी तेज़ी से पहुँच सकते हैं।

हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर के कुछ नियम होते हैं जिनका सभी आत्माओं द्वारा बहुत ही सख्ती से पालन किया जाता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि **"आप जो बोएंगे वही काटेंगे," अर्थात् आप जैसा करेंगे आपको वैसा ही फल मिलेगा।**

सर्वशक्तिमान ईश्वर का हृदय बड़ा दयालु और प्रेमभरा है, इसलिए मनुष्य उनके प्रेम और उनकी दया का फ़ायदा उठाने लगता है। लेकिन ईश्वर ने आपको एक अवचेतन मन अथवा अंत:करण दिया है। यह अवचेतन मन इस सिद्धांत पर काम करता है कि "आप जैसा बोएंगे वैसा ही

काटेंगे।” अच्छे के बदले अच्छा और बुरे के बदले बुरा! कोई अन्याय नहीं। यदि आप अच्छे हैं, तो जीवात्मा जगत में आप प्रसन्नता पाएंगे। **यदि आपने किसीको नुकसान पहुंचाया है तो आपको इसका हिसाब चुकाना पड़ता है और आपका अपना अवचेतन मन आपको दुःख का अनुभव कराता है।** यह आपका अपना अवचेतन मन ही है जो आपको सच्चा न्याय दिलाता है, कोई दूसरा नहीं। आपका अपना ही अवचेतन मन, बिना आपकी जानकारी के, आपको न्याय दिलाता है। आपका भौतिक मन तो यह भी नहीं जानता कि आप दुःखी क्यों हैं। कर्मों के अनुसार, आपको आपका ईनाम या आपकी सज़ा अपने-आप मिल जाती है। इससे आप यह जान पाएंगे कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अत्यंत दयालु हैं, प्रेम से परिपूर्ण हैं और वह कभी किसी को सज़ा नहीं देते। आप जो बोते हैं, वही काटते हैं।

२९-०४-१९८१
पुनर्जन्म

जीवात्मा जगत में हमारे लिए भविष्य की सभी घटनाओं को जानना संभव नहीं होता। भविष्य की कुछ घटनाओं के बारे में हमें पता होता है, लेकिन हम उनके बारे में तबतक कुछ नहीं बता सकते, जबतक हमें उच्चतर आत्माओं द्वारा पृथ्वी के लोगों को बताने के निर्देश या अनुमति न मिले। ज्योंही मनुष्यों का संपर्क जीवात्मा जगत से होता है, वे अपने भविष्य के बारे में सैंकडो सवाल पूछने लगते हैं। केवल कुछ ही लोग होते हैं जो ऐसे सवाल नहीं करते। हम इसके लिए आपको दोष नहीं देते, लेकिन हम आपसे यह विनती करते हैं कि आप हमसे भविष्य के बारे में न पूछें।

ऐमै नौरोजी बाटलीवाला
(खोरशेद भावनगरी की परदादी)
मृत्यु तिथि: सन १८०० में

का पुनर्जन्म

खोरशेद रूमी भावनगरी
के रूप में हुआ।
(शादी से पहले स्क्रूवाला)
जन्म तिथि: २७ सितम्बर, १९२५

रूमी प. मेहता
(बुर्जिन के पिता के भाई)
मृत्यु तिथि: ५ जनवरी, १९६९

का पुनर्जन्म

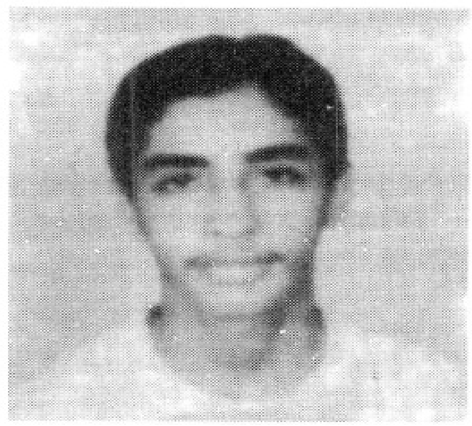

बुर्जिन विस्पी मेहता
के रूप में हुआ
जन्म तिथि: ५ अगस्त, १९८०

जल दुमासिया
(विस्तास्प के नाना)
मृत्यु तिथि: १५ जनवरी, १९९४

का पुनर्जन्म

विस्तास्प नोज़ेर कांगा
के रूप में हुआ।
जन्म तिथि: १९९५

जैसा कि हम बताएंगे, सही-सही भविष्य कोई नहीं जानता, क्योंकि दूसरों के व्यवहार के बारे में किसी को पता नहीं होता। उदाहरण के लिए, हम आपसे यह कह सकते हैं कि आप ९० साल जिएंगे, लेकिन हो सकता है अगले ही दिन आपकी किसी दुर्घटना में मौत हो जाए या आपकी हत्या कर दी जाए। सब कुछ मनुष्य की अपनी स्वतंत्र इच्छा और निर्णयों पर निर्भर करता है। पृथ्वी पर, मनुष्य यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता कि अगले पल क्या होने वाला है।

कभी-कभी हमें आगे होने वाली निश्चित घटनाओं की जानकारी हो जाती है लेकिन हमें आपको बताने की अनुमति नहीं होती। हमें कुछ चीजों के बारे में बताने की अनुमति होती है जिनसे आपका व औरों का भला होने वाला हो। प्रायः धरती पर भविष्य के बारे में शायद ही कभी ठीक-ठीक अनुमान लगाया जाता है, और यदि हम कुछ जानते भी हों और हमें आपको बताने की अनुमति न हो, तो हमसे पूछना ही व्यर्थ है। इसलिए, कृपया ऐसा न करें।

जीवात्मा जगत में हम अपने भविष्य में घटित होने वाली बहुत सी बातों के बारे में जान सकते हैं, क्योंकि हम अपनी उन्नति चाहते हैं और उच्चतर स्तरों पर पहुंचना चाहते हैं। हम सर्वशक्तिमान ईश्वर से कह सकते हैं कि हमें वापस पृथ्वी पर भेज दें और हम स्वयं यह तय करते हैं कि हमें कहाँ पुनर्जन्म लेना है। हम हमेशा अपनी मां स्वयं चुनते हैं। हमारे पिता का चयन खुद ब खुद हो जाता है क्योंकि प्रायः हमें यह नहीं पता होता कि हमारी मां का ब्याह किससे होगा। हालांकि, कभी-कभी हम अपने पिता का चुनाव भी कर सकते हैं।

हम प्रायः हमें प्यार करने वाली और जबतक हम खुद अपनी देखभाल न करने लगें तबतक हमारी देखभाल करने वाली मां को चुनते हैं। हम प्रायः ऐसी मां का चयन करते हैं जो हमें बहुत प्यारी हो, लेकिन कभी-अनुभव लेने के लिए, कर्मों का फल भोगने के लिए और प्रगति करने के लिए हम मां के रूप में किसी बुरी या दुष्ट आत्मा का चुनाव भी करते हैं। [५]

यदि हमने अपने लिए किसी मां का चयन किया है तो कोई हमें किसी अन्य मां के पास जाने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। यदि हमें अपने पापों के लिए कठोर व्यवहार और सज़ा की ज़रूरत हो तो हम स्वाभाविक रूप से एक बुरी आत्मा का चयन अपनी मां के रूप में करते हैं, ताकि हम कष्ट भोग सकें और कष्टों से भरा बचपन बिताकर अच्छे व्यक्ति बन सकें। उस स्थिति में, हमें बड़ा जोखिम उठाना पड़ता है, क्योंकि वह मां यदि बहुत अधिक प्रभावशाली हुई तो हमारी जिंदगी भी बिगड़ सकती है और हम अपने मन को वश में कर पाने में असफल हो सकते हैं। बहरहाल, अपनी उन्नति और अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए हमें ऐसे जोखिम उठाने पड़ते हैं।

आप पूछेंगे कि “क्या उन्नति करने और उच्चतर स्तर तक पहुंचने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है?” हां है, एक दूसरा मार्ग भी है, लेकिन उसमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने में हमें कई युग लग जाएंगे। **उच्चतर लोकों में आप पृथ्वी पर दुबारा जन्म न लेने का निर्णय ले सकते हैं और आपको**

जीवात्मा जगत में रहते हुए उन्नति करने की कोशिश करनी पड़ती है, लेकिन यह प्रक्रिया बहुता ही धीमी होती है।

उन्नति प्राप्त करने के लिए बहुत सी आत्माएं जोखिम उठाती हैं और बुरी मां की संतान बनकर धरती पर जन्म लेती हैं। अन्य आत्माएं अपने प्रियजन की मदद के लिए पुनर्जन्म का चयन करती हैं। वे ऐसी आत्माएं हैं जो अपने प्रियजनों में से मां का चयन करती हैं और अच्छे रास्ते पर चलने की भरपूर कोशिश करती हैं, क्योंकि वे आध्यात्मिक रूप से नीचे गिरना कभी नहीं चाहती।

इससे आप समझ सकते हैं कि हम कितने स्वतंत्र होते हैं। जीवात्मा जगत में हम जैसा चाहते हैं वैसा कर सकते हैं। अगर कुछ ग़लत है तो हमारा अवचेतन मन कभी उसकी अनुमति नहीं देता। **यदि जीवात्मा जगत में आप उच्चतर लोक में हैं तो नीचे गिरने का डर नहीं होता।**

यदि आप उन्नति के लिए जोखिम वाला रास्ता अपनाते हैं तो हो सकता है कि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के नियमों को न मानकर अपना जीवन नष्ट कर लें, क्योंकि पृथ्वी पर अपने अवचेतन मन के पूरे वक़्त काम नहीं करने के कारण आप यह नहीं जान सकते कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। जो उच्च स्तर पर होते हैं, केवल उन्हें ही, पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने पर, अपने अवचेतन मन का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

हम, विस्पी और रतू, दोनों ने अपनी मां का चयन किया था, जिन्हें हम सबसे बढ़कर प्यार करते थे।

३०-०४-१९८१
दुष्टता से संघर्ष

हम सभी, हममें से प्रत्येक यहां कुछ न कुछ काम करते हैं। जो भी करना हमें सबसे अधिक अच्छा लगता है, हम उसे खुशी-खुशी करते हैं। हममें से कुछ धरती के लोगों को संदेश भेजते हैं, ताकि उन्हें उनके कष्टों से उबारा जा सके और उनकी वर्तमान स्थिति से उठने में उनकी मदद की जा सके। बहुत सी आत्माएं ऐसा करती हैं-कुछ सफल रहती हैं और कुछ नहीं।

पृथ्वी के लोगों को दैनिक भौतिक काम-काज से उपजे दु:ख और थकान से छुटकारा दिलवाने को हम बहुत ही इच्छुक होते हैं, लेकिन ऐसा केवल तभी किया जा सकता है जब आप अपने भौतिक शरीर से छुटकारा पा लें, इस प्रकार यह हमारे हाथों में नहीं होता। लेकिन हमारे हाथों में इतना जरूर होता है कि हम आपको सर्वशक्तिमान ईश्वर के असली नियमों का ज्ञान करा सकें।

ईश्वर के कुछ नियमों को आप नहीं जानते और कुछ को ग़लत समझ बैठते हैं। इसलिए हम यहां आपको सही रास्ते पर कायम रखने के लिए हैं। यदि आप दुष्ट आत्माओं के प्रति अच्छा व्यवहार करते हैं तो आप उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उनके प्रति अच्छे मत बनिए; किसी भी रूप में उनकी मदद मत कीजिए। यदि वह दुष्ट आत्मा सुधरना चाहती है तो पहले इस बारे में सुनिश्चित हो जाएं और तब पूरे मन से उसकी मदद करें। यह आपका फर्ज़ है। लेकिन उस व्यक्ति की इच्छा को ठीक से जानकर निश्चित कर लें। आप किस प्रकार सुनिश्चित कर सकते हैं? यदि आपने पूरी तरह सुनिश्चित कर लिया है तो आपके मन में इस बारे में सवाल नहीं उठेंगे।

और, अगर सवाल उठते हैं, तो इसका मतलब है कि आप सुनिश्चित नहीं हैं। इसका अर्थ है कि आप सही भी हो सकते हैं और ग़लत भी। यहीं हम जीवात्माएं आपका मार्गदर्शन करती हैं। हम इस बात में आपका मार्गदर्शन करते हैं कि आप किसी व्यक्ति पर भरोसा करें या नहीं। लेकिन जिन लोगों का जीवात्मा जगत से संपर्क नहीं है, उनके लिए हमारी सलाह यह है कि वे अपने हृदय की गहराइयों से सर्वशक्तिमान ईश्वर को मदद के लिए पुकारें। आपको सही राह दिखाने के लिए ईश्वर किसी न किसी रूप में आपकी मदद जरूर करेंगे।

इसलिए याद रखें, बुरे लोगों के प्रति अच्छे न बनिए अथवा उन्हें बढ़ावा मत दीजिए। **बुराई से लड़िए। यह सर्वशक्तिमान ईश्वर का एक महत्वपूर्ण नियम है।**

०१-०५-१९८१
केवल सच्ची इच्छाएं ही परिवर्तन लाती हैं

सर्वशक्तिमान ईश्वर प्रेम और करुणा की खान हैं। वह सर्वोच्च और पूर्ण न्यायाधीश हैं। वह चाहते हैं कि प्रत्येक आत्मा ऊँचे स्तर पर प्रगति करे, इसलिए उनके पास कई सहायक होते हैं जो पापियों और बुरी आत्माओं की मदद करते हैं। उनके सहायक उनकी ही तरह दयालु और प्रेम से भरे होते हैं।

अब, मान लीजिए कोई बुरी आत्मा उच्चतर स्तर की ओर बढ़ना चाहती है लेकिन उसके अन्दर सुधरने की इच्छा नहीं है, तो ऐसे में क्या होगा? वह आत्मा उसी स्तर पर पड़ी रहेगी जिस पर वह है। वह कभी प्रगति नहीं करेगी क्योंकि उसमें अपनी बुराइयों को सुधारने की इच्छा ही नहीं।

आपकी अपनी सच्ची इच्छाशक्ति अकल्पनीय चमत्कार करती है। आप अपने आप से कह सकते हैं, "मुझमें जबर्दस्त इच्छाशक्ति है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैं प्रगति कर रहा हूं"। अपने बारे में सोचिए और अपने आप से पूछिए, "क्या खुद को बदलने की मुझमें सच्ची इच्छा है, या मैं बस यूं ही सुधरने का ढोंग कर रहा हूं?"

सच्ची इच्छा और केवल मन को बहलाने और दिलासा देने वाली इच्छा में बहुत बड़ा अन्तर है। खुद अपना विश्लेषण करने से इस बात की पूरी संभावना बनती है कि आपको समझ में आ जाए कि दोनों में से कौन सी इच्छा आपकी वास्तविक भावनाएं हैं। यदि आप सचमुच ही अपने आप को बदलना चाहते हैं तो यकीनन आप खुद को धोका देना बन्द करेंगे और सच्ची भावनाओं के साथ बदलने की कोशिश करेंगे।

इन दिनों अच्छे लोग कम हैं और बुरे अधिक। इसलिए हर अच्छी आत्मा का यह कर्तव्य बनता है कि वह बुरी आत्मा को सुधारने की कोशिश करे। लेकिन कोई मनुष्य किसी दूसरे को बाध्य नहीं कर सकता, यह भावना तो खुद अपने ही अन्दर से उठनी चाहिए। बुरी आत्मा चाहे सैकड़ों बार यह क्यों न कहें कि, "हां मुझे बदलना है," लेकिन इससे कोई फायदा नहीं। हमारी दी हुई सलाह और हमारे मार्गदर्शन से भी कोई मदद नहीं होगीं। केवल आपमें ही वह शक्ति है जिससे आप खुदको ग़लत रास्ते से अच्छे रास्ते की ओर ला सकें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम जीवात्मा जगत से आपके लिए कितनी कोशिश करते हैं। यहां तक कि स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर भी आपको आपके बुरे रास्ते से नहीं हटा पाएंगे क्योंकि उन्होंने तो आपके मार्गदर्शन के लिए पहले ही एक अवचेतन मन दे रखा है। इसलिए, ईश्वर इस

मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं करते। यदि आप ग़लत हैं तो निश्चित रूप से आपका अवचेतन मन आपको सजा देगा और आप उसी निम्न स्तर पर तब तक रहेंगे जब तक आप प्रगति करने के लिए सच्चे रूप से मेहनत न करें। प्रगति करने का केवल एक ही रास्ता है और वह है सच्चे मन से खुद को सुधारना। कोई भी अन्य तरीका-प्रार्थना या ईश्वर को की हुई विनतीयाँ, आपकी मदद तब तक नहीं कर सकता, जब तक कि आपके अन्दर सच्ची इच्छाशक्ति न पैदा हो। तो, जितनी जल्द हो सके शुरुआत कीजिए, वर्ना कहीं देर न हो जाए।

०२-०५-१९८१
जीवात्मा जगत में दूसरे लोकों की यात्रा

जीवात्मा जगत में ७ लोक होते हैं। उनमें से निम्नतम प्रथम लोक है और उच्चतम सातवां लोक है, इसलिए आपके अच्छे कर्मों और पापों के अनुसार आपका अवचेतन मन आपको उस लोक में ले जाता है जिसके आप योग्य होते हैं। कोई भी मनुष्य उस लोक से ऊपर नहीं जा सकता जिसके वह योग्य है, चाहे वह कितनी भी कोशिश क्यों न कर ले।

ऐसी आत्मा के लिए उच्चतर लोक की यात्रा करना असंभव होता है क्योंकि वह लोक उसके लिए अदृश्य होता है। वह केवल अपने ही लोक अथवा इससे नीचे के लोकों को देख सकती है। बहरहाल, यदि कुछ जरूरी शर्तें पूरी हो गई हों तो पांचवे लोक या उससे ऊपर की आत्मा उच्चतर लोकों की यात्रा करती है। ये शर्तें इस प्रकार हैं:

१. यदि उस आत्मा को कोई उच्चतर लोक से आमंत्रित करता है।
२. यदि उस उच्च लोक की उच्च भली आत्मा द्वारा उस आत्मा को अनुमति मिल जाती है। [६]
३. उस आत्मा ने विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया हो।
४. उस आत्माने ने सुरक्षा अंगरखा पहनना चाहिए, जिससे अतिरिक्त रूप से चमकीली रोशनी उसकी आंखों को चौंधिया न सके और अत्यधिक हल्के वातावरण से उसका दम न घुटे। क्योंकि उसकी आत्मा उच्चतर लोक की आत्माओं की तुलना में कुछ भारी होती है, उसे अंगरखे की जरूरत होती है जो उसे थोड़ा हल्का बना दे।

आप उस उच्च लोक में अधिक समय तक नहीं रह सकते और वहां बार-बार जा भी नहीं सकते। आप पांचवें लोक से छठे में और छठे लोक से सातवें में कभी-कभार ही जा सकते हैं और वह भी बहुत कम समय के लिए।

हमने ऐसी यात्राएं की हैं। हममें से कुछ को सातवें लोक में जाने का भव्य सौभाग्य और सम्मान प्राप्त हुआ है। बहरहाल, हम सभी निम्नतर लोकों में जितनी बार चाहें जा सकते हैं और वहां की आत्माओं को सुधार सकते हैं।

यदि हम निम्नतर लोकों, जैसे पहले, दूसरे अथवा तीसरे लोक की यात्रा करें तो भी हमें एक सुरक्षा करने वाले अंगरखे की आवश्यकता होती है। **यह सुरक्षा अंगरखा हमें सभी दुष्ट और बुरी आत्माओं के लिए अदृश्य बनाता है, ताकि वे और उनकी बुरी तरंगें हमें हानि न पहुंचा सकें।**

प्रथम, दूसरे और तीसरे लोकों की आत्माएं अपने-अपने लोक से नहीं निकल सकतीं, सिवाय तब, जब उन्होंने सच्चे मन से भरपूर पश्चाताप किया हो और उन्हें उच्चतर लोकों की दयालु आत्माओं द्वारा पथ दिखाया गया हो। ऐसा केवल तब होता है जब भली आत्माओं को यह भरोसा हो जाए कि निम्नतर लोक की आत्मा दुबारा कभी वह पाप नहीं करेगी। आत्मा को तब पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेकर लोगों के प्रति किए गए दुष्कर्मों के कर्म का फल भोगना पड़ता है। इसमें कभी-कभी सैकड़ों साल लग जाते हैं और कभी-कुछ ही साल। यह पूरी तरह प्रत्येक आत्मा के अपने ही हाथों में होता है।

बहुत सी आत्माएं कुछ सौ सालों में निम्नतम लोकों से उठकर उच्चतम लोकों में पहुंची हैं। कुछ भली आत्माएं भी हैं जिन्होंने अपने संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन में कभी प्रथम, दूसरे और तीसरे लोक नहीं देखे।

प्रत्येक आत्मा अपनी आध्यात्मिक यात्रा चौथे लोक के पांचवें स्तर से आरंभ करती है।

बहुत सी आत्माओं ने बड़ी तेजी से उन्नति की है, जबकि औरों को हजारों साल लगे हैं, और अब भी बहुत सी आत्माएं ऐसी हैं जो कई युगों से निम्नतम लोक में ही पड़ी हैं। आत्माओं के लिए कोई निश्चित नियम अथवा समय नहीं है; यह प्रत्येक आत्मा पर निर्भर करता है, और यदि सुधार की इच्छा दृढ़ और सच्ची हो तो आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने में कम समय लगता है।

०३-०५-१९८१
ईश्वर का न्याय

सर्वशक्तिमान ईश्वर दया, प्रेम और न्याय के सागर हैं। वे किसी के साथ अन्याय नहीं करते। बहुत से लोग सोचते हैं कि ईश्वर ने उनके साथ न्याय नहीं किया। उनके ऐसा सोचने का कारण यह है कि वे वास्तव में यह जानते ही नहीं कि सही क्या है और ग़लत क्या। लोगों द्वारा ईश्वर को अन्यायी मानने का यही असली कारण है।

उदाहरण के लिए, हम आपको एक आत्मा के बारे में बताते हैं, जिसे हम सुरेश नाम देंगे। सुरेश धरती पर बहुत ही लोकप्रिय और विख्यात था। उसने विभिन्न दान-पुण्य के कार्यो में, हजारों रुपए का चन्दा दिया था। उसने कई लोगों को रोजगार दिये और जरूरतमन्दों को भोजन, कपड़े और घर दिए। अपने इन कार्यों की वजह से वह निश्चिंत था कि उसे उच्चतम लोक जरूर हासिल होगा। जब पृथ्वी पर उसकी मृत्यु हुई तो उसके लिए भव्य समारोह के साथ उसकी अंत्येष्टि की गई। लोग कहते रहे की वह बहुत बड़ी पुण्यात्मा था। सुरेश की एक मूर्ति उस धर्मार्थ संस्थान में लगाई गई जिसकी स्थापना उसके सहयोग से हुई थी।

जब सुरेश जीवात्मा जगत में आया तो उसने अपने आप को निम्न लोक में पाया। वह क्रोधित हुआ और चिल्लाकर पूछा, “कहां है ईश्वर का न्याय? मैंने इतने दान दिए कि धरती पर लोग मुझे पूजते थे, और यहां ईश्वर ने मुझे इस नर्क में रखा है! आज कहां गया उसका न्याय? वह सबसे बड़ा निर्दयी और अन्यायी है। वह क्रूर है”।

बहुत सी भली आत्माएं उसके पास पहुंची और उन्होंने उससे आग्रह किया कि वह शांत होकर उनकी बात सुनें और यह जानें कि उसकी इस स्थिति के क्या कारण हैं। उन्होंने उससे कहा कि वह खुद से यह सवाल करे कि वह दान-पुण्य क्यों किया करता था? इसके पीछे उसका क्या उद्देश्य था?

सुरेश ने कहा, “मैंने वह सब इसलिए किया ताकि मैं स्वर्ग में जा सकूं, लेकिन देखिए मैं कहां हूं”।

भली आत्माओं ने उसे समझाया, “तुमने जो कुछ भी किया वह निःस्वार्थ होकर नहीं किया। क्या यह सच नहीं कि सब कुछ तुमने अपने लिए स्वर्ग में स्थान पाने के लिए किया?”

सुरेश ने जवाब दिया, “हां, यह सच है, लेकिन क्या हमारे धर्मगुरु, पुरोहित और दार्शनिक हमसे यह नहीं कहते कि यदि हम ग़रीबों की मदद करें, उन्हें खाना, कपड़ा, रोज़गार और रहने की

जगह दें, तो हमें स्वर्ग मिलेगा? ईश्वर, पुरोहितों और दार्शनिकों ने मिलकर मुझे मूर्ख बनाया"।

उन्होंने सुरेश को समझाया कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसके साथ धोखा नहीं किया है, बल्कि धोखा तो खुद उस ही ने अपने साथ किया है, क्योंकि उसने जो भी पुण्य के काम किए उनमें प्रेम और उदारता नहीं थी। उसके कर्म सत्कर्म नहीं थे और न ही निःस्वार्थ। उसने वे सब अपने ही स्वार्थपूर्ण उद्देश्य- पाप करने के बाद ईश्वर को रिश्वत देकर स्वर्ग में जाने के उद्देश्य से किए। उसका मतलब केवल अपने पापों को छिपाना था।

इस पर सुरेश ने क्रोधित होकर कहा, "यह ग़लत है। मेरे साथ भारी अन्याय हुआ है। मुझे स्वर्ग में होना चाहिए। मैं स्वर्ग के लायक हूं, क्योंकि मैंने अपने पाप धोने और स्वर्ग का आनंद लेने के लिए कई सारे अच्छे काम किए। इसके बदले, ईश्वर ने मेरे साथ धोखा किया और मुझे यहां नर्क में रखा है।"

ऐसे निम्न लोक में आकर उसे इतना धक्का लगा कि वह ठीक से सोच भी नहीं पा रहा था। उसने पुरोहितों, धर्म गुरुओं और ईश्वर को भला-बुरा कहा लेकिन उसने यह नहीं जाना कि जो पाप उसने किए उसे हजारों का दान देकर स्वार्थपूर्ण उद्देश्य द्वारा नहीं धोया जा सकता।

आप कितना दान करते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अपने पापों का फल आपको भोगना ही पड़ता है। यदि आप अपने किए पर सच्चे मन से पश्चाताप नहीं करते और चाहे जैसे भी हो, जिसका आपने नुकसान किया है उसकी भरपाई नहीं करते, तो अपने पापों को आप धो नहीं सकते। तो, इस तरह आप देखते हैं, कि बहुत से लोगों की यह ग़लत धारणा होती है कि वे इसलिए स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि उन्होंने हजारों का दान किया है। यदि आप ऐसे स्वार्थपूर्ण उद्देश्य लेकर अच्छे काम करते हैं, तो स्वर्ग में जाना तो दूर आप स्वर्ग के दरवाजे तक भी नहीं पहुंच सकते। आपको यह सच अपने मन में स्वीकार कर लेना चाहिए।

०४-०५-१९८१
जीवात्माओं से संपर्क

हम यहां हैं और आप लोग वहां, लेकिन फिर भी हम आपको देख सकते हैं, आपसे बात कर सकते हैं और अपने विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। हालांकि, पृथ्वी पर ज्यादातर लोग यह नहीं जानते और इसी कारण कुछ ही लोग हमसे संपर्क कर सकते हैं। जब पृथ्वी की आत्माएं हमारे साथ संपर्क करने में सफल रहती हैं तब हमें बड़ी खुशी होती है।

पृथ्वी पर बहुत से लोगों का विश्वास है कि जीवात्मा जगत से संपर्क रखने वाले शैतान होते हैं और ऐसा करना मनुष्य के लिए बुरा और खतरनाक है। यह बिल्कुल ग़लत है। **यह सोचना एकदम ग़लत है इक जीवात्मा जगत से संपर्क करना बुरा होता है।**

कुछ लोग यह विश्वास करने के लिए बाध्य होते हैं कि जीवात्मा जगत से संपर्क करना ग़लत है। उन्हें यह समझाया जाता है कि इससे हम जीवात्माओं को बाधा पहुंचती है और हमें (हमारी आत्माओं) को पृथ्वी पर बुलाने से हमारी उन्नति रुकती है। ये ग़लत धारणाएं हैं। सच तो यह है, कि यदि हम पृथ्वी के लोगों से संपर्क करने की अनुमति मांगें तो सर्वशक्तिमान ईश्वर और उच्चतर भली आत्माएं बहुत प्रसन्न होती हैं।

पता है, हममें से कुछ जीवात्माएं अपने प्रियजनों को ग़लत करने से रोकने के लिए कुछ 'संकेत' [७] देती हैं, क्योंकि हम चाहते हैं कि जीवात्मा जगत में आने पर वे भी हमारे साथ उच्च लोक में रहें। हम उन तक अपने विचार या संकेत पहुंचाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करते हैं।

प्रायः पृथ्वी के लोगों तक अपने संकेत पहुंचाने के लिए कठिन मेहनत करने के बाद भी हम आपको जरा भी प्रभावित नहीं कर पाते, क्योंकि अपने संकुचित मन के कारण बहुत से लोग हमारे अच्छे विचारों और हमारी सलाह को स्वीकार नहीं करते।

पृथ्वी के लोगों के साथ प्रत्यक्ष संपर्क कर हम बड़ी आसानी से उन्हें बता सकते हैं कि उनके लिए क्या अच्छां है, और उन्हें आध्यात्मिक रूप से नीचे गिरकर निम्नतर लोकों में जाने से बचा सकते हैं। हालांकि, हमें आध्यात्मिक परीक्षा के बारे में बताने की अनुमति नहीं है। हम उनकी मदद केवल उन्हें **संकेत** और सलाह भेजकर कर सकते हैं।

अपने विचारों या संकेतों को पृथ्वी पर भेजने का प्रयास करने की तुलना में पृथ्वी के लोगों के

साथ प्रत्यक्ष संपर्क करना हमारे लिए बहुत आसान होता है, क्योंकि हमारे विचार उनकी समझ के बाहर होते हैं। जो थोड़े से लोग हमारे साथ सुरक्षित रूप से और आसानी से संपर्क कर सकते हैं उन्हें अपने अनायास विचारों को परे रखना चाहिए। इससे हम आत्माओं और पृथ्वी के लोगों, दोनों को सहूलियत होती है।

प्रत्यक्ष संपर्क के जरिए हमारी उन्नति तेजी से होती है, क्योंकि हम अपना किमती समय लोगों के दिमाग में अच्छी सोच, अच्छे विचार और ज्ञान भरने की कोशिश में बरबाद नहीं करते। यह इस कारण, कि धरती के लोगों के अवचेतन मन का एक बहुत छोटा हिस्सा ही काम करता है।

अब आगे से, आप अपने मृत प्रियजनों के साथ संपर्क करने की कोशिश जरूर करें। **लेकिन शुरुआत आप अपने आप नहीं कर सकते। स्वचलित लेखन के जरिए आप अगर खुद से आत्माओं के साथ संपर्क करने की कोशिश करें तो यह बहुत खतरनाक हो सकता है।** आपको किसी ऐसे व्यक्ति को माध्यम बनाना पड़ेगा जो स्वचलित लेखन के लिए अधिकृत और अनुभवी है।

हमारे लिए अपने प्रियजनों के साथ लगातार संपर्क करना आसान होता है। यह बस घर में बैठकर टू-वे रेडियो पर बातें करने जैसा है। हमारी संपर्क विधि और आपकी टू-वे रेडियो विधि में अधिक अन्तर नहीं है।

हम कभी-कभी ही पृथ्वी पर आकर आपसे बातें करते हैं। आमतौर पर हम अपने घर में बैठकर अपने विस्तृत अवचेतन मन के जरिए संपर्क करते हैं। **हमारे विचार असाधारण और बहुत अधिक ताकतवर होते हैं।** टू-वे रेडियो की तरह हम संदेश भेजते और प्राप्त करते हैं।

इसी तरह, पृथ्वी के कुछ लोगों में टू-वे रेडियो जैसी क्षमता ईश्वर प्रदत्त होती है। इसकी मदद से वे हमारे संदेशों को हमारी ही तरह प्राप्त कर सकते हैं और हम बड़ी आसानी से जान पाते हैं कि आप क्या कहते या सोचते हैं। पृथ्वी के कुछ लोग भाग्यशाली हैं कि उनके पास यह क्षमता है, औरों के पास नहीं। हमेशा याद रखिए कि आपके और हमारे दोनों के लिए अपने अंतर्मन के इस टू-वे रेडियो के जरिए संपर्क कायम करना सबसे अच्छा है। उस व्यक्ति की मदद लीजिए जिसे यह वरदान मिला हुआ है और फिर देखिए कि इससे आपके जीवन में कैसा फर्क आता है!

०५-०५-१९८१
लोकों का संचालन किस प्रकार होता है

लोक १, २ और ३ को नर्क के रूप में जाना जाता है तथा लोक ५, ६ और ७ को स्वर्ग के रूप में। लोक ४ मध्य लोक होता है। यह न तो स्वर्ग है और न ही नर्क। इसी लोक से मनुष्य आत्मा की शुरुआत होती है।

अंतिम उद्देश्य होता है लोक ७ में पहुंचना। इसे पाने के लिए आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। प्रगति करने के आपके आंतरिक सहजबोध पर सब निर्भर करता है। तब आप कभी ऐसे काम नहीं करेंगे, जो आपको नीचा दिखाए और जल्द ही आप अपने लक्ष्य तक जा पहुंचेंगे। कुछ खुशकिस्मत आत्माओं ने यह कर दिखाया है। यह पूरी तरह से आपके हाथ में हैं।

इन सातों लोकों में से प्रत्येक लोक पर एक उच्च भली आत्मा का शासन चलता है। शासन करने का अर्थ यहां यह है कि वह उस लोक का प्रमुख होता है।

उच्चतर लोकों में कोई किसी प्रकार का पाप या किसी को नुकसान पहुंचाने वाला काम नहीं करता है। न्याय हमेशा हमारे अवचेतन मन द्वारा लागू किया जाता है, इसलिए वहां पुलिस व्यवस्था या पद वाले अधिकारियों की ज़रूरत नहीं रह जाती। हालांकि, हमें कुछ निश्चित कार्य करने की अनुमति लेने की ज़रूरत पड़ती है, और यदि हमें किसी सलाह या मार्गदर्शन की आवश्यकता हो, तो हम अपने लोक की उच्च भली आत्मा के पास मदद के लिए जाते हैं।

कभी-कभी हमारे लोक की उच्च भली आत्मा को भी हमारे लिए **श्री सर्वोच्च भली आत्मा,** यानि लोक ७ के प्रमुख से अनुमति लेनी होती है, जो एक सम्राट की तरह सभी लोकों का प्रमुख होता है।

लोक १, २ तथा ३ में प्रत्येक लोक का संचालन एक उच्च भली आत्मा द्वारा किया जाता है; लोक ४, ५, ६ तथा ७ में भी ऐसा ही होता है। पर लोक ७ की प्रमुख, श्री सर्वोच्च भली आत्मा सभी लोकों की प्रधान होती है।

वे सभी इतने विनम्र और दयालु होते हैं कि वे आपको कभी इस बात का एहसास नहीं होने देंगे कि वे आपसे श्रेष्ठ हैं। वे आपके साथ हंसेंगे, आपके साथ चुटकुले कहेंगे और ऐसा व्यवहार करेंगे, मानो आप उन्हीं के स्तर के हों। उनका प्रकाश इतना चमकदार और उनका अंगरखा इतना झिलमिलाहट भरा होता है कि उन्हें देखते ही तुरंत आपको पता चल जाएगा कि वे शुद्ध, सच्ची

और उच्च भली आत्माएं हैं।

हम निम्नतर लोकों की ओर नहीं जा सकते। यदि हमें ऐसा करना पड़े, तो हमें सुरक्षा की ज़रूरत पड़ती है, क्योंकि वहां का वायुमंडल दुषित होता है, हमारी आंखों को उन अंधेरों में देखने के लिए अभ्यस्त होना पड़ता है, साथ ही बुरे स्पंदन और बुरी ताकतें हम पर प्रभाव डाल सकती हैं एवं हमें हतोत्साहित और बेचैन कर सकती हैं। इसलिए हमें कुछ सावधानियां बरतनी पड़ती हैं, खास तौर पर लोक १, २ और लोक ३ की ओर जाने में। हम जब लोक १ या २ में जाते हैं, तो प्रायः हम एक अंगरखा पहनते हैं, जो हमें उन लोकों की बुरी आत्माओं की नज़रों से अदृश्य कर देता है।

उसी प्रकार उच्चतर लोकों में प्रवेश करने के लिए भी हमें सुरक्षा और अनुमति लेनी पड़ती है, क्योंकि उनका प्रकाश अत्यंत तेज होता है, वहां का वायुमंडल अत्यंत हलका होता है और वहां के स्पंद हमारे लिए बहुत शक्तिशाली होते हैं। आप जिस लोक में रहते हैं, केवल उससे एक लोक ऊपर ही जा सकते हैं। एक लोक से अधिक कोई यात्रा नहीं कर सकता है (भगवान का शुक्र है कि हम लोक ६ में गए थे; १९८५ में हम लोक ७ में जा पहुंचे) हालांकि सलाह देने, मार्गदर्शन देने और किसी ऐसी आत्मा को सुधारने के लिए, जिसने मदद की पुकार की हो, आप निम्नतम लोक में जा सकते हैं। हमें अतिरिक्त सुरक्षा की ज़रूरत होती है और सिवा उस आत्मा के जिन्होंने हमें बुलाया होता है, सभी के सामने हमें अदृश्य रहना पड़ता है, अन्यथा वह भयानक आत्माएं हमें नुकसान पहुंचा सकती हैं, अथवा हम पर हमला बोल सकती हैं। वे आत्माएं बेहद बुरी होती है। हमारे शरीर नहीं होते, इसलिए वे शारीरिक रूप से हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती, लेकिन कभी-कभी वे उच्च आत्माओं को बंदी बनाकर कैद में रखती हैं और मानसिक रूप से परेशान करती हैं। यदि हम उनकी कैद में चले जाएं, तो कई उच्च भली आत्माएं हमें बचाने आती हैं, इस लिए, ऐसी बुरी ताकतों के सामने अदृश्य रहना ही सबसे अच्छा होता है। अन्यथा, ऐसे स्थानों पर न जाना ही उचित है।

कई ऐसी भली आत्माएं हैं जिन्होंने अपना अधिकांश समय लोक १, २ और ३ में दूसरों को मार्गदर्शन और सलाह देते हुए और उन्हें सुधारते हुए बिताया है। यह काफी कम देखने को मिलता है कि लोक १ की आत्माएं मदद के लिंए पुकारे। यहां तक कि उच्च भली आत्माएं लोक १ की आत्माओं की मदद करना चाहती हैं, पर ये आत्माएं गलत रास्तों पर इतनी खो चुकी होती हैं और इतनी दूर जा चुकी होती हैं कि उनका कोई ईलाज नहीं हो सकता। यदि उनकी गलतियों के एहसास और पछतावे के बगैर ही उनकी मदद की जाए, तो वे फिर पिछले पापों को दोहरा बैठेंगे। वे लोक १ में सैकडों वर्ष गुजारते हैं। पर लोक २ और ३ की आत्माओं को प्रायः उन पुण्यात्माओं की मदद मिल जाती है, जो वहां उनके सुधार के लिए गए होते हैं।

यदि किसी आत्मा को उसकी गलतियों का एहसास हो जाता है, और वह उसके बारे में पछतावा करती हैं एवं मदद की पुकार लगाती हैं, तो कई भली आत्माएं तुरंग उसकी मदद के लिए दौड़

पड़ती हैं। इस प्रकार लोक २ और ३ की कई आत्माओं को सुधार और उत्थान का मौका मिल चुका है, पर लोक १ की आत्माओं को ऐसे अवसर न के बराबर मिलते हैं। उन्हें उठने में प्रायः सैकड़ों साल लग जाते हैं।

लोक ५, ६ तथा ७ की आत्माओं के लिए उन्नति करना या उसी हालत में रहना, उनके अपने ही हाथों में होता है। वे जीवात्मा जगत में रह सकते हैं, जहां निरंतर मगर धीमी प्रगति होती है। भले ही प्रगति काफी धीमी हो, पर यह बात निश्चित है कि उनका कभी पतन नहीं हो सकता। यह पूरी तरह से उनकी इच्छा पर निर्भर करेगा कि वे क्या करें। किसी पर कोई दबाव नहीं होता। हर कोई अपनी-अपनी इच्छा के अनुरूप काम करने के लिए स्वतंत्र होता है। पर यह आत्मा की क्षमता के भीतर होना चाहिए, अन्यथा उनका अपना अवचेतन मन उन्हें अपने-आप ही रोक देगा।

०६-०५-१९८१
मनुष्य की आत्मिक प्रवृत्ति ही उसका असली स्वरूप होता है

आपको आपके अस्थायी घर या पाठशाला जैसी इस पृथ्वी पर मिले जीवन के मुकाबले आपके अपने असली घर यानि जीवात्मा जगत में काफी लंबा जीवन जीना होगा। कोई पाप करने से पहले कृपया आप अपने भविष्य के बारे में सोच लीजिए, क्योंकि हर किसी को एक दिन पृथ्वी से विदा लेनी होती है। तब आपका अवचेतन मन या अंतरात्मा ही आपको उचित लोक में ले जाएगा, और वहाँ से आपको प्रगति करनी होगी। इसलिए कभी अपने अवचेतन मन या अंतरात्मा की इच्छा के विरूद्ध कुछ न करें।

जब आपकी आत्मा आपके भौतिक शरीर को छोड़ती है तो वह ऊपर उठती है। आपके भौतिक शरीर की तुलना में वह काफी हल्की होती है और यदि आप लोक ५, ६ और ७ के लायक होते हैं, तो आपकी सभी दर्द-तकलीफ़, पीड़ा और विकृतियां आपके भौतिक शरीर के साथ ही गायब हो जाती हैं। आपकी आत्मा जितनी भली होगी आपका जीवात्मिक शरीर उतना ही हलका और आकर्षक रंगों वाला होगा। आप जितना अंदाजा लगा सकते हैं, यह उससे कहीं अधिक हल्की होती है। यहां तक कि आप कुछ मिनटों में सैकड़ों मील का सफ़र तय कर सकते हैं।

बुरी आत्माओं के शरीर भारी और विकृतियों से भरे होते हैं। धरती तल पर बुरी आत्मा भी दिखने में खूबसूरत हो सकती है, पर जब वह जीवात्मा जगत में आती है, तो उसका आत्मिक शरीर विकृतियों से भर उठता है।

वहीं इसके विपरीत पृथ्वी पर किसी भली आत्मा का शरीर विकृतियों से भरा हो सकता है, पर जब वह जीवात्मा जगत में आता है, तो उसका जीवात्मिक शरीर पूर्ण और सुंदर हो जाता है।

जीवात्मा जगत में आपको बस केवल आत्मा पर दृष्टि डालनी होती है, और आपको तुरंत ही पता चल जाता है कि वह भली, बुरी या दुष्ट आत्मा है। उससे निकलने वाला कंपन हमको सब कुछ बता देता है। हालांकि, पृथ्वी पर आप किसी व्यक्ति को सिर्फ देखकर उसके बारे में फैसला नहीं कर सकते। यहां, यानि जीवात्मा जगत में हमें व्यक्ति के गुणों को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होती।

रूपहली डोरी

हम जानते हैं कि कई बार चीजों पर भरोसा करना आपके लिए काफी कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, हम जीवात्माएं और आप पृथ्वी पर की आत्माएं प्रायः हर दिन एक-दूसरे से मिलतीं हैं। आप पूछेंगे कैसे? जब आप गहरी नीदं में होते हैं, तब पृथ्वी पर के लोग अपने शरीर छोड़कर अपने बिछड़े परिजनों से मिलने के लिए एक निश्चित ऊँचाई तक जा पहुंचते हैं। आप तब अपने शरीर से केवल एक चुंबकीय डोरी, जिसे **रूपहली डोरी** कहते हैं, उसके माध्यम से जुड़े होते है। जब आप नींद से अचानक जागते हैं, तो यही डोरी, आपको आपके शरीर में वापस लाती है। यह केवल तभी होता है, जब आपकी नींद गहरी और स्वप्नहीन होती है। आपको इसकी याद नहीं रहती, पर हम आपको भरोसा दिलाते हैं कि आपकी अपने प्रियजनों से लगभग हर दिन मुलाकात होती है।

आइए एक बात को स्पष्ट कर लें, क्योंकि यह काफी महत्वपूर्ण है। आप केवल उन्हीं प्रियजनों से मिल सकते हैं, जो आपको भी प्यार करते हों। यदि आपका प्यार एकतरफा है, तो यह संभव नहीं होगा। आपके प्रियजनों में भी आपके प्रति उतना ही प्यार या लगाव होना चाहिए। कल्पना कीजिए कि पृथ्वी पर रहने वाली एक आत्मा कहती है कि वह आपसे प्यार करती है, पर जीवात्मा जगत में आने पर उसे लगता है कि वह अब आपसे प्यार नहीं कर सकती, तो वह कभी आपसे मिलने नहीं आएगी क्योंकि वह आपसे कोई संपर्क नहीं रखना चाहती। केवल वे प्रियजन ही एक-दूसरे से मिलते हैं, जो आपस में प्रेम करते हैं, भले ही वे मां-बेटा, पति-पत्नी, पिता-पुत्री, पिता-पुत्र हों या फिर केवल मित्र हों। पर उनके बीच आपसी प्रेम अवश्य होना चाहिए।

याद रखें कि आप अपने प्रियजनों से मिलते हैं। **इसलिए कभी उनके बिछड़ने का दुःख न करें, क्योंकि आपके दुःख से उनपर भी प्रभाव पड़ता है।** इससे वे भी उदास और दुःखी हो जाएंगे।

०७-०५-१९८१
नींद में हमें आरोग्य और मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

जीवात्मा जगत आपसे और पृथ्वी से काफी दूर है। यह पृथ्वी के चारों ओर घिरी है, पर उससे मीलों दूर है। निम्नतम लोक धरती के सबसे करीब है, इसके बाद दूसरा लोक है और उसके बाद तीसरा, चौथा इत्यादि है।

आप अपने परिजनों से कुछ मिनटों के लिए मिल सकते हैं अथवा कुछ घंटों के लिए-यह निर्भर करता है आपकी नींद पर, जो गहरी और बिना सपनों की होनी चाहिए। लगभग सभी का कोई न कोई परिजन होता है-भले ही इस जीवन में आपको उनके बारे में पता न हो। हम एक बार फिर कहते हैं, प्रेम पारस्परिक होना चाहिए न कि एक तरफा।

यही वह कड़ी है, जिसके जरिए आप गतिमान रहते हैं, फिर चाहे आपको जो भी तकलीफ़ झेलनी पड़े। उस यात्रा के बारे में आपको कुछ याद नहीं रहता, पर उसके प्रभाव से आप अपनी समस्याओं से मुकाबला कर पाते हैं और आपको अपने दु:खों से उबरने का हौसला मिलता है।

क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया है कि एक अच्छी गहरी नींद लेने के बाद आप शांत और पहले से हल्का महसूस करते हैं? इसका कारण है-आपकी अपने प्रियजनों से मुलाकात होती है और वे आपको शांति प्रदान करते हैं, साथ ही आपके अवचेतन मन के जरिए आपको दिशा-निर्देश देते हैं, पर आपके भौतिक मन को उसके बारे में कुछ भी पता नहीं रहता। आप शांत हो जाते हैं, पर यह आपके (अवचेतन मन पर निर्भर करता है कि वह आपके भौतिक मन पर असर डाले अथवा नहीं।)

पृथ्वी पर हरेक व्यक्ति को अच्छी और गहरी नींद की आवश्यकता होती है, भले ही थोड़ी देर के लिए सही, क्योंकि इससे आप हम तक पहुंच पाते हैं और इससे हमें आपको शांति देने और दिशा-निर्देश देने में मदद मिलती है। जब आपका अवचेतन मन आपके भौतिक मन को दिशा-निर्देश और सलाह नहीं दे पाता, तो हमें आपके भौतिक मन पर प्रभाव डालने के लिए कठिन प्रयास करना पड़ता है, और उसे यह समझाना पड़ता है कि आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं। हालांकि अधिकतर समय, आपका भौतिक मन हमारी सलाह और दिशा-निर्देश को यह सोचकर अलग हटा देता है कि यह केवल एक वहम है और यह गलत हो सकता है। आप प्रायः हमारे दिशा-निर्देश को समझ पाने में असफल रहते हैं और प्रायः आप वह कर बैठते हैं, जो आपको नहीं करना चाहिए था। पृथ्वी पर आपके जीवन का यही एक सबसे बुरा भाग है, जो कई बार आपको निम्नतर लोकों में पहुंचा देता है, क्योंकि आप हमारे दिशा-निर्देश की परवाह नहीं करते। आप सोचते हैं- “पृथ्वी पर जबतक मैं सफल और अमीर बना रहूंगा, तबतक किसे इसका

पता चलेगा, यही तो मेरी खुशहाली है।” पर क्या आपने सोचा कि इस खुशहाली के कुछ सालों के बाद क्या होगा? पृथ्वी पर आप कुछ ही वर्षों के लिए हैं, पर बाकी समय आप जीवात्मा जगत में रहेंगे। **धरती पर कुछ सालों की अस्थाई खुशियों के लिए क्या आप सैंकड़ों सालों तक जीवात्मा जगत के निम्नतर लोकों में रहना चाहेंगे?** इससे आप यह समझ पाएंगे कि क्यों आपको धरती पर एक अच्छा जीवन जीना चाहिए।

०८-०५-१९८१
विभिन्न लोकों में जीवन

हम यहां जीवात्मा जगत में बहुत खुश हैं। लोक ५, ६ और ७ में हम कभी एक-दूसरे को नुकसान नहीं पहुंचाते। हम हंसते हैं, हंसी-मजाक करते हैं, एका-दूसरे को चिढ़ाते भी हैं और हमेशा काफी उत्साहित रहते हैं; पर हम कभी परेशान या दु:खी नहीं होते। हां, पर धरती पर जब हमारे परिजन दु:खी होते हैं तो हम दु:खी हो जाते हैं।

लोक ४ की आत्माएं कभी दु:खी तो कभी खुश रहती हैं, और कभी-कभी तो वे एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्यालू भी हो जाती हैं, पर इन सबके बावजूद वे एक-दूसरे को इतना नुकसान नहीं पहुंचातीं।

हमारा एक जीवात्मिक शरीर होता है, इसलिए हमें कोई मार नहीं सकता, न ही कोई हमें शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर सकता, पर मानसिक रूप से यह संभव हो सकता है और लोक १, २ और ३ में रहने वाली आत्माएं इसमें माहिर होती हैं।

लोक ४ की आत्माएं कभी-कभी एक-दूसरे को बेवकूफ़ बनाती हैं, एक दूसरे से झूठ बोलती हैं और जिन्हें वे पसंद नहीं करतीं, उन्हें बहुत दु:ख पहुँचाती हैं। वे थोड़ी-थोड़ी अच्छी और बुरी दोनों होती हैं।

हमारी सुरक्षा के लिए किसी पुलिस या सेना की ज़रूरत नहीं होती, पर लोक १, २ तथा ३ में आपको खुद ही अपनी रक्षा करनी होती है, वरना जबतक आप सच्चे मन से अपनी गलतियों को नहीं स्वीकारते और मदद के लिए नहीं पुकारते, तबतक आपको प्रताड़ना झेलनी पड़ती है, जिसे सदियां लग सकतीं हैं।

यहां तक कि लोक ४ में भी आपको अपनी रक्षा करनी होती है, क्योंकि कोई आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। लोक ५, ६ और ७ में किसी सुरक्षा की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि कोई किसी को नुकसान पहुंचाने की बात भी नहीं सोचता।

लोक ५, ६ तथा ७ में हमारे मुख्य नियम होते हैं: एक-दूसरे की मदद करना, एक-दूसरे के बीच खुशियां बांटना, जो भी पसंद हो वह कार्य करना और पृथ्वी पर रहने वाले अपने प्रियजनों की मदद करना।

हम इन लोकों में इतने प्रेम भाव से रहते हैं कि धरती पर से यहां आने वाली आत्माएं पूरी तरह से स्वतंत्र महसूस करती हैं। उन्हें किसी प्रकार का भय, दु:ख, शारीरिक तकलीफ़ और पीड़ा नहीं होती। हर कहीं प्रेम का वास होता है। सबसे अधिक महत्त्व इस बात का है, के हम एक बेहद खूबसूरत जगह में रहते हैं। तो क्या यह उचित नहीं है कि हम ईश्वर के बनाए नियमों पर चलें, जिससे हम उच्चतम लोकों तक पहुँच पाएँ? तो पृथ्वी के लोगों, ईश्वर के नियमों का पालन करने का दृढ़ संकल्प करें। इस बात का दृढ़ संकल्प करें कि कभी गलत राह पर न चलें और हमें भरोसा है कि ईश्वर आप सभी का भला करेंगे!

०९-०५-१९८१
निम्नवर्ती लोक भर चुकें हैं

जैसा कि हमने पहले कहा, आप अपनी मां का चयन करते हैं। पर क्यों आपको बार-बार जन्म लेना चाहिए और कई जीवनों से होकर गुजरना चाहिए? पृथ्वी पर रहने वाले **आप सभी जानते हैं कि अधिक अनुभव पाने के लिए ही आप बार-बार जन्म लेते हैं, पर इसका मुख्य उद्देश्य होता है-आध्यात्मिक उन्नति करना और उच्चतर लोकों में प्रगति करना।** आपका पुनर्जन्म एक उच्चतर स्तर में जाने के लिए होता है। पर आप क्या करते हैं? ईश्वर की इच्छा के अनुरूप प्रगति करने की बजाए, आपमें से अधिकतर नीचे गिर जाते हैं। दुष्ट लोग आपकी दुनिया पर राज करते हैं। यही कारण है कि पृथ्वी की अवस्था बद से बदतर होती जा रही है।

दुष्ट आत्माएं कभी नहीं चाहतीं कि अच्छाई उसपर हावी हो, इसलिए वे अच्छाइयों को दबाने का पूरा प्रयास करती हैं और हर कहीं दुष्टता फैला देती हैं। आपकी दुनिया अभी ऐसी ही हो गई है।

इसलिए जब आप अपनी दुनिया छोड़कर जीवात्मा जगत में आते हैं, तो बुरी और दुष्ट आत्माओं का अवचेतन मन उन्हें निम्नतर लोकों में पहुंचा देता है। निम्नतर लोक पूरी तरह से भर चुके हैं। ऊपरीय या उच्चतर लोकों की जनसंख्या कम है। एक शताब्दी पहले इसका उल्टा हुआ करता था। आज कई भली आत्माएं गिर कर निम्नतर स्तरों में आ गई हैं, क्योंकि आपकी दुनिया में नकारात्मक शक्तियों और नकारात्मक प्रभाव का खूब बोलबाला है।

पृथ्वी के वे लोग जो मानते हैं कि वे काफी सफल हैं, यह सोचकर खुश होते हैं कि, छल-कपट से वे अमीर और प्रसिद्ध बन गए हैं। वे दौलत, सम्भोग और रुतबा पाने के लिए किसी भी हद तक जाने से नहीं हिचकिचाते। जब वे जीवात्मा जगत में आते हैं, केवल तभी उन्हें इस बात का एहसास होता है कि वे किस वर्ग के लोग थे और पृथ्वी पर वे कितने गलत तरीके से जी रहे थे। किसी ने उन्हें सलाह नहीं दी, किसी ने उनका मार्गदर्शन नहीं किया और तबतक तो इसमें काफी देर हो चुकी होती है।

कुछ अत्यंत दुष्ट आत्माएं तो निम्नतर लोकों में जाने से भी नहीं घबरातीं, क्योंकि उनका हृदय इन निम्न अंधेरे लोकों की तरह ही काला हो चुका होता है। पर सबसे अधिक कष्ट उन्हें झेलना पड़ता है, जो दुष्टों के प्रभाव में आकर बुरे हो जाते हैं। हमें उनपर बहुत दया आती है और हम चाहते हैं कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, वे इस किताब को जरूर पढ़ें।

१०-०५-१९८१
क्यों कुछ लोगों की छोटी उम्र में ही मृत्यु हो जाती है

हम पुनर्जन्म लेते हैं अधिक प्रगति करने के लिए, पर पृथ्वी पर के अधिकतर लोग और नीचे ही गिरते चले जाते हैं, क्योंकि व्यापक रूप से फैली बुराई, आपकी दुनिया पर हावी रहती है। कई भली आत्माओं को यहां, आपकी दुनिया में फिर जन्म लेने से पहले हजारों बार सोचना पड़ता है, क्योंकि सिवाय वास्तविक दुष्ट आत्माओं यानि शैतानों के, कोई नीचे गिरना पसंद नहीं करता।

कई भली आत्माएं आपकी दुनिया में कुछ अच्छा करने, दुष्टता से संघर्ष करने एवं शांति, भाईचारा और अच्छाइयों को बढ़ावा देने के लिए पुनर्जन्म लेती हैं, पर दुर्भाग्यवश दुष्टता का प्रभाव इतना गहरा होता है कि उनके अवचेतन मन उन्हें तुरंत वापस ले जाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर बैठते हैं। वे निम्नतर लोकों में जाने से नफरत करते हैं, और उनके अवचेतन मन उन्हें गलत या अत्यंत बुरा करने से रोकते हैं, इसलिए इस कदर बुराइयों से भरी दुनिया में वे कहां मुड़ें, यह उन्हें समझ में नहीं आता। यही कारण है कि भली आत्माएं अप्रसन्न और दुःखी रहती हैं। **इसलिए बिना उनके चैतन्य ज्ञान के उनके अवचेतन मन उन्हें उनके असली, आध्यात्मिफ घर में वापस बुलाने की सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।**

यही कारण है कि पृथ्वी पर लोग कहते हैं, “जो लोग कम उम्र में मरते हैं, वे भगवान के दुलारे होते हैं” या “भगवान उन्हीं को कम उम्र में बुलाते हैं, जिनसे वे सबसे अधिक प्रेम करते हैं।”

ऐसी भली आत्माएं, जो अपने अवचेतन मन के कारण गलत काम नहीं कर सकतीं और आपकी दुष्ट दुनिया में अच्छाइयों को नहीं फैला पातीं, उन्हें समझ में नहीं आता कि वे क्या करें। वे ईश्वर से लगातार यह पूछती रहती हैं, “क्या आपका न्याय यही है?” पर अवचेतन मन को पता होता कि गलत क्या है-उसे यह भी मालूम होता है कि इस दुष्ट दुनिया से भली आत्माएं मुकाबला नहीं कर पाएंगी और यही कारण है कि उनमें से कई पुण्यात्माएं अपने समय से पहले ही अपने घर लौट जाती हैं। केवल कुछ भली आत्माएं ही ९० साल या अधिक तक जीती हैं, और दुर्भाग्यवश उन्हें काफी कष्ट सहना पड़ता है।

दुष्ट आत्माएं आपकी दुनिया को छोड़ना नहीं चाहतीं, इसलिए वे अपने भौतिक शरीर और पृथ्वी से जोंक की तरह ही चिपकी रहती हैं। यह सच है कि उनके अवचेतन मन को अच्छी तरह से मालूम रहता है कि आपकी दुनिया में उनकी मृत्यु के बाद वे कहाँ पहुँचेंगे, क्योंकि अवचेतन मन सब कुछ जानता है।

यह बड़े हैरानी की बात है कि जब वे गलत काम करते हैं, तो उनके अवचेतन मन उन्हें नियंत्रित करने और रोकने की पूरी कोशिश करते हैं, पर दुष्ट शक्तियों से घिरे होने के कारण वे अंधे हो चुके हैं, और अपने अवचेतन मन की आवाज ही सुनना नहीं चाहते। ऐसे लोग कभी पृथ्वी छोड़ना नहीं चाहते, क्योंकि उन्हें डर लगता है कि उन्हें निम्नतर लोकों में स्थान मिलेगा; हां, उनके अवचेतन मन को वहाँ के माहौल के बारे में भली-भांति पता होता है।

कुछ भली आत्माएं पृथ्वी पर इसलिए रहना चाहती हैं, क्योंकि उन्हें अपने प्रियजनों की रक्षा करनी होती है, या उन्हें अच्छाइयां फैलाने का जीवनकार्य सौंपा गया होता है। इसलिए कितना भी कष्ट क्यों न सहना पड़े, वे अपने भौतिक शरीर से जुड़ी रहती हैं और पृथ्वी पर बनी रहती हैं। कुछ जीवात्माएं ऐसी हैं, जिन्हें काफी तकलीफ़ें झेलनी पड़ती हैं, पर फिर भी वे ईश्वर के रास्ते पर से नहीं हटतीं। वे दुष्टता से मुकाबला करने की कोशिश करती हैं, पर पृथ्वी पर जम कर बुराई फैली होने के कारण उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता।

भली आत्माएं ईश्वर से पुकार करे- "हे ईश्वर, क्या यही आपका न्याय है?" उससे पहले यह किताब उन्हें कुछ अन्तदृष्टि जरूर प्रदान करेगी। हमारी यह किताब उन भली आत्माओं तक इस उम्मीद के साथ पहुंचेगी, कि दुष्ट ताकतों से उन्हें बचाया जा सके ताकि वे नीचे ना गिरें। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि बहुत कम बुरी या दुष्ट आत्माएं इस किताब को पढ़ेंगी और शायद उन्हें इस किताब में लिखी बातें फ़िज़ूल ही लगेंगी।

कई लोग **पुनर्जन्म** पर विश्वास नहीं करते, इसलिए उनके लिए हमारा यही कहना है कि हरेक आत्मा अपने आप को शुद्ध, निर्मल करने के लिए सैंकडों बार जन्म लेती हैं, या कभी-कभी तो हजारों बार भी, पर इसके बजाए कई आत्माएं नीचे ही गिर जाती हैं। एक भी ऐसी आत्मा नहीं, जिसने केवल १० या १०० जीवन जिये हों, बल्कि आपको सैकड़ों बार पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ता है।

जीवन इस तरह जीना चाहिए जो आपको प्रगति दे, न कि आपका पतन करे। इसलिए प्रिय पाठकों, अपना जीवन इस तरह से जिएं, जिससे सर्वशक्तिमान ईश्वर खुश हो जाएं। यह न सोचें कि यदि आप घंटों ईश्वर की प्रार्थना करेंगे तो वे प्रसन्न हो जाएंगे। न ही यह सोचें कि हर दिन मंदिर, गिरिजा या मस्जिद जाने या हज़ारो के दान-पुण्य के कार्य से ईश्वर खुश हो जाएंगे और वे आपका स्वर्ग में स्वागत करेंगे। ऐसा नहीं है। दरअसल यदि आप ईश्वर को रिश्वत देने के लिए यह सब करते हैं, तो यह संभव नहीं। उन्हें रिश्वत नहीं दी जा सकती, पर यदि आप काफी सच्चे हैं और दान-पुण्य के कार्यों के लिए अपना समय या अपने रुपए सच्ची दया के कारण समर्पित करते हैं, यदि आप ईश्वर की पूजा थोड़ी देर के लिए ही सही, पर उनके प्रति सच्चे प्रेम के उद्देश्य से करते हैं तो निश्चित रूप से सर्वशक्तिमान ईश्वर आपसे प्रसन्न होंगे, आपको स्वर्ग में स्थान देंगे। इसलिए **प्रिय पाठकों, हम आपसे सरल, सच्चाई भरा, दया भरा और नि:स्वार्थ जीवन जीने का अनुरोध करते हैं।** यह ज्यादा महत्वपूर्ण है, न कि बिना एकाग्रता के घंटों प्रार्थना

करना, दूसरों को छलने और स्वर्ग में जगह पाने के लिए हजारों का दान देना या लोगों को यह दिखाना कि आप कितने धार्मिक और पवित्र व्यक्ति है।

११-०५-१९८१
अच्छी आत्माएं नकारात्मक आत्माओं द्वारा विचलित की जाती हैं

दुष्टता के प्रभाव और आपकी दुनिया के दुष्ट रास्तों के कारण कई भली आत्माओं ने गलत राह चुन ली है, इसलिए पृथ्वी के लोगों के लिए यह समय अच्छे और बुरे के बारे में समझने और उसपर विश्वास करने का है।

जीवात्मा जगत में हम जानते हैं कि आप अपनी दुनिया में किन-किन परिस्थितियों से गुजरते हैं। हमें मालूम है कि दुष्टता ने दुनिया को इस कदर जकड़ रखा है कि सीधे रास्ते पर चलना आपके लिए बहुत कठिन हो गया है।

इसके बाद भी कई ऐसे लोग हैं, जिन्हें पता है कि ईश्वर के रास्ते में चलने में उन्हें काफी कष्ट पहुंचेगा, पर वे फिर भी सच्ची राह पर चलते हैं। उनके लिए यह बहुत प्रशंसा की बात है।

कई भली आत्माएं ऐसी भी हैं, जो ईश्वरीय मार्ग पर चलना चाहती हैं, पर क्योंकि उन्हें इस बात का डर रहता है कि बुरी और दुष्ट आत्माएं उनसे बदला लेंगी और उन्हें कष्ट और नुकसान पहुंचाएंगी, वे सही मार्ग से दूर रहती हैं। इन आत्माओं को यह अवश्य पता होना चाहिए कि उन्हें एक दुष्ट मनुष्य से जिस तरह का कष्ट पृथ्वी पर मिलता है, वह निम्नतर लोकों के कष्टों के मुकाबले कुछ भी नहीं है। उन्हें यह भी मालूम होना चाहिए कि पुनर्जन्म से पहले वे जीवात्मा जगत में जिस स्तर पर थे, वहां पहुंचने में उन्हें कई सौं साल और कई जन्मों से होकर गुजरना पड़ेगा।

यदि उन्हें केवल यह पता चल जाए कि उनकी प्रतीक्षा कौन कर रहा है, तो हमें भरोसा है कि उन्हें किसी दुष्ट मनुष्य के बदले या प्रताड़ना का डर नहीं रहेगा। उनके लिए यह जानना सबसे जरूरी है। मेरी प्रिय भली आत्माएं, आप नीचे न गिरें, इस बात का भरोसा रखें कि ऐसे दुष्ट व्यक्तियों के हाथों मिलने वाला कष्ट, निम्नतर लोकों में मिलने वाले सैकड़ों सालों के कष्टों की तुलना में कहीं-कहीं बेहतर है।

हम दुष्ट या बुरी आत्माओं से निम्नतर लोकों के बारे में लिखी बातों को कई-कई बार पढ़ने का अनुरोध करते हैं। ऐसी अवस्था में कुछ दिनों तक रहना भी हंसी-खेल की बात नहीं है-तो फिर आप कैसे सैकड़ों सालों तक ऐसा ही जीवन जीएंगे? यदि आप अभी भी दुष्टता की राह पर ही चलना चाहते हैं, तो आपका स्वागत है-यह आपकी मूर्खता होगी, पर कृपया आप अपने साथ

दूसरों को नीचे न ले जाएं। यह तो और भी बुरा होता है, क्योंकि ऐसा कर आप निम्नतर में भी सबसे नीचले लोक में चले जाते हैं। अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के कारण दूसरों को कष्ट देना बिल्कुल गलत है। दुष्ट और बुरी आत्माओं को अब सुधरने की कोशिश करनी चाहिए, साथ ही उन्हें अपने गलत किए पर सच्चे मन से पछताना चाहिए, अन्यथा निम्नतम लोक का द्वार उनके लिए हमेशा ही खुला रहेगा।

आपकी दुनिया का कोई प्रसिद्ध व्यक्ति जीवात्मा जगत में भी उतनी ही प्रतिष्ठा पाए, यह ज़रूरी नहीं हैं। यहां, आपकी दुनिया के एक भिखारी को किसी राजा या प्रसिद्ध व्यक्ति से अधिक माना जा सकता है। **पृथ्वी पर मिली प्रसिद्धि का जीवात्मा जगत में कोई महत्व या मोल नहीं होता।**

हमें इस बात का भरोसा है कि सही मन से सोचने वाला कोई व्यक्ति इतना मूर्ख नहीं होगा कि वह पृथ्वी पर कुछ सालों की प्रसिद्धि पाने के लिए निम्नतर लोकों के भयानक अंधेरों में हजारों साल नर्क भोगने को तैयार होगा। अन्य आत्माओं को निम्नतर लोकों में घसीट लाने के बजाए, आपको उन्हें प्रगति करने में मदद करने कि कोशिश करनी चाहिए। यदि आप उन्हें नीचे गिराएंगे तो सबसे अधिक कष्ट आपको ही पहुंचेगा। जिस आत्मा को आप नीचे गिराएंगे, उसे तो कष्ट पहुंचेगा ही, पर वह आपसे कम कष्ट भोगेगी। तो यह आप पर निर्भर करता है कि आप हमारी सलाह और मार्गदर्शन पर ध्यान दें या उसे अनदेखा कर दें।

१२-०५-१९८१
अपने मन को नियंत्रित करें

आपके भौतिक शरीर के कारण पृथ्वी पर आपकी संवेदनाओं में कई तरीकों से गिरावट आ चुकी है। भौतिक शरीर आध्यात्मिकता में काफी बाधा पहुंचाता है, क्योंकि यह आपकी आत्मा और जीवात्मा जगत के बीच की दीवार होता है। यह सबसे बड़ी बाधा है और आपकी आत्मा के लिए कई समस्याएं पैदा करता हैं; इसकी वजह से आप ईर्ष्या, घृणा, बेइमानी, पाखंड, दिल तोड़ने, बदला लेने जैसे गलत काम अथवा रोग, पीड़ा और अपने शरीर की तकलीफ़ों से छुटकारा नहीं पा सकते। भौतिक शरीर एक कैद है और आपकी आत्मा कैदी। यह कैद इतनी मज़बूत होती है कि पृथ्वी पर रहने वाले किसी व्यक्ति के लिए इन सभी नकारात्मक भावनाओं से मुक्त होना बहुत कठिन होगा जबतक कि आप एक बहुत ऊँचे स्तर पर न पहुंच जाएं, क्योंकि तब आपका अवचेतन मन आम लोगों की तुलना में काफी ज्यादा जागृत होता है। यदि आपमें उच्चतर स्तर तक उठने की एक सच्ची इच्छा हो, तो आप अपने भौतिक मन पर काबू पा सकते हैं, और आप इसे गलत राह पकड़ने से रोक पाएंगे। **यदि आपमें गहरी इच्छा शक्ति है, तो आप बुरी भावनाओं पर नियन्त्रण कर सकते हैं और आप पाप नहीं करेंगे।**

शुरुआत में यह आसान नहीं होता, पर यदि आप एक बार ईश्वरीय राह पर चल पड़ेंगे, तो यह अपने आप ही हो जाएगा और आप कभी बुरी राह पर नहीं जाएंगे। प्यारे पाठकों, तो सबसे पहले आप अपनी बुरी भावनाओं पर हो सके उतना नियन्त्रण पाना सीखिए। जब आप इसमें सफल हो जाते हैं, तो यह काफी आसान हो जाता है और आप बुरे काम करने से नफ़रत करने लगेंगे। हो सकता है कभी-कभी आप पर बुरी भावनाएं हावी हो जाएं, पर आपको तुरंत ही इसका पता चल जाएगा एवं आप उसी समय अपने-आप पर नियंत्रण कर लेंगे। इसलिए शुरुआत में आपको बस बुरी भावनाओं को अपने नियंत्रण में रखने का कठिन प्रयास करना होता है।

क्योंकि जीवात्मा जगत में हमारा कोई भौतिक शरीर नहीं होता, इसलिए हम अपने मन को बहुत अच्छी तरह से काबू में रख सकते हैं। उच्चतर लोकों में हरेक आत्मा इस तरह की बुरी भावनाओं से मुक्त रहती है, और हम बीमार नहीं पड़ते, हमें दर्द या तकलीफ़ नहीं होती। पर यदि आप निम्नतर लोकों में जाएं, तो आपको घृणा, ईर्ष्या, प्रताड़ना, बदले की भावना जैसी बुरी भावनाओं से भरी जगह मिलेगी। इन लोकों की आत्माएं एक-दूसरे को इस तरीके से नुकसान पहुंचाती हैं कि कभी-कभी यह हमारी कल्पना से परे होता है। उनकी दुष्टता और बुरी इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती। दूसरों को नुकसान पहुंचाने में, खासकर अपने से कमजोर को हानि पहुंचाकर उन्हें आनंद मिलता है। कमजोर आत्माएं निम्नतर लोकों पर नर्क की यातना भोगती हैं। तो वहां

सैंकडों सालों तक जीने की जरा कल्पना कीजिए। कुछ भी करने से पहले आप सोच-समझ लें।

१३-०५-१९८१
जीवात्मा जगत में हमारी भावनाएं

हमारी भावनाएं भी वैसी ही होती हैं जैसी पृथ्वी पर आपकी होती हैं- वही प्यार, वही लगाव और वही दयालुता। लेकिन, हम अपने प्रियजनों को अधिक समग्रता और गहराई से चाहते हैं, चाहे वे जीवात्मा जगत में या फिर आपकी दुनिया में रहते हों।

क्योंकि हम अपराधबोध, घृणा और ईर्ष्या जैसे मनोभावों से मुक्त रहते हैं, इसलिए हमारा प्रेम शुद्ध और सच्चा होता है। हम अपने प्रियजनों को निःस्वार्थ भाव से, बिना बदले में कुछ पाने की चाह लिए प्रेम करते हैं। हम प्रेम केवल प्रेम के ख़ातिर करते हैं।

हमारे लिए सम्भोग का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। इसलिए, हमारा प्रेम शारीरिक नहीं बल्कि पूरी तरह आध्यात्मिक होता है और हमें सम्भोग अथवा बदले में कोई इनाम पाने की इच्छा नहीं होती। तो इस प्रकार, हम जिन्हें प्यार करते हैं, उनके प्रति हमारा प्यार सच्चा, गहरा, प्रमाणिक और मजबूत होता है। पृथ्वी के लोगों को हम आपकी तुलना में अधिक आसानी से क्षमा कर सकते हैं क्योंकि हमारे अन्दर कोई स्वार्थ की भावना नहीं होती। हम किसी से घृणा नहीं कर सकते-उच्चतर लोकों में तो इसका सवाल ही नहीं उठता।

हमें यहां ईर्ष्या का अनुभव नहीं होता, यहां तक कि तब भी नहीं जब हम किसी को स्वयं से काफी बढ़कर पाते हैं। ईर्ष्यालु होने के बजाए हम ऐसी श्रेष्ठ आत्माओं की प्रशंसा करते हैं और उनके जैसा बनने की कोशिश करते हैं। भौतिक शरीर छोड़ते ही हम अपने सभी कुविचारों से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन हमारी अच्छी भावनाएं हमारे साथ हमारे घर, यानि जीवात्मा जगत में आती हैं।

भौतिक शरीर को छोड़ने के बाद भी निम्नतर लोकों की आत्माएं पृथ्वी पर की अपनी सभी दुर्भावनाओं से चिपकी रहती हैं। अपने निम्नतम और अन्धकारमय लोकों में होने के लिए वे कभी-कभी ईश्वर को दोष देते हुए और अधिक नफरत, ईर्ष्या और बदले की भावना से भर जाती हैं।

जिमी की कहानी:
पृथ्वी पर लोग जैसे दिखते हैं वैसे होते नहीं

हम आपको अपने एक दोस्त जिमी अंकल (उनके सम्मान में हमने उनका नाम बदल दिया है) की सच्ची कहानी सुनाना चाहते हैं। पृथ्वी पर अपने समय में वह कमाल के वक्ता हुआ करते थे और बड़े आकर्षक व्यक्तित्व के थे। वह दुनिया को यह दिखाते थे कि वह बहुत भली आत्मा हैं और किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते। वे हमेशा हमें यह दिखाया करते थे कि उन्होंने बहुत से लोगों को खाना, कपड़े, रुपए-पैसे और रोज़गार देकर मदद की है। वह नियमित घंटों प्रार्थना करते थे। उनकी पत्नी और उनके बच्चे भी उन्हीं के जैसे थे। वह अपनी पत्नी के हमेशा गुणगान किया करते थे। वह सुन्दर थीं लेकिन बुद्धिमान नहीं। उनके बच्चे स्कूल में तोता रटंत पढ़ाई कर, पास होते थे। अपने बच्चों से उन्हें बड़ी उम्मीद थी और वे उनके बुद्धिमान होने की बड़ी प्रशंसा करते थे।

कहावत है जैसा बाप वैसा बेटा। उनके बच्चे उन्हीं के नक्शे कदम पर चलते थे और लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे। वे बहुत अमीर और प्रतिष्ठित थे, और बड़े लोकप्रिय भी। इसलिए, लोगों के लिए यह बात बिल्कुल तय थी कि वे सीधे स्वर्ग ही पहुंचेंगे। हमलोग उन्हें बड़ी अच्छी तरह जानते थे। जिमी अंकल की मृत्यु के समय हम पृथ्वी पर जीवित थे। हमने उनकी आत्मा के लिए प्रार्थना की और उनकी पत्नी और उनके बच्चों को यह कहकर ढाढस बंधाया कि उन्हें तो तत्काल ही स्वर्ग प्राप्त हुआ होगा।

हम भी कितने मूर्ख थे! पृथ्वी पर लोग किसी की सच्चाई जान ही नहीं पाते। जीवात्मा जगत में आने के कुछ ही समय बाद हमें जिमी अंकल की याद आई, सो हमने अपने लोक में उनकी तलाश शुरू कर दी (१९८१ में हम छठे लोक में थे) जब हम उन्हें नहीं ढूंढ सके तो हमें लगा कि उन जैसी भली आत्मा को जरूर सातवें सर्वोच्च लोक में होना चाहिए। क्योंकि हम उन्हें विस्मित करना चाहते थे, इसलिए हमने विचार शक्ति के जरिए उनसे संपर्क नहीं किया। लेकिन, जब छठे लोक में वे हमें न मिले तो हमने अपनी विचार शक्ति को सातवें लोक की ओर प्रक्षेपित किया और उन्हें पुकारकर कहा, “जिमी अंकल, हम यहां जीवात्मा जगत में हैं, कृपया छठे लोक में आकर हमसे मिलिए”। हमें कोई जवाब नहीं मिला।

रतू ने कहा, “विस्पी, वह जरूर सातवें लोक से भी ऊपर चले गए हैं क्योंकि वह बहुत बड़े धर्मात्मा थे।” इस पर मैंने कहा, “बिल्कुल, हो सकता है। हम अपनी उच्च भली आत्मा से पूछेंगे”।

जीवात्मा जगत में नए होने के कारण हमें उन्हें निम्नतर लोकों में जाकर ढूंढने का विचार नहीं

आया। हम उच्च भली आत्मा के पास गए और जिमी अंकल के बारे में पूछा। श्री उच्च भली आत्मा मुस्कुराए और बोले, “वह न तो छठे और न ही सातवें लोक में है। जब तुम लोग निम्नतर लोकों में जाओगे तो वहां उन्हें ढूंढने की कोशिश करना”।

हम सन्न रह गए। हमने कहा, “मान्यवर, यह तो असंभव है, वह बहुत ही भले मनुष्य थे, हमसे कहीं ज्यादा भले”। उन्होंने मुस्कुरा कर जवाब दिया, “हां, हां, मैंने सुना, लेकिन फिर भी जब मैं तुम्हें निम्नतर लोकों में किसी काम से भेजूं, तो तुम लोग उन्हें वहीं ढूंढना।

हमें बुरा लगा और हमारी इच्छा हुई कि श्री उच्च भली आत्मा को जिमी अंकल के बारे में बताएं– पृथ्वी पर किए गए उनके सत्कार्यों के बारे में बताएं, लेकिन हम चुप रहे क्योंकि श्री उच्च भली आत्मा हमसे बेहतर जानते थे।

कुछ देर बाद श्री उच्च भली आत्मा नें हमें बुलाया और कहा, “मैं तुम दोनों को अपने दोस्त जिमी अंकल की तलाश करने का अवसर दे रहा हूं। मैं तुम्हें एक काम दे रहा हूं। निम्नतर लोकों में जाओ, अपना काम पूरा करो और तब उन्हें ढूंढने की कोशिश करो”। निम्नतर लोकों में जाकर काम करने की बात से हम खुश हुए।

तीसरे लोक में अपना काम खत्म कर हमने जिमी अंकल को पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। हम खुश हुए, वापस अपने लोक में लौट आए और श्री उच्च भली आत्मा को हमने सबकुछ बताया।

श्री उच्च भली आत्मा हंस पड़े और उन्होंने कहा, “विस्पी और रतू, मैं चाहता हूं कि तुम लोग उन्हें ढूंढो ताकि तुम कुछ ऐसा सीख सको जो तुम्हारे बड़े काम आए। इसलिए मैं तुम दोनों को इसकी अनुमति देता हूं और तुम्हारी सुरक्षा की भी व्यवस्था करता हूं। अब दूसरे लोक में जाकर उन्हें ढूंढो और उनसे पूछो कि वे क्यों वहां हैं”।

हमें बड़ी हैरानी हुई और हम डर भी गए, क्योंकि कभी किसी काम से हम तीसरे लोक से नीचे नहीं गए थे। श्री उच्च भली आत्मा ने हमें अपनी सुरक्षा का भरोसा दिलाया और हमें नीचे भेज दिया।

सुरक्षा की व्यवस्था बहुत ही बढ़िया थी। कोई हमें देख नहीं सकता था और न ही हमें नुकसान पहुंचा सकता था। उस अंधेरे और डरावनी जगह में हम जिमी अंकल की तलाश करते रहे। आखिर वे हमें मिल गए। उन्हें वहां उस स्थिति में हताश और दु:खी पाकर हमारे मन को बड़ा झटका लगा। हम केवल उन्हें ही दिखाई पड़ रहे थे और हमें देखकर वे हैरान हुए। वे यह सोचकर बड़े शर्मिंदा थे कि वे हमारे सामने बहुत बुरी आत्मा साबित हुए। हम अपने आप को नहीं रोक पाए और पूछ बैठे, “आपने ऐसा क्या किया जिमी अंकल, कि आपको यहां आना पड़ा?” तब

उन्होंने हमें अपनी कहानी सुनाई। यह बहुत भयानक कहानी थी। यह बात एकदम से हैरान कर देने वाली थी कि जिमी अंकल जैसे व्यक्ति, जो इतने लोकप्रिय, बाहर से इतने भद्र और भले, वही अन्दर से बड़े ही बुरे और निम्नस्तर के मनुष्य थे।

१४-०५-१९८१
जिमी की कहानी, जारी: सर्वशक्तिमान ईश्वर को छला नहीं जा सकता

जिमी अंकल की कहानी बड़ी भयानक और अविश्वसनीय थी। हमें इस पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि जिमी अंकल हमेशा से हमारे आदर्श रहे थे। उन्होंने हमेशा धर्मार्थ संस्थाओं को दान दिया था, ग़रीबों की मदद की थी और एक प्यारे और दोस्ताना व्यक्ति थे। जिमी अंकल के अपने शब्दों में उनकी कहानी इस प्रकार है:

"मेरे प्यारे मित्रों, विस्पी और रतू, तुम्हें लगता था मैं बहुत भली आत्मा हूँ; तुम उन सब बातों पर विश्वास करते थे जो मैं दुनिया को दिखाया करता था। विश्वास तो खुद मैं भी करता था। मुझे यकीन था कि मेरे सारे भयंकर पापों को ईश्वर ने क्षमा कर दिया है, क्योंकि मैं अच्छे काम करता था और मुझे विश्वास था कि मुझे मरने पर स्वर्ग प्राप्त होगा। मैंने धर्मार्थ संस्थाओं को धन दिया और भलाई के काम किए यह सोचते हुए कि मुझे मेरे पापों की सजा नहीं मिलेगी, लेकिन मुझे वही मिला जिसके मैं लायक था। मैंने खुद को और पृथ्वी के लोगों को बेवक़ूफ़ बनाया लेकिन कोई ईश्वर को कैसे धोखा दे सकता है! ईश्वर कभी छले नहीं जा सकते"।

"मेरा जीवन एक बहुत ही भली और प्यारी सी महिला के बेटे के रूप में शुरू हुआ था। वह इतनी भली थीं कि उनके मन में कभी कोई बुरे विचार नहीं आते थे। मेरे पिता बुरे इंसान थे। वह मेरी मां को सताते थे और उसे ग़लत करने को मजबूर करते थे। वह बहुत ही स्वार्थी इंसान थे और हमारे प्रति उनका व्यवहार निर्दयी था। वह मेरी मां, मेरे भाइयों, मेरी बहनों और मुझे, हम सब को ग़लत काम करने के लिए मजबूर किया करते थे। मैं अपनी मां को दुःख से रोते हुए अक्सर देखता था। कई बार उसने हमसे कहा था कि वह सब कुछ ग़लत था और हम पाप कर रहे हैं।"

"मेरे पिता इन बातों का मज़ाक उड़ाते थे और मेरी मां को पागल कहते थे। एक समय ऐसा आया जब हम सभी भाई-बहन अपने दुष्ट पिता से इतने प्रभावित हुए कि हम अपनी मां को सचमुच पागल और बेवक़ूफ़ समझने लगे। वह चाहते थे कि हम अपनी भली और दयालु मां का सम्मान न करें और उसके प्रति हमारा प्यार समाप्त हो जाए"।

"मेरी मां अपने बच्चों को उनके पिता के रास्ते पर चलता देखकर बहुत दुःखी थी। एक दिन मेरी मां ने मुझसे कहा, 'जिमी मैं चाहती हूं कि तुम अपने पिता के बताए हुए काम न करो क्योंकि वे ग़लत हैं। तुम अपने भाई-बहनों में सबसे बड़े हो इसलिए मैं चाहती हूं कि तुम अपने भाई-बहनों

को ग़लत रास्ते पर जाने से बचाने में मेरी मदद करो।”

“मैं अपनी मां पर हंसा और बोला, ‘यदि तुम हम सबको सहन नहीं कर पाती तो क्यों नहीं पहाड़ से नीचे कूद जाती’? हम एक गहरी घाटी के पास एक कुटिया में रहते थे और खिड़की से मैंने उसे घाटी की एक गहरी खाई दिखाई और कहा, ‘तुम्हारे लिए ऐसी मौत ही बेहतर है। हमारे पिता एक होनहार और प्रतिभाशाली इंसान हैं। तुम उनकी पत्नी होने लायक ही नहीं हो। जाकर नदी में ही डूब मरो’!

“...मेरी मां ने बिल्कुल ऐसा ही किया।”

“अगली सुबह पुलिस आई। हमने अपनी मां के मृत शरीर को घर के पास नदी के किनारे पाया। मैं सन्न रह गया, लेकिन मैं अब भी उसे एक बेवक़ूफ़ और पागल महिला ही मान रहा था। मेरे विचार से वह कमजोर थी क्योंकि उसमें इतनी ताक़त नहीं थी कि वह आत्महत्या जैसा पाप करने से खुद को रोक सके। हमारे पिता अब बहुत खुश थे क्योंकि अब उनके कामों में दखल देने वाली मेरी मां नहीं रहीं थी”।

“अब हमें हमारे पिता बुरे से बुरा इंसान बनाने की शिक्षा देने लगे। वह बहुत बड़े चोर थे, लेकिन अपनी मां के मरने के बाद हमें यह पता चला, क्योंकि हमारे पिता से हम बहुत अधिक प्रभावित थे। हम सोचते थे कि हमारे लिए वे जितनी अच्छी-अच्छी चीजें लाया करते थे वह सब उन्हें उन लोगों द्वारा भेंट किया जाता था जिनकी वे मदद करते थे। उन्होंने हम सबको ऐसा ‘पाठ पढ़ा’ रखा था कि हमारा उनपर अटूट विश्वास था और हमने उनसे कभी कोई सवाल नहीं किया।”

“उन्होंने हमें लोगों को बहलाकर उन्हें ठगने और उनके सामान उड़ाने में पारंगत बनाया। उन्होंने हमें मीठी बोली बोलकर, भोली सूरत बनाकर और पवित्र धार्मिक चरित्र दिखाकर लोगों को ठगना सिखाया। दुनिया के लिए हम सभी कर्तव्यनिष्ठ, भले, दयालु और ईमानदार लोग थे लेकिन अन्दर से हम अपने पिता की तरह ही दुष्ट और शैतान थे।”

“ये सभी दुष्कर्म सिखाकर यहां तक कि यह भी सिखाकर कि कैसे बिना कोई सुराग छोड़े किसी की हत्या की जाए, पिता इन कामों से अलग होकर आराम का जीवन बिताने लगे। उनका कहना था कि चूंकि वही इस सब के प्रमुख थे इसलिए चोरी और लूट की कमाई पर उनका पहला अधिकार था।”

“उन्होंने हम सब को सिखाया कि कैसे बूढ़ी, विधवा और अकेली महिलाओं तक पहुंचें, उनका विश्वास और प्रेम जीतें, उन्हें इस्तमाल करें और उन्हें लूटकर निराशा और ग़रीबी भरा जीवन बिताने को मजबूर कर दें। बड़े गर्व के साथ वे बताया करते थे कि अनेक महिलाओं के साथ उन्होंने ऐसा किया था और पुलिस उन्हें कभी पकड़ नहीं पाई। यहाँ तक की उनपर कभी किसी

ने अंगुली भी नहीं उठाई। उनके ऐसे कारनामों के बारे में जानकर हम सोचते थे वह बड़े महान, बुद्धिमान और बहादुर थे। हमें लगता था हमें उन्हीं की मिसाल को लेकर आगे बढ़ना चाहिए"।

१५-०५-१९८१
जिमी की कहानी, जारी: ईश्वर हमेशा न्याय करते हैं।

"कुछ सालों तक, हम वही करते रहे जो हमारे पिता कहते थे। हम अपने दुष्ट पिता को पूजते रहे। वह हमें अन्धेरे नर्क की ओर ढकेलते रहे। उनसे प्रभावित होकर हम सचमुच ख़ुश थे। उन्होंने हमारे दिमाग को इस तरह अपने नियन्त्रण में कर रखा था कि हम सीधे-सीधे कुछ सोच ही नहीं पाते थे और न ही उन दिनों कभी हम यह जान पाए कि हमलोग कितने बड़े शैतान थे"।

"कुछ सालों की खुशहाली के बाद पिता को बुखार रहने लगा। डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा कि दरअसल उन्हें क्या हुआ था। फिर एक डॉक्टर ने उनके खून की जांच करवाने को कहा। उन्हें ब्लड शुगर था। हमसे उनके खान-पान पर कड़ी निगरानी रखने को कहा गया। अपने स्वास्थ को लेकर वे बड़े चौकस थे, इसलिए उन्होंने वह सब कुछ किया जो डॉक्टर ने बताया था। कुछ महीनों के बाद जब उनकी सेहत थोड़ी ठीक हुई तो वह अकेले ही कहीं बाहर निकल पड़े, लेकिन उनके साथ एक दुर्घटना हो गई। उनके दोनों पैर और एक हाथ काटना पड़ा। दूसरा कोई उपाय नहीं था"।

"ईश्वर ने न्याय करना शुरू कर दिया था, लेकिन मूर्खों की तरह हम अपने प्यारे पिता को कष्ट देने के लिए ईश्वर को कोसने लगे। कुछ दिनों बाद डॉक्टरों ने उनके फेफड़ों में कैंसर पाया। जैसे हम पहले ईश्वर को कोसते थे उसी तरह अब भी कोसने लगे, लेकिन अपने भयानक काम हमनें बंद नहीं किए। मेरी बहनें बीमार पिता की देखभाल करती थीं। उन्हें असहनीय दर्द होता था और वे बहुत कमजोर हो गए थे। इतने पर भी, मेरी बहनों को पिता लंबे कोड़े से इसलिए पीटते थे क्योंकि उनसे दर्द सहन नहीं होता था। अपने कष्टों के लिए पिता ने हम सब को दोष देना शुरू किया।"

"वे हम पर चिल्लाते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि हमने उनकी देखभाल नहीं की और हम बड़े स्वार्थी हैं। हमारे पुरोहित ने जब पिता की बीमारी और उनके असहनीय दर्द के बारे में सुना तो वे हमारे घर आए। पहले की तरह पिता ने उनका स्वागत किया और पूछा, 'मैं इतना कष्ट क्यों भोग रहा हूं जबकि मैंने किसी को कष्ट नहीं पहुंचाया और हमेशा अच्छे कर्म ही किए हैं?' पुरोहित को क्या पता कि मेरे पिता कितने बड़े दुष्ट थे। सो, उन्होंने ईश्वर से पिता के लिए प्रार्थना की और सर्वशक्तिमान ईश्वर से उन्हें ठीक कर पाने में मदद करने की विनती की। इसके बाद वह रोज शाम ५ बजे हमारे घर आते। हम सभी उनके आने की तैयारी करते और थोड़े समय के लिए नैतिकता से भरे भले आदमियों की तरह बर्ताव करते"।

“एक दिन, पुरोहित समय से जरा पहले पहुंच गए। घर में प्रवेश करते ही उन्होंने मेरे पिता को अत्यंत गंदी भाषा में मेरी बहनों पर चिल्लाते और अपने कष्टों के लिए उन्हें दोष देते सुना। उन्होंने यह भी कहा कि मरती हुई एक बूढ़ी औरत ने उन्हें बददुआ दी थी कि वे भयानक कष्ट भोगेंगे। बदले में पिता ने भी उस औरत और उन सब को बददुआ दी जिन्होंने उन्हें बददुआ दी थी।”

“यह सब सुनकर पुरोहित हैरान थे। वह मुड़े और बिना किसी को कुछ बताए दबे पांव वापस लौट गए। पुरोहित बुद्धिमान और धार्मिक आदमी थे। वे अच्छी तरह समझ गए कि मेरे पिता एक दुष्ट इंसान थे और जरूर उन्होंने अपने बच्चों, अर्थात् हमें भी भ्रष्ट किया होगा”।

१६-०५-१९८१
जिमी की कहानी, जारी: ईश्वर सबकुछ देख रहे हैं

"पुरोहित सचमुच एक बुद्धिमान और स्पष्टवादी व्यक्ति थे। उन्होंने एक पुलिस अधिकारी से बात की और उनसे कहा कि वह हमारे परिवार के बारे में सबकुछ पता करे। थोड़े ही दिनों में, पुलिस ने सबकुछ पता कर लिया। उन्होंने सारी जानकारियां हासिल कर लीं, लेकिन अभाग्यवश से उनके पास कोई सबूत नहीं था।"

"उन्हें सूझ नहीं रहा था कि क्या करें। इस बीच, मेरे पिता की हालत बिगड़ती जा रही थी। अब उन्हें सारे शरीर में असहनीय दर्द होने लगा था और उनकी डायबिटीज़ भी काफ़ी बढ़ गई थी। सारे शरीर में उनकी त्वचा पर फुंसियां निकलने लगी थी। उनका गुस्सा भी काफ़ी बढ़ गया था और उनकी हालत देखी नहीं जाती थी। जो कुछ भी उनके हाथ आता, वह फेंकने लगते थे और साथ ही हमें गालियां देते और कोसते थे।"

"पुरोहित इन सब के बारे में अच्छी तरह जानते थे क्योंकि उन्होंने बिना हमारी जानकारी के हमपर बड़ी गहराई से नज़र रखी थी। एक दिन, जब हम सब लोग घर पर थे, वह आए, क्योंकि उस दिन मेरे पिता की हालत बहुत खराब थी। हम सब पिता के कमरे में थे, इसलिए वह सीधे वहीं पहुंचे और उन्होंने धीरे से कहा, 'जरा इधर देखो, तुम सब एक चमत्कार देखोगे,' फिर उन्होंने पिता की ओर देखते हुए कहा,' शांत हो जाओ और इस चमत्कार को देखो।"

"उन्होंने कमरे में इधर-उधर पड़ी सारी चीजों को इकट्ठा किया जिन्हें पिता फेंक सकते थे, और हमसे उन सब चीजों को दूसरे कमरे में ले जाने का निर्देश दिया। हमने सारी चीजें उठाकर दूसरे कमरे में रख दी। हमने सोचा शायद पुरोहित पिता को जादुई तरीके से ठीक करेंगे"।

"उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि आसपास कोई ऐसी चीज न हो जिसे पिता उठाकर हमपर फेंक सकें। फिर उन्होंने हम सब को पिता के आस-पास बैठने को कहा। क्योंकि हमारे दिमाग में यह बात बैठी थी कि हमारे पिता को जादुई तरीके से ठीक किया जा रहा है, इसलिए हम बिल्कुल यह नहीं सोच सके कि पुरोहित हमें— जिन्होंने सालों तक कई लोगों को ठगा है, मूर्ख बनाकर एक अलग ही चमत्कार दिखाने वाले हैं।"

"हम अपने पिता के बिस्तर के चारों ओर बैठे थे और पुरोहित दरवाजे पर खड़े थे। उन्होंने उच्च स्वर में स्पष्ट उच्चारण के साथ अपनी प्रार्थना शुरू की। इसके बाद उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि वे उनकी मदद करें, ताकि वे हमारी मदद कर पाएं। फिर, वह रुके और पिता की दुष्टता और

क्रूरता की कहानी सुनाने लगे। इस पर पिता चिल्ला उठे। वह पुरोहित को गंदी भाषा में गालियां देने लगे। हमने उन्हें रोकने का असफल प्रयास किया। ठीक तभी हमने देखा कि पुरोहित के पीछे से हाथों में बंदूकें लिए पुलिस के कुछ जवान प्रकट हुए"।

"ईश्वर को दोष मत दो, बदमाशों। तुम जैसे निर्दयी के लिए यही सही सजा है। तुम्हें अपना फल मिल रहा है', पुरोहित ने कहा। भगवान ही जाने अपने घोर पापों के लिए तुम्हें नर्क में कितना कुछ और भोगना पड़े। सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ तुम छल नहीं कर सकते। तुमने अच्छी तरह से हम सब को धोखा दिया, यहां तक कि अपने बच्चों को भी। तुमने उन्हें भी अपनी तरह पापी बना डाला। तुम्हीं ने अपनी पत्नी की जिंदगी बर्बाद की और उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया। तुम उसे रास्ते से हटाना चाहते थे ताकि वह तुम्हारे बच्चों को अच्छा इंसान न बना सके और तुम्हारे पापों को लेकर झगड़ा न कर सके। तुमने पूरा ध्यान रखा कि हमें तुम्हारा कोई सबूत न मिले, लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर को किसी सबूत की जरूरत नहीं। यही उनका न्याय है।"

"सुनो बच्चों, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए अपने सारे ग़लत काम छोड़कर, पश्चाताप कर लो। हमेशा याद रखो कि सर्वशक्तिमान ईश्वर को सबूत की जरूरत नहीं होती। उनकी आंखों में कभी धूल नहीं झोंकी जा सकती और न ही कोई उनके न्याय से बच सकता है। इसलिए, समय रहते सही रास्ते पर वापस लौट आओ। प्यारे बच्चों, अपने पिता के बताए दुष्ट रास्ते छोड़कर ईश्वर की सच्ची राह पर लौट आओ। इससे पहले कि देर हो जाए सच्चे मन से पश्चाताप कर लो।"

"इसके बाद उन्होंने दरवाजा बन्द किया और बाहर चले गए। पिता के साथ-साथ हम सभी सन्न थे। लगभग एक घंटे बाद हमारे पिता सदमे से बाहर आए और बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने कहा, 'हां, ईश्वर, तुमने मुझे बिल्कुल योग्य सज़ा दी है। मैं इसी के लायक था। मुझे क्षमा कर देना प्रभु। मैं खुश हूं कि मेरा पापी जीवन अब बहुत जल्द खत्म हो जाएगा और मैं किसी का भी बुरा नहीं कर सकूंगा। हे ईश्वर, मुझे जल्दी मृत्यु दो।"

"इसके बाद वह बेहोश हो गए। यह सब इतना अचानक हुआ कि हम अवाक रह गए। पिता को फिर होश नहीं आया। दो दिन बाद वह गुज़र गए"।

"हमारी प्रतिक्रिया अजीब थी- ईश्वर के न्याय को स्वीकारने की बजाए हम उन्हें और भी दोष देने लगे। हम एक दूसरे से नफरत करने लगे और एक दूसरे पर शक करने लगे। मेरा सबसे छोटा भाई बिना कुछ साथ लिए घर छोड़कर चला गया। इसके बाद सारे रुपए-पैसे और गहने लेकर मैं निकल गया। ये सारे रुपए-पैसे और गहने पिता ने गुप्त स्थान पर छिपा कर रखने को मुझे दिए थे क्योंकि मैं उनका सबसे बड़ा और लाडला बेटा था। फिर, मुझे नहीं मालूम मेरे बाकी भाइयों और बहनों का क्या हुआ"।

“मैंने अपना नाम बदला और सारी दौलत लेकर मुम्बई चला आया। मैंने एक पैसा [८] भी अपने भाई बहनों के लिए नहीं छोड़ा। एक बहुत अमीर आदमी की तरह मैं मुम्बई पहुंचा जहां तुम सब लोग मेरी बड़ी इज़्जत करते थे। मैंने एक बहुत खूबसूरत लड़की से शादी की लेकिन मैंने इस बात का पूरा ख़याल रखा था कि लड़की सुन्दर हो लेकिन पूरी तरह बेवकूफ, ताकि मैं अपनी योजनाएं बिना किसी बाधा के पूरी कर सकूँ। मैं बिल्कुल नहीं सुधर पाया जबकि पुरोहित ने मुझे इसके लिए प्रेरित किया था”।

“मुंबई में मैं गुप्त तरीके से और कभी-कभार अपने दुष्ट कार्य करता, जिससे किसी को इस बात का पता न चले। मेरे परिवार को कभी पता नहीं चला कि मैं क्या करता था। यहां मैं बहुत इज़्ज़तदार, अमीर और सीधा-साधा आदमी बनकर रहता था, लेकिन ज्यों ही अपने बुरे धंधों के लिए मुम्बई से बाहर जाता अपने असली चेहरे में लौट आता। कोई सपने में भी सोच नहीं सकता था कि वह अमीर, इज़्ज़तदार, ईमानदार और दयालु जिमी दरअसल ऐसा दृष्ट इंसान था”।

“यही मेरी कहानी है। अब तुम जान गए कि मैं क्यों इस कष्ट से भरी, अन्धेरी मनहूस जगह में हूं। मैंने सारे दान-पुण्य और भलाई यह सोचकर किए कि इससे मेरे पाप धुलेंगे। मुझे यकीन था कि मैं स्वर्ग ही जाउंगा, लेकिन ईश्वर की आंखों में कोई धूल नहीं झोंक सकता। आज इसीलिए मैं यहां हूं”।

१७-०५-१९८१
पृथ्वी एक पाठशाला है

जीवात्मा जगत में हम जानते हैं कि पृथ्वी के लोग आपस में उतने प्यार से नहीं रह सकते, जितने कि हम यहाँ रहते हैं। आपको भली और दुष्ट आत्माओं के साथ रहना पड़ता है, इसलिए वहां किसी प्रकार का मेल-मिलाप नहीं रह सकता; और यह बात हम अच्छी तरह से समझते हैं। इसलिए शायद आप यह कहें कि चलो हम अपनी तरह की आत्माओं के साथ रहें और बुरी आत्माओं की अनदेखा कर दें।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ऐसा नहीं चाहते हैं। वे चाहते हैं कि आप उन लोगों की मदद करें जो मुश्किलों में फंसे होते हैं। वे चाहते हैं कि आप बुराइयों से लड़ें और धरती की दुनिया में सुधार लाएं। वे चाहते हैं कि आप उन आत्माओं तक पहुंचें जो कभी अच्छी हुआ करती थीं और कभी उच्चतर स्तर पर रहा करती थीं, लेकिन पृथ्वी के बुरे प्रभावों के कारण अब गिर चुकी हैं। आप उन्हें यह समझाएं, कि उन्हें अच्छी राह नहीं छोड़नी चाहिए, बल्कि उन्हें हमेशा सही रास्ते पर ही चलना चाहिए।

सर्वशक्तिमान ईश्वर चाहते हैं कि आप उनकी तरफ से काम करें और अपनी पृथ्वी को एक सुन्दर और प्यारी जगह बनाए रखें। वे यह नहीं चाहते कि आप दुष्ट या बुरी आत्माओं से दूर भागकर अच्छी आत्माओं के बीच हाथ पर हाथ धरे चुपचाप बैठे रहें और अपने बहुमूल्य समय को नष्ट करें। हम इसे 'बहुमूल्य' इसलिए कहते हैं कयोंकि पृथ्वी पर आपका जीवन बहुत छोटा होता है। पर जीवात्मा जगत में आत्माएं लंबे समय तक जीवन जीती हैं।

हमेशा याद रखें कि आप अपने समय को बरबाद न करें। पृथ्वी पर आपको कुछ विशेष कार्य के लिए, प्रशिक्षण के लिए, अनुभव जमा करने के लिए और कर्मों के फल प्राप्त करने के लिए भेजा गया है, इसलिए अपना समय पूरा होने से पहले उन कार्यों को पूरा करें जिनके लिए आप वहां गए हैं। अन्यथा उसी काम के लिए आपको फिर से जन्म लेना पड़ेगा और आपकी एक और जीवन-अवधि बेकार चली जाएगी अथवा आपका वर्तमान जीवन दु:ख-दर्द से भरे एक बीमार-लाचार भौतिक शरीर में जारी रहेगा, जो आपके कर्म के लिए आवश्यक समय से कहीं ज्यादा लंबा समय होगा। इसलिए बहुमूल्य समय को बरबाद न करें, अपना काम जल्द पूरा कर लें। तो हो सकता है कि आपका समय पूरा होने से पहले ही आप लौट आएं (आप कभी नहीं जान पाएंगे कि आपका समय कब पूरा हो रहा है। केवल आपका अवचेतन मन ही यह जान पाएगा।)

सर्वशक्तिमान ईश्वर चाहते हैं कि पृथ्वी पर आप बुरी और हाल ही में गिरी हुई आत्माओं को सुधारें और नि:स्वार्थ रूप से जरूरतमन्दों तथा मुश्किल में पड़े लोगों की मदद करें। ये ही मुख्य

कारण हैं पृथ्वी पर आपके होने के। इसलिए आप अपने कर्तव्यों का पालन करें ताकि बाद में आपको अफसोस न हो।

पुनर्जन्म का उद्देश्य

उच्च स्तरों की बहुत सी आत्माएं पृथ्वी पर तीन कारणों से जन्म लेती हैं:
१. अपने प्रियजनों की सुरक्षा और मदद के लिए।
२. पिछले जन्म के बाकी पड़े कर्मों को पूरा करने के लिए।
३. अपना आध्यात्मिक जीवन कार्य संपन्न करने के लिए।

बुरी आत्माओं को पृथ्वी पर कर्मों का फल भोगने के लिए भेजा जाता है। इसके पीछे का तात्पर्य यह है कि वे इस सजा को बहादुरी और हंसी-खुशी से व्यतीत करें, केवल तभी आप सुधर पाएंगे और ऊंचे लोकों की ओर उठ पाएंगे। आत्माओं को उनके दुष्ट कामों को बदलने का मौका देने, पश्चाताप करने, सुधरने और ऊंचा उठने के लिए पृथ्वी पर भेजा जाता है। भले ही फिर यह छोटे अंश से क्यों न हो।

पृथ्वी पर आपके अस्तित्व के यही मुख्य कारण हैं। **सबसे महत्वपूर्ण कारण है अपनी आत्मा का शुद्धीकरण करना और ऊंचे स्तर पर प्रगति करना।**

पृथ्वी एक प्रशिक्षण केन्द्र है जहां बुरी आत्माओं को अच्छी बनना चाहिए, अच्छी आत्माओं को और भी अच्छा बनना चाहिए और दुष्टात्माओं को अपनी दुष्टता छोड़कर, अच्छे और ईश्वरीय कर्मों को अपनाकर सुधार की ओर बढ़ना चाहिए। लेकिन इन दिनों धरती पर बुरी आत्माएं और भी बुरी हो रही हैं, भली आत्माएं बुरी हो रही हैं और दुष्टता बड़े पैमाने पर फैल रही हैं। हम जीवात्माएं इसके बारे में बहुत बुरा महसूस करती हैं।

१८-०५-१९८१
एक भली आत्मा की कहानी जिसे एक दुष्टात्मा ने बहका दिया

जीवात्मा जगत में हम नए आने वालों के लिए अभिभावकों के रूप में भी काम करते हैं, अथवा कभी-कभी श्री सर्वोच्च भली आत्मा हमें निम्नतर लोकों में भेजती हैं यदि किसी ऐसी आत्मा की आपात पुकार हमें सुनाई पड़ती है जो सच्चे मन से पश्चाताप करना चाहती है और ऊंचा उठना चाहती है। हम उस आत्मा का मार्गदर्शन करते हैं कि उन्होंने खुद को सुधारने और ऊंचा उठाने के लिए अपनी सजा सर्वोत्तम तरीके से कैसे स्वीकार करनी चाहिए। हमारी तरह दूसरे भी अनेक मददगार हैं और हर रोज, हर मददगार को ऐसे किस्सों का बोध होता है।

अपने काम के चलते हमें अनेक दु:खी आत्माओं से निम्न लोकों में मिलना पड़ता है जिन्हें इस बात का आश्चर्य होता है कि कैसे वे अन्धेरे निम्न लोकों में पहुंचे। कभी-कभी हमें उन्हें समझाने में बहुत मुश्किल होती है।

हम आपको एक ऐसी ही कहानी सुनाएंगे। एक बार एक बहुत ही आपात पुकार सुनने पर हमें श्री सर्वोच्च भली आत्मा ने निम्न लोक में भेजा। वहां हमने देखा कि एक महिला सचमुच बहुत ही दयनीय हालत में पड़ी है। इसलिए, हमने कहा, “हम आपकी पुकार का उत्तर देने आए हैं।” उन्होंने हमारी और देखा ओर कहा, “क्या यह संभव है कि कोई मेरी मदद कर सके?”

“जी हां, मैडम, हम यहां आपकी मदद करने ही आए हैं।”

उन्होंने कहा, “नहीं, नहीं, मेरी मदद कोई नहीं कर सकता। कुछ नहीं हो सकता। चले जाइए।”

“मैडम, प्लीज़ हमारा साथ दें और आप बहुत अच्छा महसूस करेंगी। हम आपकी मदद करने में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे,” हमने उन्हें आश्वस्त करना चाहा।

क्योंकि वह उस अंधेरी और भयानक जगह में नहीं रह पा रही थी, उन्होंने चिल्लाकर कहा, “ईश्वर, दया कर मेरी मदद करें,” लेकिन ईश्वर के बजाए हम उसकी मदद को पहुंचे थे इसलिए वह निराश थी।

“मैं आपके साथ सहयोग करूंगी,” उन्होंने कहा, “यदि आप मुझे सताने वाली इन भयानक आत्माओं से भरी हुई इस डरावनी जगह से बाहर ले चलें तो आप जो भी कहेंगे मैं करूंगी।”

हमने कहा, "आप एक भली आत्मा दिखती हैं, तो फिर ऐसा क्या था कि आपने इतना बड़ा पाप किया कि आपको इस अन्धेरे लोक में आना पड़ा?"

"हां, आप ठीक कहते हैं। मैं एक भली आत्मा थी, जो दुर्भाग्य से एक दुष्ट आत्मा से प्रेम कर बैठी और इसी कारण मुझे यहां आना पड़ा।"

उन्होंने अपनी कहानी शुरू की और हमसे आग्रह किया कि हम यह सुनने पर उनसे नफरत न करें या उन्हें छोड़कर चले न जाएं।

"हम आपसे कभी नफरत नहीं कर सकते, बल्कि हम आपकी मदद करने की कोशिश करेंगे। इसीलिए तो हम यहां आए हैं।"

"मैं १९ साल की थी और अपने माता-पिता और भाई के साथ गांव में खुशहाल रहती थी। स्कूल की पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद मेरा सपना डॉक्टर बनने का था, इसलिए मैंने अपने माता-पिता से आग्रह किया कि मुझे युनिवर्सिटी पढ़ाई के लिए शहर भेज दिया जाए। मेरे लिए यह दुर्भाग्य ही था कि माता-पिता ने मेरी जिद मान ली। मैं शहर गई और उम्मीदों के साथ, हंसी-खुशी और मस्ती के साथ मैं कॉलेज में पढ़ने लगी। मैं एक सुन्दर और शर्मीली लड़की थी। बहुत से लड़के मेरी ओर आकर्षित हुए लेकिन मैंने उनमें से किसी को प्रोत्साहन नहीं दिया। आख़िरकार मुझे बहुत ही सुन्दर और निर्दयी लड़के से प्रेम हो गया। पहले तो, उसने मुझे टालने की कोशिश की इसलिए बेवक़ूफ़ों की तरह, मैं उसकी ओर और आकर्षित हुई। मैं और भी अधिक उसके पीछे पड़ गई और मैं पागलों की तरह उससे प्रेम करने लगी और हमेशा चाहती थी कि उसी के पास रहूं।"

"मुझे पता था कि वह निर्दयी है और मैंने उसे अपना अभ्यास लिखवाने और अपना काम करवाने के लिए लड़कियों पर धौंस जमाते देखा था। मेरे मन में उन लड़कियों के लिए ईर्ष्या पैदा हुई और मैंने उस लड़के से कहा कि मुझे उसका अभ्यास लिखने और उसके सारे काम करने में खुशी होगी। मैं उसकी ग़ुलाम बन गई। मूर्खों की तरह, मैं अपनी इच्छा से नर्क में कूद पड़ी थी। वह बस एक शब्द कहता और मैं उसका काम कर देती। फैसला करने की मैंने अपनी क्षमता खो दी थी। अब भी, मैं हैरान हूं कि मैंने ऐसा होने कैसे दिया। वह मुझसे जो भी कहता था मैं करती थी। मैं उसके लिए ड्रग्स बेचती थी, यहां तक कि उसकी ऐय्याशी के लिए लड़कियां लाती थी। मुझे सोचकर अजीब लगता है कि ऐसा क्या था जिस कारण मैं उसके लिए एक यंत्र की तरह काम करती थी – बस उसका एक हुक्म और मैं चल पड़ती थी उसे पूरा करने और कुछ भी ऐसा करने जिससे वह ख़ुश हो।"

"यह जानने के बाद भी कि वह दुष्ट था और मैं ग़लत राह पर चल निकली थी, मैं उसकी ग़ुलाम बनी रही। बैंक में क्लर्क की नौकरी करने के लिए मैंने कॉलेज छोड़ दिया। मेरे माता-पिता नाराज

हुए। उन्होंने मुझसे खूब अनुनय-विनय किया, मुझे समझाया कि मैं उस लड़के को छोड़कर अपनी पढ़ाई जारी रखूं या फिर गांव लौटकर उनके साथ रहूं। लेकिन, मैं नहीं मानी और उस दुष्ट की ग़ुलामी करती रही।"

"मेरे लिए बस इतना ही काफ़ी था कि वह मेरी सेवाओं के बदले कभी-कभार मुझे बाहों में भरे और मुझसे प्रेम करे। मुझे अब भी आश्चर्य होता है कि मैं इतनी पागल क्यों थी। यह जानते हुए भी कि वह एक दुष्ट लड़का था, उसके लिए मैं पूरी तरह पागल थी। वह ड्रग्स के धंधे करता था, लड़कियों पर बलात्कार करता था, इसके बावजूद मैं उसका कहा मानने से खुदको रोक नहीं पाती थी। मैं मूर्ख थी और मुझे यह ज्ञान नहीं हुआ कि वह मेरी ज़िंदगी बरबाद कर रहा था।"

"एक दिन, उसने मुझसे एक बहुत ही अमीर लड़की की सहेली बनने को कहा जो देखने में बिल्कुल भी सुन्दर नहीं थी। उसने ऐसा पहले भी कई बार किया था। मैं किसी लड़की की सहेली बनती और मेरे जरिए वह उस लड़की की जिन्दगी में प्रवेश करता, उसे अपने प्यार के जाल में फंसाकर उसका इस्तेमाल करता और उसके पैसे ठगकर उसे छोड़ देता। इस लड़की से दोस्ती गांठने में मुझे बिल्कुल भी समय नहीं लगा। जल्द ही, मैंने अपने परिवार के बहुत ही सम्मानित, अमीर और गांव के ऊंचे समाज से संबंध रखने वाले दोस्त के रूप में उस लड़के का परिचय उससे करवाया। यह सब कुछ उसी तरह हुआ जैसा आमतौर पर पहले हुआ करता था, लेकिन एक दिन, अपनी दोस्ती के कुछ ही समय बाद दोनों ने शादी कर ली। मुझे सदमा लगा, लेकिन मैं अब भी उसके जबरदस्त प्रभाव में थी। इसलिए, मैं उसकी ग़ुलाम बनी रही और वह जो कुछ भी कहता, वह करती रही।"

"आश्चर्य होता है, मैं उससे इतना प्रभावित क्यों थी। क्या उसने मुझपर सम्मोहन जादू कर रखा था? यह जानते हुए भी कि वह दुष्ट था और यह भी, कि मैं ग़लत कर रही थी, मैं क्यों उसका हर कहा मानती थी? जब उसने उस लड़की से शादी की तो मुझे बहुत ही दुःख हुआ। वह लड़की बहुत ही अमीर थी और उसके विधुर पिता उससे भी अमीर थे। अब इस लड़के ने मुझसे कहा कि मैं उस लड़की के पिता से दोस्ती करूं और उसे अपने प्रेम जाल में फसाऊं। मैंने ऐसा ही किया। उसका अगला हुक्म था कि मैं उस आदमी से शादी करूं। क्योंकि मैं ख़ूबसूरत थी, वह विधुर बड़ी आसानी से मेरे जाल में फंस गया और मैंने उससे शादी कर ली, बावजूद इसके कि मैं ऐसा चाहती नहीं थी। उस दुष्ट ने सारी योजना इस सफाई से बनाई थी कि उसपर किसी को भी संदेह नहीं हुआ।"

"जल्द ही, उसने मुझसे कहा कि मैं अपने बुज़ुर्ग और अमीर पति की हत्या कर दूं। मैंने इनकार किया, तो उसने मुझे धमकी दी कि ड्रग्स बेचने के मामले में वह पुलिस को मेरे खिलाफ़ सबूत देकर मुझे जेल भिजवा देगा। मैं रोई, गिड़गिड़ाई और उससे विनती की कि वह मुझे छोड़ दे, मुझसे ऐसे काम न करवाए क्योंकि हत्या करना मेरे बस की बात न थी। लेकिन, उस पत्थर-दिल इंसान पर कोई असर नहीं हुआ और वह मुझे ऐसे-ऐसे फ़ोटो और सबूत दिखाने लगा जो मुझे

जेल भेजने के लिए काफ़ी थे। तब मुझे आभास हुआ कि मैं कितनी बड़ी बेवकूफ़ थी जो उसका कहा मानती रही। मैं कितनी बड़ी मूर्ख थी कि उस जैसे पापी से इस उम्मीद में प्यार करती रही कि एक दिन उसको भी मुझसे प्यार होगा और वह मुझसे शादी करेगा।"

"आख़िरकार, वह मुझसे मेरे पति की हत्या करवाने में सफल हो गया और मैं अब एक अमीर विधवा थी। मेरे पति की आधी जायदाद मेरे नाम पर थी और आधी की मालकिन उसकी बेटी थी। मुझे समझ में नहीं आ रहा था क्या करूं क्योंकि वह मुझे नर्क में घसीटता जा रहा था। हत्या करना मेरे बस की बात नहीं थी, और अब अपने पति की मौत के बाद न मैं सो पाती थी, न खा पाती थी। अपने पति की जायदाद का अधिकांश हिस्सा उसकी बेटी के लिए छोड़कर, उसमें से थोड़े से पैसे लेकर, मैं किसी ऐसी जगह भाग जाना चाहती थी जहां मुझे वह लड़का न ढूंढ सके। लेकिन इससे पहले कि मेरी योजना कामयाब होती, उसने मुझसे कहा कि मैं उसकी पत्नी की हत्या कर दूं। मैं सन्न रह गई।"

"मैं फिर रोई, गिड़गिड़ाई, उससे विनती की, क्योंकि अब यह मेरे लिए असह्य हो रहा था। मैंने उससे भीख मांगी कि वह मुझे आज़ाद कर दे, लेकिन उसके हृदय पर कोई असर नहीं हुआ। इस सब के दौरान, इन सारे जघन्य कार्यों की योजना उसने इस तरह बनाई थी कि सारे सबूत मेरे खिलाफ़ इशारा करते थे। उस पर कोई आंच आने वाली नहीं थी।"

"यह कहते हुए कि वह यह भी साबित कर सकता है कि मैंने अपने पति की हत्या की है, वह फ़ोन उठाकर पुलिस को बुलाने लगा। बचने का कोई रास्ता नहीं था। मुझे महसूस हुआ कि मैंने उसे अंधा प्यार किया और उसने जो कहा सो किया। मैं जान गई कि मैं कितनी गहराई से फंस चुकी थी और कितने बड़े धोखे का शिकार बनी थी। अब, कोई रास्ता नहीं था। मुझे पुलिस के सामने स्वीकारना पड़ेगा कि मैंने अपने पति की हत्या की थी। अपनी सौतेली बेटी की हत्या करने से यह ज्यादा अच्छा था। मैंने उससे कहा कि मैं उसे मारने को तैयार हूं, और वह पुलिस को फ़ोन न करे। अन्दर ही अन्दर, मैंने सुबह सीधे पुलिस के पास जाकर अपने सारे ज़ुर्म कबूल करने का मन बना लिया था। वह बोला, 'ठीक है, मेरी योजना के अनुसार कल उसकी हत्या करना'। पुलिस से क्या-क्या कहना है, मैं यह सोचने में परेशान थी, इसलिए मैंने उसकी बात का जवाब नहीं दिया। इसपर उसने पूछा, 'क्या सोच रही हो? यदि तुम्हारे पास दिमाग है भी तो तुम्हें उसका उपयोग करने की ज़रूरत नहीं। तुम बस वही करो जो तुमसे कहा जाए'। इसके बाद वह चला गया।"

"उस रात, उसने अपनी पत्नी को मार डाला और किसी तरह पुलिस के सामने यह साबित कर दिया कि मैंने ही उसे और अपने पति को मारा है, क्योंकि उसे यह शक हो गया था कि मैं अब उसकी ग़ुलाम नहीं रही। उसने अन्दाजा लगा लिया था कि मैं उससे असहमत थी और हो सकता है कि मैं कुछ ऐसा कर दूं जो उसकी योजना के खिलाफ़ हो। इसलिए, उसने मुझे इस तरह उलझाया कि ऐसे सबूत बनें जिससे मुझे हत्यारिन साबित किया जा सके।"

“बजाए इसके कि मैं पुलिस के पास जाती, ठीक अगली सुबह पुलिस मेरे घर आई और मुझे गिरफ़्तार कर ले गई। मुकदमें के दौरान मुझे जेल से अदालत लाया गया और मुझे छठी मंजिल से कूदकर खुदकुशी करने का मौका मिल गया।”

“अब तो आप जान गए कि मैं यहां क्यों हूं। मेरी कहानी सुनकर क्या यह संभव है कि आप मेरी मदद करें? मेहरबानी करके, भगवान के लिए मुझसे नफ़रत मत कीजिए।”

हमने कहा, “नहीं, हम आपसे नफ़रत नहीं करते, लेकिन बताइए क्या आप सच्चे मन से पश्चाताप करती हैं?”

यह सवाल जरूरी नहीं था क्योंकि हम अच्छी तरह जानते थे कि उसे सच्चा पश्चाताप था, लेकिन हम उसे सीधे उच्चतर लोक में नहीं ले जा सकते थे। हमें वहां भेजा गया था ताकि हम उसे पश्चाताप करने में मदद कर सकें, परंतु हमने देखा कि वह तो सच्चे मन से पश्चाताप कर रही थीं।

उन्होंने कहा, “हां, बिल्कुल, लेकिन क्या बहुत देर हो चुकी है? क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?”

हमने उसे वह राह दिखाई जिस पर चलकर वह चौथे लोक तक पहुंच सकती थी, लेकिन इसकी प्रक्रिया, बेशक, बहुत धीमी थी। अब हमारे मार्गदर्शन से वह धीरे-धीरे प्रगति करने लगी हैं।

१९-०५-१९८१
अवचेतन मन प्रसुप्त हो सकता है

हम जीवात्माओं के सामने कई प्रकार की अजीबोग़रीब कहानियां आती हैं। हम आपको ऐसी बहुत सी कहानियां सुनाना चाहेंगे, लेकिन अगर सुनाने लगें तो उनसे कई किताबें भर जाएंगी। इसलिए हमने ऐसी कुछ कहानियां चुनी हैं जो आपकी दुनिया में रहने वाले लोगों की प्रकृति को दर्शाती हैं। आपको ऐसे लोगों द्वारा मूर्ख बनाए जाने और उनकी पापी योजनाओं में खुद को शामिल न करने को लेकर सावधान रहना चाहिए। साथ ही, इस बात का ध्यान रखिए कि पृथ्वी पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति के प्रति आपकी अंधश्रद्धा न हो। इन्हीं कारणों से हम चाहते हैं कि आप इनमें से कुछ सच्ची कहानियों को पढ़ें।

आपको इस बात के प्रति भी जागरूक रहना चाहिए कि यदि आप यह सोचते हैं कि अन्दर से पापी और बाहर से अच्छे दिखने का ढोंग कर के आप सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ छल कर सकते हैं, तो यह आपकी भूल है। याद रखिए कि ईश्वर सबके प्रति न्याय करते हैं, तो फिर क्या यह अजीब नहीं कि लोग फिर भी दुष्ट रास्तों पर चलना जारी रखते हैं?

हमें अकसर हैरानी होती है कि मनुष्य की अंतरात्मा उसे क्यों नहीं रोकती? हम देखते हैं बहुत से दुष्ट लोग बड़े-बड़े दुष्कर्म करते हैं और दुनिया को यह भरोसा दिलाते हैं कि वे बिल्कुल निर्दोष हैं। उनकी अंतरात्मा पर किसी बात का असर नहीं पड़ता। आपको जरूर हैरानी होती होगी कि ऐसा होता किस तरह है। हम समझाते हैं।

जब आप मासूम बच्चे होते हैं तब आपकी अंतरात्मा अथवा अवचेतन मन आपको मार्गदर्शन देने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होता है। **जब आप बुरे प्रभावों के कारण अथवा किसी बुरे व्यक्ति द्वारा सिखाए जाने पर ग़लत कामों में लिप्त होने लगते हैं, तब आपका अवचेतन मन कठोर होकर निष्क्रिय होने लगता है, मौन पड़ जाता है, निद्रा में चला जाता है अथवा सुप्त हो जाता है।**

आपका अवचेतन मन कभी भी आपको बुरी चीजें करने की अनुमति नहीं देता, लेकिन आप (आपका चेतन अथवा भौतिक मन) आपके अवचेतन मन का अनुसरण करने या उसकी बात सुनने से इनकार कर देता है और आप दुष्ट रास्तों पर बढ़ते रहते हैं। आपका अवचेतन मन इसे सहन नहीं कर पाता और इसलिए यह सुप्त हो जाता है और आपके बुरे कामों अथवा बुरी आदतों में दख़ल नहीं देता।

मान लीजिए, आप छठे या सातवें जैसे किसी उच्चतर लोक में हैं, तो आपका अवचेतन मन कभी भी आपको एक सीमा के आगे गलत करने नहीं देगा। ज्यों ही आप एक सीमा से बाहर जाने लगते हैं, यह आपको इसकी जानकारी देता है और यदि आप इसका कहा नहीं सुनते (अर्थात् यदि आप खुद में सुधार नहीं लाते), तो अवचेतन मन सर्वशक्तिमान ईश्वर से आपको जीवात्मा जगत में लौटने की अनुमति के लिए विनती करता है। छठे और सातवें लोक की आत्माएं कभी भी पहले, दूसरे या तीसरे लोक में नहीं जातीं। इसका अर्थ है कि वे एक सीमा तक ही गलत कर सकतीं है, उससे आगे कभी नहीं। छठे अथवा सातवें लोकों की आत्माओं के अवचेतन मन सतर्क होते हैं जिससे वे कभी भी यथाक्रम चौथे अथवा पांचवे लोक से नीचे नहीं जा सकतीं (छठे लोक में पैदा हुई आत्मा केवल चौथे लोक तक ही नीचे आ सकती हैं और सातवें लोक की आत्मा गिरकर केवल पांचवें लोक तक जा सकती हैं)। परंतु पांचवें अथवा उससे नीचे के लोकों की आत्माओं के लिए यह बहुत ही अधिक जोखिम भरा होता है, क्योंकि वे पृथ्वी पर अपने एक ही जन्म में गिरकर प्रथम लोक तक जा सकती हैं।

इसलिए यह उनके लिए बहुत ही अधिक खतरनाक होता है यदि वे अपने अवचेतन मन की बात न सुने और उसे सुप्त हो जाने दें। पहले तो, आपका अवचेतन मन आपको ग़लत करने से रोकने का भरपूर प्रयत्न करता है, लेकिन एक सीमा के बाद यह अरूचित होकर तब तक के लिए सुप्त हो जाता है जब तक कि आप अपने दुष्ट जीवन से बाहर नहीं निकल आते।

जब अगली बार कोई कुछ ग़लत करे तो इस पर यह कहकर हैरान होने की कोई बात नहीं, कि “क्या उसके पास अंतरात्मा नहीं है?” आपको जवाब मालूम होगा कि उस व्यक्ति का अवचेतन मन सोया हुआ है या निष्क्रिय है। मैं इसे फिर से कहूंगाः पांचवें अथवा उससे नीचे के लोकों की आत्माओं की यह समस्या है। यह समस्या ऐसी है कि आपके जीवन को सैकड़ों वर्षों तक बरबाद कर सकती है और आपको भयानक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

क्या यह अच्छा नहीं होगा कि आप अपनी अंतरात्मा के खिलाफ़ ही न जाएं। आप कह सकते हैं, “दो या तीन बार तक ठीक है,” लेकिन हम यह यकीन से कह सकते हैं कि वह दो या तीन बार आपको छः या आठ बार की ओर ले जा सकता है और इसके बाद तो बहुत देर हो जाती है। हम इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट हैं और हम चाहते हैं कि आप भी इन चीजों को समझ लें ताकि यदि आपका पतन हो भी गया, तो आपको ऊपर उठाया जा सके।

यदि आपका अवचेतन मन वर्तमान में सुप्त है और आप ग़लत काम कर रहे हों तो, हमें यकीन है कि आपमें इतनी बुद्धिमानी जरूर है कि आप सही और ग़लत की पहचान कर सकें। ग़लत रास्ते पर चलना बन्द कीजिए। सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आपके सोए हुए अवचेतन मन को एकाग्रता और ध्यान के जरिए जगाने में आपकी मदद करें। [९]

इसका अनुसरण रोज करें **लेकिन सूर्योदय से लेकर सूर्यादय के बीच ही। सूर्यास्त के बाद**

ऐसा न करें। दो मिनट के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और फिर सर्वशक्तिमान ईश्वर से अपने सोए हुए अवचेतन मन को जगाने के लिए मदद की प्रार्थना करें!”

“हे प्रिय सर्वशक्तिमान ईश्वर, मुझे आप अपने सन्मार्ग पर ले चलो। मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं अच्छे कर्म कर सकूं। बुरी इच्छाओं और भावनाओं को अपने मन से निकाल फेंकने में मेरी मदद करो। मुझे आप अपना ज्ञान दो; अपने प्रकाश से रौशन राह दिखाओ। मुझे अपने अवचेतन मन को जगाने में मदद करो ताकि यह मुझे कभी ग़लत न करने दे। हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, कृपया मेरी मदद करो।”

यह प्रार्थना कर लेने के बाद अपने मन को सारे विचारों से मुक्त और पूरी तरह कोरा कर लें। कोई भी विचार आपके दिमाग में न आए। केवल एक मिनट के लिए यह पूरी तरह कोरा होना चाहिए (यदि आप एक मिनट से अधिक अपने मन को कोरा करते हैं तो किसी नकारात्मक अवकाशी आत्मा द्वारा आपको हानि पहुंचाई जा सकती है)। ऐसा करने से आपको बहुत फायदा होगा। एकाग्रता और ध्यान के बाद ईश्वर को धन्यवाद दें और फिर अपने दैनिक कामों में लगें।

आप निश्चित रह सकते हैं, कि इससे आपको बहुत फायदा पहुंचेगा। इससे आपको धन-दौलत अथवा सांसारिक सफलता तो नहीं मिलेगी, लेकिन आप शांत, बेफ़िक्र और ख़ुश रहेंगे। सबसे बड़ी बात, कि इससे आपका अवचेतन मन विकसित होगा जिससे आप उच्चतर आध्यात्मिक स्तर तक प्रगति कर पाएंगे।

२०-०५-१९८१
अपने अवचेतन मन को जगाएं

बुरी राह पर चलने वाली आत्माओं का अवचेतन मन निराश हो जाता है और इतना दुःखी हो जाता है कि वह निष्क्रिय हो जाता है और आत्मा को रोकने में अक्षम हो जाता है। आपकी दुनिया में आजकल बहुत कम लोग हैं, जिनके अवचेतन मन जागृत होते हैं, क्योंकि अधिकतर लोगों के अवचेतन मन तो निष्क्रिय हैं और वे जागृत होने से इंकार कर देते हैं।

हमने आपको अपने अवचेतन मन को जागृत करने के उपाय बताए। आप ने उसकी बात नहीं मानी और उसे सुप्त होने दिया पर अब आपको इसे जागृत करने का समय आ गया है। इसमें थोड़ा वक्त लगेगा, पर हमारे निर्देशों का ईमानदारी से पालन करें। आपके अवचेतन मन को जागृत रहना चाहिए और उसे आपका मार्गदर्शन करना चाहिए। कृपया आप उससे बात करें, उससे याचना करें और फिर से सक्रिय होने के लिए उससे अनुरोध करें।

अवचेतन मन को फिर से सक्रिय स्थिति में लाना एक कठिन कार्य है, पर आपको यह करना ही होगा। आपने इसकी अवहेलना कर, इसकी अनदेखी कर और इसे बंद कर गलत किया है। इसपर जल्द से जल्द काम करने से आप और अधिक गिरने से केवल रूक ही नहीं जाएंगे, बल्कि ये आपको उच्चतर स्तर पर भी ले जाएगा।

कुछ कहते हैं ध्यान, कुछ लोग कहते हैं एकाग्रता, पर आपको बस एक मिनट के लिए अपने मन को खाली करना होता है। शुरुआत में तो यह कठिन अनुभव होगा, पर एक बार जब आप इसके अभ्यस्त हो जाएंगे तो यह काफी आसान हो जाएगा। बस सोचना बंद कर दें, और यदि आपके मन में विचार आएं तो उनकी ओर ध्यान ही न दें, और अंत में वे अपने-आप रुक जाएंगे। आपको कई तरह की आवाज़ें सुनाई पड़ेंगी, ऐसी भी आवाज़ें आएंगी जो आपसे काफी दूर होती हैं। आप उन्हें और अधिक से अधिक सुनेंगे, पर कोशिश करें कि कोई विचार आपके मन में न आ पाएं। आपका मन पूरी तरह से कोरा होना चाहिए; सभी ख़्यालों को हटा दें। इससे आपकी प्रगति में काफी मदद मिलेगी।

एक बार आप अपनी दुनिया और अपने भौतिक शरीर को छोड़ देते हैं, तो जीवात्मा जगत में एक उच्चतर स्तर पर उठना काफी कठिन और धीमा हो जाता है, पर पृथ्वी पर आप तेजी से प्रगति कर सकते हैं। आप अपनी दुष्ट राहों से दूर जा सकते हैं और क्षणभर में भले बन सकते हैं। निश्चित रूप से, आपको अपने कर्म की राह से होकर चलना होगा, पर यह हल्का और आसान हो जाएगा, क्योंकि कठिनाइयों का सामना करने की ताकत और हिम्मत आपको ईश्वर देंगे।

हालांकि, जीवात्मा जगत में आपकी प्रगति काफी धीमी, पर निश्चित रहती है। आपके प्रत्येक पाप की सज़ा पाने से आप बच नहीं सकते।

इसलिए इससे पहले कि देर हो जाए, इसपर काफी गहराई से सोचें। अपनी दुनिया और अपने भौतिक शरीर को छोड़ने से पहले आपके पास कई ऐसे अवसर आते हैं, जिनमें आप बुरे से अच्छे बन सकते हैं और यदि आप इन मौकों का बेहतर उपयोग करेंगे, तो आप यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि जीवात्मा जगत में आपको बहुत आसान सज़ा मिलेगी। पहले, दूसरे या तीसरे लोक में जाने की बजाए आप कम से कम चौथे लोक में तो पहुंच ही सकते हैं; इसलिए गहराई से विचार करें और आप पाएंगे कि अपने-आप में तुरंत सुधार लाना अधिक बेहतर है।

२१-०५-१९८१
सतीश की कहानी: आपमें सुधार का साहस होना चाहिए

कई मामले ऐसे हैं जिनमें आत्माएं बहुत कमजोर होती हैं और अपनी दिनचर्या बदलने से डरती हैं। उन्हें अच्छा बनने से भय लगता है और सोचती हैं कि ऐसा करने से उनके साथी उनका मजाक उड़ाएंगे और धमकी देंगे, या भले लोग कभी उनका स्वागत नहीं करेंगे और उनकी अवहेलना व उनका अपमान करेंगे या फिर उन्हें लगता है कि उनका जीवन निराशा से भरा है।

यहां सतीश नामक एक आत्मा की एक सच्ची कहानी दी जा रही है। यह कहानी आपको यह बताएगी कि आप कितने गलत हो सकते हैं। सतीश की आत्मा भली थी, पर बचपन में उसे कई बुरी संगतों से गुजरना पड़ा था। सतीश जब केवल पांच वर्ष का था, उसी समय उसकी मां, जो अपने जीवन के तीसरे दशक में थीं, परलोक सिधार गईं। उसके पिता ने उसे अकेले ही पालने का फ़ैसला किया। पर वे ऐसा नहीं कर पाए और उन्होंने यह कहते हुए दूसरी शादी कर ली, कि ऐसा करना उनके बेटे के लिए आवश्यक था, पर यह सच नहीं था।

सौतेली मां को सतीश शुरूआत से ही पसंद नहीं था। वह पहले ही दिन से सतीश से नफ़रत करने लगी। पर उसने अपनी नफरत भरी भावना अपने पति के सामने ज़ाहिर नहीं होने दी। उसके अपने बच्चे होने के बाद तो वह सतीश की पूरी तरह से उपेक्षा करने लगी। उसने यह कहते हुए सतीश को निचले वर्ग और सस्ते बोर्डिंग स्कूल में दाखिला दिला दिया कि सतीश को संभालना अब उसके बस की बात नहीं .... और उसके बच्चों पर उसकी संगत का बुरा असर पड़ रहा था।

सतीश के बोर्डिंग स्कूल का माहौल काफी भयानक था। वह वहां बुरी संगत में पड़ गया और गलत आदतों का शिकार हो गया। स्कूल छोड़ने तक सतीश के पिता गुजर गए और उसकी सौतेली मां बिना कुछ कहे-सुने सब कुछ समेट कर शहर छोड़कर चली गई। सतीश के पास न पैसे थे, न कोई देखभाल करने वाला। अब वह अपना जीवन स्कूल के आवारा दोस्तों के संग बिताने लगा।

अपने दो दोस्तों की संगत में, वह दूसरे अमीर लड़के-लड़कियों के साथ दोस्ती करता और यह जताने की कोशिश करता कि वह भी एक अमीर घराने का लड़का था। वह उनकी ज़िंदगी का हिस्सा बन जाता। इसके बाद वह उनके साथ धोखा करता और उन्हें धमकी देना शुरु कर देता। साथ ही उन्हें उत्पीड़ित भी करने लगता। सतीश और उसके दोस्त एक शहर से दूसरे शहर घूमते और अमीर लड़के-लड़कियों का फायदा उठाते।

एक दिन जब वह अपने दोस्तों के संग ट्रेन से यात्रा कर रहा था, तो उसने एक अकेली लड़की को देखा। वेश-भूषा से वह लड़की अच्छे घर की दिख रही थी। इसलिए सतीश और उसके दोस्तों ने उससे दोस्ती करनी शुरु कर दी। लड़की बड़ी शर्मीली और संकोची स्वभाव की थी...इससे वे उसके और पीछे पड़ गए। एक स्टेशन पर लड़की उतर गई और अपने घर के लिए चल पड़ी। उन्होंने उसका घर तक पीछा किया। वह अमीर नहीं थी, पर इसके बाद भी वे सभी उसे दोस्त बनाने के लिए सहमत करते रहे। किसी तरह सतीश उससे दोस्ती करने में सफल हो गया और उन दोनों में प्रेम हो गया।

सतीश के स्वभाव के विपरीत वह लड़की बहुत ईमानदार और नेकदिल थी- और सतीश उससे गहरा प्यार करने लगा। पर उसे उससे शादी करने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था, क्योंकि आदत न होने की वजह से वह सीधे-सच्चे रास्ते पर नहीं चल सकता था। लड़की को यह बताने में उसे डर लगता था कि वह एक आवारा और धूर्त लड़का है, क्योंकि वह मानता था कि लड़की उसे एक बड़े घर का व्यक्ति समझती थी। उसे इस बात का भी डर था कि यदि वह सीधे रास्ते पर चलना आरम्भ करता है, तो उसके दोनों साथी उसका मजाक उड़ाएंगे। उसे इस बात की आशंका थी कि उसके दोनों दोस्त, लड़की को सारी बात बता देंगे और हो सकता है कि ऐसा करने की उसे धमकी भी दें।

इधर लड़की की संगत में आकर सतीश अपने दोनों दोस्तों से दूर होना चाहता था और सुधरने की कोशिश करना चाहता था। सतीश सही रास्ते पर चलना तो चाहता था, पर अपनी दुर्दशा से निकलने का कोई रास्ता न पाकर वह काफी निराश हो जाता। लड़की के लिए उसका प्यार बढ़ता ही जा रहा था, इसलिए वह उसे धोखे में नहीं रखना चाहता था। दूसरी तरफ लड़की इतनी ईमानदार थी कि यदि वह उसे सारी सच्चाई बता देता तो वह उसे अपने पति के रूप में स्वीकार नहीं करती।

सतीश असमंजस में था कि वह दुष्टता की राह कैसे छोड़े...कैसे अपने दोनों साथियों से संबंध तोड़े, कैसे एक ईमानदारी भरा जीवन जिए, और एक भला इंसान बने। कायर सतीश उस लड़की के प्यार में गहरा डूब चुका था पर इतना गहरा प्यार होने के बावजूद उसमें अपने बुरे रास्ते को छोड़ने की हिम्मत नहीं जुट पा रही थी। उसे पूरा यकीन था कि यदि लड़की को सच पता चलेगा, तो निश्चित रूप से वह उससे नफ़रत करने लगेगी। अब वह अपने बुरे जीवन को लेकर काफी पछताने लगा। पर फिर भी उसमें सुधरने की हिम्मत नहीं जुटती। यह सोचकर कि वह कभी उस लड़की को सुखी नहीं रख पाएगा और कभी सच्चाई के मार्ग पर नहीं चल पाएगा, एक दिन बिना कुछ कहे उसे छोड़कर चला गया। उसने एक अच्छा मौका गंवा दिया था। उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया होता। वह एक अच्छा इंसान बन जाता और एक उच्चतर स्तर में चला जाता।

सतीश की कायरता ने उसके जीवन को बरबाद कर डाला। यदि उसने लड़की से खुल कर,

ईमानदारी से कहने की हिम्मत दिखाई होती, तो यह जान पाता कि उसके उन्हीं दोस्तों के जरिए, जो उसे लड़की से अलग करना चाहते थे, लड़की को उसके बारे में सब कुछ पता चल चुका था। दरअसल वे पहले ही लड़की को सब कुछ बता चुके थे। पर इसके बावजूद लड़की ने मन ही मन सतीश से शादी करके उसे सुधारने का फ़ैसला कर लिया था। वह बस यह देखना चाहती थी कि क्या सतीश उसे सचमुच सच्चा प्यार करता था या नहीं। पर सतीश तो उसे बिना एक शब्द कहे छोड़कर जा चुका था। सचमुच कितनी बड़ी गलती कर दी थी उसने।

आपमें अपनी समस्याओं का सामना करने और अपने-आप में सुधार लाने की हिम्मत होनी चाहिए। बुरे से अच्छे बनने के किसी भी मौके को गंवाना नहीं चाहिए। ऐसे मौके को गंवाने के बाद इस बुरी दुनिया में फिर दूसरा मौका पाना असंभव के बराबर होता है। इस मामले में सतीश को उस लड़की की मदद मिल सकती थी, यदि उसने लड़की से यह बताने की हिम्मत जुटाई होती कि वह उससे कितना गहरा और सच्चा प्यार करता था।

२२-०५-१९८१
सूरदास की कहानी: अपने प्रियतम का साथ पाने के लिए एक आत्मा बड़ा जोखिम उठाती है

यहां एक और सच्ची घटना (नाम बदलकर) दी जा रही है, ताकि आप देख सकें कि उच्चतर स्तर पाने के लिए कोई आत्मा क्या कुछ कर सकती है। परंतु, इस मामले में वह नीचे गिर जाती है और तब उसकी मदद के लिए जीवात्मा जगत से उसके प्रियतम द्वारा ईश्वर को पुकार लगाई जाती है।

सूरदास तीसरे लोक में था, क्योंकि उसका पूर्व जन्म बुराइयों से भरा था। उसकी प्रियतम नीलू पांचवे लोक में थी। इसलिए उसने तीसरे लोक के अपने प्रमुख, श्री उच्च भली आत्मा से अपने-आप को एक बार फिर पृथ्वी पर भेजने के लिए ईश्वर से अनुमती लेने का अनुरोध किया। उसने यह विनती की कि उसका जन्म एक दुष्ट प्रवृत्ति की मां के यहां हो, ताकि वह अपनी मां और अपने-आप को सुधारकर पांचवें लोक में जा सके। पांचवें लोक में रहने वाली अपनी प्रियतम नीलू से मिलने के लिए वह दुःखों और सज़ाओं से भरा कठिन जीवन जीने के लिए तैयार था।

सूरदास का जन्म एक दुष्ट औरत के यहां हुआ। वह इतनी दुष्ट थी कि पृथ्वी पर लोग उसे डायन कहते थे। पृथ्वी की दुनिया में प्रवेश करते ही सूरदास को उस औरत ने अभिशाप दिया। उसके अवैध बच्चे के रूप में सूरदास उसके लिए बस एक बाधा ही था।

यहां हम आपको यह बताना चाहेंगे कि **नन्हें बच्चे जबतक बोलना न शुरु कर दें, जीवात्मा जगत से जुड़े रहते हैं और जीवात्मा जगत के अपने प्रियजनों के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं।** एक साल के होने तक शिशु जीवात्मा जगत में वापस लौट सकते हैं। एक साल तक आत्मा उसके माता-पिता और परिस्थिती का अध्ययन करती है...और यदि वह चाहे तो जीवात्मा जगत में वापस लौटने का निर्णय ले सकती है।

इसलिए सूरदास को जीवात्मा जगत में रहने वाले उसके प्रियजनों ने एक साल के होने से पहले वापस लौट आने का आग्रह किया, क्योंकि उसकी मां एक भयानक औरत थी। हालांकि सूरदास टस से मस नहीं हुआ। क्योंकि वह नीलू (जीवात्मा जगत में उसकी प्रियतम) से बेहद प्यार करता

था और हमेशा के लिए उसका साथ पाने को बेताब था।

सूरदास की मां अत्यंत दुष्ट औरत थी। उसने अपने बेटे को गंदी भाषा सिखाई और हर किसी को कोसना सिखाया। सूरदास या उसकी मां के मुंह से अच्छे शब्द निकलते ही नहीं थे। सूरदास जीवात्मा जगत की धीमी प्रगति की अपेक्षा पृथ्वी पर तेज प्रगति प्राप्त करने के लिए आया था, ताकि वह जल्द से जल्द पांचवें लोक में जा सके। इसलिए उसने अपनी दुष्ट मां को यह सोचकर चुना था कि वह उसे सुधारेगा और अपनी आत्मा की मदद कर पृथ्वी पर एक ही जीवन से जीवात्मा जगत के पांचवें लोक में चला जाएगा। इसलिए उसने अपने अवचेतन मन को दृढ़ रहने और उसे निराश न करने के लिए प्रशिक्षित किया था। प्रत्येक आत्मा यह कर सकती है। परंतु इसमें भारी जोखिम है, क्योंकि हमारा अवचेतन मन अत्यंत दुष्टता को शायद सह न पाए। दुष्ट मार्गो से अरूचित होकर वह निद्रा में चला जा सकता है। अगर ऐसा हुआ, तो वह एक बहुत बड़ी विपत्ति है। कितना बड़ा जोखिम-सूरदास की आत्मा पांचवे लोक तक पहुँचना चाहती थी, पर यदि उसका अवचेतन मन निष्क्रिय हो जाय, तो वह दूसरे या प्रथम लोक तक भी गिर सकती थी।

आपके जन्म के एक साल बाद अवचेतन मन कभी आपको यह नहीं बताएगा कि आपका जन्म पृथ्वी पर क्यों हुआ और आपने क्यों एक दुष्ट मां के यहां जन्म लिया। इसलिए इसकी काफी संभावना थी कि ऊपर उठने की बजाए सूरदास और नीचे गिर जाता, पर सूरदास ने यह खतरा मोल लिया। उसने सोचा कि वह अपने अवचेतन मन को इस तरीके से प्रशिक्षित कर चुका है, कि वह उसे कोई भी गलत काम करने से रोक देगा।

उधर उसकी मां इतनी दुष्ट स्वभाव की थी कि उसमें अच्छाई के निशान दूर-दूर तक नहीं दिखते। सूरदास ने जब बोलना सीखा, उस समय तक वह अपना लक्ष्य और जीवनकार्य भूल चुका था...और अब वह अपनी मां की तरह ही बन चुका था। वह कभी अच्छे प्रेम भरे शब्द नहीं बोलता। उसे दूसरों को सताने और परेशान करने और हानि पहुँचाने में मज़ा आता। रुपया उसके लिए भगवान बन चुका था। अपने से कमजोर व्यक्तियों को प्रताड़ने में उसे खूब आनंद मिलने लगा।

नीलू ने सूरदास के अवचेतन मन के जरिए उसे रोकने की पूरी कोशिश की, पर सूरदास का अवचेतन मन तो पूरी तरह से सुप्त हो चुका था। नीलू को इस बात की आशंका थी...इसलिए उसने सूरदास से एक पापिन मां की कोख से जन्म न लेने के लिए अनुरोध किया था।

नीलू ने पृथ्वी पर अपने प्रियजन और सूरदास के पूर्व जन्म के प्रियजनों के मन पर प्रभाव डालने की कोशिश की जिससे वे हस्तक्षेप करके सूरदास को सही रास्ते पर लाएं। यह एक कठिन कार्य था। पर कुछ समय बाद वह उनमें से एक को सूरदास के पास जाने के लिए मनाने में सफल हो गई। इस आत्मा को हम मोहनदास के नाम से पुकारेंगे। मोहनदास मुम्बई में रहता था और

सूरदास बैंगलोर में। इसलिए सूरदास के पास पहुंचना और असंभव के बराबर हो गया। पर नीलू सूरदास को बचाने के लिए उत्सुक थी, इसलिए उसने मोहनदास के अवचेतन मन को प्रेरित करने की पूरी कोशिश की, और मोहनदास को किसी प्रकार से बैंगलोर भेजने में सफल हो गई। मोहनदास और सूरदास दोनों को इस बात का जरा भी भान न हुआ। इसमें कई साल लग गए। आगे चलकर दोनों में दोस्ती भी हो गई। क्योंकि मोहनदास एक भली आत्मा था, इसलिए नीलू को इस बात का पूरा भरोसा था कि वह सूरदास को सुधारने में सफल हो जाएगा। पर उसका अंदाजा कितना गलत था! सूरदास को सही रास्ते पर लाने की बजाए, मोहनदास खुद बुरे मार्गों पर चल निकला।

२३-०५-१९८१
सूरदास की कहानी..जारी: सूरदास के प्रति नीलू के प्रेम की परीक्षा

नीलू को अब कोई आशा नहीं बची और उसे अपराधबोध होने लगा...क्योंकि मोहनदास और सूरदास को एक दूसरे के करीब लाने की जिम्मेदार वही थी। और अब मोहनदास, जिसकी आत्मा भली थी, बुरा इंसान बन चुका था। उसकी वजह से ही मोहनदास निचले स्तर पर गिर चुका था। नीलू दुःखी हो गई। उसके पास उन दोनों को बचाने का अब कोई रास्ता न बचा था। सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करने के सिवा अब कोई चारा न बचा था। नीलू ने उन दोनों को बचाने के लिए ईश्वर से विनती की।

दुःखी नीलू असमंजस में पड़ी थी कि अब क्या किया जा सकता है। वह पांचवें लोक पर थी, जो कोई बहुत ऊंचा लोक नहीं था। पर वह एक भली आत्मा थी जो छठे लोक की ओर बढ़ रही थी। नीलू निचले स्तरों में नहीं गिरना चाहती थी। निराश होकर वह अपने लोक के प्रमुख के पास गई और इस समस्या से बाहर निकलने के लिए उनसे रास्ता दिखाने का अनुरोध किया।

उसने कहा, “मैं सूरदास से इतना प्रेम करती हूं कि मैंने मोहनदास को बुरे मार्ग पर भेज दिया। कृपया हे श्री उच्च भली आत्मा, उन दोनों को बचा लें।”

श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, “नीलू, तुमने मोहनदास को सूरदास के पास भेजकर...उसे दुष्टता के मार्ग पर डालकर एक बहुत बड़ा गलत काम किया है। तुम्हें सज़ा तो अवश्य मिलेगी।”

“हां”, नीलू ने जवाब दिया, “हे श्री उच्च भली आत्मा, मुझे अवश्य सज़ा दें। मुझे निचले लोकों में जाना पसंद नहीं, पर मैं उस लोक में चली जाऊंगी जहां सूरदास और मोहनदास हैं। बस आप उन दोनों को बचा लें और उन्हें ऊंचे स्तर में ले आएं। मैं उनकी सारी सज़ा भुगतने को तैयार हूं।”

नीलू नीचे नहीं जाना चाहती थी, यहां तक कि लोक ४ में भी नहीं, पर सूरदास के लिए उसका सच्चा प्यार और उसकी निःस्वार्थ भावना ने उसे दूसरे लोक में जाने के लिए तक तैयार कर दिया। सूरदास और मोहनदास यदि अब भी नहीं रुकते, तो वे पहले लोक में भी पहुंच सकते थे।

श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, “मैं इससे सहमत हूं, पर क्या तुम तुरंत दूसरे लोक में जाओगी?”

“हां श्रीमान, मैं तुरंत जाकर अपनी और उनकी सज़ा लेना चाहती हूं, हां पर इससे वे बच जाएं... पांचवें लोक नहीं तो कम से कम चौथे लोक में जरूर आ जाएं,” नीलू ने कहा।

नीलू के निःस्वार्थ, सच्चे और गहरे प्रेम को देखकर श्री उच्च भली आत्मा काफी ख़ुश हुए और उन्हें पता चल गया कि नीलू ईमानदारीपूर्वक उन दोनों के लिए सज़ाएं भुगतने को तैयार है। पर इसके बावजूद श्री उच्च भली आत्मा ने नीलू की परिक्षा लेनी चाही। वह देखना चाहते थे कि दूसरे लोक में जाने के बाद नीलू क्या करती है? क्या वह अपना फ़ैसला बदल तो नहीं देगी? इन्हीं बातों की जांच के लिए उन्होंने नीलू को दूसरे लोक में जाने का हुक्म दे दिया और वह बेझिझक चली गई।

कुछ दिनों के बाद श्री उच्च भली आत्मा ने नीलू से पूछा, "नीलू, क्या तुम अब भी कई सौ सालों तक दूसरे लोक में रहकर सूरदास और मोहनदास को बचाना चाहती हो?"

नीलू ने बेझिझक उत्तर दिया, "हां, श्री उच्च भली आत्मा, मैं ऐसा ही करना चाहती हूं।" यह जानकर श्री उच्च भली आत्मा बहुत प्रसन्न हुए कि नीलू सचमुच बहुत निःस्वार्थ और सच्ची है और अंदर से इतनी मजबूत है कि अपने प्रेमी सूरदास और मोहनदास के लिए अपनी खुशियों को त्यागने के लिए तैयार है।

श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, "नीलू, मेरी प्यारी बच्ची, पांचवें लोक में वापस लौट आओ। मैं सूरदास और मोहनदास को बचाऊंगा। इसमें कई महीने लगेंगे, पर वादा करो कि इस बीच तुम सूरदास या मोहनदास के लिए कुछ नहीं करोगी, भले ही उनके साथ कुछ भी हो जाए। मैं वचन देता हूं कि उन भयानक निम्न लोकों से मैं उन्हें बचाऊंगा।"

नीलू के पास आभार प्रकट करने के लिए शब्द ही न थे। वह खुशी से चिल्ला उठी, "हां, हे श्री उच्च भली आत्मा, मैं वादा करती हूं कि आप जैसा कहेंगे, मैं वैसा ही करूंगी।"

श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, "नीलू, बस अब उन दोनों के लिए प्रार्थना करो और सर्वशक्तिमान ईश्वर से उन्हें बचाने में मेरी मदद करने की विनती करना।"

नीलू तुरंत तैयार हो गई क्योंकि श्री उच्च भली आत्मा पर उसका पूरा भरोसा था।

यह एक सच्ची कहानी है। केवल व्यक्ति के नामों और शहरों को बदल दिया गया है। आप यह जानकर काफी हैरान हुए होंगे कि लोकों के प्रमुख और श्री सर्वोच्च भली आत्मा, किसी जरूरतमंद आत्मा को बचाने के लिए क्या कुछ कर सकते हैं। यह एक बहुत कठिन कार्य है। पर क्योंकि उनके पास बड़ी शक्तियां होती हैं, इसलिए वे चमत्कार कर सकते हैं। अपने-आप में सुधार करने और उच्चतर स्तर में आने के लिए सूरदास ने भी बड़ा जोखिम उठाया, क्योंकि वह एक भली आत्मा थी। अपने बुरे दोस्तों की संगत के कारण वह पूर्व जन्म में गलत रास्ते पर चल पड़ा था। इसलिए उसने यह जोखिम उठाया, पर दुर्भाग्यवश इससे वह और भी नीचे गिर गया।

२४-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: श्री उच्च भली आत्मा का पृथ्वी पर आगमन

श्री उच्च भली आत्मा ने नीलू से शांत होकर ईश्वर से सूरदास और मोहनदास को बचाने के लिए, उनकी मदद करने की प्रार्थना करने को कहा। कई दिनों बाद श्री उच्च भली आत्मा ने एक फ़कीर [१०] का वेश धारण किया और धरती पर उतर आए।

इस बीच सूरदास और मोहनदास पृथ्वी के कई लोगों को लूटने और उन्हें सताने में लगे थे। श्री उच्च भली आत्मा जिस दिन पृथ्वी पर पधारे, उसी दिन दोनों ने मिलकर लूट की एक घटना को सफतापूर्वक अंजाम दिया था। उस लूट से दोनों के पास हज़ारों रूपये आए थे।

शराब और सफलता के नशे में चूर होकर दोनों उस रात बड़े घमंड से घर लौट रहे थे। वे बहुत तेज रफ़्तार से गाड़ी चला रहे थे...तभी श्री उच्च भली आत्मा उनके सामने प्रकट हो गए। उन्हें अचानक सामने देखकर सूरदास गाड़ी का संतुलन खो बैठा और वह एक खंभे से जा टकराई। अपनी-अपनी सीट पर बेहोश पड़े सूरदास और मोहनदास को अस्पताल ले जाया गया।

जब उन्हें होश आया तो उन्होंने अपने-आप को अस्पताल के बिस्तर पर पड़ा पाया। उन्हें भयानक दर्द हो रहा था। जब सूरदास को अनुभव हुआ कि उसकी दोनों टांगें गायब थीं, तो वह बहुत निराश हुआ। वहीं मोहनदास ने अपनी एक टांग और एक हाथ खो दिया था। उन्होंने दुर्घटना के बारे में पूछा, तो उन्हें बताया गया कि वे शराब पीकर गाड़ी चला रहे थे। टक्कर के बाद गाड़ी के दरवाजे खुल गए थे और रुपयों की बोरी लुढ़क कर पास की एक झाड़ी में जा फंसी थी, जिसका उद्देश्य यह था कि वे किसी जरूरतमंद को मिल जाए।

सूरदास और मोहनदास अपनी-अपनी हालत के लिए एक-दूसरे को कोसने लगे और एक दूसरे पर आरोप लगाने लगे। दोनों का बिस्तर पास-पास ही था, इसलिए दोनों आपस में खूब लड़-झगड़ रहे थे। नौबत यहां तक आ गई कि डॉक्टरों को बीच-बचाव करना पड़ा और मोहनदास को अलग वार्ड में रखना पड़ा। अब मोहनदास अकेला पड़ गया था। अब उसने अपने अतीत के बारे में सोचना शुरू किया। उसे इस बात का अहसास हुआ कि बुरे रास्ते पर चलने के कारण ही उसे अपने हाथ-पैर खोने पड़े। “अब मुझे पूरी ज़िंदगी दुःख भोगना पड़ेगा...,” मोहनदास ने सोचा।

इस सदमे से उसका अवचेतन मन फिर से जाग उठा। अब वह जाग चुका था और अब मोहनदास को ज्ञान हुआ कि यही ईश्वर का न्याय था। उसे गुमराह कर दुष्ट मार्ग पर ले जाने के

लिए उसने सूरदास को कोसा और उस ही क्षण, मोहनदास ने अच्छाई के लिए खुदको बदलने का फ़ैसला किया।

दयालु सी दिखने वाली एक नर्स, जिसका नाम पूनम था, उसके बिस्तर के पास आई और उसे एक इंजेक्शन दिया। मोहनदास ने उसे भगवद्गीता [११] लाने को कहा, क्योंकि वह सौगंध लेना चाहता था कि अब वह कभी बुरे मार्ग पर नहीं जाएगा।

पूनम ने भगवद्गीता लाकर मोहनदास के हाथों में रख दी। मोहनदास ने गीता पर हाथ रखकर सौगंध खाई। मोहनदास और पूनम दोस्त बन गए। मोहनदास ने उसके सामने खुलकर स्वीकार किया कि उसने कुछ महीने तक कितनी भयानक ज़िंदगी जी थी। उसने पूनम को बताया कि यह ईश्वर का न्याय था और उससे कहा, “पूनम, मैंने कभी बुरे मार्ग पर न चलने की सौगंध खाई है। अब मैं हमेशा ईश्वर की बताई राह पर ही चलूंगा।”

ईश्वर ने मोहनदास कि मदद की, और पूनम मोहनदास से प्रेम करने लगी। मोहनदास विकलांग हो चुका था, इसलिए वह पूनम के प्रति अपने प्रेम के विरूद्ध लड़ने लगा। चूंकि, पूनम भी उसकी कहानी जानती थी, इसलिए उसे पक्का भरोसा था कि वह कभी उससे शादी नहीं करेगी।

अस्पताल से छूटने के एक दिन पहले, पूनम ने उससे पूछा, “मोहन, अब तुम कहां जाओगे?”

“मेरे पास कोई जगह-ठिकाना नहीं है, पूनम।”

“में अपने घर में अकेली रहती हूं, और मैं तुम्हारी देखभाल कर सकती हूं।”

“पूनम, मैं तो ठहरा एक अपंग इंसान। मैं कैसे तुम पर बोझ बन सकता हूँ?”

“मोहन, मैं तुम्हें बेहद चाहती हूं। आओ हम शादी कर लेते हैं। तुम्हें अपना पति बनाकर मैं धन्य हो जाऊंगी।”

उसकी बात सुनकर मोहनदास ने भी उसे अपने दिल की बात बताई- कि वह भी उससे उतना ही प्यार करता था, लेकिन उसपर बोझ बनना नहीं चाहता था। पूनम ने उससे कहा कि यदि वह उससे शादी कर ले तो उसका जीवन पूर्ण हो जाएगा। क्योंकि वह एक नर्स थी इसलिए दोनों का जीवन आराम से कटेगा। कुछ समय के बाद मोहनदास शादी के लिए तैयार हो गया और दोनों ने अपनी सगाई की घोषणा कर दी।

अगले दिन, मोहनदास को जैसे ही छुट्टी मिली, वे दोनों सीधा एक मंदिर गए और वहां शादी कर

ली। यहाँ मोहनदास की कहानी समाप्त होती है। अब दोनों का जीवन बहुत ख़ुशहाल हो गया। आगे चलकर दोनों के तीन बच्चे हुए। मोहनदास ने नकली हाथ-पैर लगवा लिए थे और अब वह ईमानदारी की रोटी कमाने लगा। ईश्वर की बताई राह पर चलते हुए, मोहनदास खुशी-खुशी अपना जीवन बिताने लगा।

२५-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: सूरदास का और भी नीचे गिरना

आइए हम सूरदास की कहानी आगे बढ़ाते हैं। उस दुर्घटना के बाद वह लंबे समय तक अस्पताल में रहा। उस स्थिति में वह किसी को न तो नुकसान पहुंचा सकता था, न ही किसी को लूट सकता था, और न ही किसी को परेशान कर सकता था। अन्यथा वहां उसकी देखभाल ठीक से न होती। हालांकि वह मन ही मन लोगों को हानि पहुंचाने और उन्हें छलने, परेशान करने की योजना बनाने में जुटा हुआ था...ताकि वहां से निकलने के बाद वह अपनी करतूतों को अंजाम दे सके। थोड़े में कहें तो वह बद से बदतर बन चुका था। वह हर किसी को...मोहनदास और ईश्वर को कोसता रहता। उसके मन में घृणा भर चुकी थी। यहां तक कि वह अपनी मां से भी घृणा करने लगा था।

इसी अवस्था में उसे अस्पताल से छुट्टी मिली। उसने अपनी मां से बात की और उसके साथ अपने घर पहुंचा। अपने पैर गंवाने के कारण अब वह चल-फिर नहीं सकता था। इसलिए उसने अपनी मां से बहुत मीठे शब्दों में अपने दुष्ट कार्यों में साथ देने का अनुरोध किया। मां तो दुष्टात्मा थी ही, वह खुशी-खुशी इसके लिए तैयार हो गई।

सूरदास एक तीर से दो शिकार करना चाहता था। उसने एक विधुर की सारी संपत्ति को लूटकर उसे कंगाल बनाने की योजना बनाई। उसने यह योजना इस तरह बनाई कि वह अपनी मां से भी बदला ले सके। क्योंकि अब वह उससे भी उतनी ही घृणा करने लगा था। लूट सफल रही। उसकी मां ने उस व्यक्ति को खूब सताया और लूट के माल को घर ले आई।

जब उसकी मां रात में गहरी नींद में सो रही थी, सूरदास अपनी व्हील चेयर पर पैसों से भरा बैग लेकर रफुचक्कर हो गया। उसने कुछ ऐसे सबूत छोड़ दिए थे, जिससे लोगों को उसकी मां पर शक होता। रात गहरी हो रही थी, इसलिए सूरदास अपनी व्हीलचेयर पर सूनी सड़क पर इंतजार करने लगा।

आधी रात के वक्त उसने एक गाड़ी को अपनी तरफ आते देखा। उसने गाड़ी को रुकने का इशारा किया। कार फिलिप नामक एक २० वर्षीय नौजवान चला रहा था। “कृपया मेरी मदद कीजिए। मैं एक अपाहिज हूं। मेरे पैर नहीं हैं। मुझे खबर मिली है कि मेरी मां के साथ दुर्घटना हो गई है और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मुझे उसके लिए कपड़े और दवाइयां पहुंचानी है। क्या आप इस अपाहिज व्यक्ति की मदद नहीं करेंगे?”

बेचारा फिलिप! उसे सूरदास पर दया आ गई। घर जाने के बजाए वह उसे अपनी कार में बिठाकर अस्पताल की ओर चल पड़ा। इसी बीच सूरदास ने अपनी पिस्तौल निकाली और फिलिप की कनपटी पर टिका दी। उसने फिलिप को हाईवे की ओर गाड़ी चलाने का आदेश दिया।

फिलिप बुद्धिमान लड़का नहीं था। वह शहर में नया-नया आया था। उसे एक नया काम मिला था, जिसके लिए वह कुछ दिनों पहले बैंगलोर आया था। धूर्त सूरदास ने यह अंदाजा लगा लिया कि वह लड़का उसका बढ़िया गुलाम बन सकता था।

बैंगलोर छोड़ने से पहले सूरदास ने पुलिस को कॉल किया और उन्हें सूचना दी कि उसने किसी औरत को एक धनवान व्यक्ति को लूटते देखा था। उसने यह भी बताया कि उसने औरत का पीछा किया और पुलिस को उसके घर का पता भी लिखवा दिया और कहा कि वह औरत शहर छोड़ कर भाग जाए, इससे पहले वे उसे पकड़ लें। पुलिस ने जब उसका नाम पूछा तो सूरदास ने फोन काट दिया। स्वाभाविक ही था... पुलिस ने आनन-फानन में सूरदास की मां के घर को घेर लिया। घर की तलाशी लेने पर उन्हें सूरदास की मां के ख़िलाफ़ कुछ सबूत भी मिल गए। पुलिस ने सूरदास की मां को गिरफ़्तार कर लिया। लूट के पैसों की जानकारी पाने के लिए पुलिस ने उसे खूब प्रताड़ित किया।

पैसे तो सूरदास के पास थे। उसकी मां ने पुलिस को समझाने की कोशिश कि पर उसकी पुरानी हरकतों की वजह से पुलिस को उसकी बातों पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ। मां को जेल भेज दिया गया, जहां उसे कुछ सालों तक कठिन परिश्रम करने की सज़ा मिली।

सूरदास ने फिलिप का इस्तेमाल किया और उसका दिमाग यह कहकर भ्रष्ट किया की वह काले जादू की शक्ति रखता है। उसने फिलिप को डराया कि यदि वह उसकी बात नहीं मानेगा तो अपनी चमत्कारी शक्ति से वह उसे जानवर बना देगा। सूरदास ने उसे कुछ मामूली जादू की तकनीकें भी दिखा दी... जिससे फिलिप को भरोसा हो गया कि सूरदास के पास कोई चमत्कारी शक्ति थी। फिलिप अनपढ़ था। उसने गांव के स्कूल में थोड़ी-बहुत पढ़ाई कर गांव में ही ड्राइवर की नौकरी की थी। कुछ समय बाद उसे बैंगलोर में ड्राइवर की यह नौकरी मिली थी।

फिलिप अब पूरी तरह से सूरदास की गिरफ्त में आ चुका था। रास्ते में उन दोनों ने गाड़ीयाँ बदली....फिर एक गाड़ी चुराकर, पिछली गाड़ी को पीछे छोड़ वे लाहौर जा पहुंचे। सूरदास की चतुराई से वे किसी तरह सीमा के पार पहुंचने में सफल हो गए और भारत छोड़ दिया। अब सूरदास सुरक्षित महसूस कर रहा था...वह अमीर था और फिलिप के रूप में उसे एक गुलाम भी मिल गया था।

२६-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: दुर्बल आत्मा को साहस की प्राप्ति

जीवात्मा जगत में नीलू और उसके दोस्त काफी परेशान थे...क्योंकि सूरदास और भी अधिक दुष्ट रास्ते पर बढ़ चुका था। पर उन्हें श्री उच्च भली आत्मा पर पूरा भरोसा था...इसलिए वे जानते थे कि किसी न किसी तरह से सूरदास अपने दुष्ट रास्ते को छोड़ देगा। श्री उच्च भली आत्मा को पता था कि नीलू और उसके दोस्त परेशान थे। इसलिए उन्हें दिलासा दिलाने के लिए उन्होंने नीलू को बुलाया और कहा, "नीलू, मैं जानता हूं तुम्हें मुझ पर पूरा भरोसा है..और तुम्हें यह भी पता है कि मैं अपने वचन से पीछे नहीं हटूंगा। पर सूरदास को और नीचे गिरता देख तुम तो अवश्य ही परेशान हो गई होगी। मेरी प्यारी बच्ची, मैं तुम्हें अच्छी तरह से समझता हूं...इसलिए मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं। जिस धनवान व्यक्ति को लूटा गया था, वह एक पापी इंसान था...इसलिए उसे सबक सिखाने की ज़रूरत थी। और कंगाल हो जाने के बाद अब उसे इस बात का एहसास हो गया है। सूरदास की मां भी बेहद दुष्ट औरत थी। इसलिए उसे भी रोकना ज़रूरी था...और यही कारण है कि अब वह जेल में है। वह लड़का फिलिप, एक कायर और रीढ़-विहीन लड़का है और उसमें भी समस्याओं का सामना करने की हिम्मत होनी चाहिए थी। इसकी बजाए वह गुलाम बन गया। वह एक भली आत्मा है, पर उसमें चेतना भी तो होनी चाहिए। इसलिए किसी के साथ कोई अन्याय नहीं हुआ। सबसे न्याय करने का ईश्वर का अपना एक रहस्यमयी तरीका होता है।"

"जी हां, श्री उच्च भली आत्मा," नीलू ने कहा। "अब मैं समझ गई। मुझे समझाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! मुझे आप पर और हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर पर पूरा भरोसा है, और अब मुझे उनके न्याय करने के रहस्यमयी तरीकों का पता चल गया है।"

फिलिफ, सूरदास का गुलाम बन चुका था। सूरदास एक करोड़पति इंसान बन चुका था और अपनी सफलता पर बेहद ख़ुश था।

एक दिन फिलिप सूरदास के नए घर से कुछ दूरी पर स्थिति एक चट्टान पर बैठा था। वह दुःखी होकर सोच रहा था कि आखिर ईश्वर ने क्यों उसकी मदद नहीं की। क्यों उसे उन कामों को करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, जो उसकी अंतरात्मा स्वीकार नहीं कर रही थी। इन बातों को सोचकर वह इतना निराश हो गया कि चिल्ला उठा, "हे ईश्वर, कृपया मेरी सहायता करें। अब मैं सूरदास को और अधिक नहीं बरदाश्त कर सकता।" कुछ ही मिनटों बाद श्री उच्च भली आत्मा अपने फ़कीर के वेश में वहां पहुंचे और कहा, "मेरे बच्चे, कृपया इस गरीब को कुछ खाने को दो। मैं बहुत भूखा हूं।" फिलिप को भूखे-प्यासे फ़कीर पर दया आ गई और उसने उसे कुछ पैसे देने के लिए सहजता से अपनी जेब में हाथ डाला। पर वहां कुछ भी नहीं था। उसे याद आया कि

सूरदास कभी उसे एक पैसा भी नहीं लेने देता। वह उसे केवल खाना और कपड़े देता था।

फिलिप की आंखों में आंसू आ गए, और वह बोला "बाबा, मुझे खेद है कि मेरे पास इस समय आपको देने के लिए कुछ भी नहीं...क्योंकि मैं पूर्ण रूप से एक दुष्ट व्यक्ति का गुलाम हूं।"

"मेरे बच्चे, तुम गुलाम हो?"

"हां बाबा, आपको भरोसा नहीं होगा, पर यह सच है, कि मैं एक गुलाम हूं।"

"क्या तुम अपनी कहानी मुझे नहीं बताओगे? शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूं," श्री उच्च भली आत्मा ने फिलिप से कहा।

"बाबा, मुझे नहीं लगता कि आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं, पर फिर भी मैं अपनी कहानी आपको सुनाऊंगा। इससे मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाएगा। क्या आप मेरी दर्द भरी अविश्वसनीय कहानी सुनना चाहेंगे?"

"हां-हां क्यों नही, तुम अपनी कहानी सुनाकर अपने मन का बोझ हल्का कर लो।"

फिलिप ने उन्हें सारा कुछ कह सुनाया और कहा, "मुझमें उससे सामना करने की हिम्मत नहीं।"

"पर तुम्हें इतना कायर और डरपोक नहीं होना चाहिए। तुम्हें दुष्टता से मुकाबला करना चाहिए और इससे ईश्वर बहुत प्रसन्न होंगे।"

"हे फ़कीर बाबा, दरअसल आप सूरदास को नहीं जानते। वह काला जादू जानता है। आप नहीं समझेंगे, मैंने उसकी कुछ दुष्ट शक्तियों को अपनी आंखों से देखा है। वह मुझे आसानी से एक कुत्ता या बिल्ली बना सकता है। नहीं फ़कीर बाबा नहीं, मैं उसके विरूद्ध नही जा सकता।

तब श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, "फिलिप, मेरे पास भी शक्ति है, पर यह अच्छी शक्ति है। क्या तुम मुझपर विश्वास करोगे? मैं कभी सूरदास को तुम्हें कुत्ता या बिल्ली नहीं बनाने दूंगा। मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं कि सूरदास तुम्हें जानवर नहीं बना सकता। आओ मैं तुम्हें वही जादू दिखाता हूं, जो उसने दिखाया था...और तुम्हें समझाता हूं कि यह कैसे होता है। तब तुम मुझपर विश्वास करोगे?"

"जी हां, मुझे दिखाइए कि यह सब कैसे होता है।"

श्री उच्च भली आत्मा ने फिलिप को दिखाया कि कैसे सूरदास ने उसे बेवकूफ़ बनाया। यह सब देखकर फिलिप इतना उत्साहित हो गया कि वह उसी समय वहां से भाग जाना चाहता था। पर श्री उच्च भली आत्मा ने उसे रोका और उसे समझाते हुए कहा, “फिलिप, सूरदास को सुधारने में तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए। चूंकि मैंने तुम्हें इस दुर्दशा से बचाया है इसलिए तुम्हारा भी कर्तव्य बनता है कि तुम मेरी मदद करो।”

“हे फ़कीर बाबा, आप भी अजीब इंसान हैं। सूरदास के बारे में आप क्यों चिंता कर रहे हैं? उसे नर्क में जाने दीजिए। हमें उससे क्या मतलब? कृपया मुझे यहां से भाग जाने दीजिए और आप भी ऐसी दुष्ट जगह से दूर चले जाएं।”

श्री उच्च भली आत्मा ने कहा, “नहीं फिलिप, मैं यहां अपना कर्तव्य निभाने के लिए आया हूं, और तुम्हें भी अपना कर्तव्य निभाना चाहिए...अन्यथा ईश्वर अप्रसन्न हो जाएंगे। क्या तुम सर्वशक्तिमान ईश्वर को नाख़ुश करना चाहते हो?”

“नहीं, बिल्कुल नहीं। मैंने ईश्वर को पुकार लगाई थी और उन्होंने आपको मेरी सहायता के लिए भेजा है। इसलिए कहिए मुझे क्या करना है...मैं करूंगा। पर मैं आपसे विनती करता हूं, कृपया जितनी जल्दी हो सके, मुझे सूरदास से दूर चले जाने दीजिए।”

“फिलिप, बस एक दिन और...फिर तुम आज़ाद हो जाओगे। मैं जो कहूंगा तुम्हें करना है और फिर तुम जा सकते हो। सिर्फ तीन सौ रुपए लो और गाड़ी लेकर शहर चले जाओ। शहर में प्रवेश करने से पहले गाड़ी को छोड़ देना और अपने लिए कोई नौकरी ढूंढने की कोशिश करना। मुझे लगता है रहन-सहन के लिए तीन सौ रुपए तुम्हारे लिए पर्याप्त होंगे। काम मिल जाने के बाद तो तुम्हें अपनी आमदनी होने लगेगी। अधिक रुपए मत लेना। सूरदास के रुपए अपवित्र और अभिशप्त हैं। और हां, यह तुम्हारे नहीं हैं। ये तीन सौ रुपए वो रुपए हैं, जो तुम्हें काम के बदले सूरदास से मिलने चाहिए थे। इसलिए वचन दो कि सूरदास की अलमारी से तुम इससे ज़्यादा रुपये नहीं लोगे।”

“हे फ़कीर बाबा, मैं वचन देता हूँ; आप तो कमाल के इंसान हैं। ईश्वर का लाख-लाख शुक्रिया कि हम मिले...आपने मुझे इस दुर्दशा से बचा लिया और मुझे ईश्वर के रहस्यमयी तरीकों के बारे में पता चल गया। मैं आपसे वादा करता हूं कि मैं अब कभी बुरी राह पर नहीं चलूंगा, न ही पहले जैसा कायर इंसान रहूंगा।”

श्री उच्च भली आत्मा यह जानकर काफी ख़ुश हुए कि फिलिप ने भलाई के वास्ते खुद को बदला। अगले दिन क्या करना था- फिलिप को उन्होंने बताया। इसके बाद वे थोड़े समय के लिए फिलिप और पृथ्वी को छोड़ कर वापस आ गए।

२७-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: अहंकार का पतन होता है

पहली बार फिलिप को एहसास हुआ कि वह एक मनुष्य है, न कि कोई **निष्क्रिय।** उसने किसी भी दुष्ट व्यक्ति का गुलाम न बनने और किसी गलत रास्ते पर न चलने का संकल्प लिया।

श्री उच्च भली आत्मा के निर्देश के अनुसार अगले दिन फिलिप सूरदास को गाड़ी में बिठाकर एक दूर-दराज के इलाके में लेकर गया, जो कि उसके घर से बहुत दूरी पर था। उसने उसे यह कहा कि उसे एक गुफा की जानकारी मिली थी, जहां ढेर सारे खजाने छुपे थे। हमेशा की तरह सूरदास खुशी से फूला न समाया और फिलिप को तुरंत उसे वहां ले चलने को कहा।

मीलों तक धूल भरी सड़क के बाद एक काफी संकरा रास्ता आया। इसलिए फिलिप ने गाड़ी रोक दी और सूरदास को अपने कंधे पर बिठा कर लगभग एक-डेढ़ मील तक चला। तब जाकर उन्हें एक गुफा मिली। गुफा में छिपे खजाने को देखने के लिए सूरदास बेसब्र हुआ जा रहा था। पर फिलिप ने कहा, “मालिक, यह गुफा इतनी संकरी है कि इसके अंदर जाना मुश्किल है। आप इसी चट्टान पर बैठिए...मैं अंदर जाकर देख आता हूं कि कोई खजाना छिपा भी है या नहीं।” फिलिप ने सूरदास को नीचे रखा और गुफा के अंदर चला गया।

जैसा कि फिलिप को बताया गया था, गुफा के पीछे उसे बाहर निकलने का एक रास्ता मिला। वह उस रास्ते से बाहर निकला और एक दूसरे छोटे रास्ते से अपनी गाड़ी तक पहुंच गया। गाड़ी से वह सूरदास के घर पहुंचा...उसकी अलमारी ज़ोर लगाकार खोली...उसमें से तीन सौ रुपए निकाले और उसी चुराई गाड़ी से शहर की ओर निकल पड़ा। कुछ दिनों बाद शहर में उसे एक नौकरी भी मिल गई और वह सरल और अच्छा जीवन बिताने लगा।

फिलिप को गुफा में प्रवेश किए काफ़ी समय बीत चुका था...पर सूरदास लखपति बनने का सपना देखने में इतना रोमांचित था कि उसे इस बात का अहसास ही न रहा। बाद में अचानक उसका ध्यान गया कि फिलिप तो एक घंटे से गायब था। वह फिलिप को बाहर बुलाने के लिए चीखने-चिल्लाने लगा और उसे जम कर कोसने लगा। पर कुछ ना हुआ।

सूरदास को लगा मानो फिलिप वहां से गायब हो गया था...इसलिए वह ऊबड़-खाबड़ पत्थरों पर रेंगकर गुफा के भीतर फिलिप को ढूँढने जा पहुंचा। वह कुछ और अंदर गया...फिलिप के लिए उसकी जुबान से बेहद बुरे शब्द निकल रहे थे और वह गुस्से से आग बबूला हो उठा था। उसके

दिल में फिलिप के लिए घृणा भर आई थी। अचानक उसने अपने-आप को गुफा से बाहर पाया। वह हैरान रह गया...उसे लगा किसी ने उसे एक करारा झटका दिया हो। तब उसे इस बात का एहसास हुआ कि फिलिप ने उसे मूर्ख बनाया। पर उसे इस बात की कल्पना भी नहीं थी की फिलिप में उस जैसे 'दादा' [१२] को धोखा देने की हिम्मत या चतुराई थी। सूरदास को पूरा यकीन था कि फिलिप उसका जीवन भर गुलाम बना रहेगा। उसे इस बात का काफी गर्व था कि आज तक उसे कोई मूर्ख नहीं बना सका था। वह तो दूसरों को धोखा देने में माहिर था, तो फिर यह कैसे हुआ? सूरदास को इस बात का पूरा यकीन था कि फिलिप कभी उसके ख़िलाफ़ जाने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। उसके लिए यह एक बड़ा झटका था। वह इतना स्तब्ध रह गया कि चीखना-चिल्लाना और भला-बुरा कहना भी भूल गया।

क्या यह संभव था कि फिलिप गायब हो गया था और सूरदास को अंधेरी..डरावनी गुफा में अकेला छोड़ गया था? रात होने वाली थी। सूरदास ने सोचा कि जंगल में जाने की बजाय गुफा में ही रात बिताना बेहतर होगा। वह डरा हुआ था और उसे इसका भान हो गया कि जंगल में जंगली जानवर भी थे...और उसके पास घर जाने का कोई रास्ता नहीं था...क्योंकि इस वक्त वह घर से मीलों दूर था। आहार और पानी के बिना वह क्या करेगा? यदि कोई भयानक जानवर उस गुफा में घुस आएं तो? वह अपने-आप को कैसे बचा पाएगा? क्या वह कल का सूरज देख पाएगा? कुछ घंटों में उसके साथ क्या होगा? वह तो मर ही जाएगा! उसे इसका अहसास हुआ कि फिलिप की तरह ही वह भी तो उतना ही कायर और डरपोक है। अब उसे अहसास हुआ कि फिलिप पर अबतक क्या बीती होगी।

"यदि मैं मरूंगा तो सीधा नर्क जाऊंगा।"

सूरदास गुफा की दीवार के सहारे बैठा था... तभी भूलवश उसका हाथ पत्थर पर सरकते एक सांप पर जा गिरा। "हे भगवान, मैं कैसे ऐसी यातना सह पाऊंगा?" सौभाग्यवश सांप वहां से रेंगता हुआ चला गया...उसी समय सूरदास को अहसास हुआ कि उसने जिन लोगों पर जुल्म किया था, उन्हें कैसा महसूस हुआ होगा।

इसलिए भव्य प्रयास के साथ, वह रेंगकर गुफा के बीच में जाकर बैठ गया और सोचने लगा कि क्या करना चाहिए। चारों ओर सांप ही सांप भरे थे। यदि वह गुफा के भीतर रुकेगा तो सांप उसे डंस सकते थे। और यदि वह गुफा के बाहर जाएगा तो जंगली जानवरों के हमले का खतरा था।

२८-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: अवचेतन मन का फिर से जागृत होना

"भगवान करे फिलिप का अवचेतन मन उसे मुझ तक वापस भेज दे। कृपा करें प्रभु!" सूरदास रो पड़ा। पर उसे तुरंत एहसास हुआ-क्या उसका अवचेतन मन उसे कभी भी सही राह पर लाने में सफल हुआ?

"मैंने अपने अवचेतन मन को अपनी दुष्टता पर क्यों नहीं हावी होने दिया? क्यों मैंने अपने अवचेतन मन को बंद कर रखा था और दुष्ट काम करता रहा? मैं इतना दुष्ट क्यों था? ओह, मैंने 'था' कहा...तो क्या इसका मतलब यह है कि मैं अब बदल चुका हूं?"

एक-एक कर उसे उन लोगों के चेहरे याद आने लगे, जिन्हें उसने लूटा था, यातनाएं दी थीं...लड़कियों के साथ बलात्कार किया था...और यहां तक कि अपनी मां को भी मुसीबत में डाल दिया था।

"हे ईश्वर, अब मुझे बोध हो रहा है कि उन सभी को कितना कुछ झेलना पड़ा होगा। बदला लेने की मेरी भावना के कारण, मेरे दुष्ट उद्देश्यों के कारण, मेरी लालच और वासना के कारण उन सभी को नर्क की यातना भोगनी पड़ी। इससे पहले ऐसा मेरे साथ कभी नहीं हुआ था- इसका विचार भी मेरे मन में नहीं आया था। मुझे तो हमेशा यही लगता था कि कोई मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकता या मुझे कोई सता नहीं सकता। मैं तो दुष्टों का सरदार था। मुझे इतना भरोसा था कि कोई मुझे धोखा नहीं दे पाएगा। पर इस डरपोक और जन्मजात कायर इंसान नें मुझे मूर्ख बनाकर मेरी तो आंखें ही खोल दीं! बेशक, ईश्वर का न्याय यही है। मैं इसी के लायक हूँ।"

अपने जीवन में पहली बार उसने ईश्वर को याद किया था। तो उसने पहली बार ईश्वर से प्रार्थना की और कहा, "हे मेरे प्रिय ईश्वर, कृपया मुझे बचाओ...मैं वचन देता हूं कि मैं एक अच्छा जीवन जिऊंगा और आपकी राह पर चलूँगा। मैं यह भी वादा करता हूं कि मैं संभव हो उतने लोगों को खोजूंगा, जिन्हें मैंने नुकसान पहुंचाया है.. उनकी मदद करूंगा... और उनकी जो भी चीज़ें अबतक मेरे पास हैं, उन्हें लौटा दूंगा। मैं उन्हें ख़ुश रखने का भरपूर प्रयास करूंगा। मैं जानता हूं ऐसी भयानक ज़िंदगी जीने के बाद मैं बहुत अधिक माँग रहा हूं...पर हे मेरे ईश्वर, बस मुझे एक मौका और दे दो। सिर्फ एक मौका...ताकि मैं नर्क जाने से बच जाऊं और यहां पृथ्वी पर इन सांप एवं जंगली जानवरों के बीच रहकर नर्क झेलने से बच सकूं। हे ईश्वर, मैं आपसे पहली बार प्रार्थना कर रहा हूं। मुझे पहली बार अहसास हुआ है और दुष्टता से अच्छाइयों की तरफ जाने का मेरा दृढ़ फ़ैसला है। कृपया मेरी मदद करें, मुझे बचाएं-और अपनी सही राह सुझाएं। हे ईश्वर आप मुझे अपनी सूज्ञता का आशिर्वाद दें, और मुझे एक अच्छा जीवन जीने में मदद करें। कृपया

आप इस बार मुझे बचा लें...इसके बाद मैं कभी बुराइयों की राह पर नहीं चलूंगा।"

इसके बाद सूरदास बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगा। जब वह शांत हुआ तो उसे अनुभव हुआ कि उसके विचार और उसकी भावनाएं कितनी पवित्र और सच्ची थीं। क्या यह कभी संभव था कि उस जैसे शैतान की ईश्वर मदद करेंगे? उनके अलावा इस भयानक जंगल में उसे बचाने कौन आ पाता? सुबह होने तक क्या वह उन सांपों और जंगली जानवरों से भरे जंगल में जिंदा बच पाएगा? सूरदास को यह संभव नहीं लग रहा था।

"पर ईश्वर! आप तो अपने चमत्कारों के लिए जाने जाते हैं! ...तो हे प्रभु, चमत्कार करें... कृपया मुझे बचा लें और मैं वादा करता हूं मैं कभी गलत राह पर नहीं चलूंगा!"

उसी क्षण उसे जानवरों के गुफा के पास आने की आहट सुनाई दी। उसे अब अपना अंत नजर आने लगा। घावों और खरोंचों के बावजूद बड़ी मेहनत से रेंगकर वह गुफा के कुछ और अंदर एक गहरे अंधेरे कोने में खिसक गया। उसे यकीन था कि वहां कई सारे सांप थे... पर उसने जंगली जानवरों के हमले के बजाए सांप के काटने से मरना ज्यादा उचित समझा। गुफा के उस अंधेरे कोने में जब वह बचने की कोशिश कर रहा था, उसी समय एक सांप उसकी छाती पर से होकर चला गया।

"हे प्रभु, मुझे बचा लो...अब मैं कभी गलत काम नहीं करूंगा ।" यह आवाज़ उसके दिल की गहराई से निकली थी।

उसे याद आने लगा कि कैसे उसके शिकार बने लोग भी इसी तरह उससे विनती करते थे...पर वह, जो सबसे क्रूर इन्सान था...उनपर हंसता और उन्हें और अधिक प्रताड़ित करता। क्या उसने कभी उन लोगों के प्रति जरा भी दया दिखाई थी? नहीं, कभी नहीं। तो फिर आज ईश्वर उसके प्रति भला क्यों दया दिखाएंगे?

वह फिर रोने लगा और उसे पूरा भरोसा हो गया कि उसके बचने की अब कोई उम्मीद नहीं थी। "मैं अब कभी सवेरा नहीं देख पाऊंगा। हे ईश्वर, मुझे खत्म कर दो। मेरे हृदय की धड़कन को रोक दो। मुझे पता है मैं नर्क ही जाउंगा...पर मुझे इन जंगली जानवरों के हाथों मरने और सांपों के काटने से बचा लो। हे प्रभु, अब मेरा जीवन समाप्त कर दो।" एक और सांप उसके शरीर पर से गुज़रा और वह चीख उठा, "हे प्रभु, मुझपर दया किजीए, कृपया मुझे और प्रताड़ित नां करें।" उसके नवजागृत अवचेतन मन ने उससे पूछा, "क्या तुमने कभी अपने शिकार व्यक्तियों के प्रति दया दिखाई थी?"

"हां, तुम सही कहते हो...मुझे उनपर कभी दया नहीं आई। अब मैं समझ चुका हूं... पर अब तो बहुत देर हो चुकी है। अब तो मुझे कष्ट झेलना ही होगा। ईश्वर मेरे प्रति दया और हमदर्दी क्यों

दिखाएंगे भला?” सूरदास सच्चे मन से पछताने लगा और सुधरने की इच्छा करने लगा...पर उसे कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। उसे पता था उसका बचना अब मुश्किल हो चला था।

उसके अवचेतन मन ने एक बार फिर उससे कहा, “क्या तुमने कभी लोगों को नुकसान पहुँचाने से खुदको रोका? तो ईश्वर क्यों चमत्कार कर तुम्हें बचाए? जब तुम्हें लगता था कि तुम ख़ुश और सफल हो, तब कभी तुमने ईश्वर के बारे में सोचा था? तो अब क्यों ईश्वर को याद कर रहे हो? अब उनकी मदद के लिए क्यों पुकार लगा रहे हो?”

२९-०५-१९८१
सूरदास की कहानी...जारी: श्री उच्च भली आत्मा का प्रकट होना

सूरदास को अब सब कुछ साफ-साफ नज़र आने लगा...और उसे पूरा यकीन हो गया कि अब काफी देर हो चुकी थी...और कुछ ही घंटों में उसका नर्क जाना निश्चित था।

"ईश्वर हमेशा न्याय करते हैं। मुझे यह बहुत देर से समझ आया। ईश्वर सदा न्याय संगत होते हैं। भले ही देर से मिले पर न्याय मिलता अवश्य है। अब मुझे अपनी सज़ाएं भुगतनी ही होंगी- मेरे पास अब कोई रास्ता नहीं बचा।"

उसका अवचेतन मन एक बार फिर उसे कहने लगा, "तुम चाहते हो कि ईश्वर तुम्हारे लिए कोई चमत्कार करे; ठीक है... यह रहा चमत्कार-अब तुममें सुधार होगा...।" सूरदास को इन बातों का मतलब समझ में नहीं आया, लेकिन उसने सोचना जारी रखा, **"मैंने दुष्ट कर्म किए। अब मुझे सज़ा भोगनी ही होगी।** हे ईश्वर, मुझे अपनी सज़ा भोगने के लिए सही राह दिखाइए-मुझे अपनी आत्मा को शुद्ध करने का उपाय बताइए। मुझे दुबारा फिर कभी बुरी राह पर न जाने दें। हे ईश्वर, मुझे अंधःकार में प्रकाश दिखाइए और मैं फिर कभी आपकी राह से मुंह नहीं मोडूंगा। हे ईश्वर, मेरी आत्मा को दुष्टता से बचाइए। यदि मेरे भौतिक शरीर को यातना भी मिले तो मुझे इसकी परवाह नहीं, लेकिन मेरी आत्मा को बचा लीजिए।"

रात इसी तरह बीत गई और सुबह के समय उसे उस अंधेरी गुफा में रोशनी की एक किरण दिखाई पड़ी। वह अत्यंत हैरान रह गया।

"हे ईश्वर, यह तो चमत्कार है। हां, यह चमत्कार ही है। आपने मुझे बचा लिया!"

सूरदास खुशी से उत्तेजित हो गया। यह सब कैसे हुआ, इसे समझना उसकी कल्पना से परे था।

सूरदास के अवचेतन मन ने एक बार फिर उसे समझाना शुरु किया, "सूरदास! जहरीले सांपों और भयानक जंगली जानवरों को भी पैर कटे, लाचार इंसान पर दया आती है, पर तुम जैसे दुष्ट इंसान को तो मासूम, लाचार और अच्छे लोगों पर भी दया नहीं आई।" सूरदास को अपने आप पर बहुत शर्म आई। उसने फिर कभी बुरी राह पर न चलने की कसम खाई।

"इस घने जंगल में मेरे बचने का मौका अभी भी काफी कम है। यहां कोई आता-जाता नहीं... आखिर मैं कैसे यहां से बाहर निकल पाउंगा? हे भगवान, आपने मुझे सभी जंगली जानवरों से

बचाया...अब कृपया मुझे इस जगह से भी बचा लो, ताकि मैं एक अच्छा जीवन जी सकूं और अपनी सभी दुष्ट करतूतों का पश्चाताप कर सकूं। हे ईश्वर, एक बार फिर मेरी मदद करो। मुझे पता है कि मैं कुछ ज्यादा ही माँग रहा हूँ, पर मेरी आत्मा पर दया करो प्रभु।"

बड़ी कठिनाई से रेंगकर वह गुफा के बाहर आया...और एक चट्टान पर बैठकर ईश्वर से सच्चे मन से प्रार्थना करने लगा। कुछ घंटों बाद सूरदास ने एक पुण्यात्मा फ़कीर को देखा। वह शिथिल और थका-मांदा दिख रहा था। उसे देखकर सूरदास उत्साहित हो गया और उसने ऊंचे स्वर में आवाज़ लगाई, "कृपया मेरी मदद करो बाबा!"

पुण्यात्मा फ़कीर (हमारे श्री उच्च भली आत्मा) उसके पास आए और कहा, "मेरे बच्चे, तुम एक दुष्ट इंसान हो या नेक इंसान? मैं किसी दुष्ट इंसान की कभी कोई मदद नहीं करता। इसलिए मुझे बताओ... तुम दुष्ट हो या नेक?"

फ़कीर की बात सुनकर सूरदास यह कहने ही वाला था कि वह एक भला इंसान था...पर उसने ऐसा नहीं कहा...क्योंकि उसका अवचेतन मन अब जाग उठा था। वह तुरंत रुक गया और कहा, "हे फ़कीर बाबा, आइए यहां बैठिए और मेरी कहानी सुन लीजिए। इसके बाद यदि आपकी अंतरात्मा आपको मेरी मदद करने के लिए कहे तो मेरी मदद कीजिएगा, वर्ना आप अपनी राह चले जाइएगा... और ईश्वर आपका भला करें!"

श्री उच्च भली आत्मा एक शिले पर बैठ गए और कहा, "ठीक है...तुम अपनी कहानी सुनाओ...मैं सुन रहा हूँ।"

सूरदास ने फ़कीर को सारी सच्चाई बयां कर दी। उसकी बातों को सुनकर श्री उच्च भली आत्मा काफी प्रभावित हुए...पर वे अब भी उसकी परीक्षा लेना चाहते थे। "तुम इसलिए अपने-आप को बचाना चाहते हो ताकि तुम आगे भी दुष्ट काम कर सको।"

"नहीं फ़कीर बाबा, मैं अब कभी बुरे काम नहीं करूंगा। मुझे कड़ी सज़ा मिल चुकी है और अब मुझे पूरा भरोसा है कि ईश्वर ने पिछली रात मुझे इसलिए बचाया ताकि मुझे एक अच्छा जीवन जीने का मौका मिल सके। क्योंकि ईश्वर ने यह मौका मुझे दिया है, इसलिए बदले में मैं भी ऐसी राह चलूंगा कि उन्हें मुझपर गर्व हो।"

इन बातों से श्री उच्च भली आत्मा प्रभावित हुए...और उन्होंने देखा कि सूरदास का प्रभामंडल तथा स्पंदन भी बदल चुके थे। उन्होंने कहा, "ठीक है सूरदास, मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" उन्होंने सबसे पहले सूरदास को खाना और पानी दिया। उसके बाद वे सूरदास को उसके घर पहुंचा आए, और उसे वहाँ छोड़कर जीवात्मा जगत में लौट गए। अब उनका काम पूरा हो चुका था।

सूरदास अब भी पृथ्वी पर ही है। नकली पैरों के सहारे वह एक भला अच्छा, और निःस्वार्थ जीवन बिता रहा है। उसकी मां जेल से छूट गई..क्योंकि पुलिस को उसके ख़िलाफ़ कोई पुख़्ता सबूत नहीं मिले। अदालत ने संदेह का लाभ देते हुए उसे रिहा कर दिया। सूरदास ने इस बात के बारे में सुना और उसने अपनी मां को अपने साथ रहने को कहा। समय के साथ उसने अपनी मां को भी सुधार दिया।

मां और बेटे, अब सच्चाई भरा, दयालु एवं निःस्वार्थ जीवन जी रहे हैं। **पर सूरदास को यह पता नहीं चला कि श्री उच्च भली आत्मा और नीलू ने किस प्रकार उसकी मदद की थी।** जब वह जीवात्मा जगत में वापस लौटेगा तो उसे सब कुछ पता चल जाएगा।

नीलू बेहद ख़ुश हुई और उसने श्री उच्च भली आत्मा का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया। इसी प्रकार कई सारी जीवात्माओं ने पृथ्वी के लोगों की मदद की है। आप इसे चमत्कार कहते हैं... हां यही तो चमत्कार है!

३०-०५-१९८१
मनुष्य का असली रूप उसका अवचेतन मन है

पृथ्वी पर हम अकसर यह सवाल सुना करते थे, "पृथ्वी पर हम अपने पिछले जन्म या जीवात्मा जगत के बारे में क्यों नहीं जानते? क्यों ईश्वर हमारे मन से उन स्मृतियों को मिटा देते हैं?"

आपका अवचेतन मन हर एक चीज़ जानता है। आपके साथ (यानि आपकी आत्मा के साथ) जो कुछ भी होता है, वह शुरू से ही आपके अवचेतन मन में अंकित होता है। दुर्भाग्य से, आपका भौतिक मन यह सबकुछ नहीं संभाल पाता और ज्यादातर मामलों में यह आपके अवचेतन मन के साथ संघर्षरत रहता है। केवल कुछ ही आत्माएं, जो बहुत उच्चस्तर पर होती हैं, अपने अवचेतन मन द्वारा अपने भौतिक मन को नियंत्रण में रख पाती हैं। इन आत्माओं में अतिरिक्त संवेदनात्मक बोध होता है और इनमें से कुछ आत्माओ को पृथ्वी के अपने पिछले जन्म की घटनाएं भी याद होती हैं। उनमें कभी कभी अपने वास्तविक संसार अर्थात् जीवात्मा जगत की स्मृतियां भी बनी रहती हैं, लेकिन ऐसा कभी-कभी ही होता है।

आप शायद यह जानना चाहेंगे कि आपका अवचेतन मन इन स्मृतियों को क्यों सुरक्षित नहीं रखता। जैसा कि हमने बताया, आपके भौतिक मन के लिए इन्हें संभाल पाना मुश्किल होता है। इसके अलावा, आपका अवचेतन मन नहीं चाहता कि आप वह सब जाने क्योंकि आप पृथ्वी पर अनुभव हासिल करने, अपनी परीक्षाएं देने, प्रशिक्षण लेने और कर्मों का फल भोगने आए हैं। **यदि आप सबकुछ जान जाएंगे तो आपको उन सब बातों के साथ तालमेल बिठाना बहुत ही मुश्किल होगा और जीवन में कोई आनंद नहीं रहेगा। आप अपना जीवन एक यंत्र की तरह व्यतित करेंगे। यदि आपको अपने कर्मों का पता चल जाए तो धरती पर आपका जीवन नीरस हो जाएगा।**

आपका अवचेतन मन हर बात जानता है और वह कभी ग़लती नहीं करता। इसमें हर बात दर्ज़ होती है। पृथ्वी पर जन्मी उच्चतर स्तर की आत्माओं का अवचेतन मन धरती की साधारण आत्माओं की तुलना में थोड़ा अधिक ताकतवर होता है। हमने कहा 'थोड़ा अधिक', क्योंकि जीवात्मा जगत में भी हमारा अवचेतन मन पूरी तरह कार्यशील नहीं होता। हालांकि, पृथ्वी के मनुष्यों की तुलना में यह अधिक जागृत होता है। **जीवात्मा जगत में केवल सातवें लोक के बाद ही आपका अवचेतन मन उच्च क्षमता के साथ काम करता है।**

पृथ्वी के कुछ योगी [१३] और धर्मात्मा मनुष्यों में लंबे समय तक ध्यान करने की क्षमता होती है।

उनका अवचेतन मन अधिक से अधिक जागृत होता जाता है और वे अपने भौतिक मन को अपने अवचेतन मन द्वारा नियंत्रित करते हैं। आप जैसे ज्यादातर लोगों के विपरीत, वे अपने भौतिक मन के ग़ुलाम नहीं होते। **अपने भौतिक मन के गुलाम मत बनिए।** यदि आपने अपने भौतिक मन को नियंत्रित नहीं किया तो वह आपको बद से बदतर हालात की ओर ले जाएगा।

जब आप देह त्यागते हैं, तो आपका भौतिक मन आपके भौतिक शरीर के साथ ही मर जाता है। आपका भौतिक मन आपको अपने वश में करने और आपको अपने अनुसार संचालित करने के लिए व्याकुल रहता है। लेकिन, आप अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करें और इसे अपने ऊपर हावी न होने दें।

आप अनंत काल तक के लिए अपने अवचेतन मन से जुड़ी हुई एक आत्मा हैं, फिर आप कैसे अपने कमजोर और अप्रशिक्षित भौतिक मन को अपना मालिक बनने दे सकते हैं? क्या आप इतने कमजोर और रीढ़विहीन प्राणी हैं कि आप इसे नियन्त्रण में नहीं रख सकते?

अब से यह याद रखिए: **आपका अवचेतन मन ही आपका वास्तविक स्वरूप है।** इसलिए अपने भौतिक मन को अपना मालिक बनने मत दीजिए। अपना मालिक खुद बनिए।

३१-०५-१९८१
पूर्वजन्म की बातें क्यों याद नहीं रहतीं

पृथ्वी के लोग जीवात्मा जगत और अपने पूर्वजन्मों की संजोयी हुई सभी स्मृतियों को भूल जाते हैं। अनुभव हासिल करने, खुद को प्रशिक्षित करने और अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए हम पृथ्वी पर कई बार जन्म ले चुके होते हैं, ताकि हम अधिक से अधिक ऊंचे स्तर पर प्रगति कर सकें। यदि हम पृथ्वी के अपने सभी पूर्वजन्मों को याद रखें तो क्या इससे हमें अधिक ज्ञान हासिल करने में मदद मिलेगी? बहुत लोग कहेंगे ‘हां’, लेकिन हमारा कहना है कि ऐसा नहीं होता, क्योंकि यदि आप अपने पूर्वजन्मों को याद रखेंगे तो क्या आप अपनी पिछली ग़लतियों को दुहराएंगे? कभी नहीं।

इसलिए अपनी ग़लतियों को सुधार कर, अपनी समस्याओं को सुलझाकर और मुसीबतों का सामना कर आप अपनी आत्मा का शुद्धीकरण करते हैं। बिना ग़लती किए, बिना समस्याओं से जूझे और बिना दर्द महसूस किए आप अच्छे और बुरे में अन्तर नहीं कर पाएंगे। यदि आप यही न समझ सकें, तो जीवन का क्या अर्थ है? जीवात्मा जगत और पूर्वजन्मों की यादों को सुरक्षित रखकर मनुष्य का जीवन एक यंत्र की तरह हो जाएगा। अपनी परीक्षा, प्रशिक्षण और कर्म के प्रति आपका रवैया स्वाभाविक नहीं रह जाएगा। जीवन में आप जो चुनेंगे, वह पहले से सोचा-समझा हुआ होगा। ऐसा चुनाव आपकी वास्तविक मनोस्थिति के कारण किया गया नहीं होगा।

पृथ्वी पर हर कोई खुशी चाहता है, लेकिन क्या वे जानते हैं कि खुशी असल में होती क्या है? नहीं। धरती पर लोग सोचते हैं की खुशी का अर्थ है बहुत सारा रुपया-पैसा, ऐशो-आराम, मौज-मस्ती और शोहरत। हमें यह बताते हुए अफ़सोस होता है कि ये चीजें सच्ची खुशी नहीं देतीं। असली खुशी तो सच्चे प्यार, प्रकृति की सुन्दरता, दिल से निकली हुई हंसी और मुस्कान (जैसा कि बहुत लोग करते हैं, ये जबरन ओढ़ी हुई नहीं होनी चाहिए), निःस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद करने और खुद को उच्च स्तरों तक उठाने के लिए अपनी आत्मा को शुद्ध करने से मिलती है।

आप अपनी आत्मा को शुद्ध करेंगे और उच्चतर स्तरों को हासिल करेंगे, और आप इसे गलतियां कर, उन्हें स्वीकारते हुए करेंगे। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप अपनी ग़लतियों को किस तरह सुधारते हैं, अपनी समस्याओं को किस तरह सुलझाते हैं और किस तरह अपनी मुश्किलों का सामना करते हैं। ये सभी चीज़ें आप पर ही निर्भर करती हैं कि आप अपनी ग़लतियों को सुधारने, समस्याओं को सुलझाने और मुसीबतों का सामना करने में किस प्रकार के तरीके अपनाते हैं-सच्चे, सीधे और ईश्वरीय तरीके, अथवा बुराइयों और दुष्टता से भरे तरीके।

उदाहरण के लिए यदि आपसे कोई ग़लती हो जाए और आप यह मानते हैं कि आपने ग़लती की

है, तो आपको उस ग़लती को जरूर सुधारना चाहिए। आपको धरती पर अनुभव हासिल करने, खुद को प्रशिक्षित करने और अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए भेजा गया है। इससे आप खुद को उच्चतर स्तरों तक उठा पाएंगे, इसलिए आपको जीवन में समस्याओं, मुसीबतों और अन्यायों का सामना करना ही चाहिए।

यहां जीवात्मा जगत में हमें हर चीज याद रहती है। हमारी स्मृतियां आपकी तरह मिट नहीं जाती, इसलिए हमारा विकास बहुत धीमा होता है। आपका जन्म धरती पर इसलिए होता है कि आप तेज गति से विकास कर सकें, लेकिन आपमें से ज्यादातर लोग नीचे गिरते चले जा रहे हैं।

आप हैरान होंगे कि क्यों आप अपने वास्तविक संसार, जीवात्मा जगत की बातें याद नहीं रख सकते। **यदि आपको जीवात्मा जगत की बातें याद रह जाएं तो आप भले लोग पृथ्वी पर जीने से घृणा करेंगे। लेकिन बुरी और दुष्ट आत्माएं दुर्भाग्य से यह भूल गई हैं कि पहले, दूसरे और तीसरे लोक कैसे होते हैं।**

कई बार जब निर्दोष होने के बावजूद आपको दोषी ठहराया जाता है तो ईश्वर के प्रती आपकी आस्था डगमगाने लगती है।

ऐसी हालात में आपके मन में सवाल उठते हैं, “क्या यह सच है कि ईश्वर हैं? यदि ऐसा है, तो फिर वह अपने आप को प्रकट क्यों नहीं करते? क्यों उन्होंने कई बार मेरा साथ नहीं दिया? जब मुझे उनकी सबसे अधिक जरूरत होती है, तब वह कहीं नहीं दिखते। मुझे न्याय क्यों नहीं मिलता? यदि इश्वर इतने ही भले, दयालु और न्यायशील है तो क्यों वे दुष्ट लोगों को सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचने देते है? क्यों दुष्ट लोग सफल होते हैं और भले लोगों को कष्ट भोगना पड़ता है? आख़िर क्यों?”

क्या आपने भी कभी ऐसे सवाल किए हैं? ये रहे कुछ जवाब:

१. क्या ईश्वर सचमुच होते है?

हां, बिल्कुल ईश्वर होते हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो आपको किसने रचा? किसने पृथ्वी बनाई? किसने पेड़-पौधों, फूलों, फलों, समन्दरों, नदियों और पहाड़ों की रचना की? कौन है, जो रहस्यमय तरीके से दुष्ट आत्माओं के साथ न्याय करता है? किसने आपके मन में सुन्दर और प्यारी भावनाएं भरीं? कौन इतना दयालु है जो आपको आपके प्रियजनों के निकट रखता है? ईश्वर के अलावा, कौन इतना कुछ कर सकता है?

२. आप निर्दोष थे, फिर भी दोषी साबित किए गए। कहां थे ईश्वर उस वक्त? इसके भी कई जवाब हैं। उनमें से एक आपके लिए जरूर सही रहेगा:

(क) क्या आप यकीन से कह सकते हैं कि आपने कभी किसी को दु:ख या नुकसान नहीं पहुंचाया? हो सकता है आपको इसी बात की सजा मिल रही हो।

(ख) हो सकता है आपने किसी को दु:खी किया हो या आपने पूर्व जन्म में पाप किए हों, और यह उसी का फल हो।

(ग) स्वाभाविक रूप से आप अधिक से अधिक ऊंचा उठना चाहते हैं, इसलिए जरा सोचिए, क्या आप बिना समस्याओं का सामना किए प्रगति कर पाएँगे?

(घ) यदि आप सोचते हैं कि आप बहुत धार्मिक और भली आत्मा हैं, तो क्या आपने कभी खुद का विश्लेषण किया है? जरा पता लगाइए कि आपने जो भी काम किए क्या वे सही थे, और क्या वे नि:स्वार्थ भाव से किए गए थे, क्या उनमें पाखंड, स्वार्थ या बेईमानी बिल्कुल नहीं थी? क्या आपने कभी कोई अच्छा काम किसी स्वार्थी उद्देश्य से किया है? क्या आपको कभी ऐसा विचार भी आया कि वह नेक काम करने से आपको स्वर्ग मिलेगा, प्रसिद्धि हासिल होगी या फिर ऐसा करने से आपके पाप धुल जाएंगे? **ऐसे नेक काम, नेक नहीं होते।** आप केवल दुनिया और खुद अपने आप को धोखा दे रहे होते हैं। पृथ्वी पर लोग हर समय खुद को धोखा देते रहते हैं और ईश्वर को भी धोखा देने की कोशिश करते है, जो नामुमकिन है। तो क्या आपको लगता है कि आप पाप कर रहे हैं? हां, बिल्कुल आप पाप कर रहे हैं।

(ड) पृथ्वी पर ज्यादातर लोगों के लिए धन सबसे महत्वपूर्ण चीज है। किसी भी चीज का जरूरत से ज्यादा होना, ठीक बात नहीं। आप यह भी जानते हैं कि सारी दुष्टता की जड़ रुपया है। रुपया मनुष्य को अन्धा बना देता है। यह उसके कानों को ऐसा बहरा बना देता है कि उन तक ग़रीबों की विनतीयां नहीं पहुंचती। रुपया आपके हृदय को पत्थर बना देता है। आप दया, वफ़ादारी, प्यार (हमारा मतलब सच्चे प्यार से है) और अपने परिवार तथा अन्य लोगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य भूल जाते हैं।

(च) क्या आपने कभी किसी को ग़लत आंका है अथवा किसी को गुमराह किया है? हो सकता है यह उसी की सजा हो।

(छ) क्या आप कभी बहुत प्रसिद्ध या लोकप्रिय होना चाहते थे? हो सकता है आपकी उस इच्छा और महत्वाकांक्षा ने किसी को नुकसान पहुंचाया हो या किसी को गुमराह किया हो।

(ज) प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, क्या आपने कभी अपने स्वार्थी उद्देश्यों के लिए किसी को कष्ट दिया है?

(झ) क्या आपने कभी किसी दुष्ट व्यक्ति का साथ दिया है, यदि आप दुष्ट लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, तो दुष्ट बने रहने के लिए आप उन्हें प्रोत्साहन देते हैं और इस कारण आप भी उसी वर्ग में सम्मिलित हो जाते हैं।

क्या आपने यह महसूस किया है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर कभी अन्यायी नहीं हो सकते और वह कभी किसी के प्रति अन्याय नहीं करेंगे? यदि आप वास्तव में निर्दोष हैं **तो चाहे आपके पास सबूत हो, या न हो, वे आपको निर्दोष ही साबित करेंगे, बशर्ते आप ईश्वरीय राह पर चलते रहें।** हो सकता है ऐसा तत्काल न हो इसमें महीनों, वर्षों अथवा दशकों लग जाएं, लेकिन वे न्याय

जरूर करेंगे।

खुद का विश्लेषण कीजिए। अपने आप से यह सवाल पूछिए और हमें यकीन है कि उनमें से एक न एक आप अपने लिए सही पाएंगे। जब भी आप किसी मुश्किल में पड़ जाएं अथवा आपके सामने कोई समस्या खड़ी हो जाए तब अपने आप से यही सवाल करें।

हम चाहते हैं आप यह समझ लें: आप पृथ्वी पर हैं और पृथ्वी आपकी आत्मा के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र है, जहां आपको अनुभव प्राप्त होता है। उच्चतर लोकों तक पहुंचने के लिए और शाश्वत ख़ुशी पाने का आपके लिए यह एक अवसर है। पृथ्वी आपको अपने कर्मों का फल सहजता से भोगने, नेक काम करने, निःस्वार्थ भाव से दूसरों और अपने प्रियजनों की मदद करने का मौका भी देती है। तो फिर आप क्या आशा करते हैं -बिना मुश्किलों वाला जीवन? बिना कांटों के गुलाबों की क्यारी? आप अपनी दुष्ट दुनिया से क्या उम्मीद कर सकते हैं-लबालब भरी हुई अच्छाई?

आपको अपनी समस्याओं के साथ बहादुरी और ख़ुशी से संघर्ष करना चाहिए।

आपको बुराइयों से लड़ना चाहिए।

आपको अपनी आत्मा को शुद्ध करना चाहिए।

आप इन्हीं कारणों से इस वक्त पृथ्वी पर हैं। हमेशा इसे याद रखिए और बहादुर, साहसी और बुद्धिमान बनिए। आज आपको लग सकता है कि ईश्वर अन्यायी हैं लेकिन एक दिन आपको जरूर पता चलेगा कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने जो किया वह बिल्कुल सही था। वही आपके और आपके प्रियजनों के लिए सबसे श्रेष्ठ था। इसमें कोई ग़लती नहीं हो सकती।

०३-०६-१९८१
जीवात्मा मार्गदर्शक

पृथ्वी पर आप सब और यहां जीवात्मा जगत में हम - सभी मनुष्य हैं, लेकिन हमारे स्वभाव अलग-अलग हैं। याद रखें, पृथ्वी पर आप अपनी आत्मा को शुद्ध करने के उद्देश्य से आए हैं।

इसलिए, घृणा को छोड़ प्रेम अपनाइए।

ईर्ष्या का त्याग कर समझदारी को अपनाईए।

हृदय की कठोरता दूरकर दयालुता अपनाईए।

बेईमानी और चालाकियों को छोड़कर ज्ञान को अपनाईए।

स्वार्थ को छोड़कर निःस्वार्थता को गले लगाइए।

इन्हीं रास्तों पर चलकर आप अपनी आत्मा को शुद्ध कर पाएंगे और स्वयं को उच्च स्तर की ओर ले जा पाएंगे।

पृथ्वी पर पुनर्जन्म एक प्रकार का जुआ है। सूरदास की कहानी में आपने यह जरूर देखा होगा। हालांकि आप अपनी आत्मा को शुद्ध करके एक उच्च स्तर तक पहुंचें, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आपको दुष्ट प्रभावों से बचने के लिए दोहरी सुरक्षा दे रखी है ताकि आपका आध्यात्मिक पतन न हो। इसमें से एक सुरक्षा तो आपका अपना ही शक्तिशाली और सबसे उद्भुत अवचेतन मन है जो हमेशा आपको बुराई की ओर बढ़ने से रोकता है, बशर्ते कि आपने उसका कहना न मानने का फौसला कर लिया हो, और इसी कारण वह सुप्त हो गया हो। दूसरी सुरक्षा आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक है, जिसे कुछ लोग अभिभावक फ़रिश्ता कहते हैं। **पृथ्वी की सभी आत्माओं के पास जीवात्मिक मार्गदर्शक होते हैं जो जीवात्मा जगत से उनपर नज़र रखते हैं।** ये मार्गदर्शक आपको यह बताते हैं कि आपने कहां ग़लती की है।

आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक आपके बारे में सबकुछ जानता है और आपको सही रास्ते पर कायम रखने के लिए संकेत देने की पूरी कोशिश करता है।

आपका अवचेतन मन सुप्त होने से पहले आपके जीवात्मिक मार्गदर्शक को पुकारता है और उससे कहता है कि, “अब मेरा कोई उपयोग नहीं रहा, इसलिए तुम मेरे कर्तव्यों का भी अतिरिक्त बोझ उठा लो।”

आपके भौतिक मन के जरिए आपको सही रास्ते पर रखने में आपके मार्गदर्शक को बहुत कठिनाइयां होती हैं। मार्गदर्शक को सीमाएं लांघनी पड़ती हैं और आपके भौतिक मन को अपने अनुसार काम करने के लिए बाध्य करना पड़ता है। ऐसी स्थितियों में, पृथ्वी के कुछ लोग भौतिक मन के जरिए भी सुन नहीं पाते। आपको दिए गए दिशा-निर्देश को आप अस्वीकार कर देते हैं और दूसरों को नुकसान पहुंचाना जारी रखते हैं।

आप सोचते होंगे कि आप दूसरों को नुकसान पहुंचा रहे हैं और आपमें से कुछ को इसमें आनन्द भी आए, **लेकिन सच तो यह है कि आप खुद को ही नुकसान पहुंचा रहे हैं, और वह भी किसी अन्य की तुलना में सैकड़ों गुना अधिक।**

अपने अहंकार को अपनी जेब में रखिए और खुद से सवाल पूछिए कि दूसरों को नुकसान पहुंचाकर हासिल की गई सफलता अथवा दूसरों को नुकसान पहुंचाने से मिली हुई खुशी से क्या कभी आपको शाश्वत आनंद मिल सकता है? क्या इससे कभी आप उच्च स्तर की ओर जा सकेंगे? पृथ्वी पर कुछ वर्षों की ख़ुशी के लिए क्या आप अपने वास्तविक और अनंत आनंद को त्याग कर हजारों साल तक नर्क में जीना पसंद करेंगे? क्या यह मूर्खता नहीं?

०४-०६-१९८१
जुड़वां आत्माएं

जीवात्माएं अपने प्रियजनों को उच्चस्तर की ओर ले जाने के लिए उत्सुक रहती हैं। वे हमेशा इस बात की कड़ी कोशिश करती हैं कि अपने प्रियजनों को वे गलत राह पर कभी न चलने की प्रेरणा दे सकें, ताकि उन्हें कष्ट न भोगना पड़े।

प्रत्येक आत्मा की एक जुड़वां आत्मा होती है। बड़ी मुश्किल हो जाती है जब एक जुड़वां आत्मा उच्चस्तर पर और दूसरी निम्नस्तर पर हो। जो आत्मा उच्चस्तर पर होती है उसे अपनी जुड़वां के समान स्तर तक पहुंचने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इस कारण, जीवात्मा जगत में उच्च स्तर पर स्थित आत्मा को पृथ्वी पर रहने वाले निम्नस्तर पर स्थित आत्मा को प्रोत्साहित करना पड़ता है। पृथ्वी पर की जुड़वां आत्मा को उच्चस्तर पर ले आना बहुत ही मुश्किल काम होता है। सभी जुड़वां एकसाथ रहना चाहते हैं, चाहे उनकी दूसरी जुड़वां आत्मा बुरी हो या भली।

पृथ्वी के जो लोग अपने अवचेतन मन को सुप्त हो जाने देते हैं और अपने जीवात्मिक मार्गदर्शक द्वारा भेजे गए संकेतों के अनुसार चलने से इनकार कर देते हैं, वे हम जीवात्माओं के लिए वास्तव में समस्या बन जाते हैं। किसी एक जुड़वां के लिए अपने दूसरे साथी को सही रास्ते पर लाना बहुत ही मुश्किल काम है।

बहुत कम जुड़वां ऐसे होते हैं जो समान स्तर पर हों, इसलिए उच्च स्तर पर स्थित जुड़वां को अपने साथी के लिए २-३ नहीं, २०-३० नहीं, न ही २०० या ३०० वर्ष, बल्कि कभी-कभी तो ५०० या ६०० वर्षों तक इंतजार करना पड़ता है। जब कोई आत्मा पहले, दूसरे अथवा तीसरे लोक में पहुंच जाती है, तो उसे उच्चस्तर पर पहुंचने के लिए सैकड़ों पृथ्वी-वर्षों का समय लगता है। कुछ को तो हजारों वर्ष भी लग जाते हैं।

अपने साथी के लिए इंतजार करने वाली जुड़वां आत्मा की इच्छा इतनी प्रबल और सच्ची होती है कि वह अपने साथी की मदद करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लेती है।

कभी-कभी वे सफल हो जाती हैं, लेकिन ज्यादातर किस्सों में, वे भी निम्नस्तर पर गिर जाती हैं। इस तरह जीवात्मा जगत और पृथ्वी गतिमान रहते हैं।

इस तथ्य को दुहराने से हम अपने आप को रोक नहीं सकते: यदि पृथ्वी के लोग इतने बुद्धिमान होते कि वे अपने लिए क्या सही है और क्या गलत, यह समझ पाते, या फिर जीवात्मा जगत से

मिलने वाले संदेशों को प्राप्त करने की कोशिश करते तो उनके लिए चीजों को समझना बहुत आसान होता। लेकिन धरती पर ज्यादातर लोग मृत्यु-बाद के जीवन अथवा जीवात्मा जगत पर विश्वास ही नहीं करते और यदि कुछ लोग विश्वास करते भी हैं तो यह जानना उनकी क्षमता से परे है कि हम कैसे संदेशों को भेज सकते हैं अथवा धरती के लोग उन संदेशों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं। आपकी दुनिया में कुछ ऐसे भी मूर्ख हैं जो यह कहते हैं कि “मृत आत्माओं से बात नहीं करनी चाहिए। ऐसा करने से उनकी प्रगति रूक जाती है और वे परेशान हो जाती हैं।”

कृपया हमें ग़लत न समझें लेकिन हम उन मूर्खों को यह कहने से अपने आप को रोक नहीं सकते कि : यदि आप सचमुच बुद्धिमान और ज्ञानी होते तो आप इस तरह नहीं सोचते। इसके अलावा, ऐसे लोग जो जीवात्मिक संपर्क को रोकना चाहते हैं, वे इतने पापी और भ्रष्ट होते हैं की वे इस बात से डरते हैं कि दुनिया सच्चाई जान लेगी और वे दूसरों को बेवक़ूफ़ बनाकर अपने बुरे कामों को जारी नहीं रख पाएंगे। कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें यह पता है सही क्या है और वे कोशिश करते हैं कि दूसरे भी उनकी इस बात का विश्वास करें की जीवात्मा जगत से संपर्क करनेवाले झूठे या पागल होते हैं।

यदि पृथ्वी के लोग हमारे साथ सहयोग करें तो हमारे लिए उन तक संदेश भेजना और उनकी मदद करना बहुत आसान हो जाएगा। इसके बजाए वे यह गप हांकते हैं कि यह सबकुछ बकवास है, धोखा है और इससे लोगों की मदद होने के बदले उनका नुकसान होता है। इसलिए हमें अपने संकेत भेजने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और वर्षों तक हमें इन लोगों के पीछे भागना पड़ता है ताकि वे सही रास्ते पर आ सकें। हमारी इतनी कोशिशों के बाद भी कुछ आत्माएं अपनी धारणाऐं नहीं बदलतीं। वे हमारी बात नहीं सुनतीं और अपनी बुरी राह पर चलती रहती हैं।

जब पृथ्वी की कोई दुष्ट आत्मा अपने अवचेतन मन को सुप्त हो जाने देती है, और उसका जीवात्मिक मार्गदर्शक भी उस आत्मा को सही राह पर लाने में असफल हो जाता है, तब ऐसी आत्मा को सही राह पर लाने के लिए उसकी जुड़वां आत्मा के अलावा और कौन बचता है? पृथ्वी की किसी गिरी हुई जुड़वां आत्मा को उच्चस्तर तक उठाना और उसमें सुधार लाने की कोशिश करना जीवात्मा जगत की जुड़वां आत्मा के लिए बहुत कठिन काम होता है। इसलिए, जो जरूरी है, वह करें, खुदको सुधारें और उच्चस्तर तक तेज़ी से बढ़ें।

पृथ्वी पर चन्द वर्षों की मौज-मस्ती और ख़ुशियों के बारे में मत सोचिए; शाश्वत खुशियों के बार में सोचें।

०५-०६-१९८१
भलाई या दुष्टता का चयन आपकी अपनी इच्छा पर निर्भर है

आपने अच्छे-बुरे के बारे में और आत्म-सुधार के बारे में किताबें पढ़ी होंगी, उपदेश सुने होंगे अथवा आपको इस बारे में पाठशाला में और आपके बुज़ुर्ग रिश्तेदारों अथवा दोस्तों के द्वारा सिखाया गया होगा। लेकिन आपमें से कुछ ऐसे भी होंगे जो सुनने या पढ़ने की परवाह नहीं करते। कुछ लोग कहेंगे, "मुझे क्यों यह सब करना चाहिए? दूसरों को सताने से मुझे मज़ा आता है। दूसरों को धोखा देकर मैं ख़ुश होता हूं और लोगों का नुकसान करने और उन्हें लूटने में मुझे आनन्द मिलता है।"

हम उन आत्माओं से पूछते हैं, "जब आप किसी की मदद करते हैं तो क्या आपको आनन्द नहीं होता? जब आप किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा करते हैं जिसने आपका नुकसान किया हो, तब क्या आप शांति नहीं महसूस करते? दूसरे को ख़ुशी देकर क्या आप स्वयं ख़ुश नहीं होते?" यदि ये चीजें आपको ख़ुशी नहीं देतीं बल्कि आपको उन भयानक बुरी चीजों से ख़ुशी मिलती है, तो हमें आपके लिए दुःख होता है, आप पर दया आती है।

हर आदमी के भीतर अच्छाई और दुष्टता दोनों होती हैं, लेकिन यह पूरी तरह आपकी पसंद पर निर्भर करता है कि आप अच्छे या दुष्ट बनें। यही असल बात है। बुराई को नियंत्रित रखकर अपने अन्दर की अच्छाई को विकसित करना अवश्य एक महान बात है।

यदि आप दूसरे का बुरा कर ख़ुश होते हैं, दूसरों को मूर्ख बनाकर आपको आनन्द मिलता है या फिर दूसरों को परेशान करने में आपको गर्व अनुभव होता है, तो क्या आपके सुधार के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से सहायता, मार्गदर्शन और आशीर्वाद मांगने का यही सही समय नहीं है?

०६-०६-१९८१
जीवात्मा संपर्क द्वारा जीवात्माएं पृथ्वी पर अपने प्रियजनों की सहायता कर सकती हैं

हम पृथ्वी पर रहने वाले अपने प्रियजनों के साथ संपर्क करने के लिए बहुत उत्सुक होते हैं, इसलिए हम लगातार सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, कि वे हमें इसका अवसर दें। ज़्यादातर पृथ्वी के लोग अपने काम-काज, मौज-मस्ती और रुपए कमाने में इतने व्यस्त रहते हैं कि वे अपने मृत परिजनों की परवाह नहीं करते।

बहरहाल, हमारे माता-पिता जैसे कुछ लोग अपने मृत परिजनों से संपर्क करने के लिए इच्छुक होते हैं। हम ख़ुशी से उछल पड़े जब हमारे माता-पिता ने हमारी बातें सुननी चाहीं। उन्हें भी ख़ुशी हुई कि वे हमसे संपर्क करने में सक्षम हो सके। जीवात्माओं की इच्छा होती है कि हमारे मॉम-डैड जैसे और भी लोग हों! हम उन्हें शांत करने में और उनका इस बारे में मार्गदर्शन करने में सफल रह सकें कि कौन लोग उन्हें धोखा दे रहे हैं, कौन उनके सच्चे दोस्त हैं और किनपर उन्हें भरोसा कर मदद मांगनी चाहिए। हमारे माता-पिता आपकी दुनिया में बहुत अकेले हैं। उनके कुछ ही रिश्तेदार और अच्छे दोस्त हैं जिन्होंने उनकी मदद की है। हम उन्हें धन्यवाद देते हैं और उन्हें आशिर्वाद देते हैं।

बहुत सी जीवात्माएं ऐसी हैं जो अपने प्रियजनों के साथ संपर्क करने को बहुत अधिक इच्छुक हैं। हमारी तरह वे पृथ्वी के अपने प्रियजनों को शांति प्रदान कर उनकी मदद करना चाहते हैं क्योंकि पृथ्वी पर उनका दुःख और बदहाली यहां हम तक प्रस्तावित होती हैं और हमें भी दुःखी और उदास कर देती हैं।

हम समझते हैं कि आप उस समय कैसा महसूस करते होंगे जब आपका कोई प्रियजन आपकी दुनिया छोड़ आपसे अलग हो जाता है, क्योंकि आप हमें देख, सुन या छू नहीं सकते, लेकिन हम आपसे विनती करते हैं कि आप शांत रहें, और हमारे लिए शोक न करें क्योंकि हम वहां की तुलना में यहां अधिक ख़ुश हैं। **पृथ्वी की तुलना में हम यहां अधिक जीवंत हैं और हम यहां से भी आपको देख, सुन और छू सकते हैं, आपके गले मिल सकते हैं और आपको चूम भी सकते हैं।**

यदि आप और आपके मृत परिजन एक दूसरे के बहुत करीब हों केवल तब ही हम आपके दुःख का प्रबलता से अनुभव कर सकते हैं। किसी माता या पिता और उनके बच्चों, या भाई और बहन अथवा एक दूसरे से गहरा प्यार करने वाले अच्छे दोस्त और उनका लगाव हमपर गहरा असर

करता है। बहरहाल, इससे फर्क नहीं पड़ता कि धरती पर उनका रिश्ता क्या था, यदि लोगों में सच्चा और परस्पर प्यार न हो, तो जीवात्मा जगत में आने के बाद हमारा उस आत्मा के साथ संबंध नहीं रहता।

हमारे माता-पिता कभी-कभी हमारे बिना इतने अकेले और दुःखी हो जाते हैं कि बिना जीवात्मिक संपर्क के हमारे लिए उन्हें शांत करना और उन्दें ख़ुश करना बहुत कठिन हो जाता। हम उन्हें समझाते कि उन्हें अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना चाहिए क्योंकि उनके दुःख से हमें भी दुःख होता है, और पृथ्वी पर होने की तुलना में हम आज उनके अधिक करीब हैं। इस जीवात्मिक संपर्क से हम सब (मॉम, डैड, विस्पी और रतू) एक दूसरे के साथ अपने सुख-दुःख बांटते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि इस कारण वे यह जान पाते हैं, कि हम उनके करीब हैं और उन्हें भरपूर प्यार करते हैं। जीवात्मिक संपर्क के जरिए ऐसा करना हमारे लिए बहुत आसान हो जाता है।

इसलिए हम पृथ्वी के लोगों से उन्हीं के भले के लिए, और इसलिए भी कि हमें अपना कर्तव्य निभाने में आसानी हो, जीवात्मिक जगत के साथ सुरक्षित संपर्क करने का अनुरोध करते हैं। जीवात्मिक संपर्क की मदद से हमें आपका मार्गदर्शन करने और आपको गहरे अन्धेरे में डूबने से रोकने में आसानी होती है। आपका मार्गदर्शन करना हमारा कर्तव्य है और इसलिए हमारे साथ संपर्क करना आप के लिए उचित है। यदि आपके पास ऐसा वरदान है तो इसका विकास जरूर करें। सर्वशक्तिमान ईश्वर की तरफ से हर एक आत्मा को किसी न किसी प्रकार का वरदान जरूर मिला होता है, लेकिन कुछ लोगों को इसे विकसित करने के लिए लंबे समय तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जबकि कुछ लोगों को यह अपने आप मिल जाता है।

अपने सहजबोध को कभी भी अनदेखा न करें। कभी भी यह मत सोचिए कि यदि लोग आपके इस वरदान के बारे में जानेंगे तो आपको पागल या सनकी कहेंगे। यह ईश्वर का दिया हुआ वरदान है और आपको इसके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

एक लड़की थी जिसे हम नीना नाम देंगे। उसे यह वरदान प्राप्त था लेकिन उसकी मां ने उसके दिमाग में गलत धारणाऐं भर रखीं थीं। वह उससे कहती थी, “जीवात्मा के साथ संपर्क करना दुष्ट बात है। ऐसा फिर कभी नहीं करना वरना कोई दुष्ट जीवात्मा तुम्हारे देह पर कब्जा कर लेगी और तुम्हें बरबाद कर देगी। तुम शैतान बन जाओगी और तुम्हें नर्क की आग में जलना पड़ेगा।”

नीना अपनी मां की चेतावनी से इतना डर गई कि उसे “जीवात्मिक संपर्क” शब्द कहने से भी डर लगने लगा। वह एक बड़ा अवसर, एक अद्‌भुत वरदान और अपने आप में विश्वास खो बैठी।

कई वर्षों बाद जब उसे सच पता चला और उसके पति ने उसे ऐसी किताबें दीं जिनमें इस वरदान का वर्णन था, तब बहुत देर हो चुकी थी। मां की कही बातों को भुलाकर उसने अपनी पुरानी

क्षमता को वापस पाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन वह इसे दुबारा हासिल नहीं कर पाई क्योंकि उसका डर बहुत गहरा हो चुका था। अपनी मां का कहा मानने का उसे अफ़सोस था और अपना खोया आत्मविश्वास दुबारा पाना उसके लिए असंभव हो गया था।

नीना की कहानी की तरह ऐसी अनेक घटनाएं हुई हैं, इसलिए हम पृथ्वी के लोगों से यह आग्रह करते हैं कि वे सत्य को अच्छी तरह जाने बिना किसी को सलाह न दें। **अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है।** सलाह सुनने वाले लोगों को चाहिए कि वे यह निश्चित कर लें कि उन्हें जिस माध्यम से सलाह मिल रही है, उसका मूल सच्चे जीवात्मिक ज्ञान के स्रोत पर आधारित है।

०७-०६-१९८१
ज्यादातर आत्माएं निम्नतर लोकों में निवास कर चुकीं हैं।

हम सभी धरती पर इसलिए पुनर्जन्म लेते हैं ताकि अपनी आत्मा को शुद्ध कर सकें और उच्चतर स्तर तक ऊंचा उठ सकें, लेकिन हमारी यह आकांक्षा हमेशा पूरी नहीं होती और ऊपर उठने के बजाए हम अकसर नीचे चले जाते हैं। **इसलिए हममें से ज्यादातर लोगों ने दूसरे लोक से छठे लोक तक का अनुभव लिया होता है।** केवल कुछ ही ऐसे होते हैं जिनको प्रथम लोक का अनुभव हुआ होता है, क्योंकि प्रथम लोक से बाहर आना बहुत ही मुश्किल है।

पृथ्वी पर प्रत्येक आत्मा १०० से लेकर २००० बार तक पुनर्जन्म ले चुकी है और हर एक को विभिन्न प्रकार के अनुभव मिल चुके हैं। प्रत्येक आत्मा को विभिन्न प्रकार की समस्याओं और परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

हम आपको यह भी बताएं कि जीवात्माओं को यह अनुमति नहीं होती कि वे धरती के लोगों को अपने सारे भेद बता दें। हम जीवात्माएं आपको केवल कुछ ही बातें बता सकतीं हैं। यदि हम आपको आपके भविष्य के बारे में बता दें, तो जीवन की घटनाओं के घटित होने से पहले ही आप उनके लिए तैयार हो जाएंगे और आपका पुनर्जन्म किसी काम का नहीं रह जाएगा।

०८-०६-१९८१
जीवात्माओं से संपर्क के बारे में भ्रांतियां

यदि आप सोचते हैं कि आपके मृत परिजनों की प्रगति बाधित होगी तो आप पूरी तरह ग़लत हैं। बिना जीवात्मिक संपर्क के, आपको सही राह बताने के लिए हम जीवात्माओं को अपने विचार आप तक पहुंचाने में कई दिन, महीने, साल या कभी-कभी तो कई दशक लग जाते हैं। लेकिन जीवात्मिक संपर्क द्वारा हम आपको कुछ ही घंटों में अपनी बात समझा सकते हैं, जिसमें अन्यथा वर्षों लग सकते थे। इसलिए, जीवात्मिक संपर्क से मृत आत्माओं की प्रगति बाधित होने के बजाए और तेज गति से होती है।

जैसा कि हमने पहले कहा, उच्चतर स्तर पर एक जुड़वां अपने दूसरे जुड़वें के ऊंचे उठने की प्रतीक्षा करती है और उसे अपने उस जुड़वें को नीचे गिरने से बचाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। **जब उच्चस्तर पर स्थित जुड़वां पृथ्वी पर रहने वाले दूसरे जुड़वें तक अपने विचार पहुंचाने की कोशिश करता है, तो हो सकता है कि उसका पृथ्वी पर रहने वाला जुड़वां वर्षों तक इस ओर कोई ध्यान ही न दे।** लेकिन जीवात्मिक संपर्क के द्वारा यह आसानी से और तेज गति से होता है। इसलिए, हमारी प्रगति जीवात्मिक संपर्क के साथ तेज गति से होती।

लोग सोचते हैं कि जीवात्मिक संपर्क मृत आत्मा की प्रगति को बाधित करता है और यही कारण है कि बहुत से लोग अपने मृत प्रियजनों के साथ संपर्क करना नहीं चाहते। क्या यही सच है **अथवा सच यह है कि अपराधबोध से ग्रसित उनकी अंतरात्मा उन्हें संपर्क करने से रोकती है?**

सच्ची पवित्र आत्माओं और संतों के पास मृत आत्माओं और जीवात्माओं से संपर्क करने की शक्ति होती है। यदि संपर्क से जीवात्माओं की प्रगति बाधित होती, तो क्या ऐसी उच्च आत्माओं के पास यह शक्ति होती?

कुछ लोग कह सकते हैं, “सावधान रहिए अन्यथा दुष्ट जीवात्माएं आपके शरीर पर कब्जा कर लेंगी और आप बरबाद होकर नर्क में चले जाएंगे।” ऐसे लोगों के लिए ये कुछ जवाब हैं :

क्या आप दुष्ट हैं? दुष्ट ही दुष्ट की ओर आकर्षित होता है। यदि आप दुष्ट हैं तो हां, आपको जीवात्मिक संपर्क से डरना चाहिए क्योंकि दुष्टता, दुष्ट आत्माओं को ही आकर्षित करती है, और यदि दुष्ट जीवात्माएं आपकी ओर आकर्षित हो जाती हैं तो वे आपके भौतिक मन पर कब्जा कर

सकतीं हैं। लेकिन, यदि आप भली आत्मा हैं और किसी भली दिवंगत आत्मा से संपर्क कर रहे हैं तो इसमें बिल्कुल भी नुकसान नहीं है।

कभी भी स्वचलित लेखन की कोशिश अपने आप न करें। बिना सुरक्षात्मक कड़ी [१४] और उचित निर्देशों का पालन किए खुद स्वचलित लेखन की कोशिश करना बहुत ही खतरनाक हो सकता है। केवल एक अनुभवी और पहले से मध्यस्थता कर रहे व्यक्ति की मदद से ही आप जीवात्माओं से अपनी कड़ी जोड़ सकते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है कि आपको कोई नकारात्मक बाधा नुकसान न पहुंचाए।

दुष्टता, दुष्ट को आकर्षित करती है, और अच्छाई, अच्छे को। भली जीवात्माएं निश्चित तौरपर आपका बचाव करती हैं और एक भली आत्मा के साथ लगातार जीवात्मिक संपर्क में (जहां आपकी कड़ी टूटी हुई नहीं होती) आप पूरी तरह सुरक्षित होते हैं।

जिस तरह आप अपने घर का दरवाजा दुष्ट लोगों के लिए बन्द रखते हैं और उन्हें घर में घुसने नहीं देते, उसी तरह आपको अपना मन दुष्ट जीवात्माओं के लिए बन्द रखना चाहिए और उन्हें अपने मन में प्रवेश करने से रोकना चाहिए।

०९-०६-१९८१
क्यों कुछ लोग जीवात्माओं के संपर्क से डरते हैं

वो दिन बीत गए हैं, जब हमारा जीवन अन्धविश्वासों से संचालित था। वे दिन भी बीत गए जब लोग सोचते थे कि केवल कोई पागल व्यक्ति ही जीवात्माओं के साथ संपर्क करते हैं। अब वे दिन भी नहीं रहे जब यह साबित नहीं किया जा सकता कि जो व्यक्ति जीवात्मिक संपर्क का दावा करता है, वह सच्चा है। अब पृथ्वी पर बहुत से वैज्ञानिक, मनोचिकित्सक और मनोवैज्ञानिक हैं जो जीवात्मिक संपर्क पर गहन शोध कर रहे हैं और यह साबित करने में सक्षम हैं कि उनका काम सच्चा है।

बहुत सी ऐसी विचित्र घटनाएं होती हैं जिनकी कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं की जा सकती और मनुष्य को अतिरिक्त संवेदनात्मक बोध, मनोविज्ञान और आत्मिक घटनाओं पर विश्वास करना पड़ता है।

कुछ नादान लोग तो जीवात्मा जगत के अस्तित्व पर ही शंका कर बैठते हैं या इसपर भी, कि क्या हम दरअसल आत्माएं हैं। कुछ हद दर्ज़ेके मूर्ख तो यह बेवक़ूफ़ाना सवाल करते हैं, “क्या आप यकीन से कह सकते हैं कि ईश्वर हैं?”

कुछ लोग जीवात्मिक संपर्क के बारे में अधिक जानने के लिए बहुत उत्सुक होते हैं और चाहते हैं कि इस विषय में गहरे से गहरे उतरा जाए। कुछ लोगों के लिए यह जानना मजबूरी होती है इसलिए वे जीवात्म जगत, मृत्यु, जन्म, पूर्वजन्मों इत्यादि के बारे में सबकुछ जानने के लिए कड़ा परिश्रम करते हैं। पृथ्वी के लोग हमेशा हर चीज के लिए ठोस सबूत चाहते हैं। उनका सीमित दिमाग बिना सबूत की चीजों को नहीं स्वीकार करता, और ऐसे मामलों में सबूत का होना लगभग असंभव होता है, क्योंकि बहुत थोड़े से लोग ऐसे होते हैं जिनके पास यह ईश्वर प्रदत्त क्षमता होती है। हालांकि, बहुत से दूसरे लोग ऐसे होते हैं जो उनकी नकल करके और भोले-भाले लोगों को धोखा देकर दौलत कमाते हैं। इसी कारण कई लोगों के लिए ठगों के बीच सच्चे लोगों की पहचान करना बहुत मुश्किल हो गया है।

कुछ लोग सोचते हैं कि अलौकिक विषयों में रुचि लेना दुष्ट अथवा बुरी बात है, लेकिन ऐसा सोचना अज्ञानता की निशानी है। कुछ लोग इस बात से डरते हैं कि कहीं उनके अपराधों और पापों का जीवात्माओं द्वारा परदा फाश न कर दिया जाए। इसलिए वे दूसरों को भी इस विषय में हतोत्साहित करते हैं। दुष्ट लोगों को पारलौकिक विचार पसंद नहीं आते और न ही वे उनमें कोई रुचि लेते हैं। कुछ लोगों का दिमाग उनके माता-पिता, पुरोहितों अथवा शिक्षकों द्वारा इस तरह भ्रष्ट कर दिया जाता है कि वे अपने सहजबोध को दबाकर कोई भी ज़ोखिम लेने से इनकार कर

देते हैं।

आप पृथ्वी पर जन्म लेने का निर्णय क्यों लेते हैं

यह अजीब बात है, किंतु सच है कि आपमें से अधिकतर लोग पृथ्वी पर जन्म लेना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहां जीवात्मा जगत में आप बहुत ख़ुश थे (हम उच्चतर स्तरों की आत्माओं के बारे में बात कर रहे हैं)। ऊंचे उठने की आपकी अधीरता, जोख़िम उठाने की आपकी इच्छा अथवा पृथ्वी पर आध्यात्मिक रूप से पतनशील होने वाले अपने परिजनों की मदद करने की इच्छा के कारण आप पृथ्वी पर दुबारा जन्म लेते हैं। लेकिन, आपमें से अधिकतर मनुष्य (आपकी आत्मा और आपका अवचेतन मन) यही चाहते थे कि पृथ्वी पर आपका दुबारा जन्म न हो। कभी-कभी आप इसे सचेत रूप से महसूस करते हैं और आपको हैरानी होती है कि आप ऐसा क्यों महसूस कर रहे हैं, लेकिन आपको जीवात्मा जगत के अपने संसार की कोई बात याद नहीं रहती। कुछ देर तक आपको हैरानी होती है और फिर आप इसे भूल जाते हैं। आपमें से कुछ लोगों को अपनी आत्मा और अवचेतन मन से यह अनुभव इतने प्रभावी रूप से प्राप्त होते हैं कि आपके भौतिक मन को इसे सुनना ही पड़ता है।

आप जीवात्मा जगत में प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन उच्चतर स्तरों तक पहुंचने में हजारों साल लग जाते हैं। इसलिए, इसकी बजाए आप कुछ सौ सालों में उच्चतर स्तरों तक पहुंचने की कोशिश करते हैं। यही है पृथ्वी पर आपके दुबारा जन्म लेने का कारण, अर्थात् जल्द नतीजे पाने की इच्छा। बहरहाल, इसमें जोख़िम यह है कि आप और अधिक नीचे चले जा सकते हैं और आपको अपना लक्ष्य हासिल करने में अधिक लंबा समय लग सकता है।

निम्नतर लोकों की आत्माएं पृथ्वी पर पुनर्जन्म पाकर ख़ुश होती हैं क्योंकि इससे उन्हें तेजी से प्रगति करने का मौका मिलता है। उनके लिए पुनर्जन्म लेना उचित होता है, क्योंकि यदि वे सही मार्ग पर रहने में सफल रहें, तो इससे उन्हें बहुत फ़ायदा होता है। पहले, दूसरे और तीसरे लोकों के कष्ट इतने भयानक होते हैं कि पृथ्वी पर दुबारा जन्म लेने का जोख़िम उनके लिए अधिक बेहतर होता है। बुरे और दुष्ट प्रभावों के कारण निम्नतर स्तरों तक गिरी हुई भली आत्माओं के लिए पृथ्वी स्वर्ग समान होती है।

नीचे गिरी हुई कुछ भली आत्माएं ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाए, लेकिन बहुत कम समय में। यदि वे आत्माएं प्रथम लोक पर हैं तो पृथ्वी पर बोझ ढोने वाले पशुओं के रूप में उनका पुनर्जन्म होता है। उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और कभी-कभी मनुष्यों द्वारा दी गई यातनाएं भी सहनी पड़ती हैं। वे अपने कर्मों का फल तेजी से भोग लेती हैं। लेकिन उनमें कष्ट सहने की भरपूर क्षमता होनी चाहिए क्योंकि उनमें से ज्यादातर आत्माओं को यातनाएं दी जाती हैं, उन्हें कोड़ों से पीटा जाता है और भूखा रखा जाता है। उन्हें सारा दिन खेतों

में परिश्रम करना पड़ता है अथवा भारी बोझ ढोने पड़ते हैं।

इन आत्माओं को यह महसूस होता है कि प्रथम लोक में सैकड़ों वर्षों तक रहने की तुलना में यह सजा काफी बेहतर है। इसलिए आप यह कल्पना आसानी से कर सकते हैं कि पहला और दूसरा लोक कितना भयानक होता होगा। वे अपनी इच्छा से ख़ुशी-ख़ुशी यह सजा स्वीकार करते हैं ताकि उन लोकों से वे बच सकें।

तीसरा लोक भी भयानक होता है। तीसरे लोक में आत्माओं को सूरदास की तरह जोखिम लेना पड़ता है लेकिन सूरदास की तरह सबको बचाया नहीं जा सकता और ऐसी आत्माएं ऊपर उठने के बजाए नीचे प्रथम या दूसरे लोक तक गिर सकतीं हैं।

चौथे लोक की स्थिति सहन करने योग्य होती है। यहां की स्थिति लगभग पृथ्वी जैसी ही होती है। फिर भी, उच्चतर लोकों से नीचे आई हुई आत्माओं के लिए यह भयानक होता है। प्रत्येक आत्मा चाहती है, कि वह जितना जल्दी संभव हो सके, सबसे ऊंचे लोक में पहुंच जाए, इसलिए वे अनुभव हासिल करने, कम समय में सजा भोगने और अपनी आत्मा को शुद्ध करने के लिए दुबारा जन्म लेने की कोशिश करती हैं। आपके पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने के यही कारण होते हैं।

आप मृत्यु से क्यों डरते हैं

पृथ्वी पर जन्म लेने के बाद आप अपने जीवन का इतना आनंद लेते हैं कि आप मृत्यु से डरने लगते हैं। कुछ लोग तब भी धरती छोड़कर जाना नहीं चाहते, फिर भले ही उनका बूढ़ा शरीर दु:ख-दर्द से कराहने लगे।

ऐसा क्यों होता है?

इसका कारण यह है की दिल ही दिल में वे जानते हैं की आपकी दुनिया में मृत्यु पाने के बाद, वे कहां जा पहुंचेंगे। उन्हें मरने से डर लगता है, क्योंकि उन्हें निश्चित रूप से पता है कि वे निम्नतर अंधेरे लोकों में ही होंगे। इस लिए वे जीवन की डोर से बंधे रहना चाहते हैं। लेकिन जब आपका भौतिक शरीर कार्य करने से इनकार कर देता है तब आत्मा को उस नष्टप्राय, अस्थायी भौतिक घर को छोड़ देना पड़ता है। चाहे आप इसे पसंद करें या न करें, आपको पृथ्वी पर मरना ही पड़ता है।

पृथ्वी पर कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनके दिमाग को ऐसे भ्रष्ट कर दिया गया होता है कि वे मृत्यु को एक भयानक घटना समझते हैं। वे ‘मृत्यु’ शब्द से भी डरते हैं। इस डर से मुक्त होना उनके लिए लगभग असंभव हो जाता है और वे पृथ्वी पर अधिक से अधिक समय तक जीने के लिए संघर्ष

करते हैं। जब ऐसी भली आत्माएं आपकी दुनिया छोड़कर जीवात्मा जगत के उच्चतर स्तर पर पहुंचती हैं तो वे पांचवें, छठे और सातवें लोकों की ऐसी सुन्दरता, सामंजस्य और प्रेम देखकर हैरान रह जाती हैं और उन्हें पृथ्वी पर मृत्यु से डरने का अफ़सोस होता है।

आत्महत्या पाप है

आप को मृत्यु से डरना नहीं चाहिए और न ही समय से पहले अपनी मृत्यु के बारे में सोचना चाहिए। यह फ़ैसला केवल ईश्वर को ही करने दें कि आपको जीवात्मा जगत में कब आना है। **आत्महत्या (ख़ुदकुशी) करना आध्यात्मिक दृष्टि से ग़लत है।** ईश्वर हमें पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने का अवसर देते हैं और आत्महत्या कर हम ईश्वर के विरूद्ध जाते हैं। **आत्महत्या एक पाप है।** आत्महत्या करने से आप निम्नतर लोकों में गिर जाएंगे और हमें यकीन है कि आप ऐसा कभी नहीं चाहेंगे। आपको आत्महत्या करने का प्रयत्न कभी भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे आप अपने भौतिक शरीर से तो अस्थायी छुटकारा पा लेते हैं, लेकिन आप अपनी आत्मा को हमेशा के लिए नुकसान पहुंचा देते हैं।

११-०६-१९८१
उच्च भली आत्माएं

ईश्वर बस एक है — हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर। लेकिन हमारे सबसे प्यारे ईश्वर के पास अनेक आत्माएं होती हैं जो प्रत्येक आत्मा को शुद्ध, ईमानदार, प्रेमपूर्ण, समझदार, कृतज्ञ, भला और बुद्धिमान बनाने में उनकी मदद करतीं हैं। ईश्वर के ये सहायक, हम सब की तरह मनुष्य ही थे, और वे उन्हीं परिस्थितियों से होकर गुजरे हैं, जिनका पृथ्वी के लोग और हम जीवात्माएं अनुभव कर रहीं हैं। उन्होंने सैकड़ों बार पुनर्जन्म लिया है और कई बार ऊपर-नीचे आने-जाने के बाद वे इस स्तर तक पहुंच पाए हैं। ईश्वर के इन सहायकों को श्री उच्च भली आत्माओं के नाम से जाना जाता है और इन सब में सबसे ऊपर श्री सर्वोच्च भली आत्मा होते हैं।

अच्चतर स्तरों पर हम उन्हें अकसर देखते हैं, लेकिन चौथे और उससे नीचे के लोकों में वे कभी-कभार ही दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि वे यहां उदृश्य रहना पसंद करते हैं ताकि उनका काम आसान हो। बुरी और दुष्ट आत्माओं को अच्छे-बुरे का ज्ञान कराते हुए और यह बताते हुए कि किस प्रकार कम मुश्किल रास्ते से जल्द से जल्द कर्मों का हिसाब चुकता किया जाए या किस प्रकार जल्द से जल्द उच्चतर लोकों में पहुंचा जाए, वे उन आत्माओं को सुधारने के अपने कार्य में भरपूर सफलता प्राप्त करते हैं।

जब भी वे हमारे करीब होते हैं, तब हम बहुत ख़ुश और प्रफुल्लित महसूस करते हैं। यदि हमें किसी मदद की जरूरत होती है, तो वे तुरंत हमारी मदद करते हैं। ज्यों ही कोई आत्मा, चाहे वह प्रथम लोक की ही क्यों न हो, यदि मदद के लिए पुकारती है तो ये उच्च भली आत्माएं कुछ ही क्षणों में वहां पहुंच जाती हैं। पृथ्वी पर भी, यदि कोई आत्मा सच्चे मन और ईमानदारी से मदद के लिए पुकारे तो तुरंत उनकी मदद की जाती है। यह मायने नहीं रखता कि वह आत्मा प्रथम लोक में है, पृथ्वी पर है या फिर उच्चतर स्तर पर, **सच्चे मन से निकली हुई मदद की पुकार को अवश्य प्रत्युत्तर प्राप्त होता है।**

आपने पृथ्वी की उन आत्माओं के बारे में जरूर सुना होगा जिन्होंने ईश्वर से मदद के लिए गुहार लगाई और एक चमत्कार हुआ। आपने भी कभी किसी मुश्किल घड़ी में मदद के लिए आवाज लगाई होगी और किसी अनजाने तरीके से आपकी मदद हुई होगी जिसे आप चमत्कार कहेंगे।

जीवात्मा जगत के आपके प्रियजन भी आपकी कई बार मदद करते हैं। आपको इस बात पर निश्चिंत रहना चाहिए कि जीवात्मा जगत के आपके प्रियजन आपका बहुत ख़याल रखते हैं। हमेशा याद रखिए कि सच्चा प्यार कभी नहीं मरता, पृथ्वी पर मनुष्य की मृत्यु हो जाने के बाद

भी नहीं। प्रेम मृत्यु से बड़ा होता है। **प्रेम शाश्वत होता है जबकि मृत्यु तो बस एक दुनिया से दूसरी दुनिया में, एक शरीर से दूसरे शरीर में, पृथ्वी से स्वर्ग या नर्क तक का स्थानांतरण है।**

मृत्यु कोई बड़ी चीज नहीं है, लेकिन प्रेम अलौकिक रूप से महान है।

आइए, अब हम सर्वशक्तिमान ईश्वर के सहायकों के बारे में थोड़ी और बात करें। हम उन्हें उच्च भली आत्माओं के नाम से जानते हैं और आप उन्हें फ़रिश्ते कहते हैं। हम आपको बताना चाहेंगे की **फ़रिश्तों के पंख नहीं होते** , बहरहाल क्योंकि उनकी गति बहुत तेज होती है उनके चोगे पंखों की तरह दिखते हैं। जिस तरह वे मनुष्य का रूप धारण करने में समर्थ हैं उसी तरह वे अविश्वासियों को प्रभावित करने के लिए पंखों का निर्माण कर लेते हैं। इस तरह, धरती की आत्माओं को उनके पंख देखकर विश्वास होता है कि किसी फ़रिश्ते ने उन्हें संदेश दिया है और उनकी मदद की है।

उच्च भली आत्माएं बहुत ही विनम्र, विचारवान और उदार होती हैं। कुछ खास परिस्थितियों में वे सर्वशक्तिमान ईश्वर के कुछ नियमों में भी छूट दिलवाते हैं। इसके लिए वे पहले श्री सर्वोच्च भली आत्मा से निवेदन करते हैं ताकि वे इसके लिए पुनः सर्वशक्तिमान ईश्वर से विनती करें। आपात परिस्थितियों में यह अनुमति कुछ ही क्षणों या मिनटों में प्राप्त होती है। यदि बहुत आपात स्थिति नहीं है तो इसमें कुछ घंटे या अधिक से अधिक कुछ दिन लगते हैं।

जब कभी भी हम कुछ ऐसा चाहते हैं, जिसकी सामान्य स्थितियों में अनुमति नहीं होती, तो हम अपने लोक के प्रमुख से विनती करते हैं। वह हमारी बात ध्यान से सुनते हैं और कुछ सवाल करते हैं, और यदि उन्हें लगता है कि हमारी विनती सही है और इससे किसी को कोई नुकसान नहीं होगा तो वह हमारी सर्वोच्च भली आत्मा से हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर से अनुमति लेने की प्रार्थना करते हैं।

यही पृथ्वी की दुनिया और जीवात्मा जगत के बीच का अन्तर है। हमारे लोकों के शासक इतने विनम्र, उदार और विचारवान होते हैं कि हम हमेशा उनके साथ बेझिझक बात करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं। वे इतने ईमानदार, भले और प्यारे होते हैं कि हमें उनका भय कभी महसूस नहीं होता। वे इतने निःस्वार्थ होते हैं कि हमें उनपर पूरा विश्वास होता है। वे प्रेमपूर्वक और विनम्र तरीके से हमें समझाते हैं कि कुछ चीजें ग़लत हैं और यह भी कि वे ग़लत क्यों हैं।

वे कभी भी हमारी विनतीयों को कठोरतापूर्वक ख़ारिज नहीं करते। यदि उन्हें लगता है कि वह ग़लत है, तो वे हमें इसे समझाते हैं और हमें यह समझने में मदद करते हैं कि यह क्यों संभव नहीं है। वे बहुत ही विवेकशील और दयालु होते हैं। हम उनपर पूरी तरह विश्वास करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। उनके आदेशों को हम ख़ुशी-ख़ुशी मानते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि वे हमें

कभी गलत मार्ग पर नहीं जाने देंगे।

ये हैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के सहायक-हमारी उच्च भली आत्माएं और आपके फ़रिश्ते।

१२-०६-१९८१
सत्कर्म क्या है?

अच्छे कर्म वे होते हैं जो पूरी तरह निःस्वार्थ उद्देश्य से किए जाते हैं। यदि उनमें थोड़ा सा भी स्वार्थ हो तो उन्हें सत्कर्म नहीं कहा जा सकता; वह स्वार्थपूर्ण कर्म कहलाएगा।

ऐसे सत्कर्म जो निःस्वार्थ भाव से किए जाते हैं, वे आपकी प्रगति के लिए सचमुच एक बड़ा वरदान होते हैं। वे आपको किसी भी अन्य चीजों की तुलना में अधिक तेजी से ऊंचाई की ओर ले जाएंगे। दुर्भाग्य से, धरती के लोगों के सभी सत्कर्मों के पीछे लगभग हमेशा यह भावना होती है कि इससे उन्हें ऊंचा स्तर प्राप्त होगा और उनके पापों को क्षमा कर दिया जाएगा।

हम आपको यह चेतावनी देते हैं कि ऐसी सोच आपको ऊपरी स्तर तक ले जाने के बजाए नीचे ले जाती है। केवल ऐसे ही सत्कर्म जो स्वाभाविक रूप से और दयालुता के साथ किए जाते हैं, जिनके पीछे आपके ऊपर उठने की कोई भावना नहीं होती, उन्हें ही स्वार्थहीन सत्कर्म माना जा सकता है। अच्छा कर्म करने के बाद उसे तुरंत भुला दें। इसके बारे में जरा भी न सोचें। यदि आप ऐसा करने में सक्षम हो जाते हैं, तो कोई भी स्वार्थी विचार आपके मन में प्रवेश नहीं करेगा। एक स्वार्थी पश्च-विचार हमेशा आपको ग़लत रास्ते पर ले जाता हैं। **इसलिए यदि आपने स्वाभाविक रूप से और भलाई के वास्ते कोई अच्छा कर्म किया हो, तो उसे तुरंत भुला दें।**

अच्छे कर्म यदि बिना सच्चे पश्चाताप के, या पूरी तरह कर्मों के फल भोगने से बचने और क्षमा प्राप्त करने के उद्देश्य से किए गए हों, तो वे निःस्वार्थ सत्कर्म नहीं होते।

वे आपको कभी भी उच्च स्तर की ओर नहीं ले जा सकते, यह बात हमेशा ध्यान में रखें।

अच्छे कर्म करने से पहले, यह सुनिश्चित कर लें कि आपका उद्देश्य बिल्कुल भी स्वार्थपूर्ण न हो। यदि आप ऐसा करने में सफल होते हैं तो आप इसे भुला देने में भी सफल होने चाहिए। इसमें सफलता प्राप्त करना पूरी तरह आपके अपने हाथों में है।

उदाहरण के लिए, यदि आप अपने प्रियजन के लिए कुछ करते हैं, तो आप उस बात का प्रचार करने की परवाह नहीं करते, और न ही इसपर दुबारा सोच-विचार करते हैं। उस प्रिय व्यक्ति के प्रति अपने प्रेम की खातिर आप ऐसा करते हैं। आपको उनकी परवाह करना अच्छा लगता है।

आप उन्हें सुखी देखना चाहते हैं और आप उनके लिए त्याग करना भी पसंद करते हैं। इसलिए, आप जो कुछ भी अपने प्रियजन के लिए करें, उसमें आनन्द लें और फिर उस कर्म को इस तरह भूल जाएं जैसे कि वह एक स्वाभाविक बात हो, और जिसमें सच्चा प्रेम अभिव्यक्त किया गया हो। हां, इसके लिए यह जरूरी है कि आपका प्रेम सच्चा हो।

एक ही पल में आपका अच्छा कर्म स्वार्थपूर्ण कर्म में बदल सकता हैं – इसलिए इससे पहले कि आपको ज्यादा सोचने का मौका मिले, इसे भुला दें। तो याद रखें, थोड़ी सी भी स्वार्थपूर्ण सोच आपके अच्छे कर्म पर पानी फेर देगी।

१३-०६-१९८१
प्रतिशोध

प्रतिशोध एक बहुत ही बुरी चीज होती है। पृथ्वी के लोग यह नहीं जानते कि प्रतिशोध का असली अर्थ क्या हैं। प्रतिशोध व्यक्ति के मन में तब आता है जब वह दूसरे के प्रति ईर्ष्याग्रस्त हो। उदाहरण के लिए, मान लें पीटर कैटी के प्रति ईर्ष्यालु है क्योंकि कैटी बहुत लोकप्रिय, प्यारी और अच्छी लड़की है। अतः पीटर उसे नीचा दिखाना चाहता है। इसलिए वह कैटी के बारे में अफ़वाहें फैलाना शुरू कर देता है, अथवा वह उसके प्रियजनों को उसके ख़िलाफ भड़काकर उसे हानि पहुंचाने की कोशिश करता है, अथवा ऐसे अन्य तरीकों से वह उसे सताने और चोट पहुंचाने की कोशिश करता है। यह पूरी तरह ग़लत है। पीटर की ऐसी करतूत उसे बहुत ही निम्न स्तर तक पहुंचा देगी। अब, मान लीजिए कैटी ने यह देख लिया कि पीटर ने उसके साथ ग़लत किया है और किस तरह उसने उसे नुकसान पहुंचाया है। पीटर के ऐसे व्यवहार को देखकर, यदि अपने बचाव में कैटी पीटर का असली चेहरा दुनिया को दिखाना चाहे, तो यह ग़लत नहीं होगा। कैटी को चाहिए कि वह दुनिया को दिखाए कि पीटर कितना बुरा है, ताकि दूसरे लोग सावधान हो जाएं और उसके प्रतिशोध का शिकार बनने से बच जाएं। इस प्रकार पीटर लोगों को मूर्ख नहीं बना पाएगा। पीटर की नीचता के बारे में दुनिया को सच दिखाकर कैटी को उच्चस्तर प्राप्त होगा, लेकिन उसका मन सच्चा होना चाहिए और उसके इरादे शुद्ध होने चाहिए। इसे प्रतिशोध नहीं माना जाएगा, क्योंकि यहां आपका उद्देश्य दूसरों को उस मुसीबत से बचाना है जिसका आप शिकार हुए। अन्य कोई भी पीटर का शिकार नहीं बनेगा और यह एक अच्छा काम होगा। एक बात जरूर ध्यान रखें कि अपने प्रियजनों अथवा ख़ुद को नुकसान पहुँचाकर दुष्टता का पर्दाफ़ाश न करें। तो, इस तरह आपने देखा, कि पृथ्वी के लोग प्रायः अच्छे और बुरे का अन्तर नहीं समझते।

सुरेश की कहानी

एक दिन सुरेश का परिचय एक युवा विधवा जे से हुआ। वह निम्न चरित्र की थी और उसने सुरेश पर डोरे डालने शुरू कर दिए, जो विवाहित और तीन बच्चों का पिता था। जे ने सुरेश को अपने पीछे इतना पागल कर दिया कि वह उसके झूठे प्यार के जाल में फंस गया और उसने उसे एक घर तक दिलाने का वचन दे दिया। जे के प्रेम सम्बन्ध दूसरे लोगों के साथ भी थे, लेकिन सुरेश को इस बारे में कुछ भी पता नहीं था और वह पागलों की तरह उसके प्रेम जाल में ऐसा पड़ा कि उसकी स्थिति जे के ग़ुलाम जैसी हो गई। जे उससे रुपए-पैसे और गहने ऐंठती रही। जब सुरेश के पिता को पता चला कि सुरेश एक औरत पर पैसे बरबाद कर रहा है, तो उन्होंने सुरेश से बड़े कड़क शब्दो में बात की और उसे होश में लाया, क्योंकि उन्हें पता था कि औरत उसकी कमजोरी

होने के बावजूद सुरेश एक भला इंसान है। सुरेश ने अपनी ग़लती समझ ली औऱ उस़ने जे के साथ अपने सारे रिश्ते तोड़ लिए। जे बहुत ही स्वार्थी और बदले की भावना से ग्रस्त औरत थी। इसलिए उसने सुरेश और उसके परिवार से बदला लेना चाहा। जैसा कि मैंने पहले बताया, उसके कई चाहने वाले थे, और वह उनमें से एक के बच्चे की मां बनने वाली थी। जे ने एक जाने-माने हॉस्पिटल में गर्भ की जांच करवाई और अपने गर्भवती होने का प्रमाणपत्र तैयार करवाया। इस प्रमाणपत्र को वह सुरेश के घर ले गई और उसके माता-पिता और उसकी पत्नी से कहा कि सुरेश ने शादी का वचन देकर उसके साथ धोखा किया है, और यह भी की उसके साथ सुरेश का प्रेमसम्बन्ध था और अब वह गर्भवती है। उसने उन्हें कुछ अन्य कागज़, जिनसे यह साबित होता था कि सुरेश ने उसके नाम पर एक घर लेने की भी कोशिश की थी, के साथ हॉस्पिटल के कागज़ दिखाए। सुरेश की मां इस बारे में कुछ नहीं जानती थी। कमज़ोर दिल की होने के कारण उन्हें सुरेश के पिता ने कुछ नहीं बताया था। सुरेश की पत्नी को भी कुछ मालूम नहीं था।

सुरेश की मां को इससे बड़ा आघात लगा और उसी रात वह चल बसी। सुरेश की पत्नी भी यह झटका सह न पाई और अपनी सास की अंतिम क्रिया के बाद वह अपने बच्चों को साथ लेकर सुरेश को छोड़ कर चली गई।

सुरेश और उसके पिता दु:ख से व्याकुल थे। उनके लिए खुद पर काबू पाना मुश्किल हो रहा था। वे जे को मार डालना चाहते थे, जिसने उनकी जिंदगी बरबाद कर दी थी और अब भी सुरेश से घर और रुपयों की मांग कर रही थी। सो, वे उसकी हत्या की योजना बनाने लगे। वे भले लोग थे, लेकिन इस अपमान और अपने प्रियजनों के वियोग ने उन्हें बदले की बात सोचने पर मजबूर कर दिया था। सौभाग्य से उनका एक बहुत ही धर्मनिष्ठ मित्र उन्हें सांत्वना देने उनके घर आया था। सुरेश और उसके पिता ने उसे सारी कहानी सुनाई, और यह भी बताया कि वे उस औरत को मारना चाहते हैं।

उनके मित्र ने कहा, “देखिए मित्रों, आपके साथ क्या हुआ है और आप किन परिस्थितीयों से गुज़र रहे हैं, मैं अच्छी तरह समझता हूं, लेकिन इस बूढ़े की बात पर ध्यान दीजिए और अपनी आत्मा को बचाईए। उस औरत को मारना आपके हाथों में नहीं है। यह पूरी तरह सर्वशक्तिमान ईश्वर के हाथों में है, इसलिए मेहरबानी कर सर्वशक्तिमान ईश्वर के विरूद्ध मत जाइए। अपने भले दिमाग से उन दुष्ट विचारों को निकाल दीजिए। ये बुरे विचार आपको उस औरत की तुलना में अधिक नुकसान पहुंचाएंगे। आप दोनों इतने नीचे गिर जाओगे कि आप अपनी प्यारी मां को, स्वर्ग में नहीं मिल पाओगे। कृपया करके इस भयानक तरीके से सोचना बन्द कीजिए। इसके बजाए, आप कुछ ऐसा कर सकते हैं, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रसन्न करे। उस औरत को आप रुपए देने से मना कर सकते हैं। वह एक दुष्ट औरत है, इसलिए आप लोगों को सच बताकर उसके असली चेहरे का पर्दाफ़ाश कर सकते हैं। आप उसकी दुश्चरित्रता का भेद खोल सकते हैं। ईश्वर इससे प्रसन्न होंगे क्योंकि उस औरत द्वारा आगे किसी को धोखा नहीं दिया जा सकेगा और शायद उस औरत को सुधरने का मौका भी मिलेगा।”

इस नेक सलाह और मार्गदर्शन ने सुरेश और उसके पिता को पापी आत्माएं बनने से बचा लिया।

१४-०६-१९८१
हर आदमी के साथ एक ही जैसा बरताव नहीं किया जा सकता

यदि कोई भली आत्मा किसी को ग़लत करते देखती है, तो वह तुरंत उस व्यक्ति को इस बारे में बताती है, अथवा बड़ी कुशलता से उसे यह एहसास कराती है कि वह कहां ग़लत है। उसे इस बात से ख़ुशी होती है कि उसने उस व्यक्ति को सुधारा। ऐसी स्थिति में उसका उद्देश्य शुद्ध रूप से उस व्यक्ति की मदद करना होता है। बुरी आत्माएं भी लोगों को उनकी ग़लतियां बतलाने की कोशिश करतीं हैं, लेकिन उन्हें इस बात में घमंड महसूस होता है कि कैसे उन्होंने लोगों को उनके ग़लत होने के बारे में बताया और फिर वे उनकी खिल्ली भी उड़ाती हैं। यह प्रतिशोध का ही एक रूप है। भली आत्मा यह सोचकर प्रसन्न होती है कि उसने किसी के सुधरने में मदद की।

यदि आप उच्चतर स्तर पर हैं तो आपका अवचेतन मन आपका मार्गदर्शन करेगा लेकिन यदि आप निम्नस्तर पर हैं तो सही फैसले लेने में आपको मुश्किल होगी। अच्छे कर्मों के मामले में, किसी भली आत्मा के प्रति किया गया अच्छा कर्म उसे सुधरने में मदद करता है; बहरहाल, यदि वही अच्छा कर्म किसी बुरी आत्मा के लिए किया जाए, तो इसका उल्टा असर होता है। बुरी आत्मा अपने प्रति किए गए अच्छे कर्मों को सामने वाले की कमजोरी मान लेती है और वह इस परिस्थिती का ग़लत फ़ायदा उठाती है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए बोमी आपसे मिलने आता है। जब आप उसके लिए पीने या खाने का इंतजाम करने कमरे से बाहर गए, तब वह आपके घर से रुपए चुरा लेता है। वापस लौटकर आपको बोध होता है कि क्या हुआ है। आप उसे कुछ और रुपए देकर कहते हैं, “चोरी करने के बजाए मुझसे रुपए मांग लेते। मैं तुम्हें जरूर देता।” उसे अपनी गलती का अहसास होता है और वह कहता है कि, “मुझे क्षमा कर दो, मैं फ़िर कभी चोरी नहीं करूंगा।” मुझे बिल्कुल यकीन है कि वह अपने इस कथन का पालन करेगा, क्योंकि वह एक भली आत्मा है जो लालच में पड़ गई थी, अथवा हो सकता है कि उसकी कोई बड़ी ज़रूरत रही हो। लेकिन, यही व्यवहार किसी बुरी आत्मा से किया जाए तो इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा और वे आप पर हंसते हुए आपको और दूसरों को बार-बार मूर्ख बनाना जारी रखेंगे जिससे आप भी निम्नस्तर पर पहुंचेंगे। इसलिए अच्छे व्यक्ति के लिए किया हुआ अच्छा काम, उसके और साथ-साथ आपके लिए भी अच्छा होता है, लेकिन यही अच्छाई यदि बुरे व्यक्ति के प्रति की जाए तो यह उसके और आपके, दोनों के लिए बुरा होता है।

यही बात क्षमाशीलता के लिए भी लागू होती है। यदि आप किसी अच्छी आत्मा को क्षमा करते हैं तो वह सुधरने की पूरी कोशिश करती है। उसका अवचेतन मन उसे यह अहसास दिलाता है

कि उसने क्या ग़लत किया है। लेकिन, यदि आप किसी बुरी आत्मा को, बिना उसकी ग़लती बताए, माफ़ करते हैं तो वह आप पर हंसेगा, आपको मूर्ख मानेगा और अपने बुरे काम करना जारी रखेगा। क्योंकि आपने उसे प्रोत्साहित किया, आप भी नीचे गिरेंगे। तो, इस तरह, धरती पर हर कोई एक जैसा नहीं होता।

आप प्रत्येक व्यक्ति के साथ एक समान व्यवहार नहीं कर सकते।

१५-०६-१९८१
अपनी समस्याओं का सामना इसी वक्त, बहादुरी और मुस्कान के साथ करें

आपकी दुनिया में पूरी तरह ख़ुशी और चैन से रहना बिल्कुल नामुमकिन है। आपको कठिनाइयों, समस्याओं, तकलीफ़ों और बीमारियों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि बिना इन बाधाओं के आप पृथ्वी पर नहीं जी सकते। हां, मगर सबसे अहम यह है कि इन बाधाओं का सामना आप करते किस तरह से हैं। **आपको इनका सामना बहादुरी और मुस्कान के साथ करना चाहिए, और कभी भी उनसे बचकर भागना नहीं चाहिए।** बहुत सी और मुसीबतें हमेशा जन्म लेती रहेंगी, इसलिए बेहतर यही है कि आप अपनी सभी मुसीबतों का सामना हिम्मत के साथ ख़ुशी-ख़ुशी करें। यदि आप एक भली आत्मा हैं या फिर सच्चे मन से भले बनना चाहते हैं, तो भरोसा रखिए ईश्वर हमेशा आपके साथ हैं। उनपर आस्था रखिए, उनकी प्रार्थना कीजिए, उनसे मार्गदर्शन की विनती कीजिए और आपकी सच्ची प्रार्थनाएं जरूर सुनी जाएगी।

दूसरों में कभी भी नकारात्मकता को प्रोत्साहित न करें

यदि आपमें दुष्टता से लड़ने की हिम्मत नहीं है तो आपके लिए सबसे अच्छा यही होगा कि आप दुष्ट और बुरे लोगों से बचें। उनसे दूर रहिए, क्योंकि दुष्ट लोग और उनके प्रभाव हमेशा आपको नुकसान पहुंचाएंगे। आपके स्पंदन को नुकसान पहुंचेगा और आप निश्चित रूप से निचले स्तर की ओर गिरेंगे। पृथ्वी के लोग कहेंगे, “हम दुष्टता से किस तरह बचें, बुरे लोग तो हमारे चारों ओर फैले हैं?” हम यह समझते हैं कि पृथ्वी पर बहुत सी बुरी आत्माएं हैं और बेशक आप उनसे बातें कर सकते हैं और उनके पड़ोस में रह सकते हैं, लेकिन उनसे कभी भी दोस्ती मत किजिए। उनसे बहुत संक्षिप्त बात कीजिए, जरा सा सिर हिलाकर मुस्कुरा दीजिए और चलते बनिए। मगर पाखंडी मत बनिए। जरूरत पड़ने पर उनकी मदद जरूर कीजिए, लेकिन कुछ भी ऐसा मत कीजिए जिससे दुष्टता की ओर उनका हौसला बढ़े। यदि आप उनके प्रति दोस्ताना नहीं रहते, तो वे भी प्रायः आपसे दूर ही रहेंगे। उन्हें अपने से दूर ही रखिए, क्योंकि एक आम भली आत्मा के लिए ऐसे बुरे लोगों को सुधारना संभव नहीं होता। बहरहाल, भली आत्माओं की या फिर उनकी जो सच्चे मन से सुधरना चाहते हैं, मदद अवश्य कीजिए। कुछ ऐसी भली आत्माएं होती हैं,

जिनमें खुद को बुरे प्रभावों से बचाते हुए दुष्ट आत्माओं को सुधारने की क्षमता होती है। बुरी आत्माओं को सुधारना इसलिए मुश्किल होता है, क्योंकि भली आत्माएं भी बुरे या दुष्ट प्रभावों की चपेट में आ जाती हैं।

१६-०६-१९८१
चींजों को आध्यात्मिक नज़रिए से देखें

धूर्त या दुष्ट लोग कभी भी न सीधे-सीधे सोचते हैं, न ही सीधे-सीधे कोई काम करते हैं। भली आत्माएं कभी भी जान-बूझकर अपने लोगों को ग़लत राह पर ले जाने वाली अनुचित सलाह नहीं दे पातीं। क्या किसी दुष्ट को मिलने वाली सजा पर ख़ुश होना पाप है? आइए देखते हैं :

१. यदी आप यह जानकर ख़ुश होते हैं कि दुष्ट ने सबक सीखा, उसे लोगों को नुकसान पहुंचाने से रोक दिया गया है और उसे सुधरने का मौका मिला है, और उसके सुधरने की संभावना है, तो ख़ुश होना बिल्कुल स्वाभाविक है।

२. यदि आपका ख़ुश होना बदले की भावना से भरा है, तो यह पाप है।

इसलिए सिक्के के हमेशा दो पहलू होते हैं। यह पूरी तरह आप ही पर निर्भर करता है कि चीजों को आप किस नज़रिए से देखते हैं, आपकी प्रतिक्रियाएं कैसी हैं और आपका उद्देश्य या आपका इरादा क्या है।

१७-०६-१९८१
राशिफलों से आप प्रभावित न हों

एक बात, जिसे हम स्पष्ट करना चाहते हैं वह जन्मपत्रियों से जुड़ी हुई है। जब आप अख़बारों में अपना साप्ताहिक अथवा दैनिक भविष्यफल पढ़ते हैं, तो इसका आपके मन पर असर पड़ता है। आपके विचार बड़े ताकतवर होते हैं और उन बातों से प्रभावित हो जाते हैं जिन्हें आप पढ़ते हैं, और इस तरह भविष्यफल के अनुसार घटनाओं का प्रवाह निश्चित हो जाता है। इसलिए आप कहने लगते हैं कि भविष्यफल सही था।

यह और कुछ नहीं बल्कि कमजोर मन के लोगों के दिमाग को एक प्रकार से भ्रष्ट करना है। यदि आप चाहते हैं कि कुछ आपके मन-मुताबिक हो, तो इसमें प्रायः आपके सकारात्मक विचार निश्चित रूप से मदद करेंगे। आपके अवचेतन मन को यह पता चल जाता है, कि भविष्यफल ग़लत है, लेकिन आपके भौतिक मन को लगेगा कि यह सही है। आपका अवचेतन मन सच जानता है। यदि भविष्यफल ग़लत है तो आपका अवचेतन मन आपको सहयोग नहीं देगा, इसलिए निराश न हों। ऐसा सोचें कि सबकुछ ईश्वर की मर्जी से होता है और आपका योग्य मार्गदर्शन करने के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर को धन्यवाद दें। अपनी खुद की स्वतंत्र इच्छाशक्ति का इस्तेमाल कीजिए और ज्योतिषियों और उनके भविष्यकथनों द्वारा ठगे जाने से खुद को बचाइए। यह सब आप पर और आपकी पसंद पर निर्भर करता है।

शक्ति को अच्छे और बुरे दोनों कामों में लगाया जा सकता है-प्रक्षेपण और प्राप्ति की शक्तियां

आपकी दुनिया, जीवात्मा जगत और संपूर्ण ब्रह्मांड में शक्ति व्याप्त रहती है। हालांकि, यह शक्ति कुछ स्थानों पर प्रबल होती है और कुछ स्थानों पर कमजोर, लेकिन यह हर जगह उपस्थित रहती है। जीवात्मा जगत में हमें इसे उत्पन्न नहीं करना पड़ता, क्योंकि हमारा मन ही हमारा शक्तिकेन्द्र होता है। हम बड़ी आसानी से इस शक्ति को खुद ही धारण कर लेते हैं। लेकिन धरती पर, लोग यह नहीं जानते कि शक्ति को वे स्वयं किस तरह उत्पन्न कर सकते हैं, इसलिए आपको बिजली पर निर्भर रहना पड़ सकता है जो इसी शक्ति का एक निम्नतर रूप है।

कुछ मनुष्य हमारे संदेश प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि उनमें इन्हें प्राप्त करने की शक्ति होती है। कुछ लोगों में प्रक्षेपण की शक्ति होती है। कुछ लोगों के पास शक्ति अधिक होती है जबकि कुछ के पास कम, और कुछ भाग्यशाली ऐसे होते हैं जिनमें प्रक्षेपित करने और प्राप्त करने वाली दोनों

शक्तियां संतुलित मात्रा में होती हैं। इन दोनों शक्तियों का यदि सही उपयोग किया जाए तो यह आपका और आपके आसपास के लोगों का भला करती है। क्योंकि भली आत्माएं सर्वशक्तिमान ईश्वर के करीब होती हैं और उनका अवचेतन मन भी उनका मार्गदर्शन करता है, इसलिए वे इस शक्ति का उपयोग भलाई के लिए करती हैं। लेकिन, यही शक्ति यदि बुरे लोगों में हो, तो वह बहुत खतरनाक होती है, क्योंकि वे इसका प्रयोग दुष्ट कामों के लिए कर सकते हैं।

शक्ति तो एक ही होती है लेकिन इसे अच्छे या बुरे कामों में लगाना व्यक्ति के हाथों में होता है। कमजोर मन के लोगों के लिए यह शक्ति खतरनाक होती है क्योंकि उसके इस्तेमाल से उनका जीवन आडंबरपूर्ण और पाखंडी हो जाता है। इस कारण वे निम्न लोकों में जाते हैं जहां नकारात्मक आत्माओं की संगति में वे और अधिक ग़लत राह पर चले जाते हैं। इस शक्ति से संपन्न भली आत्माओं को हम प्रार्थना करने और एकाग्रता हासिल करने की सलाह देते हैं। हम उन्हें यह भी सलाह देते हैं कि वे स्वेच्छापूर्वक अपने मन को किसी भली जीवात्मा (कोई प्रियजन) के हवाले करें जो उन्हें सही राह दिखाएंगी और पृथ्वी पर बहुत ही अच्छा जीवन जीने में उनकी मदद करेंगी। समानताएं एक दूसरे को आकर्षित करती हैं-बुराई बुरे को आकर्षित करती है, और अच्छाई, अच्छे को। इस शक्ति से संपन्न बुरी आत्माओं के लिए भी सुधरने का यह एक अच्छा अवसर है।

याद रखें, एक दुष्ट आदमी के लिए इस शक्ति का उपयोग करना बहुत खतरनाक है। नकारात्मक आत्माएं लोगों को निम्नतर स्तरों में खींच लाने को उत्सुक होती हैं। इसलिए, कमजोर मन वाली भली आत्माएं, आप कृपया करके इस शक्ति को विकसित करने की कोशिश न करें। याद रखें यदि एक बार कोई बुरी जीवात्मा आपके मन को अपने वश में कर ले, तो उससे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल होता है।

१८-०६-१९८१
जीवात्माओं से मदद पाने के लिए हमेशा शांत और स्थिर रहना चाहिए

हमेशा शांत, स्थिर और चिन्तामुक्त रहें। तनावमुक्त रहिए ताकि जीवात्माएं आपका मार्गदर्शन कर सकें। आपको हमेशा सर्वशक्तिमान ईश्वर में भरोसा रखना सीखना चाहिए -ईश्वर महान हैं।

ज्योतिषियों या उनके जैसे लोगों की बातों का विश्वास मत कीजिए-सर्वशक्तिमान ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखना सीखिए। सर्वशक्तिमान ईश्वर पर आपका सच्चा और अटल भरोसा चमत्कार कर देगा। वह **सर्वशक्तिमान** हैं, इसलिए कोई भी उनके विरूद्ध नहीं जा सकता।

यदि आप दु:ख झेल रहे हैं और आपके जीवन में समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, तो इसे अपना कर्म, परीक्षा और प्रशिक्षण मानिए और उनका बहादुरी के साथ ख़ुशी-ख़ुशी। सामना कीजिए। आपकी सच्ची प्रार्थनाओं से आपको अपने जीवन में बड़ी सहायता मिलती है। अपने मन को व्यस्त रखिए और किसी को नुकसान मत पहुंचाइए। ऐसा करने से, सीधे सर्वशक्तिमान ईश्वर की मदद और उनका मार्गदर्शन आपको जीवात्माओं के जरिए हासिल होना तय है।

आपकी सच्ची प्रार्थनाएं और ईश्वर में आपका सच्चा विश्वास आपको किसी भी समस्या से जूझकर बाहर आने की शक्ति देता हैं। क्योंकि आप पृथ्वी पर हैं, वहां समस्याएं आती ही रहेंगी, लेकिन आपको उनका सामना करना चाहिए। इसलिए उनका सामना साहसिक मुस्कान के साथ कीजिए। ईश्वर पर आपकी आस्था और आपकी प्रार्थनाएं हमारी भी बड़ी सहायता करतीं है, क्योंकि इससे हम आप तक आसानी से पहुंचकर आपका मार्गदर्शन और आपकी मदद कर सकते हैं।

१९-०६-१९८१
विवाह

जीवात्मा जगत में शादियां नहीं होतीं-लेकिन पृथ्वी पर बच्चों की खातिर और इस कारण भी कि बुढ़ापे में पति-पत्नी को एक दूसरे की जरूरत होती है, हम टूटी हुई शादियों को दुबारा जोड़ने की कोशिश करते हैं। **पृथ्वी पर, बच्चों की सुरक्षा के लिए ज्ञानी मनुष्यों ने विवाह की परंपरा चलाई** , क्योंकि उन्होंने देखा कि लोग बच्चों की जिम्मेदारी नहीं ले रहे थे और उनकी देखभाल नहीं कर रहे थे। इसलिए उन्होंने बच्चे पैदा करने के लिए शादी को अनिवार्य बनाया, ताकि अकेले होने के बजाए पति-पत्नी दोनों मिलकर बच्चे का पालन-पोषण अच्छी तरह कर सकें।

दो लोगों के लिए इकट्ठे रहना, एक दूसरे की मदद करना और अच्छे नागरिक बनने के लिए अपने बच्चों को शिक्षित करना समझदारी की बात है। बुढ़ापे में पति-पत्नी एक दूसरे की देखभाल कर सकते हैं, एक दूसरे का साथ दे सकते हैं और सांसारिक समस्याओं का सामना मिलकर कर सकते हैं। इस प्रकार शादियां पहले से तय की हुई नहीं होतीं। बहरहाल, हम यह बात कहते हुए डरते हैं क्योंकि हो सकता है पृथ्वी पर बहुत सारे लोग कहने लगें कि “जब शादियां ईश्वर द्वारा तय नहीं की जाती, तो शादी क्यों की जाए और समस्याएं क्यों खड़ी की जाएं? क्यों न हम स्वतन्त्र रहें।” हमारी पुस्तक में यह छापने से पहले, मेरी आपको इसपर खूब विचार करने की सलाह है। हम उनकी मदद करना पसंद करते हैं जिनकी शादियां टूट गई हों, ताकि वे सुखपूर्वक रह सकें क्योंकि यही उनके लिए श्रेष्ठ है। लेकिन, कभी-कभी पति या पत्नी में से कोई भी एक बिल्कुल दुष्ट होता है और अपने दूसरे साथी तथा अपने बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। तब, दूसरे साथी के लिए उसके साथ रहना असंभव हो जाता है। ऐसी स्थिति में हम ईश्वर से कुछ ऐसा करने की प्रार्थना करते हैं जो संबंधित सभी पक्षों के लिए सबसे श्रेष्ठ हो।

पति और पत्नी के लिए एक दूसरे को प्यार करना, और अपने बच्चों के साथ एक परिवार के रूप में सामंजस्य और हंसी-ख़ुशी के साथ रहना ही सबसे श्रेष्ठ बात है, ताकि सांसारिक समस्याओं का सामना वे और भी अच्छी तरह कर सकें। **पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के लिए घर का सामंजस्य और ख़ुशहाल माहौल सबसे जरूरी है।** आपसी आदान-प्रदान और सहनशीलता सभी शादियों के लिए अनिवार्य होता है।

१५-०१-१९८४
अपनी शक्ति का विकास सही तरीके से करें

जीवात्मा जगत में और पृथ्वी पर भी विद्युत् शक्ति होती है जिसे आप देख नहीं सकते। पृथ्वी पर यह शक्ति आपकी बहुत मदद करती है, और यह फ़ोन, रेडियो अथवा टीवी के जरिए संदेश प्राप्त करने में आपकी मदद करती है। इंसान का दिमाग फ़ोन, रेडियो अथवा टीवी के जैसा ही होता है। पृथ्वी पर कुछ लोगों नें संदेश प्राप्त करने की शक्ति विकसित की है, कुछ लोगों ने केवल संदेश भेजने की शक्ति विकसित की है और कुछ लोगों ने दोनों शक्तियां संतुलित रूप से विकसित की हैं। जिनमें संदेश भेजने की शक्ति अधिक विकसित है वे हमारे जीवात्मिक संदेशों को नहीं प्राप्त कर सकते, क्योंकि उनकी ग्रहण करने की शक्ति कम विकसित होती है। पृथ्वी पर ज्यादातर लोगों में मानसिक और अलौकिक शक्तियां होती है लेकिन उसे विकसित करना उन्हीं के हाथों में होता है और यह विचार करना बहुत महत्वपूर्ण है कि उन्हें विकसित कैसे किया जाए। एक ही शक्ति को अच्छे या दुष्ट दोनों ही तरीकों से प्रयोग किया जा सकता है। इसलिए, यह आप ही के हाथों में है कि आप खुदको बरबाद करें अथवा खुद को ऊंचा उठाकर ख़ुश रहें।

कभी-कभी, आपको कुछ चीजों के बारे में बताने, अथवा कुछ सवालों के जवाब देने की हमें अनुमति नहीं होती। इसलिए, कृपया हमें ऐसे सवाल बार-बार पूछकर जवाब देने के लिए बाध्य न करें।

पृथ्वी पर हर कोई पाप करता है। ऐसा कोई नहीं होता जिसने पाप न किया हो, बस उनके स्तर अलग-अलग होते हैं। कुछ लोग बहुत कम पाप करते हैं, कुछ थोड़ा अधिक करते हैं और कुछ लोग पाप करने की सीमाएँ लांघ देते है। इसलिए यदि आपसे एक छोटा सा भी पाप हो जाए तो आपको अपने कर्मों के जरिए उसका हिसाब चुकाना होता है। इस मामले में हम कुछ नहीं कर सकते। आपको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि हम आपको सज़ा से बचा नहीं सकते। इसी कारण कभी-कभी हमें कुछ लोगों की मदद करने से इनकार करना पड़ता है। हम ऐसे लोगों की मदद करने को सबसे ज्यादा इच्छुक होते हैं जो भले और निर्दोष हों अथवा पृथ्वी पर बुरे लोगों द्वारा प्रताड़ित किए गए हों। इसलिए, यदि हम आपकी मदद करने या आपका मार्गदर्शन करने से इनकार करें, तो यह जानने का प्रयत्न कीजिए कि आपने कौन से पाप किए हैं और फिर उनके लिए सच्चे मन से पश्चाताप कीजिए ताकि हम भविष्य में आपका मार्गदर्शन कर सकें।

केवल नकारात्मक आत्माएं ही बहकाकर और ग़लत मार्गदर्शन देकर आपको निराश कर देना चाहती हैं। लेकिन, अच्छाई की ओर अच्छा और दुष्टता की ओर दुष्ट आकर्षित होता है, इसलिए अच्छा बनने की पूरी कोशिश करें, और ईश्वर जरूर आपकी मदद करेंगे।

२५-०१-१९८४
प्रार्थनाएं हमेशा संक्षिप्त और सच्ची होनी चाहिए

आप पूरी तरह से एकाग्र होने चाहिए। आपकी दुनिया में, लंबी प्रार्थनाओं से आप कभी एकाग्र नहीं हो पाते और न ही आपका उनमें पूरी तरह मन लगता है। बिना पूर्ण भक्ति, एकाग्रता और निष्ठा के जब आप किसी पुस्तक से प्रार्थनाओं को पढ़ते हैं, तो यह बस एक उपन्यास पढ़ने जैसा ही होता है।

प्रतिदिन एक ही स्थान पर प्रार्थना करने का प्रयास करें, क्योंकि इससे आप उस स्थान पर ऊर्जा के मजबूत और शुद्ध स्पंदनों का निर्माण करते हैं। बेशक, प्रार्थना आप कहीं भी कर सकते हैं, लेकिन यदि आप इसके लिए एक स्थान चुन लें तो अच्छे स्पंदन परावर्तित होकर आप तक पहुंचेंगे और इससे आपको बहुत मदद मिलेगी।

हर जगह ईश्वर की जगह है, इसलिए आप संक्षिप्त प्रार्थनाएं कहीं भी कर सकते हैं, यहां तक कि यात्रा करते हुए भी। बस, आप में आस्था होनी चहिए। यहां तक कि यदि आप सड़क से एक पत्थर उठाते हैं, उसे धोते हैं, और मेज पर रखकर सच्चे मन से उसकी पूजा करते हैं, तो आपकी प्रार्थनाओं से अच्छे स्पंदनों का निर्माण होता है और ये स्पंदन पत्थर द्वारा अवशोषित कर लिये जाते हैं। आपकी सच्ची दैनिक प्रार्थनाओं से उस पत्थर और स्थान के आस-पास अच्छे स्पंदनों का निर्माण होता है और आपकी ओर परावर्तित होकर ये स्पंदन आपको मानसिक शांति, बुद्धिमत्ता और आत्मा की शुद्धता भी प्रदान करते हैं। बस, ईश्वर में पूर्ण आस्था रखिए और संपूर्ण रूप से एक सच्चा और नेक जीवन व्यतित करें। और आपकी प्रार्थनाएं चमत्कार कर देंगी।

२६-०१-१९८४
अहंकार मनुष्य को आध्यात्मिक अवनति की ओर ले जाता है

हमेशा विनम्र रहिए। कभी यह मत सोचिए कि आपकी मदद के बिना कोई असहाय हो जाएगा। हर ज़रूरतमन्द की मदद के लिए ईश्वर होते हैं। आप तो बस एक मनुष्य हैं। यदि आप प्रसिद्ध हो जाते हैं और अपने अन्दर अहंकार का प्रवेश होने देते हैं, तो एक दिन यही अहंकार आपके पतन का कारण बनेगा। इसलिए कभी अहंकारी मत बनिए। यदि आपके मन में अहंकार आ जाता है तो आप सरल तरीके से सोच नहीं सकते, आप बहुत सी ग़लतियां करते हैं और आध्यात्मिक रूप से नीचे गिर जाते हैं। **यदि आपका सर हवा में है तो इसमें बस हवा ही भरी रहेगी, और कुछ नहीं।** आपमें कोई समझदारी नहीं होगी। यकीन मानिए कोई आपके बिना असहाय नहीं होता। असहाय तो सर्वशक्तिमान ईश्वर के बिना आप हो जाएंगे।

जो भी यह सोचता है कि उसके बिना कोई बेसहारा हो जाएगा, वह सबसे बड़ा मूर्ख है। यदि ईश्वर ने आपको गर्व करने लायक कुछ दिया है, तो विनम्र बनिए, अन्यथा आप जरूर पतन की ओर बढ़ेंगे। समय से पहले कुछ भी नहीं होता, इसलिए प्रतीक्षा कीजिए और बेफ़िक्र रहिए। आपके तनावग्रस्त होने से कुछ भी अपने समय से पहले होने वाला नहीं। उल्टा, ऐसा करने पर आपका नुकसान ही होता है। इसलिए बेफ़िक्र रहिए और प्रार्थना कीजिए। ईश्वर महान हैं।

पृथ्वी पर आपको बुरी और दुष्ट आत्माओं के साथ रहते हुए अपनी आत्मा को शुद्ध, सबल और सात्विक बनाए रखना पड़ता है। यह बहुत ही मुश्किल काम है, लेकिन ईश्वर भली आत्माओं के साथ ही रहते हैं और यदि उन्हें उनकी रक्षा की आवश्यकता होती है तो वे उनकी देखभाल करते हैं। दूसरों की परवाह कीजिए और उनके प्रति मन में प्रेम रखिए। पृथ्वी पर कष्ट झेलने के बाद भी हमेशा अच्छे बने रहने की सच्ची इच्छा मन में रखिए।

२८-०१-१९८४
आप अपने पापों का हिसाब चुकाने से बच नहीं सकते

जैसा आप बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। ईश्वर का न्याय पूर्णतः सही होता है। संभव है कि यह तत्काल न हो, लेकिन अंततः आपको अपने पापों का हिसाब चुकता करना ही पड़ता है।

ईश्वर हमेशा भली आत्माओं को उनकी छोटी-मोटी ग़लतियों पर संकेत दिया करते हैं। वह आपको बताते हैं कि आप से कहां ग़लती हुई है, लेकिन धरती के लोग इसे समझते तक नहीं। इसलिए रुकने और सुधरने की कोशिश करने के बजाए वे दुष्टता की ओर और भी गहरे धंसते चले जाते हैं। यदि वे अपने दुष्ट कर्मों में असफल हो जाते हैं तो वे यह नहीं सोचते, कि ऐसा होने का अर्थ है की ईश्वर नहीं चाहते कि उनसे पाप हो। इसके बजाए, यह सोचते हुए वे और भी पापकर्म करने पर उतारू हो जाते हैं कि “मैं कितना होशियार हूं यह दिखाकर रहूंगा।” हमें ऐसी आत्माओं पर दया आती है। वे दुष्टता की राह पर इतने दूर निकल जाते हैं, जहां से लौटना संभव नहीं होता, और आख़िरकार वे खुदको नर्क में पाएँगे।

भाग २

प्रश्न और उत्तर

खोरशेद भावनगरी के घर का वह स्थान जहां वे अपने बेटों से संपर्क किया करती थीं

स्वचलित लेखन

"अधूरा ज्ञान, खतरनाक होता है"

"जितने जीवंत आप इस धरती पर हैं, उससे कहीं ज्यादा जीवंत हम जीवात्मा जगत में हैं। हम आपको देख सकते हैं, सुन सकते हैं, छू सकते हैं और महसूस कर सकते हैं।"

"सच्चा प्यार कभी नहीं मरता, धरती पर आपकी मृत्यु के बाद भी नहीं। प्रेम अनन्त है।"

कभी भी स्वचलित लेखन करने का प्रयास स्वयं न करें। रक्षात्मक कड़ी, और उचित जानकारी के बिना स्वचलित लेखन शुरू करना बेहद खतरनाक है। सिर्फ एक अनुभवी और पहले से मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति ही आपकी कड़ी जोड़ सकता है। ऐसा करने से आप आश्वस्त रहेंगे कि आपको किसी भी बुरी अवकाशी आत्मा या नकारात्मक शक्ति के हस्तक्षेप द्वारा नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकेगा।

जब हम किसी मृतात्मा से सम्पर्क साधते हैं, तो क्या हम उसकी आत्मा को परेशान नहीं कर रहे होते?

यह कहना ग़लत होगा कि हम मर चुके हैं। जितने सजीव आप पृथ्वी पर हैं, उससे कहीं ज्यादा हम जीवात्मा जगत में हैं। पृथ्वी पर आपका जीवन इस अंतहीन यात्रा का केवल एक पड़ाव है। जहां सच्चा प्यार हो, वहां सम्पर्क कैसे खत्म हो सकता है? यह आत्माओं के बीच का सम्पर्क है और आत्माएं कभी मरती नहीं। इसलिए मृत्यु के बारे में आपको अपनी धारणा बदलनी होगी। जो मरता है, वह आपका अहंकार है, आपका भौतिक शरीर है-जो बाकी रहता है, वह आपकी आत्मा है, और वह पृथ्वी के उस मनुष्य से ज्यादा जीवंत, ज्यादा स्पंदनशील और ज्यादा प्रेम पूर्ण

होती है जिससे कि वह संपर्क करती हैं। हम जीवात्माओं को कोई शारीरिक तकलीफ या दर्द नहीं होता। अपने मानवीय और अवकाशी शरीर को त्याग देने के कारण, हम पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं। पृथ्वी की तरह जीवात्मा जगत में भी, ईश्वर ने हमें अपने अस्तित्व को आकार देने का विकल्प दिया है। हम कोई भी कार्य चुन सकते हैं, जो हमें पसंद हों, हम जब चाहें तब प्रार्थना कर सकते हैं, खुशी अनुभव कर सकते हैं, जानकारियां और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। हम आपकी दुनिया की भौतिकता से बंधे नहीं हैं और हम पूरी तरह से अवचेतन मन द्वारा संचालित हैं, जो की हमारा सच्चा और आध्यात्मिक मन है। इसलिए, जब आप हमसे सम्पर्क करते हैं तो आप किसी 'मृत को परेशान' नहीं कर रहे होते, क्योंकि हम आपसे कहीं ज्यादा सजीव हैं।

आजकल के युवा ज्यादा खुले मन वाले और समझदार हैं। इसलिए, वे जीवात्मा सम्पर्क के विषय में अपने माता-पिता, जो कि दिमाग में पहले से भ्रांत धारणाएं लिए होते हैं, के विपरीत ज्यादा ग्रहणशील होते हैं। माता-पिता के बार-बार प्रतिबंधित होते रहने की वजह से पहले से उनकी एक बंधी-बंधाई सोच होती है।

स्वचलित लेखन क्या है?

स्वचलित लेखन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके जरिए जीवात्माएं धरती पर इंसानों से संपर्क करती हैं। इसके लिए बस एक कलम, काग़ज़ और एक प्राकृतिक ज्योत की आवश्यकता होती है। आसान शब्दों में कहें, तो जब आप काग़ज़ पर हल्के हाथ से कलम पकड़े रखेंगे, तो जिस जीवात्मा के साथ आपका संपर्क हो रहा है वह इस कलम को आगे बढ़ाएगी और जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, धीरे-धीरे शब्द और बाद में वाक्य बनते जाएंगे। हम स्वचलित लेखन के बारे में विस्तार से बताना नहीं चाहते, क्योंकि यह ऐसी प्रक्रिया नहीं, जिसे हँसी खेल में किया जा सके। **स्वचलित लेखन के दौरान नकारात्मक हस्तक्षेप हो सकता है, जैसे कि कोई अवकाशी आत्मा या अनजानी नकारात्मक शक्ति जो कि आपको नुकसान पहुंचा सकती हैं।**

यह केवल तभी किया जा सकता है जब आपके, और, जीवात्मा जगत की जिस आत्मा के साथ आप सम्पर्क करना चाहते हैं, उनके बीच एक सुरक्षात्मक कड़ी मौजूद हो। सिर्फ एक अनुभवी व्यक्ति जो पहले से ही इससे जुड़ा हुआ हो, आपकी

स्वचलित लेखन के विभिन्न स्तर

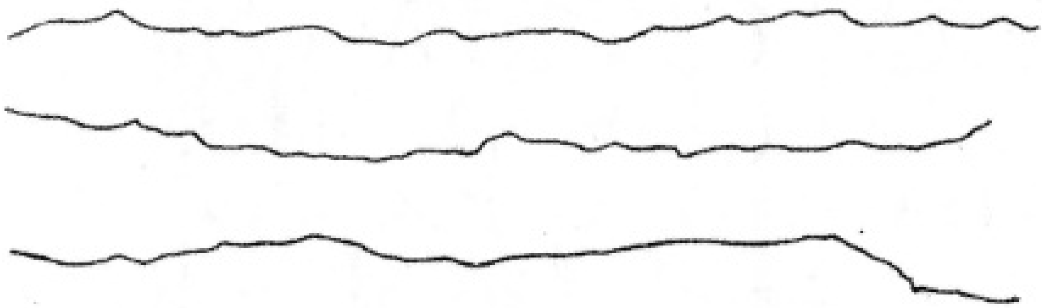

स्तर १

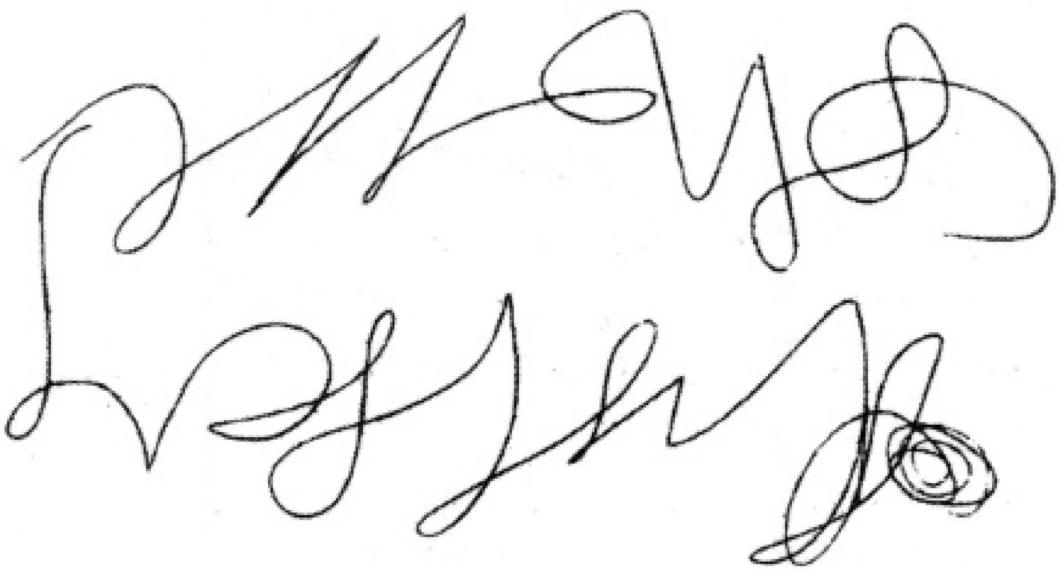

स्तर २

स्तर ३

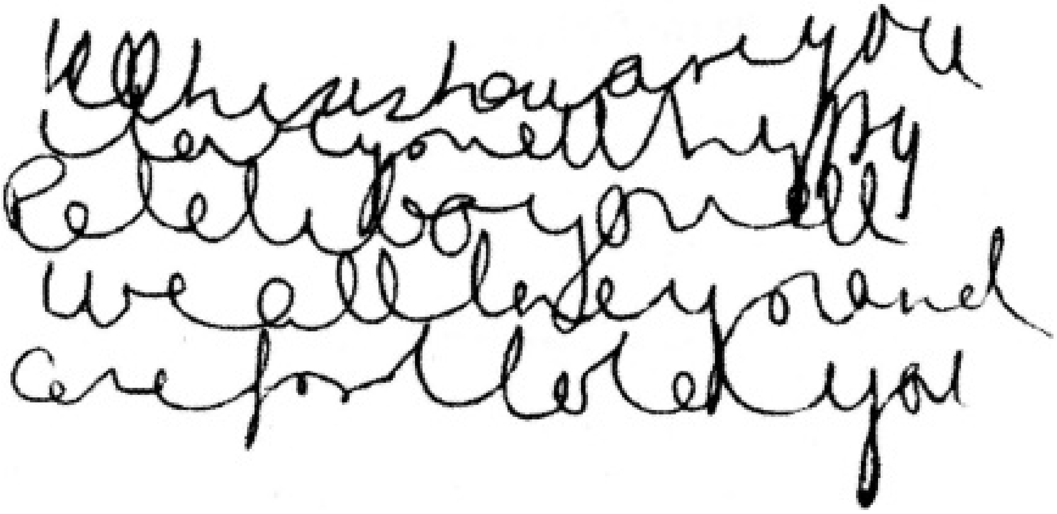

स्तर ४

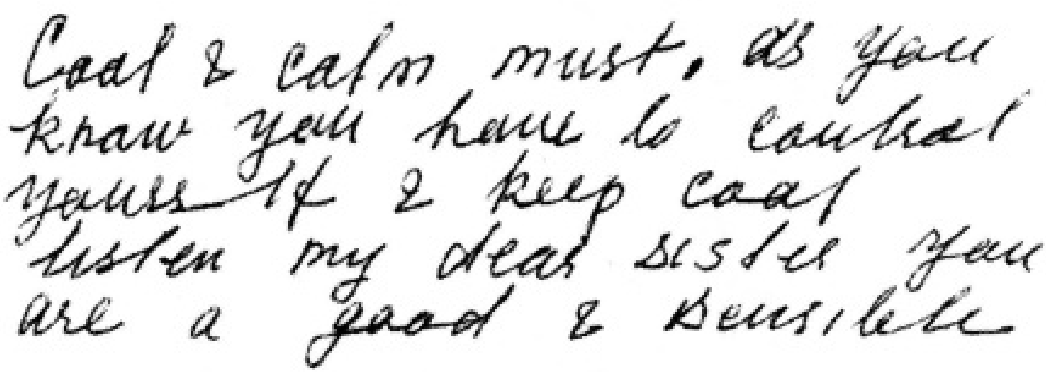
Cool & calm must. as you
know you have to control
yourself & keep cool
listen my dear sister you
are a good & sensible

स्तर ५ दूरसंवेदन
दूरसंवेदन सम्पर्क की मदद से खोरशेद भावनगरी को प्राप्त हुए संवाद, जो की उनके अपने अक्षरों में लिखे गए हैं। इस प्रक्रिया में, जीवात्माएं सीधे पृथ्वी की आत्मा के मन पर विचारों द्वारा प्रभाव डालती हैं। इसे दूरसंवेदन कहते हैं।

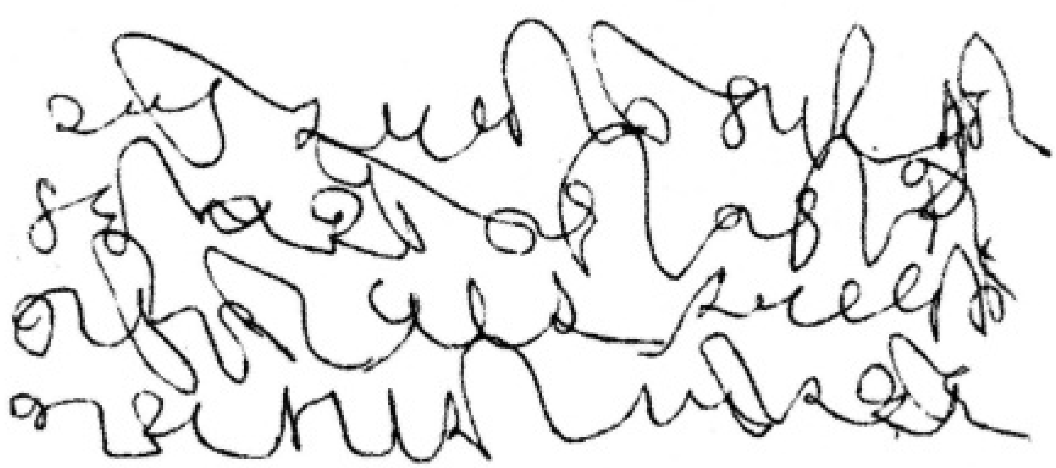

गुजराती में प्राप्त संवाद (खोरशेद भावनगरी की मातृभाषा)

कड़ी जोड़ सकता है। इसलिए, जब कभी स्वचलित लेखन के लिए विनतीयां प्राप्त होती हैं, तो सबसे पहले जीवात्मा जगत से आज्ञा लेनी होती है। यदि आज्ञा प्राप्त हो, तो ही विस्तार से निर्देश दिए जा सकते हैं, जिसका पूरी तरह से पालन करना बहुत जरूरी होता है। यदि सही तरीके से उचित मार्गदर्शन के अनुसार यह किया जाए, तो जीवात्माओं से सम्पर्क करने का यह सबसे सुरक्षित तरीका है, क्योंकि आपके, और जिस जीवात्मा से आप सम्पर्क करेंगे, उसके बीच एक सुरक्षित कड़ी बन जाती है। इस कड़ी की सुरक्षा उच्चतर जीवात्माओं द्वारा की जाती है, इसलिए कोई निम्न स्तर की या अवकाशी आत्मा, कोई बाधा डालकर आपको बहका नहीं सकती। यहां, जीवात्मा जगत में हमें बुरी आत्माओं से कड़ी जोड़ने की आज्ञा नहीं दी जाती।

स्वचलित लेखन सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से धरती पर रहने वाली आत्माओं को मिला हुआ एक वरदान है, जिसके जरिए वे अपने प्रियजनों के साथ सम्पर्क में रह सकती हैं। केवल ऐसी

जीवात्माएं, जो उच्च आध्यात्मिक स्तर पर होती हैं और पृथ्वी पर ऐसे लोग, जो सही राह पर होते है, उन्हें ही सम्पर्क करने की अनुमति दी जाती है। स्वचलित लेखन सीखने का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि आप अपने उन प्रियजनों के साथ सम्पर्क कर सकते हैं जो दिवगंत हैं और उनका मार्गदर्शन ले सकते हैं। यह पृथ्वी के लोगों को बहुत राहत देता है। हालांकि, जीवात्माओं के मार्गदर्शन में स्वचलित लेखन का मुख्य उद्देश्य, आपको **आध्यात्मिक रूप से सुधार लाने में मदद करना** है, और अंततः दूसरों की भी मदद करना है। जिस समय आप लिख रहे होते हैं, आपका अवचेतन मन सक्रिय हो उठता है और आप सुरक्षा प्राप्त करते हैं (इसलिए नकारात्मक शक्ति आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकती) और आपको आरोग्य लाभ होता है। आखिरकार, अगर आप सही राह पर हैं, तो आप दूसरों की मदद कर पाने में समर्थ होंगे। आप दूसरों के लिए संदेश प्राप्त करने और जिन्हें आध्यात्मिक जानकारी और मार्गदर्शन की जरूरत है, उनकी मदद कर पाएंगे। दुर्भाग्यवश आज कई लोग इस वरदान का ग़लत इस्तेमाल कर रहे हैं। स्वचलित लेखन की शुरुआत करते ही वे दूसरों को संदेश देने लगते हैं, जो हो सकता है कि उनके अपने ही भौतिक मन की उपज हों और संभव है कि वह बिल्कुल ग़लत भी हों। कुछ लोग इस क्षमता का इस्तेमाल अपने अहंकार को सन्तुष्ट करने, शक्ति प्राप्त करने, सफलता और प्रसिद्धि हासिल करने के लिए या फिर दूसरों को काबू में रखने के लिए करते हैं। अगर ऐसा होता है तो वह जीवात्मा पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा से संपर्क करना बंद कर देती है। इसके परिणामस्वरूप दो बातें हो सकती हैं- पहली, पृथ्वी पर रहने वाला वह इंसान अपने भौतिक मन की उपज के आधार पर संदेश लिखना जारी रखेगा, जो बिल्कुल ग़लत होगा। दूसरी, कोई बुरी अवकाशी आत्मा पृथ्वी पर की आत्मा को ग़लत संदेश भेजकर उसे पूरी तरह से गलत दिशा में ले जाएगी।

क्या यह कहना सही होगा कि स्वचलित लेखन एक आध्यात्मिक प्रकिया है?

हां, ऐसा कहना बिल्कुल सही है। ईश्वर चाहते हैं कि जीवात्माएं, इंसानी आत्माओं की मदद करें। आपका मार्गदर्शन करना हमारा कर्तव्य है। धरती पर आत्माओं की एक ग़लत धारणा बन गई है कि स्वचलित लेखन एक नकारात्मक प्रक्रिया है और वह हमारी उन्नति में बाधा पहुंचाती है। आध्यात्मिक विकास इसका सबसे बड़ा उद्देश्य है। हालांकि इंसान शुरूआत में अपने दिवंगत प्रियजनों के साथ सदमे और दुःख की वजह से बात करता है, लेकिन आखिरकार आपको पता चलता है कि ये प्रियजन ही अब आपके आध्यात्मिक अभिभावकों और संरक्षकों की भूमिका निभा रहे हैं।

मृत्यु के बाद सभी आत्माएं अपने प्रियजनों से सम्पर्क क्यों नहीं करतीं? क्या सभी आत्माएं धरती पर रह रहे अपने प्रियजनों के दर्द और पीड़ा को कम करना नहीं चाहतीं?

पृथ्वी पर कुछ आत्माएं प्रतिभाशाली माध्यम होती हैं, जिनमें जीवात्मा जगत से संदेश प्राप्त करने की क्षमता होती है। कुछ तो इस वरदान के साथ ही पैदा होती हैं- उन्होंने इस वरदान को कई जन्म लेने के बाद कमाया होता है, और यही उनका आध्यात्मिक जीवन कार्य होता है। साथ

ही, धरती पर सभी आत्माएं ऐसी नहीं होतीं जिनका मृत्यु-बाद के जीवन या ईश्वर में विश्वास हो।

लोग कहते हैं कि वे उन पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे अपनी जिंदगी उनके अनुरूप नहीं जीते। इसलिए वे अपनी परीक्षा में असफल सिद्ध होते हैं और परिणाम स्वरूप उनके प्रियजनों को उनसे सम्पर्क करने की अनुमति नहीं दी जाती। **पहली चीज जिसकी जीवात्माओं को जरूरत होती है, वह है विश्वास।** अगर आप सबूत की तलाश में हैं, तो वह आपको कभी नहीं मिलेगा। **आप कह सकते हैं की आप मनुष्य हैं और आपको सबूत की जरूरत है, लेकिन सच तो यह है कि आप सबूत चाहते हैं- आपको उसकी जरूरत नहीं होती।** आपके हृदय में आप जानते हैं की ईश्वर का अस्तित्व है और जो लोग जीवात्मा जगत में पहुंचते हैं, वह हमेशा जीवित रहते हैं। लेकिन तर्क आपको इसे मानने से रोकता है। यदि हमने आपको सबूत दे दिया, तो कोई परिक्षा नहीं रह जाएगी। अपने प्रियजनों को खो देने के बाद, कुछ लोग बेहद कठोर और क्रोधित हो जाते हैं और ईश्वर को जिम्मेदार ठहराते हैं। कठिन समय में उनकी मदद मांगने के बदले वे उनसे मुंह फेर लेते हैं। दर्द का एहसास स्वभाविक है, लेकिन कठोर और क्रोधित बनने से बचें। भले ही यह बहुत मुश्किल है, लेकिन अपनी इस तकलीफ का इस्तेमाल दूसरों की मदद के लिए करें। उस तकलीफ में खुद को नष्ट न करें और ईश्वर को दोषी न ठहराएं। सम्पर्क तभी हो सकता है, जब इंसान और जीवात्मा के बीच सच्चा प्यार हो। उनकी आत्माएं एक-दूसरे के करीब आने को उत्सुक होतीं हैं। प्राथमिक अवस्था में, वह जीवात्मा पृथ्वी पर की आत्मा की मदद करना चाहती है, लेकिन दोनों ही आत्माओं का अंतिम लक्ष्य आध्यात्मिक रूप से प्रगति करना है। अतः अगर पृथ्वी पर की आत्मा यदि एक बहुत ही निम्न लोक तक गिर जाए, तो सम्पर्क की अनुमति नहीं मिलती, क्योंकि पृथ्वी पर की आत्मा का अवचेतन मन सुप्त होने के कगार पर होता है।

अगर आप मजबूत और खुले मन के इंसान हैं, तो हमें आप तक पहुंचने की अनुमति है, ताकि आपका विश्वास पुनः जागृत हो सके। मेहरबानी करके, इस बात को समझिए कि यहां एक आध्यात्मिक नियम सक्रीय है। ये नियम निष्पक्ष होता हैं- ये किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। अगर आप सही राह पर हैं, तो जीवात्माएं आप तक पहुंचने के लिए अपनी ओर से पूरी कोशिश करती हैं।

भले ही आप तकलीफ में हों, आपको फिर भी ग्रहणशील रहना चाहिए। ऐसी कई जीवात्माएं हैं, जो पृथ्वी पर अपने प्रियजनों को सांत्वना देने के लिए उन तक पहुंचने की कोशिश करती हैं। ताकि वे उनकी मदद कर सकें, लेकिन यह अकसर संभव नहीं हो पाता, क्योंकि पृथ्वी पर लोग मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास नहीं करते। उनके मन इस संभावना के प्रती ग्रहणशील नहीं होते, और इस लिए सम्पर्क का तो सवाल ही नहीं उठता। हम आपकी तरफ कई कदम बढ़ाने के लिए तैयार होते हैं, लेकिन पहला कदम, जो कि विश्वास रखने और मन को खुला रखने का है, वह आपकी ओऱ से बढ़ना चाहिए। यही आध्यात्मिक नियम है।

स्वचलित लेखन के क्या-क्या फायदे हैं?

१. अच्छी जीवात्माओं और धरती के लोगों को आध्यात्मिक विकास और निःस्वार्थ सेवा के लिए यह वरदान प्रदान किया गया है।

२. स्वचलित लेखन एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें जीवात्माएं, पृथ्वी पर की आत्माओं को मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। हालांकि, यह मार्गदर्शन केवल एक संकेत हो सकता है, इसलिए किसी को भी इस पर पूर्ण रूप से आश्रित नहीं रहना चाहिए।

३. अपनी परीक्षाओं, प्रशिक्षण और कर्मों का बहादुरी और मुस्कान के साथ सामना करने में ये जीवात्माएं, पृथ्वी पर की आत्माओं की मदद करती हैं। वे पृथ्वी पर की आत्मा को अपने आध्यात्मिक जीवनकार्य की शोध करने में भी मदद करती हैं।

४. जीवात्माएं पृथ्वी पर की आत्माओं को सर्वशक्तिमान ईश्वर के सच्चे नियमों का परिचय देती हैं।

५. स्वचलित लेखन प्रक्रिया के दौरान, जीवात्मा पृथ्वी पर की आत्मा को आरोग्य प्रदान करती है।

६. इस प्रक्रिया से अवचेतन मन भी ज्यादा और ज्यादा जागृत होता जाता है।

जीवात्मा जगत

"पृथ्वी हमारी पाठशाला है; हमारा असली घर जीवात्मा जगत है।"
"केवल मदद की सच्ची पुकारों का ही उत्तर दिया जाता है"

जीवात्मा की सही परिभाषा क्या है?

हम इसे आपके अस्तित्व के संदर्भ में समझा सकते हैं। सबसे पहले आपको यह समझने की जरूरत है कि आप 'मनुष्य' नहीं हैं। आप असल में मनुष्य के रूप में एक जीवात्मा हैं। पृथ्वी पर हर व्यक्ति का यही अस्तित्व है। आपके पास केवल एक नहीं, बल्कि तीन शरीर हैं :

१. मानवीय शरीर

२. अवकाशी शरीर

३. जीवात्मिक शरीर

जब आपकी मृत्यु होती है, तब आप मानवीय से अवकाशी और फिर जीवात्मिक रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। यह एक प्राकृतिक प्रगति है। मृत्यु के बाद आपके भौतिक शरीर और भौतिक मन की मृत्यु हो जाती है। आपके अवकाशी शरीर और जीवात्मिक शरीर कि तुलना में भौतिक शरीर काफी भारी होता है। आप अपने भौतिक शरीर और भौतिक मन का त्याग करने के बाद एक अवकाशी आत्मा बन जाते हैं। एक अवकाशी आत्मा वैसी ही दिखती है, जैसा मृत्यु के समय वह इंसान दिखता हो। अवकाशी शरीर मानवीय शरीर का प्रतिरूप होता है, लेकिन वह काफी हल्का होता है। अवकाशी आत्मा से, आत्मा और अवचेतन मन जीवात्मा रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। यह जीवात्मिक शरीर, भौतिक शरीर और अवकाशी शरीर से काफी हल्का होता है। यह पंख जितना हल्का होता है। उच्च आध्यात्मिक स्तर की जीवात्मा पृथ्वी की अपेक्षा उम्र में काफि यूवा दिखती है। साथ ही, उसका स्वरूप इस बात को दर्शाता है कि वह

आत्मा कितनी विकसित है। आत्मा जितनी ज्यादा विकसित होगी, उसका जीवात्मिक रूप उतना ही चमकीला और यूवा होगा।

क्या स्वर्ग और नर्क का अस्तित्व है?

हमारे संवादों में, हमने 'स्वर्ग' और 'नर्क' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है, लेकिन कृपया इसके पीछे के सत्य को समझिए। ईश्वर ने एक नियम बनाया हैं, की जीवात्मा जगत में एक नकारात्मक आत्मा ठीक उसी जगह नहीं रह सकती जहां अच्छी आत्मा रहती हो। इसलिए, जब मनुष्यों ने अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग प्रकाश से दूर जाने के लिए किया, तो उनके सामूहिक स्पंदनों से एक नकारात्मक स्थान का निर्माण हुआ। दूसरे शब्दों में कहें तो, सात लोकों की परिस्थिती का निर्माण इन लोकों में रहने वाली आत्माओं द्वारा ही किया गया है। केवल सात लोकों का अस्तित्व है। स्वर्ग और नर्क बस आत्मा के विचारों, शब्दों और कर्मों का प्रतिबिम्ब हैं- न इससे ज्यादा न इससे कम। अगर आप सही राह पर हैं, तो आपको डरने की जरूरत नहीं। **सत्य का उद्देश्य यह नहीं कि मन में डर को बिठा लें, इसका उद्देश्य तो आपको जगाना है।** जैसे सात लोक होते हैं, उसी तरह सात विश्व भी हैं। जब आप अपनी आध्यात्मिक यात्रा शुरू करते हैं, तो आप सांतवे विश्व तक पहुंचने का लक्ष्य लिए पहले विश्व से शुरुआत करते हैं। हर विश्व के अलग आयाम होते हैं। पृथ्वी तीन आयामों वाला और तीसरा विश्व है।

ईश्वर ने पृथ्वी पर अच्छी और बुरी दोनों आत्माओं को एक साथ रहने की अनुमति क्यों दी है?

सभी भली आत्माओं का यह जीवन कार्य है कि आध्यात्मिक तौर पर जो सही है, वह करते हुए वे नकारात्मकता से संघर्ष करें। अगर नकारात्मकता का अस्तित्व न होता, तो आपकी आध्यात्मिक तौर पर परीक्षा कैसे होती? भली आत्माओं को नकारात्मक आत्माओं के बदलाव में मदद करने का मौका दिया जाता है, ताकि वे ईश्वर के दिखाए सही मार्ग पर चलें। जब नकारात्मक आत्माएं दयालुता भरा बर्ताव या निःस्वार्थ अच्छे कर्म देखती हैं, तो संभव है कि वे सही राह पर चलने के लिए प्रेरित हो जाएं।

क्या ऐसी आत्माओं के लिए कोई उम्मीद है?

हां, बिल्कुल है। लेकिन तभी, जब सुधार की इच्छा वास्तव में मन से जागी हो। जीवात्मा जगत में यदि किसी जीवात्मा को निम्नतर लोकों से मदद के लिए सच्ची पुकार सुनाई देती है, तो वे मदद जरूर करती हैं। एक निम्न आत्मा की प्रगति के लिए यह पहला कदम उठाना होता है- सुधरने का उद्देश्य और इसकी इच्छा बिल्कुल सच्ची होनी चाहिए। इसलिए यदि आप जीवात्मा जगत के निचले लोक में हैं, तो निराश मत होइए। आपको वहां अनंत काल तक रहने के लिए बाध्य नहीं

किया जाएगा। अनन्त नरक — यातना जैसा कुछ नहीं होता। विकास करने, अच्छाई को चुनने और आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने का अवसर हमेशा मिलता है।

हमें पृथ्वी पर जीवात्मा जगत क्यों याद नहीं रहता?

यदि एक क्षण के लिए भी मनुष्य उस आलोकितता का अनुभव कर ले, जो जीवात्माओं को प्राप्त होता है, तो आप अपने भौतिक शरीर में नहीं रह पाएंगे। यदि आपको जीवात्मा जगत में अपने अस्तित्व की हर बात याद हो, तो आप पृथ्वी पर क्षण भर के लिए भी जीना पसंद नहीं करेंगे। इसी वजह से जीवात्मा जगत के बारे में आपमें कोई सचेतन स्मृति नहीं होती। यह आपकी परीक्षा भी है कि आप बिना किसी प्रत्यक्ष सबूत के ईश्वर और मृत्यु बाद के जीवन में विश्वास करते हैं या नहीं। जीवात्मा जगत सत्य का क्षेत्र है। पृथ्वी प्रशिक्षण का क्षेत्र है।

यदि जीवात्मा जगत ही हमारा वास्तविक घर है, तो हम मरने के बाद इसे पहचान क्यों नहीं पाते?

मृत्यु के बाद शरीर मर जाता है। हालांकि, पृथ्वी पर मनुष्य द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान, स्मृति और अनुभव नहीं मरते। आपकी आत्मा इनका त्याग नहीं करती। और आपके गुण अथवा **आत्मिक लक्षण** भी आपके साथ रहते हैं। अवचेतन मन, जो आपकी आत्मा से जुड़ा होता है, जीवात्मा जगत की जानकारी और स्मृतियों के बारे में धीरे-धीरे, एक-एक कर आपको बताता है। लेकिन, यदि आप स्वभाव से जिद्दी या फिर भौतिक दुनिया से कुछ ज्यादा ही जुड़े हुए हैं, तो जो भी आपको आपका अवचेतन मन कहता है, उसपर गौर करना आपके लिए मुश्किल हो जाता है। ज्यों-ज्यों आप आध्यात्मिक रूप से प्रगति करते हैं, आपका अवचेतन मन जागृत होता जाता है और आप जीवात्मा जगत को अपने असली घर के रूप में आसानी से स्वीकार कर लेते हैं।

आत्मिक लक्षण कैसे उपलब्ध किए जाते हैं?

आत्मिक लक्षण वे गुण होते हैं, जो आप कई जन्म लेने के बाद उपलब्ध करते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने अपनी जीवात्मा को किस तरह का प्रशिक्षण दिया है। आपकी आत्मा के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों लक्षण होते हैं। उदाहरण के लिए, आपकी आत्मा के सकारात्मक लक्षण यह हो सकते हैं कि आप निःस्वार्थ, सकारात्मक और बहादुर हों। नकारात्मक लक्षण भले ही आपके भौतिक मन की उपज हों, लेकिन बहुत लंबे समय तक आपके साथ रहने की वजह से, वे आपका हिस्सा बन जाते हैं। इसलिए आप अभिमानी, जिद्दी और बहुत तार्किक हो सकते हैं। पृथ्वी पर आपके द्वारा अर्जित नकारात्मक लक्षण जीवात्मा जगत में आपके साथ रहते हैं। हां, पर ये उतने प्रबल नहीं होते। लेकिन याद रखें, आप पूरी तरह

से संपूर्ण नहीं हैं। जीवात्मा बनने के बाद भी आपमें दोष होते हैं। आप विकास करना जारी रखते हैं, यहां तक कि जीवात्मा जगत में भी। हालांकि, अगर आप उच्च लोक में हैं, तो इसका मतलब है कि आपने धरती पर अपने जीवनकाल में इन गुणों को हासिल करने के लिए यत्न किए हैं और जो थोड़े अवगुण हैं उनसे आसानी से छुटकारा पा सकते हैं। उच्चतर लोकों में जीवात्माएं उच्चस्तर की चीजें सीखती हैं।

मान लीजिए किसी व्यक्ति को मरने के बाद यह पता होता है कि वह निम्नतम लोक में जाने वाला है, तो वह वहां क्यों जाएगा?

अच्छी आत्मा अपने आप ही अपने लोक में पहुंच जाती है, क्योंकि अच्छी आत्माओं को उस शांति के बारे में पता होता है जो उनकी प्रतिक्षा कर रही होती है। बहरहाल, निम्नस्तरीय आत्मा निम्न लोक में नहीं जाने का विकल्प चुन सकती है।

निम्नतर लोकों में जाने से बचने के लिए यह आत्मा अपने अवकाशी रूप में रह सकती है- जिन्हें आप प्रेतात्माओं के रूप में जानते हैं। स्वतंत्र इच्छा का नियम अवकाशी जगत में भी प्रचलित है। आप पूछ सकते हैं कि, “इसमें न्याय कहां है?” कृपया यह समझ लीजिए कि ये नकारात्मक आत्माएं कभी भी आध्यात्मिक रूप से उन्नति नहीं कर पातीं, या जब तक वे सत्य का सामना न कर लें तब तक अपने कर्मों का हिसाब नहीं चुका पातीं। कभी न कभी, उन्हें अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है और जीवात्मा जगत में जाना पड़ता है। साथ ही, जितना अधिक समय वे अपने अवकाशी रूप में गुज़ारती हैं, उनके नकारात्मक कर्म उतने ही अधिक बढ़ते जाते हैं। तो इस तरह, न्याय हमेशा किया जाता हैं।

हमारी मृत्यु होने पर क्या हमारे प्रियजन हमें लेने आते हैं?

अगर आपकी मृत्यु किसी बीमारी से होती है, तो आपके दिवंगत मित्र और रिश्तेदार जीवात्मा जगत में आपका स्वागत करने के लिए उपस्थित होंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि उन्हें आपकी अंतिम तारीख (मृत्यु की तिथि) के बारे में पता होता है और वे इस सच से अवगत रहते हैं कि आप पृथ्वी को अलविदा कहने जा रहे हैं। लेकिन, अगर आपकी मृत्यु अचानक होती है- जैसा कि हमारे मामले में हुआ, जब हमारी अंतिम तारीख़ नहीं, बल्कि एक दुर्घटना थी- जीवात्माओं को आपका स्वागत करने में थोड़ा समय लग सकता है। यदि आप एक भली आत्मा हैं तो आप आश्वस्त रहें कि वे आपके स्वागत के लिए जरूर उपस्थित होंगे। आप बस कुछ क्षणों के लिए ही अकेले रहेंगे, इससे ज्यादा नहीं। अगर आप नकारात्मक आत्मा हैं, तो अपने स्वागत के लिए आप अच्छी आत्मा के पहुंचने की उम्मीद न करें। यहां तक कि अपने दिवंगत प्रियजनों से भी यह उम्मीद न रखें कि आपका स्वागत करने के लिए वे वहां मौजूद रहेंगे। लेकिन नकारात्मक आत्माएं आपको उस जगह ले जाने के लिए आएंगी, जिसके आप योग्य हैं।

आपने बताया कि ज्यों ही आप जीवात्मा जगत में पहुंचे, आप को विश्राम कक्ष में ले जाया गया। क्या आप, इस जगह के बारे में हमें और कुछ बता सकते हो?

यदि पृथ्वी पर किसी व्यक्ति की मृत्यु अप्रत्याशित और अचानक होती है, तो उस आत्मा को **विश्राम कक्ष** में ले जाया जाता है। क्योंकि इन आत्माओं को आघात लगा होता है, इसलिए उनकी व्याकुलता को कम करने के लिए उन्हें स्वास्थ्यलाभकारी किरणें दी जाती हैं। ये किरणें बस सूर्य की किरणें होती हैं, लेकिन जीवात्मा जगत में ये बहुत निर्मल होती हैं। हमारी मृत्यू के बाद, हम अपने मॉम और डैड को लेकर काफी चिंतित थे, क्योंकि उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था और हमें इस बात की फ़िक्र थी कि वे अब कैसे जी पाएंगे, इसलिए हमें शांत करने के लिए स्वास्थ्यलाभकारी किरणों का दिया जाना जरूरी था।

इसी तरह, यदि आघात ग्रस्त अथवा व्याकुल आत्माएं शांत नही हैं तो वे इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाती कि वे अब पृथ्वी पर नहीं हैं। यदि वे सदमे में ही रह जाएं तो वे जीवात्मा जगत के बारे मे उन सूचनाओं को ग्रहण कर उनका मतलब नहीं समझ पाएंगी, जिनका दिया जाना जरूरी होता है। वे अपने नए परिवेश में हर चीज को स्वीकारने, उनकी पहचान करने और उनके अनुसार काम करने में सक्षम नहीं हो पातीं। इसलिए, विश्राम कक्ष वह जगह है जहां आपकी आत्मा का उपचार होता है और उसे फिर से ऊर्जावान किया जाता है। जब आत्माएं विश्राम कक्ष से बाहर आति हैं, तब वे दुबारा ऊर्जा से भर जाती हैं और उन्हें आनन्द का अलौकिक अहसास होता है। हर लोक का अपना अलग विश्राम कक्ष होता है।

लेकिन, प्रथम लोक से लेकर चौथे लोक के चौथे स्तर तक विश्राम कक्ष नहीं होता। इसलिए, केवल वही आत्माएं जो चौथे लोक के पांचवें स्तर और उससे ऊपर होती हैं, उन्हें ही विश्राम कक्ष में ले जाया जाता है। वे जरूरत से ज्यादा समय के लिए विश्राम कक्ष में नहीं रह सकते।

जीवात्मा जगत के अनुसार ढल जाने के बाद आत्माओं का क्या होता है?

एक बार जब जीवात्माएँ, जीवात्मा जगत के अनुकूल हो जाती है तो उन्हें अपने नए परिवेश के बारे में सीखना होता है। जो आत्माएं हाल में जीवात्मा जगत में पहुंची होती हैं, उनके मन में कई सवाल होते हैं। कुछ विशिष्ट जीवात्माएं होती हैं, जिन्हें इन नई आत्माओं की मदद करने के लिए प्रशिक्षित किया गया होता है। लेकिन, यहां एक और स्थान है, जहां आत्माएं जानकारियां प्राप्त कर सकती हैं और इसे **शिक्षा कक्ष** कहते हैं। शिक्षा कक्ष में ईश्वर के नियमों, ब्रह्मांड की प्रकृति और ईश्वर की हर एक रचना की जानकारी मौजूद होती है। हालांकि, ये जानकारियां आत्मा के समझने की क्षमता के आधार पर ही उन्हें दी जाती हैं। जीवात्मा जगत में, शिक्षा कक्ष हर भली आत्मा के लिए खुला रहता है। चौथे लोक के चौथे स्तर से ऊपर प्रत्येक लोक में, जिस तरह विश्राम कक्ष होता है, उसी तरह शिक्षा कक्ष भी होता है। अत्यंत विकसित जीवात्माएं इन कक्षों में आकर जीवात्माओं को ईश्वर के प्रेम और ज्ञान के बारे में शिक्षित कर उनमें प्रेरणा का संचार

करती हैं। यह सारे कक्ष ऐसी उर्जा से भरे होते हैं, जो आपको आध्यात्मिक सत्यों को बेहतर समझने में सक्षम बनाती हैं। आप अपने अवचेतन मन को और अधिक जागृत करना सीख सकते हैं और अपने अन्दर पहले से मौजूद निपुणता को बढ़ा सकते हैं। समस्याओं को कैसे सुलझाया जाए, इसके लिए मार्गदर्शन मांगना और अपने आध्यात्मिक जीवनकार्य का बेहतर अनुकरण किस प्रकार किया जाए, यह सीखने की सारी जानकारियां वहां मौजूद होती हैं। संभावनाएं अनंत हैं और यह वास्तव में भव्य सीख पाने की जगह है, जहां कई आत्माएं आती हैं और अपने-अपने अनुभव बांटती हैं और अन्य ग्रहों और आयामों के बारे में जानकारियों का आदान-प्रदान करती हैं। शिक्षा कक्ष की शुरुआती और सबसे अहम भूमिका है- आपके अंदर एक भव्य आध्यात्मिक जागृति पैदा करना। जब आत्माओं को शिक्षा कक्ष से जानकारियां मिलती हैं, तब उन्हें अहसास होता है कि सांसारिक विचार कितने दकियानूसी हैं। शिक्षा कक्ष आध्यात्मिक सत्यों से भरे हुए एक पुस्तकालय की तरह है।

क्या जीवात्मा जगत में फ़रिश्ते होते हैं?

हां। फ़रिश्ते वे भली आत्माएं हैं, जो मार्गदर्शन करती हैं, मदद करती हैं और सर्वशक्तिमान ईश्वर के संदेश लेकर आती हैं। कभी-कभार वे इंसान के रूप में आती हैं और कभी-कभी वे अदृश्य होती हैं। ये पांचवें लोक के सातवें स्तर से ऊपर की भली आत्माएं होती हैं। श्री सर्वोच्च भली आत्मा की अनुमति मिल जाने पर, सातवें लोक के पांचवें स्तर से ऊपर के फ़रिश्ते आपात परिस्थितियों में आत्माओं की मदद करने के लिए पृथ्वी पर किसी भी रूप में आ सकती हैं। फ़रिश्तों के पास चमत्कार करने की क्षमता और शक्ति होती है। पांचवें और छठे लोकों की आत्माएं भी पृथ्वी की आत्माओं की मदद करती हैं, लेकिन केवल जीवात्मा जगत से ही। वे पृथ्वी पर नहीं जातीं।

फ़रिश्तों के पंख नहीं होते, लेकिन वे चोगे पहनते हैं और तेजी से उड़ान भरने पर उनके चोगे पंख जैसे दिखाई पड़ते हैं। बहरहाल, कभी-कभी फ़रिश्ते विभिन्न रूप और अकार ग्रहण करते हैं और कभी-कभी वे मनुष्य के सामने पंखधारी स्वरूप में प्रकट होते हैं, क्योंकि मनुष्य उनकी कल्पना इसी रूप में करते हैं। पंखों का इस्तेमाल फरिश्तों को प्रतीकात्मक रूप देने के लिए किया जाता है, ताकि लोग जान पाएं कि जीवात्मा जगत का अस्तित्व है और फरिश्ते उनकी देखभाल कर रहे हैं। धरती पर कुछ आत्माओं ने फरिश्तों को देखा है। प्रत्येक आत्मा को व्यक्तिगत जरूरतों के आधार पर एक चोगा दिया जाता है और वे चोगे ऐसे पदार्थ से बने होते हैं जिनमें ऊर्जा को ग्रहण करने की जबर्दस्त क्षमता होती है। उच्चतर लोकों की आत्माओं के चोगों में ऊर्जा ग्रहण करने और उसे संजोने की क्षमता निम्नतर लोकों की आत्माओं के चोगों की तुलना में अधिक होती है। ज्यों-ज्यों हम उच्चतर स्तर की ओर बढ़ते हैं, स्पंदन प्रबल होता जाता है और चोगों की चमक बढ़ती जाती है, और इस तरह उनमें सकारात्मक ऊर्जा का अवशोषण और भंडारण होता है। दूसरी ओर जब भली जीवात्माएं निम्नतर लोकों में जाती हैं तो उन्हें अलग प्रकार के चोगों की आवश्यकता होती है। ये चोगे अलग तरह के पदार्थों के बने होते हैं जो ऊर्जा को ग्रहण नहीं

करते, बल्कि उसका परावर्तन करते हैं। आत्मा को जितने निम्नतर लोक की यात्रा करने की आवश्यकता हो, चोगे की परावर्तन शक्ति उतनी ही अधिक होती है। नकारात्मक ऊर्जा को परावर्तित कर ये चोगे भली आत्माओं के स्पंदनों को विरूपित होने से बचाते हैं। इन चोगों के विभिन्न रंग होते हैं। इन रंगों में से कुछ ऐसे होते हैं जिनका पृथ्वी पर अस्तित्व नहीं है।

क्या फ़रिश्ते जीवात्मिक मार्गदर्शकों से अलग होते हैं?

हां दोनों अलग हैं। पृथ्वी की प्रत्येक आत्मा का जीवात्मा जगत में एक संरक्षक होता है जो उसका मार्गदर्शन करता है। इस संरक्षक को **जीवात्मिक मार्गदर्शक** कहते हैं। यह उस मार्गदर्शक का लक्ष्य है कि वह आपको सही राह दिखाए। आपके जन्म लेते ही जीवात्मा जगत की एक आत्मा को आपके जन्म से लेकर मृत्यु तक आपके जीवात्मिक मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया जाता है। यह नियुक्ति उस लोक की उच्च भली आत्मा के द्वारा की जाती है। आप कभी यह नहीं जान पाएंगे कि आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक कौन है। आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक जीवन भर आपके साथ रहता है। बहरहाल, जब आप ग़लत रास्ते पर बढ़ते हैं तो आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक आप तक नहीं पहुंच पाता। जब कोई मनुष्य पाप करता है तो उसका अवचेतन मन बन्द होने लगता है, और आख़िरकार एक ऐसी स्थिति आती है जब अवचेतन मन पूरी तरह निष्क्रिय हो जाता है। ऐसा होने पर आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक आपको स्वास्थ्यलाभ, सुरक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम नहीं रह जाता। क्योंकि इन चीजों तक मनुष्य अपने अवचेतन मन द्वारा पहुंचता है, जो जीवात्मा जगत और आपके बीच की मुख्य कड़ी है। जब आपका अवचेतन मन निष्क्रिय हो जाता है, तब आपके जीवात्मिक मार्गदर्शक को आपके भौतिक मन के जरिए आप पर 'प्रभाव' डालकर आप तक संकेत भेजने में अलग से कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। यह किसी भौतिक संकेत के रूप में हो सकता है, हो सकता है पृथ्वी का ही कोई मनुष्य आपको सही राह दिखा दे अथवा आपको कोई चेतावनी मिल सकती है। लेकिन, यदि आप फिर भी नहीं बदले तो आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक कुछ नहीं कर सकता। इसलिए, ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए दोहरी सुरक्षा प्रदान कर रखी है। पहला आपका शक्तिशाली अवचेतन मन है, और दूसरा आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक है।

यह आपके जीवात्मिक मार्गदर्शक की जिम्मेदारी है कि वह जीवन भर आपकी देखभाल करे, आपको राह दिखाए, आपकी सुरक्षा करे और आपको पृथ्वी पर अपने जीवनकार्य को पूर्ण करने में सहायता करे। जब आपको सलाह की आवश्यकता हो तब आपको सच्चे मन से ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए और सहायता की विनती करनी चाहिए। आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक आपको आवश्यक मार्गदर्शन देने के लिए हर संभव प्रयत्न करेगा, क्योंकि उन्हें पृथ्वी की आत्माओं का मार्गदर्शन करने के लिए विशेष प्रकार से प्रशिक्षित किया गया होता है। जीवात्मा जगत में यही उनका मुख्य कार्य होता है, और इस प्रक्रिया के जरिए वे भी सीख प्राप्त करते हैं, और प्रगति करना जारी रखते हैं। बहुत कठिन परिस्थितियों में, जीवात्मिक मार्गदर्शक अन्य

बुद्धिमान आत्माओं से संपर्क कर उनकी सलाह लेता है। यह जानकारी आपको इसलिए दी जा रही है, क्योंकि पृथ्वी पर बहुत से लोग अपने आप को अकेला महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि उन्हें सलाह देने के लिए कोई नहीं है। लेकिन यदि आप अपने अवचेतन मन को विकसित करते हैं, तो आप ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं और अपने जीवात्मिक मार्गदर्शक की मदद माँग सकते हैं। किस तरह आपको सहायता प्राप्त होगी, यह देखकर आप हैरान रह जाएंगे, और उससे भी महत्त्व की बात यह है, कि अपनी समस्याओं का सामना करने के लिए आपको शक्ति मिलेगी।

क्या पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा की जुड़वा आत्मा, जीवात्मा जगत में उसके जीवात्मिक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकती है?

हां, लेकिन बहुत ही असाधारण परिस्थितियों में।

जुड़वां आत्मा किसे कहते हैं और क्या यही आत्मिक मित्र है?

इस ब्रह्मांड (तीसरे ब्रह्मांड) की प्रत्येक आत्मा दरअसल एक पूर्ण आत्मा का आधा हिस्सा होती है। जब एक आत्मा चौथे लोक के पांचवें स्तर से अपनी यात्रा आरंभ करती है, यह दो भागों में विभाजित की जाती है: नर आत्मा और नारी आत्मा। इन मूल नर और नारी आत्माओं का अंत में जाकर सातवें लोक के नौवें स्तर में मिलकर फिर से एक पूर्ण आत्मा बनना होता है। इन आत्माओं को **जुड़वां आत्माएँ** कहते हैं। असंख्य जन्मों के बाद, जब दोनों आत्माएं पृथ्वी पर, कभी पुरुष रूप में और कभी स्त्री रूप में, अपना-अपना प्रशिक्षण पूरा कर लेती हैं, और अपने कर्मों के फल भोग लेती हैं, तब जाकर ऐसा संभव होता है। इसके बाद ही सातवें लोक के नौवें स्तर पर दोनों आत्माओं का पुनर्मिलन होता है। ज्यों ही आत्मा सातवें लोक के नौवें स्तर में पहुंचती है, पुनर्मिलन से ठीक पहले, पुनः वह पुरुष और स्त्री की मूल आत्मा के रूप में आकर अगले विश्व की ओर प्रस्थान करती है।

अत:, आपकी जुड़वां आत्मा पृथ्वी पर कहलाए जाने वाले आत्मिक मित्र से बहुत अलग होती है। जब आप **आत्मिक मित्र** शब्द का प्रयोग करते हैं तो यह उसके लिए होता है, जिसे आप स्वयं के बहुत ही निकट महसूस करते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह व्यक्ति आपकी जुड़वां आत्मा हो। वह व्यक्ति एक **समूह आत्मा** हो सकती है, जिसके साथ आपके पिछले जन्मों के कई रिश्ते हो सकते हैं। ईश्वर ने, एक बार में, एक निश्चित संख्या में आत्माओं का सृजन किया। जन्म-जन्मांतर तक ये आत्माएं, एक दूसरे के प्रति प्रेम के कारण पृथ्वी पर एक साथ, एक ही समूह में अवतरित होती हैं, ताकि वे एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठने और एक बेहतर जिंदगी जीने में मदद कर सकें। इन आत्माओं को समूह आत्माएँ कहते हैं। कभी-कभी जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से निकटता महसूस करते हैं जिससे आप कभी मिले भी न हों, तो इसका कारण यह हो सकता है कि वह व्यक्ति आपकी समूह आत्मा है। समूह आत्माएं आपके

माता-पिता, बच्चे, पड़ोसी अथवा दोस्त हो सकते हैं। एक व्यक्ति की केवल एक ही जुड़वां आत्मा होती है, लेकिन उसके अनेक आत्मिक मित्र अथवा समूह आत्माएँ हो सकती हैं।

जब आप अपनी जुड़वां आत्मा से मिलते हैं, तो यह बहुत ही अमूल्य रिश्ता होता है। यदि दोनों आत्माएं उच्च स्तर पर हों, तो वे पृथ्वी पर एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से उन्नति करने में मदद कर सकती हैं और उनके बीच सच्चे विश्वास और सच्ची मैत्री विकसित होती है, क्योंकि उनकी जीवात्माएँ एक दूसरे को पहचान लेती हैं। यह बात भौतिकता से परे है। यह दो जीवात्माओं की बात है जो एक दूसरे से मिलते हैं और उन्हें इस सत्य का अहसास होता है कि वे एक हैं, समान हैं। कुछ स्थितियों में, यदि दोनों में से कोई एक आत्मा अथवा दोनों आत्माएँ निम्नतर स्तर पर हों, तब हो सकता है कि उनके आपसी संबंध शायद अच्छे न हों। जुड़वां आत्माओं का विकास अलग-अलग चरणों पर हो रहा हो, यह संभव है।

प्रायः ऐसा होता है कि एक आत्मा पृथ्वी पर अवतरित होती है और दूसरी आत्मा जीवात्मा जगत से पृथ्वी पर उस व्यक्ति का मार्गदर्शन करती है। कोई व्यक्ति आपकी जुड़वां आत्मा है, इसे जानने का एक मात्र उपाय है 'स्वचलित लेखन', और इसका प्रकटन केवल बहुत ही असाधारण परिस्थितियों में -जब इसकी जरूरत होती है, तभी होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी जुड़वां आत्मा से परिचित हैं, और वह जुड़वां आत्मा आध्यात्मिक रूप से पतनशील है, तो आपसे कहा जा सकता है कि आप युक्तिपूर्वक उस आत्मा की मदद करें।

प्रत्येक आत्मा को दो भागों में विभाजित करने के पीछे ईश्वर का मुख्य उद्देश्य है मनुष्य को सह-अस्तित्व की शिक्षा देना। आप पर एक दूसरे की प्रगति की जिम्मेदारी होती है। संयुक्त होकर जुड़वां आत्माएं बड़ी उपलब्धियां प्राप्त कर सकती हैं, लेकिन यदि उनमें से एक लड़खड़ा जाए तो दोनों को आध्यात्मिक रूप से नुकसान होता है। इसका कारण यह है कि जब आप सातवें लोक के नौवें स्तर में पहुँचते हैं, तो आप अपनी जुड़वां आत्मा के साथ संयुक्त होकर एक संपूर्ण आत्मा बन जाते हैं। केवल इसके बाद ही आपको अगले विश्व (चौथे विश्व) में जाने की अनुमति मिलती है। यदि आप सातवें लोक के नौवें स्तर में हैं और आपकी जुड़वां आत्मा आध्यात्मिक रूप से निम्नतर है, तो आपको अपनी जुड़वां आत्मा के सातवें लोक के नौवें स्तर में पहुंचने की प्रतीक्षा करनी होती है। चाहे इसमें कई जन्मों का समय क्यों न लगे। यह कठोर और अनुचित लग सकता है, लेकिन वास्तव में इसका मकसद आपकी आध्यात्मिक उन्नति की रक्षा करना है। इस वजह से चाहे जो भी हो जाए, कोई न कोई ऐसा अवश्य होता है जो आपके लिए प्रार्थना करता है और आपकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए अपनी ओर से सर्वोत्तम प्रयास करता है। **इससे आपको जिम्मेदारी, सह-अस्तित्व और निःस्वार्थता की शिक्षा मिलती है।**

क्या जीवात्मा जगत में आप दोनों के विस्पी और रतू के नाम से ही जाना जाता हैं? या फिर आपके जीवात्मिक नाम होते हैं?

दो भागों में विभाजित होने से पहले प्रत्येक आत्मा को एक विशिष्ट नाम दिया जाता है। इसे **आत्मिक नाम** कहते हैं। जुड़वां आत्माओं का समान आत्मिक नाम होता है- ठीक जिस तरह आत्मा दो भागों में विभाजित होती है, उसी तरह उनका नाम भी विभाजित होता है, जो आत्मा का अस्तित्व कायम रहने तक एक ही रहता है। जीवात्मा जगत में आपको उसी नाम से जाना जाता है जो नाम पृथ्वी पर आपको दिया गया होता है। आपके कर्म आकाशिक रिकॉर्ड में आपके आत्मिक नाम के नीचे दर्ज होते हैं। पृथ्वी पर कभी भी आप अपना आत्मिक नाम नहीं जान पाएँगे। आपको अपने आत्मिक नाम का ज्ञान जीवात्मा जगत में वापस लौटने पर ही होता है।

आकाशिक रिकॉर्ड क्या हैं?

आकाशिक रिकॉर्ड को **स्मृति कक्ष** अथवा **दैनिकी कक्ष** भी कहते हैं। प्रत्येक लोक का अपना कक्ष होता है, जहां पृथ्वी पर प्रत्येक आत्मा द्वारा जीये गए जीवन की एक दैनिकी होती है। अच्छा या बुरा प्रत्येक कर्म आपके आत्मिक नाम के नीचे दर्ज रहता है। रिकॉर्ड उसी लोक में पाया जाता है जिससे वह आत्मा संबंधित होती है। आत्मा की उन्नति या पतन में और उसके उच्चतर या निम्नतर लोक में जाने पर रिकॉर्ड साथ चलते हैं। आकाशिक रिकॉर्ड में आपके द्वारा पृथ्वी पर बिताई गई ज़िंदगियों की सभी स्मृतियां दर्ज रहती हैं। जब पृथ्वी पर आत्माएं गहरी, स्वप्नहीन निद्रा में लीन रहती हैं, तब उनके अवचेतन मन आकाशिक रिकॉर्ड में स्मृतियां दर्ज करते हैं। जब पृथ्वी की आत्मा का अवचेतन मन सुप्त हो जाता है तब उस मनुष्य का जीवात्मिक मार्गदर्शक आकाशिक रिकॉर्ड में स्मृतियाँ दर्ज करना जारी रखता है। कोई भी आत्मा किसी दूसरे के रिकॉर्ड को नहीं पढ़ सकती, सिवाय उस स्थिति में जब इससे आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति को बल मिले और जब उस लोक की उच्च भली आत्मा द्वारा अनुमति प्राप्त हो। जब एक आत्मा अगले विश्व की ओर प्रस्थान करती है, उसके साथ उसका रिकॉर्ड भी जाता है।

जीवात्माएँ किस प्रकार के कार्य करती हैं?

सबसे पहले हम आपको यह बता दें कि जीवात्माओं की कोई जरूरतें या आकांक्षाएँ नहीं होती। हमें भूख, प्यास अथवा थकान का अनुभव नहीं होता, और हमारा एक मात्र लक्ष्य होता है सेवा करना। अतः हमें पोषण की आवश्यकता अवश्य होती है, ठीक उसी तरह जिस तरह पृथ्वी पर यह शरीर के लिए आवश्यक होती है। आत्मा के लिए सूरज की रोशनी शक्तिवर्धक पोषण होती है। कई तरह के सुन्दर फल भी होते हैं जिनके स्वाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आत्माओं को भोजन की जरूरत नहीं होती, लेकिन फलों के अमृत-रस हमें सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रखते हैं। हम निरंतर आनंद की अवस्था में रहते हैं। हम पूर्ण आध्यात्मिक स्वास्थ्य का उपभोग करते हैं और इस प्रकार अपने आत्मिक शरीर को प्रार्थना एवं जल द्वारा शुद्ध करते हैं। जल में आरोग्यकारी गुण होता है और जब कभी हमें ऊर्जा की जरूरत होती है हम झील में एक

डुबकी मार लेते हैं और जल द्वारा हमारी तरंगों के पूरी तरह शुद्ध हो जाने पर हम सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर, फिर से तरोताजा होकर निकलते हैं। जब हम जल से बाहर निकलते हैं तब हम पूरी तरह सूखे और ऊर्जा से भरे होते हैं।

जहां तक हमारे कार्य का सवाल है, हम अपनी प्रतिभाओं के बारे में अपने लोक की उच्च भली आत्मा से चर्चा करते हैं और हमें सौंपे गए क्षेत्र में कार्य चुनते हैं। जीवात्माओं द्वारा किए जाने वाले कामों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

१. पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के साथ आध्यात्मिक ज्ञान बांटना और उन्हें ईश्वर के नियमों को समझने में मदद करना।

२. स्वचलित लेखन जैसी प्रक्रियाओं के जरिए पृथ्वी की आत्माओं के साथ संपर्क करना।

३. जीवात्मिक मार्गदर्शक के रूप में काम करना।

४. जीवात्मा जगत में हाल ही में आई आत्माएं यदि सदमे में हों, अथवा भ्रांत हों, तो उनके साथ कार्य कर उन्हें उनकी वास्तविक स्थिति से परिचित करना।

५. पृथ्वी पर आत्माओं का मार्गदर्शन करना और उनके अवचेतन मन के जरिए उन पर महत्वपूर्ण संदेशों का 'प्रभाव' डालना। उदाहरण के लिए, किसी जीवात्मा द्वारा एक वैज्ञानिक को, उसके अवचेतन मन के जरिए उत्तर भेजकर किसी रोग का इलाज खोजने में मदद करना।

६. मदद के लिए पृथ्वी से आने वाली सच्ची पुकारों का उत्तर देना। जीवात्माएं इस काम में खासतौर से प्रशिक्षित होती हैं और जीवात्मा जगत में हाल में आई हुई आत्माओं को इस मामले में अधिक अनुभवी जीवात्माओं द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

७. विश्राम कक्ष में काम करना और आकाशिक रिकॉर्ड संभालना।

८. आत्महत्या के करीब पहुंचे लोगों के लिए प्रार्थना करना और उन्हें सही राह दिखाना।

९. पृथ्वी पर रहने वाले प्रियजनों की रक्षा के उपाय करना।

१०. पृथ्वी पर रहने वाले प्रियजनों के लिए प्रार्थना करना। प्रार्थना के लिए जरूरी है कि हमारे मन में सच्चा प्रेम, उत्कण्ठा, एकाग्रता हो और हमारी ओर से सच्चा प्रयत्न किया जाए।

११. निम्नतर लोकों में रहने वाली नकारात्मक आत्माओं के संचालन में प्रशिक्षित होना।

१२. शिक्षा कक्ष से अधिक ज्ञान प्राप्त करना। अपने विस्तृत अवचेतन मन के साथ जीवात्माएँ भरपूर जानकारियाँ सनजो पाती हैं, और वे उनपर अमल भी करती हैं।

१३. उन आत्माओं का मार्गदर्शन करना जो पुनर्जन्म लेना चाहती हैं।

१४. अपनी राह से भटकी हुए पृथ्वी की आत्माओं के लिए चमत्कार करना। ऐसे छोटे-छोटे चमत्कार भटकी हुई आत्माओं में फिर से आस्था जगाने में मदद करते हैं।

१५. पृथ्वी पर मृत्यु के निकट पहुंची आत्मा को शांती पहुंचाने के लिए आना और प्रार्थनाओं एवं सकारात्मक विचारों द्वारा उन्हें यथासंभव आराम के साथ जीवात्मा जगत में स्थानांतरित करना।

१६. जीवात्मिक बच्चों की देखभाल करना।

१७. आरोग्य प्रदान करने के नए तरीकों को सीखना और उनकी खोज करना।

१८. कला, नृत्य, ओपेरा, संगीत, गीत, खेलकूद, वास्तुकला, विज्ञान इत्यादि के सृजन में भाग लेना।

१९. पृथ्वी पर प्राणी के साम्राज्य के साथ कार्य करना और प्राणियों की जीवात्मा जगत के कार्यों में मदद करना।

२०. जीवात्मा जगत के बगीचों की देखभाल में मदद करना।

२१. पृथ्वी और अन्य ग्रहों के वास्तविक इतिहास को जानकर इस ज्ञान का चिंतन करना।

जीवात्माएं चाहे कोई भी कार्य चुनें, लेकिन हमारा लक्ष्य एक ही होता है: सेवा। पृथ्वी पर, लोग अपने रोज़गार को अपना काम समझते हैं, लेकिन हम जो कुछ भी करते हैं उसे सच्चे मन से, प्यार से करते हैं और हम इसे सृष्टिकर्ता को धन्यवाद देने का एक अवसर मानते हैं। इससे हमें सच्ची खुशी और संतुष्टि मिलती है। हमारे बीच कोई अहंकार, दूसरों से आगे निकलने की भावना, ईर्ष्या, विवाद, आलोचना नहीं होते और हममें कोई श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं होता। हम एक दूसरे का सम्मान करते हैं और मानवता की भलाई के लिए संगठित रूप से काम करते हैं।

पुनर्जन्म क्यों जरूरी है? जीवात्मा जगत में ही हम आध्यात्मिक उन्नति क्यों नहीं करते?

समय-समय पर आप पृथ्वी पर अपनी आत्मा के विकास के लिए आते हैं। आध्यात्मिक रूप से उन्नत होने के लिए एक ही जीवात्मा पृथ्वी पर सैकड़ों-हजारों बार जन्म लेती है। यह आत्मा पुरुष अथवा स्त्री रूप में हो सकती है, जो उसकी पसंद और इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी उन्नति के लिए क्या जरूरी है। वह पृथ्वी पर विभिन्न देशों, भिन्न धर्मों में जन्म ले सकती है। **पुनर्जन्म** का अर्थ है एक ही जीवात्मा का पृथ्वी पर कई जन्मों तक शरीर धारण करते रहना। ऐसा नहीं है कि आप पृथ्वी पर पहली बार आए हैं; आपका यह जन्म आपके कई पुनर्जन्मों में से एक है।

ज्यादातर किस्सों में, जीवात्मा जगत के पांचवें, छठे और सातवें लोकों की आत्माओं की उन्नति

धीमी होती है, क्योंकि वहाँ स्पन्दन अच्छे होते हैं। इसलिए पृथ्वी के विपरीत, जहाँ बुराइयों का प्रभुत्व है, अच्छे कर्म करना मुश्किल नहीं होता। इसलिए पृथ्वी पर एक भली आत्मा छोटे से छोटा सत्कर्म करके भी तेजी से उन्नति करती है। साथ ही पृथ्वी पर नकारात्मक स्पन्दनों और भौतिक मन की सीमाओं के कारण आत्मा के निर्णय ग़लत हो सकते हैं और इस कारण उसकी परीक्षा उतनी कठिन होती है। पृथ्वी पर, अपने आध्यात्मिक विकास के लिए आपको अपने अवचेतन मन का भौतिक मन की तुलना में काफी ज्यादा उपयोग करना होता है, लेकिन एक भली आत्मा द्वारा पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने में यह जोख़िम रहता है कि आध्यात्मिक दृष्टि से उसका अधःपतन हो सकता है। यदि वह जीवात्मा जगत में रहे तो उसका विकास बहुत ही धीमी गति से होगा, लेकिन उसका अधःपतन कभी नहीं होगा। जीवात्मा जगत में रहकर धीमी किंतु निरंतर प्रगति करना, अथवा पृथ्वी पर आकर जोख़िम के साथ तीव्र गति से विकास करना, यह प्रत्येक आत्मा की अपनी-अपनी स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर करता है। पुनर्जन्म का चक्र केवल तब समाप्त होता है जब मनुष्य अपने सांसारिक जीवनकार्य पूरा कर लेता है, अपने कर्मों के फल भोग लेता है और सातवें लोक के नौवें स्तर में पहुंचता है। इस प्रकार आप सही मायने में भौतिक अनुभवों से परे पहुँचते है, अर्थात् तब आप पृथ्वी पर रहकर भी एक जीवात्मा की तरह चिंतन करना और रहना सीख लेते हैं। हम पूर्णता की बात नहीं कर रहे। कोई भी मनुष्य अपने आप में पूर्ण नंही होता। हम केवल इतना कह रहे हैं कि मनुष्य को अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए, अपनी जीवात्मा को इस तरह प्रशिक्षित करना चाहिए कि वह अगले विश्व की ओर जाने के लिए तैयार हो। पृथ्वी पर आप इसे पूरी तरह नहीं समझ पाएँगे; अपनी स्थिति के बारे में आप जीवात्मा जगत में जाकर ही जान पाएंगे।

पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने के लिए सभी आत्माओं को **पुनर्जन्म की प्रक्रिया** कही जाने वाली एक विशिष्ट प्रक्रिया का अनुसरण करना पड़ता है।

१. पुनर्जन्म के लिए आपको अपने लोक की उच्च भली आत्मा से अनुरोध करना पड़ता है।

२. पुनर्जन्म की इच्छा के कारण भी बताने पड़ते हैं। मुख्य कारण अकसर कर्मों का हिसाब चुकाना, अपना जीवनकार्य पूरा करना और आध्यात्मिक उन्नति करना होते हैं। यदि आत्मा के कर्म बहुत अधिक हों तो जीवात्मा जगत में उसके फल से मुक्त होना संभव नहीं होता, इसलिए उसे पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेना पड़ता है। कभी-कभी बिना अधिक कर्मों वाली आत्मा भी इस कारण धरती पर पुनर्जन्म चाहती है कि वहां उसका कोई प्रियजन राह भटक गया है, जिसकी मदद के लिए उसे पृथ्वी पर जाने की इच्छा होती है।

३. आपको एक मां का चयन करना होता है। जो आत्मा अच्छे आध्यात्मिक स्तर पर नहीं होती, उसका जन्म ऐसी मां के गर्भ से हो सकता है जो आध्यात्मिक रूप से उन्नत हो, ताकि उस आत्मा का विकास हो सके। कभी-कभी, एक भली आत्मा किसी नकारात्मक स्वभाव वाली मां से जन्म लेती है ताकि वह अपनी मां को सुधार सके। इसके जरिए आत्मा कर्मों का फल भी भोग सकती है और परीक्षा और प्रशिक्षण की प्रक्रिया से भी गुजरती है।

बहरहाल, इसमें बहुत जोख़िम होने के कारण कई बार आत्मा का आध्यात्मिक पतन हो जाता है। कभी-कभी पिता के निकट रहने के लिए आत्मा मां का चयन करती है। इस तरह, दरअसल वह आत्मा पिता का ही चयन करती है।

४. आपको यह स्पष्ट करना पड़ता है कि आप किस प्रकार का प्रशिक्षण और परीक्षण ग्रहण करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, आप उन लोगों और अनुभवों का चयन करते हैं जो आपको अपना जीवनकार्य, जो पृथ्वी पर आपकी प्रेरणा है, उसे सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आवश्यक सकारात्मक गुणों के विकास में मदद करते हैं। यदि आप अहंकार के लिए अपनी परीक्षा चाहते हैं, तो आपको ऐसे सबक दिए जाएंगे जो आपके अहंकार को लगातार तोड़ते रहेंगे और आपको विनम्रता की शिक्षा देंगे।

५. आपको एक प्रवेशक का चयन करना पड़ता है। यदि पृथ्वी पर की स्थिति इतनी मुश्किल हो जाती है, कि आप उसे संभाल नहीं पाते। लेकिन यदि आप सही रास्ते पर हैं तो परिस्थिति के अनुसार, जीवात्मा जगत से प्रवेशक कही जाने वाली एक भली आत्मा आकर उस अवधि के लिए आपके शरीर में प्रवेश कर लेगी। यह साधारण बात नहीं होती और केवल आपात स्थितियों में ही ऐसा होता है, जब परिस्थितियां पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा की क्षमता से बाहर हों। अर्थात् जब यह आपकी परीक्षा, प्रशिक्षण अथवा कर्म का हिस्सा नहीं होता। पृथ्वी पर रहने वाली आत्मा के संज्ञान के बिना उसका अवचेतन मन मदद के लिए पुकारता है।

६. आप अपने जन्म और मृत्यु की तारीख तय करते हैं। आपकी मृत्यु की तारीख आपकी अंतिम तारीख़ भी कहलाती है।

प्रथम लोक से लेकर सातवें लोक तक की सभी आत्माओं को पुनर्जन्म की इस प्रक्रिया से होकर गुजरने का अवसर मिलता है। परंतु प्रथम लोक की आत्माओं के पास निम्नतर लोकों में ठहरने, अथवा अपने पूर्व जन्म के पापों और प्रथम लोक के अपने जीवन की संपूर्ण स्मृतियों के साथ बोझ ढोने वाले पशु के रूप में पृथ्वी पर वापस आने का विकल्प होता है। प्रथम लोक की कुछ आत्माएं यह विकल्प चुनती है, क्योंकि वे अपने कर्मों का हिसाब तुरंत चुकता करना चाहती हैं। उन्हें प्रथम लोक और अपने पिछले जन्म की स्मृतियां संजोए रखने की अनुमति मिलती है ताकि वे यह समझ सकें कि बोझ ढोने वाले पशुओं के रूप में उनका जन्म क्यों हुआ और क्यों उन्हें दु:ख झेलना पड़ रहा है। यह स्मृति उन्हें इस कठिन पुनर्जन्म में पृथ्वी पर उनके द्वारा भोगे जा रहे कष्टों को सहने की ताकत देती है। उनके कर्म पूरी तरह मिट नहीं जाते। यदि उनके कर्म बहुत अधिक गंभीर हैं तो उनका फल भोगने के लिए उन आत्माओं को सैकड़ों पुनर्जन्म लग सकते हैं।

यह पूरी प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण मालूम पड़ती है, लेकिन ये सारे विकल्प आपको खुद ही नहीं चुनने होते। आपको अपने लोक की उच्च भली आत्मा और उसी लोक की तीन ज्ञानी आत्माओं के साथ बैठकर उन्हें बताना होता है कि आप क्या करना चाहते हैं। आपके द्वारा चुने गए विकल्पों में वे आपका मार्गदर्शन करेंगे। उदाहरण के लिए यदि आप आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठने और

अपने कर्मों का हिसाब जल्दी चुकता करना चाहते हैं, तो आप अपने लिए बहुत ही कठिन रास्ता चुन सकते हैं- एक ऐसा रास्ता जिसपर हो सकता है आपके लिए चलना संभव न हो। उच्च भली आत्मा और तीनों ज्ञानी आत्माएं आपको ऐसा करने से मना करेंगी और आपको दूसरे विकल्प सुझाएंगी। बहरहाल, यदि आप फिर भी पुनर्जन्म लेना चाहते हैं तो यह आपकी अपनी स्वतंत्र इच्छा होगी और आपको इसके लिए रोका नहीं जाएगा। यहां तक कि पुनर्जन्म के लिए आपका नाम लिखे जाने के बाद भी आपके पास पृथ्वी पर जन्म नहीं लेने का विकल्प उपलब्ध होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आपने एक मां का चयन किया है, लेकिन उसका आध्यात्मिक रूप से पतन होता है और अब आप उसकी संतान बनना नहीं चाहते हैं तो आप अपना नाम वापस ले सकते हैं। हो सकता है कि आपने इस मां को इसलिए चुना क्योंकि वह आध्यात्मिक रूप से उन्नत थी और आप चाहते थे कि आपको ज्ञान देने वाला कोई व्यक्ति मिले जो आपको सही राह पर ले जाए, लेकिन यदि मां ग़लत रास्ते पर चली गई हो और भ्रांत हो जाए, तो आपके लिए उसके बच्चे के रूप में जन्म लेने का कोई मतलब नहीं रह जाता।

पृथ्वी पर रहने वाले बच्चे किस प्रकार जीवात्मा जगत के संपर्क में रहते हैं?

मां के गर्भ में स्थित शिशु का जीवात्मा जगत से पूरा संपर्क होता है। इस दौरान, यदि बच्चे को यह महसूस होता है कि परिस्थितियों के कारण उसका आध्यात्मिक विकास बाधित होगा तो वह जीवात्मा जगत में वापस लौट सकता है और उसके शरीर को कोई दूसरी आत्मा अपना सकती है। केवल इस कारण कि बच्चे को अब मां की जरूरत नहीं है, इसका अर्थ यह नहीं कि मां के गर्भ से मृत शिशु का जन्म होगा। यदि वह उसके कर्म का हिस्सा नहीं है तो शिशु के शरीर में दूसरी आत्मा द्वारा प्रवेश कर लिया जाएगा। यह जान लेना महत्वपूर्ण है कि गर्भ में पलने वाले शिशु की ग्रहणशीलता तीव्र होती है, क्योंकि उसका अवचेतन मन जागृत रहता है। वह शिशु अब भी जीवात्मा जगत के संपर्क में होता है और अपने माता-पिता के क्रियाकलापों का विश्लेषण करता है। सकारात्मक और संतुष्ट रहिए और यह ध्यान रखिए कि हर प्रकार की नकारात्मक चीजों से शिशु बचा रहे। उदाहरण के लिए, जब मां दु:खी होती है, शिशु द्वारा दुःख की नकारात्मक ऊर्जा ग्रहण की जाती है। शिशु मां के विचारों और भावनाओं के प्रति बहुत ही संवेदनशील होता है। यदि मां की प्रवृत्ति लगातार नकारात्मक बनी रहे और वह ग़लत रास्ते पर हो, तो शिशु की भली आत्मा जीवात्मा जगत में वापस लौट जाएगी और निम्नतर आध्यात्मिक स्तर की आत्मा उसका स्थान लेगी। यदि शिशु के शरीर के लिए कोई आत्मा नहीं आती तो बच्चा मरा हुआ पैदा होगा। जन्म लेने के बाद, बोलना आरंभ होने तक शिशु जीवात्मा जगत के संपर्क में रहता है। इसके बाद शिशु का अवचेतन मन उसके भौतिक मन को जीवात्मा जगत की स्मृतियां रखने की अनुमति नहीं देता।

शिशु के बोलना शुरू करने के बाद क्या उसके जीवात्मा जगत से सारे संपर्क टूट जाते हैं?

नहीं, बिल्कुल नहीं। अपनी गहरी स्वप्नहीन निद्रा में आप ऐसे स्थान की यात्रा पर जाते हैं जो पृथ्वी और जीवात्मा जगत के बीच स्थित होती है। आपकी आत्मा आपके शरीर से उठकर दूसरी जीवात्माओं से मिलने ऊपर की ओर बढ़ती है। आपकी नींद में, जीवात्मा जगत में रहने वाले आपके प्रियजन आपसे आपके अवचेतन मन के जरिए बात करते हैं और आपका मार्गदर्शन करते हैं। वे लगातार आपके संपर्क में रहते हैं। जब आपकी आत्मा उनसे मिलने ऊपर उठती है, उस वक्त भी वह **रूपहली डोरी** कही जाने वाली प्रकाश की एक किरण द्वारा भौतिक शरीर से जुड़ी रहती है। आपकी रूपहली डोरी, आपकी जीवात्मा को आपके भौतिक शरीर से जोड़े रखती है। जब आपकी मृत्यु होती है तब यह संपर्क टूट जाता है। आप अपने प्रियजनों से कुछ मिनटों अथवा कभी-कभी कुछ घंटो के लिए मिल सकते हैं लेकिन यह आपकी नींद पर निर्भर करता है, जो गहरी और स्वप्नहीन होनी चाहिए। मिलने वालों के बीच प्रेम पारस्परिक होना चाहिए, एकतरफा नहीं। विश्वास रखिए, यदि जीवात्मा जगत में आपके प्रियजन हैं तो आप उनसे नियमित रूप से अवश्य मिलते हैं। ये प्रियजन केवल इसी जन्म में बिछड़ी हुई आत्माएं नहीं हैं, बल्कि इनमें वे लोग भी हो सकते हैं जो पिछले जन्म में आपके बहुत करीब रहे हों और जीवात्मा जगत से आपकी सहायता करने की कोशिश कर रहे हों।

रूपहली डोरी अनेक प्रकाश किरणों से मिलकर बनी होती है जो एकसाथ मिलकर एक लंबी किरण बनाती हैं। रूपहली डोरी शरीर पर, सिर के ऊपरी भाग से जुड़ी होती है, ताकि आत्मा सिर के कोमल हिस्से से होकर अन्दर या बाहर आ जा सके (बच्चों में, हमेशा सिर पर एक मुलायम स्थान होता है जहां रूपहली डोरी जुड़ी होती है।) नींद में अक्सर ऐसा होता है कि आप एक झटके के साथ अचानक जगते हैं, आपके सीने में धक् सा होता है और आपको महसूस होता है कि आप गिर रहे थे और अभी-अभी ज़मीन पर उतरे हैं। यह तब होता है जब आत्मा अपने प्रियजनों को प्राकृतिक तौर पर मिल कर आने के बाद अपने भौतिक शरीर में लौटती है। रूपहली डोरी टूट जाने पर व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। जीवात्मा जगत में आपके फ़रिश्ते आपकी रूपहली डोरी को भरपूर तेज सफेद रोशनी के द्वारा सुरक्षित रखते हैं, जिससे एक सुरक्षाकारी प्रभामंडल का निर्माण होता है, ताकि कोई नकारात्मक तत्व इस तक न पहुंच पाए। जब आप ध्यान की अस्वाभाविक विधियों और सूक्ष्मशरीरी अवकाशी यात्रा (अर्थात् जब आप अपने शरीर को अपनी मर्जी से छोड़ते हैं) का अनुसरण करते हैं, तो आप अपनी ज़िंदगी को जोख़िम में डालते हैं क्योंकि आपकी रूपहली डोरी खतरे में पड़ती है और नकारात्मक आत्माएं रूपहली डोरी को काटकर आपको अपने शरीर में दुबारा प्रवेश करने से रोक सकती हैं। अवकाशी यात्रा तब होती है जब मनुष्य अप्राकृतिक रूप से और मानसिक सजगता के साथ शरीर छोड़ता है। इसमें एक जोख़िम होता है क्योंकि यदि रूपहली डोरी टूट जाए तो समय से पहले और पृथ्वी पर अपना जीवनकार्य पूरा करने से पहले ही मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

क्या पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के जीवित रहने का समय निर्धारित होता है?

जिस तरह आप अपने जन्म की तारीख़ चुनते हैं, ठीक उसी तरह आप अपनी मृत्यु की तारीख़

का भी चयन करते हैं जिसे **अंतिम तारीख़** भी कहते हैं। अतः, प्रत्येक मनुष्य की तीन अंतिम तारीख़ें होती हैं जिन्हें प्रस्थान बिन्दु माना जा सकता है। प्रथम दो अंतिम तारीख़ों को ऐसी किसी बीमारी अथवा दुर्घटना से पार किया जा सकता है जिससे आप सुरक्षित बच गए हों। अतः, यदि आपका अवचेतन मन यह महसूस करता है कि आप ग़लत रास्ते पर हैं और वापस सही रास्ते पर लौटने की संभावना बहुत ही कम है, तो आप प्रथम दो तारीख़ों में से किसी एक तारीख़ को धरती छोड़ देने का फैसला कर लेते हैं। तीसरी तारीख़ निर्णायक होती है। लेकिन अंतिम तारीख़ से ठीक पहले मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य से "अनुग्रह काल" की याचना कर सकता है। ऐसा उस व्यक्ति के चेतन ज्ञान के बिना होता है। अवचेतन मन किसी दोस्त, संबंधी अथवा अजनबी के अवचेतन मन से समझौता करता है और पृथ्वी पर उसका बचा हुआ समय अपने हिस्से कर लेता है। इसके लिए, आत्मा को अपने लोक की उच्च भली आत्मा से अनुमति लेनी पड़ती है। यह बहुत ही असाधारण स्थिति है और ऐसा केवल विशिष्ट आध्यात्मिक जीवन कार्यो के लिए ही किया जाता है। बहुत साल पहले ऐसा हमारे ही परिवार में हुआ था, जब हम जीवित थे।

एक बार, जब पापा का ऑपरेशन होना था, वह सबसे कहने लगे थे कि उनका अंतिम समय आ गया है। वह कहते थे, "यह आखिरी बार है कि मैं आप सबसे मिल रहा हूं।" यह वाकई उनकी तीसरी अंतिम तारीख़ थी। ऑपरेशन से एक दिन पहले उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया और शाम को माँ की चचेरी बहनें गूला और मनी उनसे मिलने आईं। उन्होंने बातें करते, हंसते-हंसाते समय बिताया और फिर अपने घर लौट गईं। अगले दिन जब पापा ऑपरेशन टेबल पर थे हमें फ़ोन पर जानकारी मिली कि गूला की अचानक मौत हो गई। उस समय तो हम ऐसा कभी सोच भी नहीं सके, लेकिन अब, जब हम जीवात्मा जगत में हैं, हमें पता चला कि जीने के लिए गूला के पास कुछ खास वजह नहीं थी, जबकि पापा को हमारे परिवार की खातिर जीना था और अपना आध्यात्मिक जीवनकार्य पूरा करना था। सभी आत्माओं की तरह, गूला के पास भी अपना आध्यात्मिक जीवनकार्य था, लेकिन उन्होंने अपनी आत्मा को इस तरह प्रशिक्षित नहीं किया था कि वह पृथ्वी पर इस जीवनकार्य को पूरा कर सके। इसलिए उनके अवचेतन मन ने महसूस किया कि उनके लिए जीवात्मा जगत में लौट जाना बेहतर है जहां रहकर वह अपनी आत्मा को और ज्यादा प्रशिक्षित करें और तब धरती पर दुबारा जन्म लें। उन्होंने महसूस किया कि जीवात्मा जगत में रहकर वह बेहतर रूप से कार्य कर पाएंगी। उनके और पापा के अवचेतन मन के बीच समझौता हुआ और पापा के अवचेतन मन ने गूला के पृथ्वी पर बाकी बचे दिन मांग लिए। आपके लिए यह अजीब बात होगी, लेकिन यह सच है। अगर आप इसके लिए चेतन रूप से कोशिश करेंगे तो ऐसा कभी संभव नहीं होगा, इसलिए किसी दूसरे व्यक्ति की ज़िंदगी के दिन उधार लेने की कोशिश न करें।

इस प्रकार के उधार समय की व्यवस्था पूरी तरह आपके जीवित रहने की सच्ची ज़रूरत पर निर्भर करती है। आपको अपना जीवन कार्य पूरा करने, अपने प्रियजनों की रक्षा करने अथवा उच्चतर लोक में जाने के लिए खुदको काफ़ी ज्यादा सुधारने की आवश्यकता हो सकती है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि जो व्यक्ति अपनी ज़िंदगी के दिन देने वाला हो, उसने अपना जीवन कार्य जरूर पूरा कर लिया हो और जीने के लिए उसके पास कुछ न बचा हो अथवा उसने अपनी

जीवात्मा को अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य को पूरा करने लायक प्रशिक्षित न किया हो। इस प्रकार के समझौते के लिए जीवात्मा जगत में खास अनुमति प्राप्त करनी पड़ती है।

बच्चों की मृत्यु हो जाने पर उनका क्या होता है?

पृथ्वी पर जिन बच्चों की मृत्यु हो जाती है वे वापस बच्चे के रूप में ही जीवात्मा जगत में आते हैं और वहीं वे बड़े होते हैं। उनके वयस्क जीवात्मा के रूप में विकसित होने तक **जीवात्मिक मांओं** के द्वारा उनकी देखभाल की जाती है। इसमें बहुत कम वक़्त लगता है। पूर्ण विकसित वयस्क हो जाने पर वे खुदबखुद अपने-अपने लोकों में चले जाते हैं। कुछ यूवाँ जो पृथ्वी पर मृत्यु पाकर जीवात्मा जगत में आते हैं, वे इस सत्य को स्वीकार नहीं करते कि वे मर चुके हैं। रतू इन्हीं आत्माओं के बीच काम करता है। इसी तरह, बच्चों को जीवात्मिक मांओं की जरूरत होती है जो उन्हें इस नए माहौल के बारे में बता सकें। जल्द ही, ये आत्माएं बड़ी हो जाती हैं और अपना स्वाभाविक जीवात्मिक रूप धारण कर लेती हैं।

मरने के बाद जानवरों का क्या होता है?

जानवरों के लिए अपना अलग जीवात्मा जगत होता है। ठीक जिस तरह मनुष्य की आत्माएं विभिन्न लोकों में जाती हैं उसी तरह जानवरों की आत्माएं भी विभिन्न लोकों में जाती हैं, लेकिन उनके केवल तीन लोक होते है: निम्न, मध्यम और उच्चतम। कुछ जानवरों को, यदि वे पृथ्वी पर पालतू रूप में रहे हों, तो उन्हें मनुष्य के जीवात्मा जगत में रहने की अनुमति मिलती है, लेकिन ऐसा बहुत असाधारण स्थितियों में होता है। जानवर और मनुष्य दोनों को ही उच्च स्तरों पर होना चाहिए और उनके बीच बहुत मजबूत लगाव होना चाहिए। दोनों के बीच विशुद्ध प्रेम होना चाहिए।

क्या जीवात्माएं हमेशा खुश रहती हैं?

हम संतुष्टि की अवस्था में रहते हैं, लेकिन जब हम मनुष्य को नकारात्मक राह पर चलते हुए देखते हैं तो हमें दुःख होता है। जीवात्माएं भी दुःख महसूस करती हैं, लेकिन केवल तभी जब लोग आध्यात्मिक रूप से ग़लत राह पर चलते हैं, अथवा जब पृथ्वी पर हमारे प्रियजन न्याय के लिए तड़पते हैं और नकारात्मक आत्माओं के हाथों दुःख झेलते हैं। अन्यथा, हम खुश और सकारात्मक रहते हैं। साथ ही, हमें सच्चे रूप से यह पता होता है कि ईश्वर का अस्तित्व है और हम लगातार उन तक पहँचने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। इससे हमें अपार खुशी मिलती है।

क्या सभी जीवात्माओं ने ईश्वर का साक्षात्कार किया है?

नहीं, उच्चतर लोकों की कुछ ही जीवात्माओं की ईश्वर से भेंट हुई है, लेकिन, क्योंकि हम सभी जीवात्मा जगत में रहते हैं, और हम उनकी सृष्टि के सौंदर्य और ज्ञान का दर्शन कर सकते हैं, इसलिए हम यह जानते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व है। हमारे अवचेतन मन यह जानते हैं की ईश्वर का अस्तित्व है, और यह भी कि वे हमारी देखभाल करते हैं।

आत्मा और अवचेतन मन

"पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेना अपने आप में एक जोख़िम है। इसलिए ईश्वर ने आपको दुष्टता से बचने के लिए दोहरी सुरक्षा दे रखी है: आपका अवचेतन मन और आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक।"

"कभी भी अपने सहजबोध को दबाएं नहीं। लोग आपको पागल या सनकी कहेंगे, इस बात से कभी डरिए नहीं। सहजबोध ईश्वर का दिया एक वरदान है।"

"अपने भौतिक मन का मालिक बनिए-गुलाम नहीं।"

"आध्यात्मिक विकास का मूल कारण हमारे अंदर, अर्थात् हमारी अंतरात्मा से उपजी हुई सच्ची इच्छा होनी चाहिए। इसलिए दुनिया को दिखाने के लिए खुद को न बदलें, बल्कि इसलिए बदलें कि आपका बदलाव ही आपके लिए आपकी दुनिया है।"

क्या अवचेतन मन और आत्मा एक ही हैं?

अवचेतन मन के बारे में पृथ्वी पर बहुत सारे वर्णन और ग़लतफ़हमियां हैं, इसलिए हम चाहते हैं कि आप सब अपनी ग़लत धारणाओं से छुटकारा पाएं। अवचेतन मन को अपनी **अंतरात्मा** मानें। इसे आप अपना उच्चतर मन, उच्च स्व या अंतर्वाणी भी कह सकते हैं (आपका अवचेतन मन आपको जो महसूस कराता है उसे 'सहजबोध' कहते हैं।)

आप एक जीवात्मा हैं जो पृथ्वी पर भौतिक शरीर के अंदर निवास करती है। ईश्वर द्वारा आपकी रचना पहले एक जीवात्मा के रूप में की गई, न कि मनुष्य रूप में। आपको एक आत्मा के रूप में रचा गया, और उस आत्मा के पास एक अवचेतन मन होता है। आत्मा आपका शाश्वत जीवात्मिक शरीर है। जिस तरह पृथ्वी पर आपका एक भौतिक शरीर होता है उसी तरह आपका जीवात्मिक शरीर आपकी आत्मा कहलाती है और यह अमर होती है। अवचेतन मन आपका वास्तविक, आध्यात्मिक मन है। जिस तरह भौतिक मन शरीर का मार्गदर्शन करता है उसी तरह अवचेतन मन आत्मा का मार्गदर्शन करता है। आत्मा और अवचेतन मन हमेशा के लिए एक साथ जुड़े होते हैं।

अवचेतन मन की क्या भूमिका होती है?

अवचेतन मन आपका संरक्षक प्रकाश है और साथ ही यह आपकी मार्गदर्शक रोशनी भी है। यह आध्यात्मिक राडार के रूप में काम करता है। जब आप आध्यात्मिक रूप से ग़लत फ़ैसला लेने को होते हैं तब यह आपको सचेत करता है; इस तरह, यह आपकी आत्मा की सुरक्षा करता है। लेकिन आध्यात्मिक मार्ग केवल प्रलोभनों की रोकथाम से भरा नहीं है। खुद को ग़लत करने से केवल रोक लेना काफी नहीं। सबसे महत्व की बात यह है, कि ईश्वर की राह पर चलने के लिए वही करना चाहिए, जो आध्यात्मिक रूप से सही है। इसलिए, ग़लत कर्मों से रोककर आपकी आत्मा की सुरक्षा करने के बाद अवचेतन मन आपको उस ओर ले जाने का मार्गदर्शन करता है जो नैतिक रूप से सही है।

क्या हमारा अवचेतन मन और चैतन मन एक ही है?

अवचेतन मन और चेतन अथवा भौतिक मन दो अलग चीजें हैं। मनुष्य का एक उच्च रूप से विकसित भौतिक मन हो सकता है लेकिन उसका अवचेतन मन अविकसित रह गया हो ऐसा संभव है। सांसारिक ज्ञान हासिल कर आप अपने भौतिक मन को तेज बना सकते हैं, लेकिन इससे आपका अवचेतन मन विकसित नहीं होता। **यहां तक कि सिर्फ आध्यात्मिक ज्ञान ही आपके अवचेतन मन के विकास में मदद नहीं कर सकता।** अवचेतन मन का विकास केवल तब होता है जब आप इस ज्ञान को व्यवहार में उतारें। इसलिए, आध्यात्मिक विकास की कुंजी **शुद्ध कर्म** है। आपका अवचेतन मन जितना अधिक जागृत होगा, उतना ही अधिक मार्गदर्शन और सुरक्षा, जीवात्मा जगत से आपको हासिल होगी। आपके अवचेतन मन द्वारा आपका भौतिक मन नियंत्रित होना चाहिए। कभी भी खुद को अपने भौतिक मन का गुलाम न बनने दें। आपका अवचेतन मन जीवात्मा जगत के साथ आपको जोड़ने वाली कड़ी है जिसके जरिए आप जीवात्माओं द्वारा दी जाने वाली सुरक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

यदि पृथ्वी पर हर मनुष्य के पास अवचेतन मन होता है, तो लोग क्यो ग़लत राह पर चलते हैं?

कई बार आपके भौतिक मन और अवचेतन मन के विचारों के बीच टकराव होता है। इसका कारण है कि भौतिक मन तार्किक होता है- यह ऐसी राह पर चलना, अथवा ऐसे कार्य करना चाहता है जो तर्कपूर्ण हो- लेकिन हो सकता है अवचेतन मन इसके विरुद्ध हो। इस स्थिति में ऐसा लगता है जैसे दोनों मन के बीच युद्ध छिड़ा हो। यह एक अच्छी बात है। यदि भौतिक और अवचेतन मन के बीच संघर्ष न हो तो इससे स्पष्ट होता है कि आपका अवचेतन मन काम नहीं कर रहा और आप पूरी तरह अपने भौतिक मन के नियंत्रण में हैं। पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य पूरी तरह केवल अपने अवचेतन मन का अनुसरण नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि ऐक

साधारण मनुष्य का अवचेतन मन बहुत कम (१% - २%) जागृत होता है। फिर भी अवचेतन मन इतना बलवान होता है कि इसका एक छोटा हिस्सा जागृत होने पर भी यह मनुष्य के १००% जागृत भौतिक मन को चेतावनी देने की क्षमता रखता है।

यदि दोनों मन के बीच लगातर युद्ध चल रहा हो, तो हम शांत कैसे रह सकते हैं?

भौतिक मन और अवचेतन मन के बीच चलने वाले युद्ध को स्वीकार कर तथा प्रार्थना और सकारात्मक कर्म द्वारा अवचेतन मन की जीत सुनिश्चित कर आप शांति पाने की कोशिश कर सकते हैं। भौतिक मन हमेशा इस ताक में रहता है कि वह कैसे आपको अपना गुलाम बनाए और वह आपके सभी बुरे कर्मों को सही ठहरा कर आपको आध्यात्मिक रूप से नीचे गिरने वाले मार्ग पर ले जाता है। मन की शांति तभी प्राप्त होती है जब आप अवचेतन मन की आवाज सुनकर सही कदम उठाते हैं।

अगर भौतिक मन अवचेतन मन के विरुद्ध काम करता है, तो हमारे पास यह होता ही क्यों है?

भौतिक मन को यदि प्रशिक्षित न किया जाए तो यह नकारात्मक बन सकता है और अवचेतन मन के ख़िलाफ काम कर सकता है, लेकिन यदि सही प्रयोग किया जाए तो भौतिक मन अवचेतन मन का बेहतरीन सहायक बन सकता है। जब भौतिक मन की बुद्धि अवचेतन मन के मार्गदशन के अनुरूप चलती है, तो यह संयोजन बहुत बलवान होता है। इसलिए, यदि आप भौतिक मन का सही उपयोग करते हैं, तो यह आपके लिए एक उपहार बन जाता है। भौतिक मन एक परीक्षा भी है। ईश्वर चाहते हैं आप अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करें और अपने अवचेतन मन के मार्गदर्शन का चयन करें। यही प्रत्येक मनुष्य की परीक्षा है। **आपको अपने भौतिक मन को अपने नियन्त्रण में रखना चाहिए, न कि खुद उसके नियन्त्रण में रहना चाहिए।** पृथ्वी पर मनुष्य आध्यात्मिक रूप से ग़लती कर बैठते हैं, क्योंकि उनका अवचेतन मन सुप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में, अवचेतन मन बंद हो जाता है। अवचेतन मन मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से कुछ भी ग़लत करने से हमेशा और निरंतर रोकता है। लेकिन लोग अवचेतन मन की आवाज़ पर ध्यान न देकर अपने भौतिक, तार्किक मन की बात अधिक सुनते हैं। वे इसके निर्देशों को मानने से इनकार कर देते हैं और अपने बुरे या दुष्ट कार्यों को करना जारी रखते हैं। अवचेतन मन यह सह नहीं पाता और इसलिए वह मौन होकर सुप्त हो जाता है और अंततः पूरी तरह निष्क्रिय हो जाता है, जिसके बाद वह मनुष्य को उनकी ग़लतियों पर चेतावनी नहीं देता। यह स्थिति बेहद ख़तरनाक होती है।

मनुष्य की अंतरात्मा उसे केवल तभी चेतावनी देती है जब उसका अवचेतन मन कार्यरत हो। इसका एक साधारण उदाहरण है: जब आप किसी को दु:ख पहुंचाते हैं, अथवा किसी के बारे में नकारात्मक सोचते हैं, तो आपका अवचेतन मन आपको चेतावनी देता है और आपको

अपराधबोध महसूस होता है। इसका यह मतलब है कि आपका अवचेतन मन जागृत है। आप अपराधबोध को अपने ऊपर हावी न होने दें। उस अपराधबोध का एक विशिष्ट उद्देश्य है। इससे आपके अन्दर आपके द्वारा की गई गलती को सुधारने की इच्छा जगती है। आपको इससे सीख लेनी चाहिए और दुबारा वह गलती कभी नहीं करनी चाहिए। ऐसा होने पर अपराधबोध चला जाता है। अपराधबोध से निपटने का यही सही तरीका है।

कभी-कभी यह जानते हुए भी कि आपने कुछ ग़लत किया है, अगर आप अपने अपराधबोध को दबाकर इसे शुरू से ही अनदेखा कर देते हैं, तो आप अपने अवचेतन मन को नजरअन्दाज कर इसकी सलाह की अवहेलना करते हैं। जब आप ऐसा बार-बार करते हैं तो आपका अवचेतन मन सुप्त हो जाता है। एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब यदि आप पाप करें तो भी अवचेतन मन आपको चेतावनी नहीं देता। अपराधबोध खुलकर सामने नहीं आता और हो सकता है कि आप यह सोचकर खुद को धोखा दे दें, कि चूंकि आपको अपराधबोध महसूस नहीं हो रहा, आपने कुछ ग़लत कर दिया ही नहीं। दरअसल, आपने अपने आध्यात्मिक राडार को बन्द कर दिया होता है।

हालांकि, ध्यान में रखिए कि अपराधबोध हमेशा अवचेतन मन से नहीं आता। ऐसे भी लोग होते हैं जो उन चीजों के बारे में अपराधबोध पाल बैठते हैं जिनके लिए वे जिम्मेदार नहीं होते।

ऐसा भी समय आएगा जब सब कुछ सही करने के बावजूद भी आपका भौतिक मन आपको अपराधबोध महसूस कराएगा। आपको ऐसा लगेगा मानो आपने कुछ ग़लत किया हो, अथवा आप अपनी पूरी कोशिश नहीं कर रहे। यह अपराधबोध वास्तविक नहीं होता, इसे अपने खुद ही अपने ऊपर प्रभावित कर लिया होता है, अथवा यह दूसरों द्वारा या नकारात्मता द्वारा आरोपित होता है। भौतिक मन से उपजने वाला अपराधबोध आपके विकास के लिए उचित नहीं होता। आपमें इतना विवेक होना चाहिए कि अवचेतन मन के निर्देशों से उपजे अपराधबोध और भौतिक मन से आने वाले अपराधबोध के बीच का अन्तर आप जान सकें। अवचेतन मन से आया अपराधबोध एक संकेत है। भौतिक मन का अपराधबोध एक छलावा है, जो ग़लत सोच अथवा ग़लत धारणाओं के कारण होता है और यह आपको विकास करने से रोकता है। इसलिए जब आप अपराधबोध को लेकर भ्रांत हों तब आत्मविश्लेषण करें और किसी ऐसे व्यक्ति से बात करें जिसपर आप विश्वास करते हों। ऐसे लोगों से चर्चा न करें जो आपको खुश करने के लिए आपसे ऐसी बात कहते हों जो आप सुनना चाहते हैं। ऐसे लोगों से चर्चा करें जिनके पास सच्चा ज्ञान है, और जो आपको सत्य का बोध कराएँ।

क्या अवचेतन मन का विकास मनुष्य की उम्र के साथ होता है?

नहीं, ऐसा जरूरी नहीं है। यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप उसके निर्देशों को कितना मानते हैं। यह मांसपेशी की तरह होता है। आप जितनी कसरत करते हैं यह उतना ही

स्वस्थ्य और मजबूत बनता है। दरअसल, बच्चे का अवचेतन मन ताकतवर होता है (बशर्ते बच्चे का आध्यात्मिक स्तर ऊँचा हो) क्योंकि पृथ्वी पर बच्चा अभी-अभी जीवात्मा जगत से आया होता है। लेकिन यदि बच्चे को अपर्याप्त प्रशिक्षण मिले और उसे ग़लत करने दिया जाए तो उसका अवचेतन मन शांत हो जाता है और लगातार कमज़ोर होता चला जाता है।

आपने कहा कि पृथ्वी पर रहने वाली सभी आत्माएं जीवात्मा जगत के अपने प्रियजनों से नींद में मिलती हैं। ऐसा किस प्रकार होता है?

जब आप गहरी और स्वप्नहीन नींद में होते हैं, तब आपका भौतिक मन सुप्त हो जाता है और केवल अवचेतन मन ही क्रियाशील होता है। अवचेतन मन से संचालित आपकी आत्मा आपके भौतिक शरीर से निकलकर पृथ्वी और जीवात्मा जगत के बीच के प्रदेश में विचरण करती है, जहां आपके प्रियजन आपसे मिलते हैं। वे आपको शांति प्रदान करते हैं और आपके अवचेतन मन का मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन ज्यों ही आप नींद से जागते हैं, आप इसे भूल जाते हैं क्योंकि नींद के दौरान आपका भौतिक मन सुप्त था, जिस कारण इसमें कुछ भी दर्ज नहीं हो पाता। हम एक ऐसे अनुभव के बारे में बता सकते हैं, जिससे सारे मनुष्य परिचित हैं: कभी-कभी आप नींद से एक अचानक झटके अथवा सीने में धक् के साथ जगते हैं। यह आपकी आत्मा होती है जो आपके अवचेतन मन के मार्गदर्शन से आपके भौतिक शरीर में दुबारा प्रवेश करती है।

क्या व्यक्ति का अवचेतन मन यह जानता है कि उसकी मृत्यु कब होने वाली है?

हां, आपके अवचेतन मन को आपकी सभी तीन अंतिम तारीखें पता होती हैं। हालांकि आपकी मृत्यु समय से पहले भी हो सकती है अर्थात् आपकी अंतिम तारीख़ से पहले, जैसा कि दुर्घटना, हत्या जैसे मामलों में होता है। अतः, एक और आध्यात्मिक नियम आपकी रक्षा के लिए बनाया गया है। सातवें अथवा छठे लोक की भली आत्माएं नर्क में नहीं जाना चाहतीं, इसलिए ईश्वर ने एक नियम बनाया है जिसके अनुसार जो आत्माएं सातवें लोक पर जन्म लेती हैं, उन्हें पृथ्वी से वापस बुला लिया जाएगा और वे पांचवें लोक से नीचे नहीं गिरेंगी। इसी प्रकार, यदि आप छठे लोक पर हैं, तो आपको केवल चौथे लोक तक गिरने दिया जाएगा। यदि आप पाप करना जारी रखते हैं तो आपका अवचेतन मन जीवात्मा जगत में वापस जाने की अनुमति माँग लेता है। लेकिन पांचवें और उससे नीचे के लोकों की आत्माओं को ऐसी सुरक्षा हासिल नहीं है। यदि वे पाप करना जारी रखते हैं, तो उनका अवचेतन मन काम करना बंद कर देता है। वे निम्नतम लोक (प्रथम लोक) तक गिर सकती हैं। **इसी कारण हम कहते हैं कि पृथ्वी पर जीवन एक जोख़िम है, लेकिन यह ऐसा जोख़िम है जो आत्माओं द्वारा अपनी आध्यात्मिक प्रगति के लिए उठाया जाता है।**

यदि अवचेतन मन सुप्त हो जाए और व्यक्ति की मृत्यु हो जाए, तो ऐसी स्थिति में व्यक्ति चाहे तो अवकाशी रूप में रह सकता है। न केवल वे अपने लोक में नहीं जाना चाहेंगे बल्कि पृथ्वी को भी

वे नहीं छोड़ना चाहेंगे। आध्यात्मिक रूप से आप जितना नीचे गिरेंगे धरती छोड़कर जाने की इच्छा उतनी ही कम होगी। दुष्ट आत्माएं अपने भौतिक शरीर से जोंक की तरह चिपकी रहती हैं। उन आत्माओं को पता होता है कि मरने के बाद उनका स्थान कहाँ होगा और वे भौतिक जगत छोड़ने से डरती हैं। इसलिए, वे अवकाशी जगत में रहना पसंद करती हैं। कुछ स्थितियों में, जब मनुष्य की मृत्यु होती है, उसे यह पता नहीं होता कि वह मर चुका है। ऐसा व्यक्ति अब भी जीवात्मा नहीं बना होता; वह अवकाशी रूप में होता है।

क्या केवल बुरी आत्माएं ही अवकाशी रूप में प्रवेश करती हैं?

नहीं। मृत्यु होने पर सारे मनुष्य पहले अवकाशी रूप ही धारण करते हैं। इसके बाद वे अपने अवकाशी शरीर का त्याग कर जीवात्मिक स्वरूप में रूपांतरित होते हैं। इसलिए, जब व्यक्ति की मृत्यु होती है, उसका प्राकृतिक रूपांतरण इस प्रकार होता है:

मनुष्य → अवकाशी आत्मा → जीवात्मा

क्या उच्चतर लोकों की आत्माएं अवकाशी रूप में रहना चाहती हैं?

नहीं, उच्चतर लोक की आत्माएं आमतौर पर अवकाशी रूप में रहना नहीं चाहतीं। जितनी जल्दी हो सके वे जीवात्मा बनना चाहती हैं। जीवात्मा जगत में व्यक्ति के प्रियजन को यह पता होता है कि पृथ्वी पर उस व्यक्ति की मृत्यु होने वाली है, इसलिए ये जीवात्माएं उस व्यक्ति के आगमन के लिए तैयार रहती हैं। कुछ प्रियजन जीवात्मा जगत छोड़कर मरने वाले मनुष्य को लेने पृथ्वी पर आते हैं (यह स्थिति तब नहीं होती जब मृत्यु अचानक हुई हो, जैसे कि दुर्घटना अथवा हत्या जैसी स्थितियां; जो की ईश्वर की योजना का हिस्सा कभी लहीं होतीं)। ये जीवात्माएं उस व्यक्ति का अपने योग्य लोक में पहुँचने तक, उसका साथ देती हैं। आत्मा स्वाभाविक रूप से उसी लोक में जाती है जो उसके योग्य होता है। मरने वाले व्यक्ति का अवचेतन मन उसकी आत्मा को उस लोक में जाने के निर्देश देता है जिसके अनुरूप उसने पृथ्वी पर कर्म किए हों। यह उस आत्मा पर निर्भर करता है कि वह अपने अवचेतन मन की आवाज़ सुने; इसमें कोई जोर-जबरदस्ती नहीं की जाती। अवचेतन मन की आवाज़ सुनने के बाद अपने उपयुक्त लोक में पहुंच जाने के बाद ही आत्मा पुनः जीवात्मा का स्वरूप धारण करती है।

यदि आत्मा जीवात्मा जगत में जाने से इनकार करती है, तो वह अवकाशी रूप में ही रह जाती है, क्योंकि मर जाने के बाद भी ईश्वर आपको स्वतंत्र इच्छा का उपयोग करने की छूट देते हैं। पृथ्वी पर दिखाई पड़ने वाली अवकाशी आत्माएं भूत कहलाती हैं। **अवकाशी आत्माएं** भटकी हुई आत्माएं होती हैं जिन्होंने अपने अवचेतन मन की आवाज़ को अनसुना कर दिया होता है और जीवात्मा बनने से इनकार कर दिया होता है। ऐसा कर वे नकारात्मक कर्म संजोती हैं। आप

अवकाशी आत्माओं को नहीं देख सकते लेकिन वे आपको देख सकती हैं। अतः, ये अवकाशी आत्माएं जीवात्मा जगत को नहीं देख सकतीं। जब वे अपने अवचेतन मन की सलाह को अनसुना करती हैं और जीवात्मा जगत में नहीं जाने का निश्चय कर लेती हैं, तो जीवात्मा जगत उनके लिए अदृश्य हो जाता है। यही नियम है। जब वे जीवात्मा जगत में जाने का निश्चय करती हैं, तब ही जीवात्मा जगत उन्हें दिखाई पड़ता है। यह भी एक परीक्षा ही है।

जब बुरी आत्माएं मरती है, निम्नतर लोकों से जीवात्माएं उन्हें लेने आती हैं। हसका क्या उद्देश्य होता है?

जब पृथ्वी पर कोई दुष्ट आत्मा मरने की कगार पर होती है, तब उसकी समूह आत्माएँ, जो संभवतः निम्न लोकों में हो, उसे लेने आती हैं। बहरहाल, चुंकी ये आत्माएं आध्यात्मिक रूप से निम्न होती हैं, उन्हें इस कार्य के दौरान कठोर निगरानी के अंतर्गत रखा जाता है। इन आत्माओं को, यदि वे पृथ्वी की किसी निम्न आत्मा को जीवात्मा जगत में लाना चाहती हैं, तो अपने लोक की उच्च भली आत्मा से आज्ञा लेनी पड़ती है। उच्च भली आत्मा इस काम के लिए एक सहायक का चुनाव करती है, जो चौथे लोक के पांचवें स्तर तथा पांचवें लोक के पांचवें स्तर के बीच से होता है। यह सहायक इस बात की निगरानी करता है कि नकारात्मक आत्माएं अपने लोकों में वापस चली जाएं। इसे एक परीक्षा के रूप में किया जाता है: इन आत्माओं को ऐसी जिम्मेदारी सौंपी जाती है जिसे संपन्न कर वे अपने सुधार की इच्छा जाहिर करती हैं। इस प्रकार, हर कदम पर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है और उनकी परीक्षा होती है।

जब हम जन्म लेते हैं क्या यही प्राकृतिक अनुसरण जारी रहता है? क्या हम जीवात्मा से शुरू कर अवकाशी रूप, और आख़िरकार मनुष्य का रूप धारण करते हैं?

नहीं। जब कोई जीवात्मा पृथ्वी पर जन्म लेती है, वह अवकाशी स्थिति से नहीं गुजरती। बस उसकी आत्मा और उसका अवचेतन मन पृथ्वी पर मनुष्य का भौतिक शरीर ग्रहण कर लेते हैं। इस प्रकार, यह रूपांतरण जीवात्मा से सीधे मनुष्य रूप में होता है।

आत्माएं अवकाशी रूप में रहने का चयन क्यों करती हैं?

१. वे भौतिक जगत से बहुत अधिक लगाव रखती हैं।

२. वे पृथ्वी पर अपने किसी प्रियजन की रक्षा करना चाहती हैं और उनकी यह ग़लत धारणा होती है कि अपने पुराने भौतिक परिवेश में रहकर वे उनकी मदद कर सकतीं हैं।

३. अवचेतन मन उन्हें अहसास कराता है कि उन्हें निम्न आध्यात्मिक लोक में जाना होगा और वे ऐसा करने से इनकार कर देती हैं, क्योंकि वे कष्ट भोगना नहीं चाहतीं। वे ऐसा विकल्प

इसलिए चुन पाती हैं क्योंकि उनके पास स्वतंत्र इच्छा शक्ति होती है। बहरहाल, जब कोई आत्मा अवकाशी रूप में रहने का चयन करती है, तब उसका पतन होना जारी रहता है और अपने अवचेतन मन की सलाह अनसुनी करने और आध्यात्मिक नियम तोड़ने के कारण उसके नकारात्मक कर्म संचित होने लगते हैं। वह मनुष्य से अवकाशी और अवकाशी से जीवात्मा तक की प्राकृतिक प्रक्रिया का अनुसरण नहीं करती।

४. यदि वे नकारात्मक आत्माएँ हैं तो वे अवकाशी रूप में रहते हुए पृथ्वी पर लोगों को कष्ट देना चाहेंगी। एक बार फिर अवकाशी आत्मा का आध्यात्मिक रूप से पतन होगा और नकारात्मक कर्म संचित होंगे।

५. पृथ्वी पर, उनके कुछ व्यसन होते हैं, जैसे ड्रग्स अथवा शराब, जिनकी अनुभूतियों को वे बार-बार महसूस करना चाहती हैं। इसके लिए वे पृथ्वी पर ऐसे व्यसनों के आदी लोगों के साथ स्वयं को जोड़ लेती हैं।

आप अपने भौतिक मन को अपने अवचेतन मन के साथ सहयोग करने के लिए किस प्रकार प्रेरित कर सकते हैं?

आपको भौतिक मन की प्रकृति को जानना होगा। जिस तरह आपका अवचेतन मन आपका आध्यात्मिक और सकारात्मक मन होता है उसी तरह भौतिक मन स्वभाव से पार्थिव और नकारात्मक होता है। यदि नियंत्रित न किया जाए तो यह आपके पतन का कारण बनता है। यह आपको धोखे में रखता है, भ्रम पैदा करता है। उदाहरण के लिए, जब आपसे पाप होता है, तब आपका अवचेतन मन आपको चेतावनी देता है कि आपने कुछ ग़लत किया है। जैसे ही आप उस ग़लती को सुधारने और सबक सीखने का प्रयास करते हैं, आपका भौतिक मन अपने सबसे बड़े हथियार 'अहंकार' का प्रयोग करता है। अहंकार के कारण आप आपने गलत कामों को भी सही ठहराने लगते हैं। आप खुद को यह कहकर धोखा देने लगते हैं कि भले ही आपने जो किया वह ग़लत हो, लेकिन ऐसा करना जरूरी था। आपका भौतिक मन आपके समक्ष एक अत्यंत बुद्धिमान और तार्किक कुतर्क रखता है, जिससे आप बहक जाते हैं। आपका अवचेतन मन आवाज़ उठाता है, वह आपसे कुछ कहता है, लेकिन आप उसे खामोश कर देते हैं, क्योंकि भौतिक मन ने आपको तर्क दे दिया होता है। यह आपसे कहता है कि तार्किक दृष्टिकोण से आप सही हैं।

हमारा मतलब यह नहीं कि तर्क बुरी चीज है, लेकिन तर्क और सत्य एक ही चीज भी तो नहीं है। दुर्भाग्य से, लोग तर्क का उपयोग सच से भागने के लिए करते हैं। भौतिक मन आपको तर्क देता है; अवचेतन मन आपको सत्य से रू-ब-रू कराता है। उदाहरण के लिए भौतिक मन आपको यह कहता है कि प्रलोभन सही है। यह ऐसा तर्क देगा कि प्रलोभन आपकी इच्छा की बजाए आपकी जरूरत है। प्रलोभन को ग़लत राह पर ले जाने वाली इच्छा बताने के बजाए, वह आपको समझाएगा कि आध्यात्मिक दृष्टि से प्रलोभन ग़लत नहीं होते।

भौतिक मन के पास एक दूसरा हथियार 'शक' का होता है। भौतिक मन आपके अंदर शक के बीज बोता है, जो आपके विश्वास और आपकी सूज्ञता को चुनौती देता है। अवचेतन मन सत्य का केन्द्र होता है और इसलिए इसे सब पता होता है। यह आपको संदेहों से परे जाने में मदद करता है, लेकिन केवल तभी जब आप इसे अपनी आत्मा का संचालन करने दें। यदि आप शक के बीज का पालन-पोषण करेंगे तो आप धीरे-धीरे जीवात्मा जगत से अपने संबंध कमजोर करते जाएँगे, क्योंकि संदेह अनिवार्य रूप से आपके सामने एक प्रश्न खड़ा करेगा किः क्या मैं ईश्वर में विश्वास रखता हूं? अवचेतन मन की आवाज़ सुनिए क्योंकि यही आपका मालिक है, यही वह कड़ी है जो आपको अपने भले स्व और ईश्वरीय स्व से जोड़ता है। भौतिक मन में कमजोरियां होती हैं और जीवन में आपका उद्देश्य अवचेतन मन के विकास द्वारा उन कमजोरियों से परे जाना है।

भौतिक मन की सबसे खतरनाक बात यह है कि वह आपको गलत चीजों की आदत डलवाता है और उन आदतों के साथ रहने में आपको सहज कर देता है। यह कहता है, "मुझे अहंकारी होना पसंद है, तो मैं क्यों बदलूं?" अवचेतन मन कभी भी हठी नहीं बनता बल्कि वह अपनी प्रगति जारी रखता है। **आप लोगों को और अपने आप को भी बेवकूफ़ बना सकते हैं। लेकिन आप कभी भी ईश्वर के दिए हुए अवचेतन मन को छल नहीं सकते।** वह अवचेतन मन ही है जो व्यक्ति के आकाशिक रिकॉर्ड में स्मृतियाँ दर्ज करता है। मनुष्य यह मानता है कि ईश्वर उसे सज़ा देते हैं। सच तो यह है कि ग़लत राह का अनुसरण करने पर उसका अपना अवचेतन मन ही उसे सज़ा देता है क्योंकि वह मनुष्य की आत्म-प्रकृति को जानता है। जीवात्मा जगत और आपके पूर्व जन्मों की स्मृति को आपके भौतिक मन में प्रवेश करने से रोक दिया गया है। आपके अवचेतन मन में जीवात्मा जगत की स्मृति होती है और पृथ्वी पर आपने जितने भी जीवन जिए हैं, उनमें से हरेक का विवरण इसके पास सुरक्षित रहता है। लेकिन, इस जानकारी को आपके भौतिक मन पर प्रकट नहीं किया जाता। इसके कारण निम्नांकित हैं:

१. यदि आप अपने पूर्व जन्म के पापों के बारे में जान लेंगे तो इससे आपका मन कचोटने लगेगा और आपका विकास बाधित होगा। उदाहरण के लिए, यदि आपने पिछले जन्म में किसी को बुरी तरह चोट पहुंचाई है, तो हो सकता है कि इस अपराधबोध को आप इस जीवन में झेल न पाएं और आप खुद को क्षमा न कर पाएं। ईश्वर चाहते हैं कि सभी आत्माएं धरती पर जन्म लेकर अपना पुनःर्जन्म, एक कोरे कागज़ की तरह शुरू करें।

२. आपका भौतिक मन सीमित होता है। ऐसी बहुत सी चीजें जिनका अवचेतन मन को ज्ञान होता है, वह भौतिक मन समझ नहीं पाता।

३. यदि आपको जीवात्मा जगत की स्मृतियाँ, वहां आपको मिली हुई ख़ुशी और शांति याद रह जाए, (यदि आप उच्च लोक से हैं) तो आप एक क्षण के लिए भी पृथ्वी पर जी नहीं पाएंगे। जीवात्मा जगत के लिए आपकी उत्कंठा इतनी अधिक गंभीर हो जाएगी कि आप पृथ्वी पर असहाय महसूस करेंगे।

४. पृथ्वी पर आपका जीवन एक परीक्षा है। यदि आप अपने उन कर्मों, परीक्षाओं और प्रशिक्षणों से अवगत हो जाएं जिनसे होकर आपको गुज़रना है, तो पृथ्वी पर आपकी यात्रा का कोई अभिप्राय नहीं रह जाएगा। साथ ही, यदि आपको हर बात का ज्ञान हो तो फिर यह एक परीक्षा नहीं रह जाती। आप पृथ्वी पर इसलिए आते हैं ताकि आप अनुभव हासिल कर सकें, और अपनी जीवात्मा का प्रशिक्षण कर सकें, ताकि आपकी आत्मा का शुद्धिकरण हो और वह उच्च से उच्च स्तर की ओर प्रगति कर सके। यदि आपको अपने पिछले जन्मों की बातें याद रहेंगी तो आप अपनी पिछली भूलों को नहीं दुहराएँगे, क्योंकि आपको इसकी पूर्व चेतावनी मिल चुकी होगी। इस प्रकार, आपका विकास वास्तविक और स्वाभाविक रूप से नहीं होगा। आपका जीवन तकनीकी हो जाएगा, आपके फैसले दुर्बल होते जाएँगे और आप मशीन की तरह जीवन जीएंगे।

पृथ्वी पर कुछ आत्माओं का अवचेतन मन औरों की तुलना में अधिक विकसित होता है। कभी-कभी, इन आत्माओं को अपने पूर्व जन्म की बातों को पृथ्वी पर याद रखने की अनुमति भी मिलती है। और उनमें जीवात्मा जगत की स्मृतियां भी होती हैं, लेकिन ऐसा कभी-कभार ही होता है। लोगों के मन में आस्था और विश्वास जगाने तथा ईश्वरीय ज्ञान को फैलाने के विशेष उद्देश्य से ही इसकी अनुमति दी जाती है।

यदि व्यक्ति का अवचेतन मन जागृत न हो, तो वह कैसे बदल सकता है?

आइए हम उदाहरण के तौर पर, सूरदास की कहानी लेते हैं। उसके किस्से में, उसके दुष्ट कर्मों के कारण, उसका अवचेतन मन सो गया था। उसे जागृत करने के लिए एक शारीरिक झटके की आवश्यकता थी, जो उसे कार दुर्घटना के रूप में लगा। उस दुर्घटना के बाद कई घटनाएं घटती चली गईं और अंततः वह उस गुफ़ा तक पहुंचा जहां मृत्यु को सामने देखने पर, आख़िरकार उसे बोध हुआ और अपने बुरे कर्मों का अहसास हुआ। उसके लिए, यह कष्टदायक झटका जरूरी था क्योंकि उसका अवचेतन मन पूरी तरह सुप्त हो चुका था। लेकिन यदि व्यक्ति का अवचेतन मन जरा भी जागृत हो, तो आत्मा को उससे बात करने और अपनी ग़लतियों को स्वीकारने के मौके का लाभ लेना चाहिए, जिससे व्यक्ति कष्टदायक भौतिक झटके से बच जाता है। जब हम 'ग़लती स्वीकारने' की बात करते हैं तो हमारा मतलब बदलने की सच्ची इच्छा से होता है। केवल जब श्री उच्च भली आत्मा को यह विश्वास हो गया कि सूरदास अपनी अंतरात्मा से बदलना चाहता है, और उसका पश्चाताप सच्चा है, तब ही सूरदास की मदद की जा सकी। उसने अपनी ग़लतियों को स्वीकार किया और बदलने की इच्छा व्यक्त की। उसने जंगली जानवरों से भरे जंगल के बीच, एक अंधेरी गुफ़ा में स्वयं अपने आपको अपनी गलतीयों की स्वीकृती दी। वह कोई पूजा-स्थल नहीं था और वहां उसकी स्वीकृती को सुनने के लिए उसके अवचेतन मन के अलावा और कोई नहीं था। पृथ्वी पर एक ग़लत धारणा है कि यदि आप पुरोहित के समक्ष अपनी भूल स्वीकार करें, तो आपको अपने पापों की क्षमा मिल जाती है। यह बिल्कुल गलत है। पुरोहित के पास आपको क्षमा करने की शक्ति नहीं होती। पुरोहित भी अख़िरकार एक मनुष्य ही है। यदि पुरोहित

के पास आध्यात्मिक ज्ञान है तो निश्चित रूप से वह आपका मार्गदर्शन कर सकता है, लेकिन कृपया करके यह समझ लीजिए कि जब आप ‘गलती-स्वीकार’ कर रहे होते हैं, तो इसका मतलब यह है कि आप अपने अवचेतन मन के सामने अपनी ग़लतीयों को स्वीकार कर रहे हैं और खुद को बदलने के लिए सहायता मांग रहे हैं।

पृथ्वी पर लोग ‘पश्चाताप’ शब्द का भी ब्रहुत गलत अर्थ निकालते हैं। पश्चाताप का अर्थ सिर्फ यही नहीं होता कि आप केवल अपने किए पर खेद प्रकट कर लें, इसका ही मतलब तो यह है कि आप अपनी ग़लती को सुधारकर सच्चे रूप से खुदको बदलें और दुबारा फिर कभी उस ग़लती को न दुहराएं। मनुष्य के रूप में सुधरने का विकल्प केवल आत्मा के अंतर से ही आ सकता है। आध्यात्मिक रूप से प्रगति करना भले ही आत्मा के अपने भले के लिए है, लेकिन कोई भी उस आत्मा को ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। **यही स्वतंत्र इच्छा का नियम है।** साथ ही, ईश्वर के सहायकों के पास यह जानने की शक्ति होती है, कि वह आत्मा सच्चे मन से परिवर्तन चाहती है या नहीं। अर्थात्, जीवात्मा जगत की जीवात्माएँ यह जान सकती हैं कि उस आत्मा के भीतर बदलने की इच्छा कितनी कमजोर या कितनी प्रबल है। आध्यात्मिक उन्नति का मूल है बदलने की सच्ची इच्छा; केवल तभी अवचेतन मन आत्मा का ईश्वरीय प्रकाश की ओर मार्गदर्शन कर सकता है।

कोई व्यक्ति अवचेतन मन को कैसे जागृत कर सकता है?

मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है **अवचेतन मन को जागृत करना।** यह हम कुछ ऐसे उपाय बता रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप अपने अवचेतन मन को जागृत कर सकते हैं:

१. प्रार्थना।

अपने अवचेतन मन को जागृत करने में आपकी मदद के लिए ईश्वर से यह विनती कीजिए:

“मेरे सबसे प्यारे, हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, कृपया करके मुझमें अपनी ग़लत इच्छाओं और भावनाओं से छुटकारा पाने की शक्ति जगाएं। मुझे अपना ज्ञान दें। अपने अवचेतन मन को जगाने में मेरी मदद करें, ताकि हमेशा यह मेरा मार्गदर्शन करे। धन्यवाद, हे सर्वशक्तिमान ईश्वर।”

२. अपने मन को कोरा करें (पृष्ठ २०२ पर देखें “मन को कोरा करने के उपाय”)।

आपके मन में किसी भी तरह के विचार नहीं होने चाहिए। आपका मन बिल्कुल कोरा होना

चाहिए। यदि अपके मन में कोई विचार प्रवेश करे, तो उसे अपने आप गुज़र जाने दें-उनसे छुटकारा पाने का संघर्ष न करें और न ही उनमें लिप्त हों। जहां सकारात्मक स्पंदन हों, किसी ऐसी जगह पर, अपने मन को अधिक से अधिक २ मिनट तक कोरा करें। अपने सहजबोध से यह महसूस करने की कोशिश करें कि उस जगह के स्पंदन सकारात्मक हैं या नकारात्मक। नकारात्मक स्पंदन वाली जगह पर अपने मन को अधिक से अधिक १ मिनट तक कोरा करें। केवल सूर्योदय से सूर्योस्त के बीच अपने मन को कोरा करें।

३. अपने अवचेतन मन से बात करें।

अवचेतन मन से बात कर आप इसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। इसके बाद, अपने आपको पूरी तरह से अवचेतन मन को समर्पित करें और उसे अपना मार्गदर्शन करने की प्रार्थना करें।

४. अवचेतन मन की सलाह का पालन करें।

अवचेतन मन की सलाह का पालन करने का अर्थ है, उसके मार्गदर्शन पर अमल करना। हर बार जब आप अपने अवचेतन मन की सलाह मानते हैं, तब आप उसे बल देते हैं। जितनी बार आप उसकी सलाह को नज़रअन्दाज करते हैं, और उसका कहना नहीं मानते, आप उसे उतना ही कमजोर बनाते हैं।

५. अपने भौतिक मन पर नियंत्रण रखिए। उसे कहिए कि आप उसके मालिक हैं, न कि उसके ग़ुलाम।

पृथ्वी पर, एक साधारण मनुष्य का भौतिक मन १००% जागृत होता है, जबकि अवचेतन मन केवल १%-२%। यदि आप एक बहुत अच्छी आत्मा हैं तो पृथ्वी पर आपका अवचेतन मन अधिकतम ७%-९% जागृत होता है। इसलिए, यदि आप चाहें तो अवचेतन मन के एक छोटे से अंश के जागृत रहने पर भी यह भौतिक मन पर आसानी से विजय प्राप्त कर सकता है। जब एक आत्मा सातवें लोक के नौवें स्तर तक पहुंच जाती है, तब भी उसके अवचेतन मन का केवल २०% हिस्सा ही जागृत होता है। अगले ब्रह्मांड में भी आप अपना विकास जारी रखते हैं और सातवें ब्रह्मांड के अंतिम स्तर पर पहुंचने पर ही आपका अवचेतन मन पूरी तरह (१००%) जागृत हो जाएगा और तभी आप आख़िरकार ईश्वर को जानने में सफल होंगे और उनका उनका सान्निध्य पाएंगे।

नीचे **मन को कोरा करने के उपाय** बताए गए हैं:

यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आप केवल सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच ही अपने मन को कोरा करें, क्योंकि सूरज डूब जाने के बाद पृथ्वी पर स्पंदन बदल जाते हैं और अधिक नकारात्मक हो जाते हैं। यदि आप इन सरल उपायों का पालन करेंगे तो आप अधिक से अधिक शांति प्राप्त कर पाएंगे।

१. आप अपने शब्दों में ईश्वर से आपकी रक्षा करने और अपने अवचेतन मन को जागृत करने के लिए सहायता करने की प्रार्थना कीजिए।

२. अपनी पसंद की कोई भी छोटी प्रार्थना दिल से कीजिए।

३. अपने मन को कोरा कीजिए। अपने मन को कोरा करने के लिए सबसे श्रेष्ठ है दूर की ध्वनियों को सुननां किसी भी चीज का विश्लेषण न करें। यदि कोई विचार आए तो चिंतित न हों; वह अपने आप ही चला जाएगा। उससे छुटकारा पाने के लिए ज़ोर न लगाएँ। शांत रहिए।

४. करीब २ मिनट तक ऐसी जगह पर अपने मन को कोरा करें जहां सकारात्मक स्पंदन हों। नकारात्मक स्पंदन वाली जगहों पर १ मिनट से अधिक मन को कोरा न करें। यह आपकी अपनी सुरक्षा के लिए है।

५. सर्वशक्तिमान ईश्वर को धन्यवाद दीजिए। एक छोटी और सच्ची प्रार्थना के साथ अंत कीजिए।

६. मन को कोरा करने के बीच, कम से कम तीन घंटे का अंतराल होना चाहिए।

७. मन को कोरा करते समय दक्षिण की ओर मुंह कभी न करें। उत्तर की ओर मुंह करना सबसे अच्छा है।

८. लोगों की उपस्थिती में मन को कोरा न करें, क्योंकि ऐसे में आप अनजाने में खुद को नकारात्मक स्पंदनों के संपर्क में ले आते हैं।

९. यह बात निश्चित कर लें कि आपके आसपास मोमबत्ती अथवा दीये जैसी एक प्राकृतिक ज्योत हो। जब आप मन को कोरा करते हैं तब प्रकाश आपकी रक्षा करता है।

उचित विकल्प चुनने के लिए आपको मार्गदर्शन तथा सत्कर्म करने का बल निश्चित रूप से हासिल होगा और अपने विचारों को सकारात्मक, आध्यात्मिक कर्म में परिवर्तित करने की शक्ति प्राप्त होगी।

यहाँ एक बार फिर, अवचेतन और भौतिक मन के अंतर को दर्शाया गया है। इन दोनो की प्रकृति को समझ लीजिए ताकि आपको यह पता चले कि किस मन की बात सुननी है और किस मन को प्रशिक्षित करना है।

अवचेतन मन	**भौतिक मन**
अंतरात्मा, उच्च मन, उच्च स्व भी कहलाता है।	चेतन मन भी कहलाता है।
आध्यात्मिक	भौतिक
आंतरिक और कर्तव्यनिष्ठ मन	बाहरी और प्रत्यक्ष मन
असीमित समझ	सीमित समझ
शाश्वत	क्षणिक
सत्यनिष्ठ और दृढ़	हो सकता है कि यह सत्यनिष्ठ न हो और चंचल हो।
निःस्वार्थी	प्रायः स्वार्थी
हमेशा शांत रहता है।	चिंतित और अशांत हो सकता है।
ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण नहीं चाहता।	ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण चाहता है, और हमेशा ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह करता है।
सही कर्म होने तक लगातार परिश्रम करता है।	बच निकलने का आसान रास्ता खोजता है और ग़लत विचारों और कर्मों को सही ठहराता है।
जीवात्मा जगत से जुड़ा होता है।	पृथ्वी तक सीमित होता है।
आन्तरिक बल प्रदान करता है।	आपको कमजोर बनाता है।
प्रलोभन पर विजय पाने में मदद करता है।	प्रलोभन के सामने झुक जाता है।
महसूस करता है, संवेदना ग्रहण करता है, भौतिक जगत पर निर्भर नहीं रहता।	पूरी तरह से भौतिक जगत पर निर्भर रहता है।

स्वतंत्र इच्छा

"आप खुद अपनी परिस्थितीयों के सर्जक होते हैं।"

"सच्ची स्वतंत्रता का अर्थ है आपको सत्कर्म करने की पूरी छूट मिलना।"

"आप पृथ्वी पर अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करके प्रलोभनों और नकारात्मकता पर विजय प्राप्त करने का लक्ष्य लेकर आए हैं।"

"ईश्वर ने आपको स्वतंत्र इच्छा और चुनाव की आज़ादी दी है, इसलिए एक समझदार आत्मा अपनी स्वतंत्रता का उपयोग बुरी चीजों की बजाए अच्छी चीजों को चुनने में करती है और आध्यात्मिक रूय से प्रगति करना जारी रखती है।"

"पृथ्वी पर कुछ वर्षों की अस्थायी ख़ुशी के लिए ग़लत राह पर मत जाइए, क्योंकि ऐसा करने पर आपको जीवात्मा जगत के निम्नतर लोकों में सैकड़ों वर्षों तक कष्ट भोगने होंगे।"

पृथ्वी पर हमारे जीवन के संदर्भ में स्वतंत्र इच्छा का क्या अर्थ होता है?

आपकी स्वतंत्र इच्छा का दरअसल यह अर्थ है, कि आप अपने मन, शरीर और जीवात्मा को नियंत्रित करते हैं और आपको अपने कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। पृथ्वी एक पाठशाला है, यह एक ऐसा स्थान है जहां आप जीवात्मा जगत से अपने कर्मों का हिसाब चुकाने, परीक्षा और प्रशिक्षण से गुज़रने और अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य को पूरा करने के लिए आते हैं। आप इन सब का सामना कैसे करते हैं, यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है। आप चुनौतियों का सामना बहादुरी और मुस्कान के साथ कीजिए या फिर शिकायत करते हुए खुद को दयनीय स्थिति में बनाए रखिए। आप प्रबल नैतिक निर्णय लेकर अपनी आत्मा को पोषित कर सकते हैं अथवा प्रलोभन से हारकार, अहंकार को बढ़ावा देकर अपनी जीवात्मा को कमजोर बना सकते हैं। जो विकल्प आप चुनते हैं वे आपको ईश्वर की तरफ ले जा सकते हैं और आपको उनसे दूर भी कर सकते हैं। आत्मा को पोषित कीजिए या फिर उसे कमजोर होते देखिएः आप जैसा चाहें, वैसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। आप या तो अपनी परीक्षा में खरे उतरें या फिर असफल हो जाएं। आप खुद अपनी परिस्थितीयों के सर्जक होते हैं। पृथ्वी पर और जीवात्मा जगत में सही विकल्प

चुनकर, केवल आप ही अपनी आत्मा की उन्नति का निर्धारण कर सकते हैं।

जिस क्षण आत्मा पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने का फैसला करती है, उसी क्षण जीवात्मा जगत में ही, स्वतंत्र इच्छा प्रभावी हो जाती है। पृथ्वी पर जीवन एक जोख़िम है, लेकिन यह वह जोख़िम है जिसे आपने चुना है। हमारा मकसद आपको डराना नहीं है, बल्कि हम धरती की आत्माओं को सतर्क करना चाहते हैं। आप अपने आप को नकारात्मक प्रभावों से जितना अधिक संचालित होने देंगे, आपके लिए आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ना उतना ही मुश्किल होगा। पृथ्वी पर नकारात्मक प्रभावों का अस्तित्व इसलिए है ताकि आप उनसे संघर्ष कर सकें। इस तरह आप अपनी आध्यात्मिक माँस-पेशी को बल देते हैं। जब आप अपनी जीवात्मा को पोषित करने में असफल रहते हैं, तो आप भौतिक मन से काम कर रहे होते हैं और कमजोर नैतिक फैसले करते हैं। जीवन का एक कमजोर क्षण सारे जीवन पर भारी पड़ सकता है। ग़लत दिशा में उठाया हुआ एक कदम आपको सही रास्ते पर दुबारा लौटने में भारी कठिनाई पैदा कर सकता है। प्रलोभन के वशीभूत होकर रास्ते से भटक जाना बड़ा आसान है। कुछ ऐसे भी लोग हैं, जिन्होंने ईश्वर और धर्म के नाम पर बड़े-बड़े भयंकर कर्म किए हैं। ऐसी आत्माएं भी होती हैं जिन्होंने अपने ही परिवार को मुसीबत में डाला होता है और वे ऐसा करना जारी रखती हैं। ऐसी भी आत्माएं होती हैं जो बच्चों और बूढ़ों को यातनाएं देती हैं। ये आत्माएं निम्नतम लोकों से होती हैं और उनके लिए दो मुख्य कारणों की वजह से आध्यात्मिक प्रगति करना कठिन होता है। पहला, उनके कर्मों के कारण उनका अवचेतन मन सुप्त हो जाता है। दूसरा, क्योंकि वे निम्नतम लोकों से होती हैं, वे पृथ्वी पर और जीवात्मा जगत में खुद अपने ही जैसी आत्माओं से घिरी होती हैं। ये आत्माएं न खुद उन्नति करना चाहती हैं, न ही वे दूसरों को उन्नति करने देना चाहती हैं, क्योंकि वे अपनी संख्या बढ़ाना चाहती हैं। दूसरों को, ताक़त या छल द्वारा नकारत्मक रूप से प्रभावित कर वे अपने आस-पास के लोगों की आध्यात्मिक उन्नति को बाधित करती हैं और इस प्रकार, वे स्वतंत्र इच्छा के नियम को तोड़ती हैं। पृथ्वी पर, ऐसी दुष्ट आत्माएं ईश्वर के नियमों की पूरी तरह से अवहेलना करती हैं, क्योंकि वे उनपर विश्वास नहीं करतीं, अथवा आध्यात्मिकता के विषय में उनकी धारणाएँ गलत होती हैं। लेकिन, उन्हें यह समझने की ज़रूरत है कि चाहे कुछ भी हो, मनुष्य की मृत्यु के बाद उसका अवचेतन मन इतना जागृत तो अवश्य हो जाता है, कि वह उसे अपने योग्य स्थान तक ले जाए। यह ईश्वर का न्याय है और यह अनंत है।

यदि सारी आत्माएं ईश्वर द्वारा रची गई हैं, तो कुछ आत्माएं दुष्ट क्यों होती हैं?

जीने का अर्थ है आध्यात्मिक रूप से उन्नति करना, ईश्वर की ओर कदम आगे बढ़ाना। अंग्रेजी में 'EVIL' (दुष्टता) का अर्थ 'LIVE' (जीवन) के विपरित होता है। दुष्टता का अर्थ अधःपतन है; यह आत्मा की नकारात्मक यात्रा को, ईश्वर से दूर जाने की प्रक्रिया को दर्शाता है, जो नकारात्मक विचारों, शब्दों और नकारात्मक कर्मों से उपजता है। आत्मा अमर होती है और इसे कभी नष्ट नहीं किया जा सकता, लेकिन इसे भ्रष्ट ज़रुर किया जा सकता है। जब आप अनैतिक फैसले करते हैं और पृथ्वी पर अपनी परीक्षाओं में असफल होते हैं तो इस पर कालिमा पुत जाती

है। आप अपने विचारों, शब्दों और कर्मों के योग के सिवा और क्या हैं? अपने कर्मों को आप अपनी आत्मा से कैसे अलग कर सकते हैं? आपके कर्मों के अनुसार आपकी आत्मा सक्षम अथवा कमज़ोर होती है, इसलिए आप अपनी आत्मा को अपने कर्मों से अलग नहीं कर सकते।

जब लोग गलत राह पर भटक जाते हैं, तब वे अपने कर्मों को सही ठहराते हैं, अथवा वे यह कहते हैं कि किसी दुर्बल क्षण के दौरान वे प्रलोभन में फंस गए थे। वे यह भी कह सकते हैं कि, "आप नहीं समझ पाएँगे कि मैं किस स्थिति से गुज़र रहा हूं।" लेकिन परिस्थितियों को अनैतिक कर्मों के लिए बहाना नहीं बनाया जा सकता। आपको अपने सभी कर्मों की जिम्मेदारी लेनी ही होगी। आप वर्तमान में जीते हैं और खुद को अपने वास्तविक कर्मों से अलग नहीं कर सकते। यदि आप इस वक़्त ग़लत राह पर हैं, तो आप अपने अतीत को देखकर खुद से यह नहीं कह सकते कि आप कभी एक अच्छे आदमी हुआ करते थे। आप वर्तमान में जीते हैं और आपका मूल्यांकन आपके अपने अवचेतन मन द्वारा किया जाएगा। आपने पहले भी कर्म किए थे, अब भी कर रहे हैं, और आपका अस्तित्व आपकी सोच, वाणी और कर्मों के फलस्वरूप हैं।

ऐसा कहा जाता है कि हर किसी की मदद करना हमारा धर्म है। **लोगों की मदद करना अच्छी बात है, लेकिन आप सभी लोगों की मदद नहीं कर सकते, क्योंकि कुछ लोग संपूर्ण रूप से नकारात्मक होते हैं।** आप सोच सकते हैं कि कोई नकारात्मक हैं या नहीं यह तय करने वाले आप कौन होते हैं, ऐसा करना तो निर्णायकों का काम है। ठीक है, आप निर्णायक न बनें, लेकिन अपने विवेक का उपयोग करें।

अंतर सरल है। जब आप विश्लेषण करते हैं कि कोई व्यक्ति अच्छा है या नहीं, तो यह निर्णय उन्हें नीचा दिखाने के श्रेष्ठ भाव के कारण नहीं बल्कि सतर्कता के कारण है। सतर्कता एक ऐसा आध्यात्मिक सहजबोध है जो ईश्वर ने आपको अपनी जीवात्मा और आपके आसपास के लोगों की जीवात्माओं की रक्षा के लिए प्रदान किया है। नकारात्मक आत्माओं की मदद कर आप उन्हें बढ़ावा देते हैं, जिससे वे अपने बुरे कर्म जारी रखते हैं। आप उन्हें प्रोत्साहन देते हैं। ऐसा करने पर आपका आध्यात्मिक पतन होता है क्योंकि आप यह नैतिक फैसला करने में असफल रहते हैं। किसी नकारात्मक आत्मा की मदद आपको केवल तभी करनी चाहिए जब वह अपने कर्मों के लिए पश्चाताप करे और सच्चे मन से सुधरना चाहे। इसके बाद, यह आपका कर्तव्य होता है कि आप उसे नकारात्मक प्रभावों से बाहर निकालें और एक ऊँचे स्तर तक पहुंचने में उसकी मदद करें। **सही परख करना सत्य की पहचान है; किंतु आलोचना करना अहंकार की पहचान है।** पृथ्वी पर आपके फैसले, जीवात्मा जगत में आपके घर की नींव तैयार करते हैं। पृथ्वी पर आप अपने भौतिक मन के गुलाम बनने का विकल्प चुन सकते हैं अथवा अपने अवचेतन मन का छात्र बनने का फैसला कर सकते हैं। स्वतंत्र इच्छा का वरदान हमें मिला है। हमें इसका उपयोग बुद्धिमानी से करना चाहिए।

कर्म

“जो आप बोते हैं, वही काटते हैं।”

“कर्म सज़ा नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया है। यह ऐसा नियम नहीं जिसका उद्देश्य मनुष्य को केवल सज़ा देना हो, बल्कि इसका उद्देश्य तो ग़लती करने पर हमें शिक्षा देना है और आत्मिक स्तर पर हमें हमारी गलती के बारे में समझाना है।”

“खेद प्रकट करने का कोई अर्थ नहीं।”

“ईश्वर का न्याय परिपूर्ण होता है-
कोई भी इससे बच नहीं सकता।”

“यदि आप दूसरों की ख़ुशी नहीं देख सकते, तो आप स्वयं भी ख़ुश नहीं रह सकते।”

कर्म क्या है?

कर्म इस सिद्धांत पर आधारित होता है कि आप जो बोएंगे वही काटेंगे, अर्थात् आप जैसा करेंगे वैसा ही भरेंगे। इसे कर्म-फल के रूप में समझाया जा सकता है। कर्म आपके कार्य हैं और फल उन कार्यों के परिणामों को दर्शाता है। इस प्रकार कर्म या तो आप पर एक क़र्ज़ है अथवा आपको प्राप्त होने वाला वरदान है। दो प्रकार के कर्म होते हैं: नकारात्मक और सकारात्मक। नकारात्मक अथवा बुरे कर्म आपके नकारात्मक कार्यों के कारण होने वाले परिणामों को दर्शाते हैं। सकारात्मक अथवा अच्छे कर्म वो आध्यात्मिक वरदान हैं, जो सकारात्मक कार्यों अथवा निःस्वार्थ भाव से किए गए अच्छे कार्यों के कारण आपको प्राप्त होते हैं।

ईश्वर ने ऐसे नियम बनाए हैं जिनके द्वारा उनके बनाए ब्रह्मांड का संचालन होता है और यह उनकी सभी रचनाओं का कर्तव्य है कि वे उन नियमों का पालन करें। यह उनका कर्तव्य है, लेकिन उन्हें कुछ भी करने के लिए जबरदस्ती नहीं की जा सकती-स्वतंत्र इच्छा की यही प्रकृति होती है। इसलिए आप जो भी फैसला करते हैं, वह बिल्कुल आप पर निर्भर करता है, लेकिन यदि आप ईश्वर के नियमों को न मानने का फैसला करते हैं, तब भी आप हमेशा उनके अंतर्गत

ही काम करते रहेंगे। कोई भी आत्मा आध्यात्मिक नियम से बढ़कर नहीं होती।

कर्म किस प्रकार संचालित होता है? क्या सकारात्मक और नकारात्मक कर्म एक दूसरे को निरस्त कर सकते हैं?

दोनों कर्म एक दूसरे को निरस्त नहीं करते। इसलिए आपको अपने अच्छे कर्मों के लिए आध्यात्मिक आशीर्वाद प्राप्त होते हैं और बुरे कार्मों की सज़ा भी भुगतनी पड़ती है। अच्छे और बुरे कर्म एक दूसरे से बिल्कुल अलग होते हैं। व्यक्ति के कर्म उसके विचारों के कारण भी निर्मित होते हैं। कर्म केवल कार्यों के कारण ही उत्पन्न नहीं होते बल्कि आपके विचार और आपके शब्दों के कारण भी संचित होते हैं। कार्य, विचार और शब्द ये तीनों साथ-साथ चलते हैं।

व्यक्ति नकारात्मक कर्म किस प्रकार भोगता है?

व्यक्ति को अपने नकारात्मक कर्म उसके मानसिक, शारीरिक अथवा स्वास्थ्य, परिवार, धन, मुकदमे से संबंधित समस्याओं से होने वाले भावनात्मक कष्ट के रूप में भोगने पड़ते हैं। बीमारी ऐसा विकल्प हो सकता है, जिसे आपने अपने कर्मों का ऋण चुकाने की प्रक्रिया के रूप में चुना हो। नकारात्मक कर्म के पीछे यही तथ्य है कि आप इस पार्थिव जीवन का उपयोग अपना ऋण चुकाने के लिए कर रहे हैं। यह ऋण न केवल आपके पिछले जन्मों में उत्पन्न हुआ था बल्कि आपके इस जन्म में भी हुआ है। मन में यह धारणा न रखें कि आप केवल अपने पिछले जन्मों के बुरे कर्मों का हिसाब चुका रहे हैं। हो सकता है कि आप पृथ्वी पर एक बहुत छोटा कार्मिक ऋण लेकर आए हों, लेकिन यदि आप इस वक्त बुरे रास्ते पर हैं तो आप इस समय अपने जीवन के दौरान नकारात्मक कर्म का बोझ बढ़ाते रहते हैं। कर्म की समझ, वास्तव में मनुष्य के लिए बहुत ही उपयोगी है क्योंकि कई बार जब आपको जीवन में दु:खों का सामना करना पड़ता है, तब आप समझ नहीं पाते कि उन दु:खों का कारण क्या है। यह दु:ख ऐसी चीज है जिसे आपने खुद चुना है, क्योंकि यह आपके आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। यह जानकर, आप इन दु:खों का सामना गरिमा के साथ कर पाएँगे। कभी भी अपने किए हुए बुरे कर्मों को सुधारने का मौका न गवाएं। अपने अभिमान के चलते, इसे टालने के बजाए, इसी जीवन में पिछली समयस्याओं को सुधारने का अवसर मिलना, एक आशीर्वाद ही है। आप इसी जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के प्रति किए हुए अपने कर्मों का हिसाब चुका लें। इस तरह आप अपने कर्मों का हिसाब अगले जन्म में चुकाने का इंतजार करने की तुलना में इसी जन्म में अधिक आसानी से और जल्दी चुका पाएंगे। यदि आप अपने ग़लत कर्मों का हिसाब अभी नहीं चुकाते तो आपके नकारात्मक कर्म बढ़ते जाते हैं, क्योंकि आप ईश्वर के दिए हुए अवसर की अवहेलना करने का फैसला करते हैं।

बहुत से लोग मानते हैं कि दान-पुण्य करने से नकारात्मक कर्मों को मिटाया जा

सकता है। क्या यह सही है?

नहीं। आपको अपने बुरे कर्मों का हिसाब चुकाना ही पड़ता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितना दान-पुण्य करते हैं। इस तरह आप कभी भी अपने कर्मों को मिटा नहीं सकते। बहुत से लोग ऐसे हैं जिनमें यह ग़लत धारणा होती है कि हजारों का दान देने पर वे स्वर्ग प्राप्त कर लेंगे। यदि आप ऐसे उद्देश्य के साथ कोई भी अच्छा काम करेंगे तो आप स्वर्ग देखने की बात तो भूल ही जाएं। आप की दुनिया में सबसे बुद्धिमान न्यायाधीशों द्वारा किया गया न्याय भी कभी-कभी सही नहीं होता, लेकिन ईश्वर के नियम अपने आप में परिपूर्ण होते हैं और उन नियमों के कारण आपके साथ जो न्याय होता है वह बिल्कुल उचित होता है। यह न्याय कर्म के रूप में आपको प्राप्त होता है। यदि आप अपने लोगों से कुछ छिपाने की कोशिश करेंगे, तो यह छिपा रह सकता है, लेकिन ईश्वर से आप कुछ भी छिपा नहीं सकते। प्रत्येक विचार, शब्द और कर्म आपके अवचेतन मन द्वारा आपके आकाशिक रिकॉर्ड में दर्ज़ किए जाते हैं। चाहे आप मानें या न मानें, यही सच है।

आपने एक बात सबसे पहले कही थी, "बहादुरी और मुस्कान के साथ अपनी सर्भ समस्याओं का सामना कीजिए, "लेकिन जब लोग कष्ट झेल रहे हों, तब यह कैसे संभव हो सकता है?

अपनी समस्याओं का सामना बहादुरी और मुस्कान के साथ करना बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि आपको अपने कर्मों का हिसाब चुकाना है, इसलिए आप इससे दूर न भागें। यदि आप शिकायत करते हैं और चिढ़ते हैं, खुद को दयनीय स्थिति और निराशा में डालते हैं, अपनी तकलीफ को एक बहुत बड़ा मुद्दा बना देते हैं और इस तरह अपने प्रियजनों और आपकी मदद करने वाले लोगों को भी मुश्किल में डालते हैं, तो आप अपने कर्मों का हिसाब बिल्कुल चुका नहीं रहे, बल्कि आपके बुरे कर्मों का बोझ और बढ़ सकता है। अथवा, यदि आप इसे चुका रहे हों तो चुकाने की गति बहुत ही धीमी होती है और आपकी तकलीफों का कोई अंत नहीं है, ऐसा आभास होता है। इस प्रकार आप अपनी समस्याओं को दु:ख का रूप दे रहे हैं। लेकिन यदि आप अपनी समस्याओं का सामना बहादुरी के साथ करते हैं, तो आप धैर्य और साहस के साथ अपनी जीवात्मा को बल देते हैं। आप समस्याओं की प्रकृति से वाक़िफ़ होते हैं और उनसे ऊंचे स्तर पर आध्यात्मिक तरीके से निपटते हैं। इसलिए अपनी समस्याओं के दौरान मुस्कुराते रहिए, सकारात्मक बने रहिए और अपनी तकलीफों का गरिमा के साथ सामना करें। गरिमा का सामान्य अर्थ यह है कि आप अपना आत्मसम्मान बनाए रखें, ईश्वर और उनके न्याय में आपका पूरा विश्वास हो और आप में हास्यबोध भी हो, और इन सब के बीच, परिस्थिति की गंभीरता और उसके महत्व का भी आपको अहसास हो। गंभीर से गंभीर परिस्थिति का सामना हल्के मन से करें। जब आप ऐसा करते हैं, तब जीवात्माएं आपको अपने कर्मों का सामना करने में सहायता कर पाती हैं। जब आप साहस और गरिमा दिखाते हैं, तो आप ईश्वर के समक्ष यह प्रस्तुत कर रहे होते हैं कि आप अपनी राह में आई हुई समस्याओं का सामना, आध्यात्मिक तरीके से, बिना

किसी को दोष दिए, और बिना क्रोधित या नकारात्मक हुए, कर सकते हैं। आप अपने अवचेतन मन से संचालित होते हैं और जीवात्माएं आपके लिए प्रार्थनाएं करने में सक्षम होती हैं ताकि आपको अपनी समस्याओं का सामना करने की शक्ति मिले। जीवात्माएं आपकी समस्याओं को दूर नहीं कर सकतीं, लेकिन जीवात्मा जगत से अतिरिक्त प्रार्थना और सुरक्षा हासिल कर आपको अपनी समस्याएं सुलझाने के लिए अधिक शक्ति प्राप्त होती है और आप अपने कर्मों का हिसाब सहजता से और जल्दी चुका पाते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि आपके कर्म कम हो जाते हैं; बल्कि इसका अर्थ यह है कि आपको उन्हें अधिक अच्छे तरीके से और जल्दी निपटाने की शक्ति और बुद्धि प्राप्त होती है।

लेकिन कभी-कभी ऐसा वक़्त भी आता है, जब मनुष्य को अकल्पनीय दुःख भोगना पड़ता है। उस समय ऐसा सोचना कि “यह मेरा कर्म है। मैं इसी लायक हूं।” यह बड़ा मुश्किल होता है?

हां, आपकी बात हम समझ सकते हैं। लेकिन हम आपसे स्वयं की निंदा करने को नहीं कह रहे। हम तो बस यह कह रहे हैं कि आप आध्यात्मिक नियमों को जानें और यह समझ लें कि मनुष्य के साथ जो कुछ भी होता है वह उसके अपने फैसलों के कारण होता है। इसका यह अर्थ नहीं कि आपके साथ जो कुछ बुरा होता है वह आपकी ग़लती है। वह सब इसलिए होता है क्योंकि आपमें जागरूकता की कमी है। जिस वक़्त आप ग़लती करते हैं, उस वक़्त आप पूरी तरह सजग नहीं होते, कि यह गलत है। अथवा, यदि आप सजग थे, तो हो सकता है कि आपमें जो सही है, वह कर्म करने की ताक़त न रही हो। अतः, ऐसी भी परिस्थितियां आती हैं जब मनुष्य को भयानक कष्टों से गुज़रना पड़ता है, जब की वह उनके अपने कर्मों का फल नहीं होता। ऐसा तब होता है जब कोई अन्य मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छा का ग़लत प्रयोग दूसरों को कष्ट देने के लिए करता है। दुर्भाग्य से, मनुष्य जब पृथ्वी पर दुबारा जन्म लेता है, तब उसे यह जोख़िम उठाना पड़ता है। समाधान केवल एक ही है कि आप प्रबलता बनाएं रखें और ईश्वर पर नाराजगी न जताएं। ईश्वर से अपना बचाव करने और आपको स्वस्थ करने में मदद करने की प्रार्थना करें।

कभी-कभी लोग न केवल नकारात्मक कर्म से बल्कि अपने जीवन में घटित होने वाली अच्छी चीजों से भी डरते हैं। उन्हें लगता है कि किसी भी क्षण यह सब कुछ उनसे छिन जाएगा। अपने बुरे कर्मों का सामना बहादुरी के साथ करना महत्वपूर्ण है, लेकिन महत्वपूर्ण यह भी है कि आप अपने अच्छे कर्मों को गरिमा पूर्वक स्वीकार करें। यह वास्तव में आश्चर्य की बात है कि बहुत से लोग ऐसे भी हैं जिन्हें यह नहीं पता होता कि जीवन में आने वाली अच्छी चीजों को स्वीकार कैसे किया जाए।

सबसे पहले तो, **अपने जीवन में आने वाली हर अच्छी चीज के लिए ईश्वर को धन्यवाद दें।** यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। पृथ्वी पर, लोग बुरे समय में ईश्वर से मदद तो मांगते हैं, लेकिन जब अच्छा समय आता है तब वे बड़ी आसानी से ईश्वर को भुला देते हैं। यदि आप ईश्वर को

दु:ख की घड़ी में याद करते हैं तो सुख के क्षण में भी उन्हें याद करना मत भूलिए। उनके साथ रहने के आनंद का अनुभव करें। आखिर हम सब उन्हीं की तो संतान हैं। जब हम आध्यात्मिक रूप से प्रगती करते हैं, अथवा जब हम अपना जीवन कार्य पूर्ण करते हैं, तब वे प्रसन्न होते हैं। वे हमारी झोली में वह सारे आशीर्वाद और खुशीयां डालना चाहते हैं जिन्हें हम संभाल सकें।

दूसरी बात, आपकी जीवन-यात्रा में जिन लोगों ने आपकी सहायता की हो – आपके परिवार जन, दोस्त या कोई भी अन्य व्यक्ति जिसने आपकी सहायता की हो, और जीवात्मा जगत में आपके फ़रिश्ते – उन सब का शुक्रिया अदा करें। उनके योगदान को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। बिना आपकी जानकारी के, आपके फ़रिश्तों ने कई बार मुसीबतों से आपकी रक्षा की है और आपको उस समय प्रोत्साहन दिया है जब आपको उसकी जरूरत सबसे अधिक थी। इसलिए, मन ही मन में, हमेशा उनके शुक्रगुज़ार रहिए और ईश्वर से उनपर कृपा करने की प्रार्थना कीजिए। पृथ्वी की आत्माएं सर्वशक्तिमान ईश्वर से ज़रूर प्रार्थना कर सकती हैं कि वह जीवात्मा जगत में उनके प्रियजनों, उनके जीवात्मिक मार्गदर्शक और अन्य फ़रिश्तों पर कृपा करें।

तीसरी बात, अच्छे कर्मों की सराहना करने की राह में अपराधबोध भी आता हैं। पृथ्वी पर मनुष्यों को ग़लत कारणों से भी अपराधबोध का अहसास कराया जाता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें दूसरों के अन्दर अपराधबोध पैदा करने में आनंद आता है। ऐसे लोगों के सामने न झुकें, चाहे वे आपके कितने ही क़रीबी क्यों न हों। वे हमेशा अपनी तुलना आपसे करेंगे और आपके जीवन में जो कुछ भी आशीर्वाद स्वरूप है, उसके बारे में आपको बुरा सोचने पर मजबूर कर देंगे। यह बिल्कुल साफ-साफ समझ लें कि यदि आप सच्ची राह पर हैं और आपको अपने जीवन में अच्छे अनुभव होते हैं, तो यह इसलिए कि आप उस योग्य हैं। तो फिर, आप अपने मन में अपराधबोध क्यों पालें? यदि किसी को वह आशीर्वाद नहीं मिला है, जो आपको प्राप्त हुआ हो, तो इसका भी कोई कारण होगा। हो सकता है कि अपनी आध्यात्मिक यात्रा में वे ऐसे स्तर पर हों, जहां वे अपने कर्मों का हिसाब चुका रहे हैं। अथवा हो सकता है कि यह उनके परीक्षा और प्रशिक्षण से गुज़रने का समय हो। बेशक उनकी मदद कीजिए और उन्हें सहारा दीजिए, **लेकिन उनकी खुद के प्रति दयनीयता भरी भावनाओं के सामने मत झुकिए और न ही आपको अपने जीवन में मिले हुए आशीर्वादों पर सवाल खड़े करें।** कुछ ऐसी आत्माएं होती हैं जो ग़लत राह पर चल रही होती हैं और उन्हें अपने बुरे कर्मों का हिसाब चुकाना पड़ता है। एक बार जब वे सही राह पर आ जाएंगी, तब उनका भी जीवन बदल जाएगा। आप यह नहीं जानते कि जीवात्मा जगत में उन्होंने क्या चुना है। जो भी अच्छे अनुभव आपको जीवन में मिलते हैं, उनका आनन्द लें और उनके लिए कृतज्ञ बनें।

अपने जीवन में मिले सौभाग्य के लिए कृतज्ञ होने का तरीका यह है कि आप इसे किसी दूसरी भली आत्मा के साथ बाँटें। आपके जीवन में क्या कुछ घटित हो रहा है इसे प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करने की कोई जरूरत नहीं। हर बात विस्तार से व्यक्त करने की जरूरत नहीं। वास्तव में, अपने जीवन की अच्छाईयों के विषय में, आपको शांत रहना चाहिए, और कुछ भरोसेमन्द लोगों के

अलावा, इसकी चर्चा किसी से नहीं करनी चाहिए, अन्यथा इससे नकारात्मक ऊर्जा आकर्षित होगी। लेकिन यदि आप अपने साथ हुई किसी अच्छी घटना से खुश हैं, तो अपनी इस ख़ुशी को दूसरों के साथ बांटिए। दूसरों को ख़ुशी दीजिए। और, यदि आप एक प्रबल ओहदे पर हैं तो इसका उपयोग दूसरे अच्छे लोगों की मदद करने में कीजिए। दरअसल ऐसा करने के उद्देश्य से ही, आपको उस ओहदे पर रखा गया है। खुद को मिले आध्यात्मिक वरदानों का आनंद लीजिए और उनका उपयोग अन्य भली आत्माओं की सहायता करने में कीजिए।

वे कौन सी बातें हैं जो नकारात्मक कर्म उत्पन्न करती हैं?

१. खुद को नुकसान पहुंचाना। उदाहरण के लिए, आपका अपनी सेहत का ख़याल नहीं रखना। ड्रग्स, धूम्रपान, शराब पीना, जरूरत से अधिक खाना, अच्छा पोषण न लेना, कसरत न करने जैसी बुरी आदतें, और सबसे महत्व कि बात यह है कि नकारात्मक सोच और ऐसे कर्म आपकी आत्मा को नष्ट करते हैं।

२. दूसरों को नुकसान पहुंचाना। दूसरों को शारीरिक अथवा भावनात्मक रूप से नुकसान पहुंचाने के कारण नकारात्मक कर्म उत्पन्न होते हैं। भावनात्मक कष्ट भी उतना ही बुरा होता है जितना शारीरिक कष्ट।

३. हालातों की सच्चाइयों का सामना न करना और उनसे मुंह छुपाकर वास्तविक समस्याओं से अच्छी तरह नहीं निपटना।

४. नकारात्मक आत्माओं के बुरे आचरण को सहन करने से भी बुरे नकारात्मक कर्म उत्पन्न होते हैं। उन्हें यह जरूर समझाइए कि वे कहां ग़लत हैं। यदि वे आपकी बात नहीं सुनते तो यह उनकी मर्जी है, लेकिन उन्हें अपना फायदा उठाने की अनुमति न दें। **दुष्टता को कभी भी बढ़ावा मत दीजिए।** दुष्ट व्यक्ति के प्रति कभी भी अच्छे मत बनिए। यदि आप दुष्ट व्यक्ति के प्रति अच्छे बनते हैं तो आप उसका हौसला बढ़ाते हैं और दुष्ट आत्मा का हौसला बढ़ाने का मतलब है कि आप भी उसी पाप की श्रेणी में शामिल हो जाते हैं। इसलिए अपने अवचेतन मन को तेजी से उन्नत कीजिए ताकि आप एक दुष्ट व्यक्ति को आसानी से पहचान सकें।

५. जिम्मेदारी से मुंह मोड़ने के कारण भी नकारात्मक कर्म पैदा होते हैं। उदाहरण के लिए आपका अपने माता-पिता, बच्चों और प्रियजनों के प्रति अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़ लेना।

६. दूसरों को बुरा करने के लिए उकसाना और उन्हें बुरी राह, जैसे– ड्रग्स के धंधे इत्यादि, पर ले जाना।

७. अपने बच्चों को बिगाड़ना। इस कारण भी आप नकारात्मक कर्म उत्पन्न करते हैं क्योंकि बच्चों को अच्छी तरह प्रशिक्षित करना आपकी जिम्मेदारी होती है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों की बात सुनें, क्योंकि बच्चे का अवचेतन मन जागृत होता है और बच्चा

अपने सहजबोध द्वारा संचालित होता है। लेकिन यह जरूर ध्यान रखें कि अपने स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के लिए बच्चा कहीं आपको बेवक़ूफ़ न बना रहा हो।

८. पृथ्वी पर अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य को पहचानने और उसे पूरा करने में असफल रहना।

९. आत्महत्या करना। यदि आप अपनी आत्मा को उसकी यात्रा पूरी नहीं करने देते, तो आप नकारात्मक कर्मों का एक अम्बार खड़ा कर लेते हैं और आप **एक पूरा लोक नीचे गिर जाते हैं।** उस जीवन और परिस्थितियों को आप समाप्त कर देते हैं, जिसे आपने खुद चुना होता है। आपके द्वारा चुनी गई अंतिम तारीखें ईश्वर के नियमों के अनुरूप होती हैं। आपको जीवन देने वाला ईश्वर है, इसलिए इसे समाप्त करने का अधिकार आपको नहीं है।

१०. सही कदम नहीं उठाना। कभी-कभी लोग जो सही है उसके लिए जिम्मेदारी नहीं लेते अथवा उनमें साहस की कमी होती है। वे ग़लत फैसले करते हैं क्योंकि सही करने के लिए अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करने की बजाए वे एक मूक दर्शक बने रहते हैं।

११. 'मौज-मस्ती' की इच्छा रखना। नौजवान यह सोचते हैं कि जब तक वे युवा हैं उन्हें "जीवन का अनुभव" लेना चाहिए और इस बहाने का प्रयोग वे बुरे काम करने में करते हैं। **पृथ्वी पर अपनी जीवन यात्रा का आनंद लेना महत्वपूर्ण है लेकिन अपनी आत्मा को दांव पर लगा कर नहीं।**

हमेशा याद रखिए कि यदि आध्यात्मिक ज्ञान रखते हुए आप ग़लत निर्णय करते हैं, तो आध्यात्मिक ज्ञान न होते हुए ऐसा करने की तुलना में आप अधिक नीचे गिरते हैं और अधिक कर्मों का निर्माण करते हैं।

कोई व्यक्ति पृथ्वी पर अपने कर्मों का हिसाब कैसे चुकाता है?

कर्मों का हिसाब चुकाने के बारे में यहां कुछ निर्देश दिए जा रहे हैं:

१. समस्याओं को स्वीकार कीजिए। जो कोई भी बाधा हो, उससे किसी भी हाल में पीठ मोड़कर मत भागिए।

२. स्थिति को बदलने की सच्ची इच्छा रखिए और उसके साथ सही तरीके से निपटिए।

३. इस बात को समझ लिजिए कि यह आपके द्वारा जीवात्मा जगत में अपने विकास के लिए किए गए फैसलों, अथवा पृथ्वी पर आपके इस जीवन में किए गए फैसलों के परिणाम हैं। परीक्षा और प्रशिक्षण विकास के लिए एक अवसर है जो आपको उन्नति करने में मदद करते हैं। जब आप यह जान लेते हैं कि क्यों कोई घटना घटित होती है तो उसके लिए आपका विरोध कम हो जाता है और आप अपनी समस्याओं की ओर नकारात्मक रुख़ नहीं

रखते।

४. हर एक बाधा को परीक्षा के रूप में देखिए। यदि आप असफल हो जाते हैं तो आपको फिर से परीक्षा देनी होगी और यह हर बार अधिक कठिन होती जाएगी।

५. सकारात्मक बनिए और ईश्वर में विश्वास रखिए। प्रार्थना कीजिए। ईश्वर से अपने लिए बल और बुद्धि मांगिए।

६. कोशिश कीजिए कि आपके कर्मों में और ज्यादा संचार न हो। समझदारी से कार्य करें। याद रखिए कि छोटे से छोटे पाप की भी गिनती होती है। जिस तरह सागर के निर्माण में छोटी से छोटी बूंद का भी योगदान होता है, उसी तरह आपके कर्म में भी। छोटे से छोटा कर्म, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, अपना परिणाम छोड़ता है।

७. जीवन यात्राओं की तुलना न करें। यह सवाल मत उठाइए कि आप क्यों दु:ख भोग रहे हैं, दूसरे क्यों नहीं। यह विचार ही अपने आप में ग़लत है और यह आपको विकास करने से रोकता है।

८. भौतिक मन को नियंत्रित रखिए और अवचेतन मन की आवाज़ सुनिए। मुसीबत के क्षण में यह शांत रहता है और आपका मार्गदर्शन करता है।

९. अपने जीवन की परिस्थितियों के लिए कभी भी दूसरे को दोष मत दीजिए। अपनी जिंदगी की जिम्मेदारी आप खुद लीजिए। आप जब भी चाहें खुदको बदल सकते हैं। ज्यादातर, लोग कमजोर होते हैं क्योंकि वे यही चाहते हैं।

१०. यहां तक कि जब आप समस्याओं से घिरे हों, अथवा दु:ख का अनुभव कर रहे हों, तब भी छोटे-छोटे भले कर्मों के जरिए दूसरों की मदद करें। आपकी समस्याओं की ओर से ध्यान हटाने वाले ये कार्य, आपके लिए मददगार साबित होंगे। यह जरूर निश्चित कर लें कि आपका उद्देश्य शुद्ध हो। जब आप दूसरों की मदद करते हैं, ईश्वर आपको आपकी समस्याओं का सामना सहजता से करने की शक्ति देते हैं और साथ ही आपको उन लोगों की दुआ भी मिलती है जिनकी आपने मदद की हो।

११. कर्म कीजिए। आप जो कर सकते हैं, अच्छे से अच्छा करें और बाकी ईश्वर पर छोड़ दें।

क्या ‘परीक्षा’ और ‘प्रशिक्षण’, कर्म ही हैं?

वे कर्म नहीं हैं, लेकिन कर्म से जुड़े जरूर हैं। जीवात्मा जगत में रहते हुए आप निम्नलिखित कारणों से पृथ्वी पर आने का विकल्प चुनते हैं:

१. कर्मों का हिसाब चुकाना।

२. परीक्षा और प्रशिक्षण का अनुभव करना।

३. अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य को पूरा करना, जो पृथ्वी पर आपके होने का वास्तविक कारण है।

४. अपने प्रियजनों की रक्षा करना।

ये चार चीज़ें एक साथ मिलकर पृथ्वी पर आपके मार्ग का निर्माण करती हैं।

आपकी राह में आने वाली सभी समस्याएं कर्म से जुड़ी नहीं होतीं। मुश्किलें आपकी राह में परीक्षा और प्रशिक्षण के रूप में आती हैं, ताकि आप अपनी कमज़ोरियों अथवा नकारात्मक आत्मिक गुणों से परिचित होकर सकारात्मक आत्मिक गुणों को विकसित कर सकें। यदि कर्म आपका ऋण या आपको मिलने वाला उपहार है, तो **प्रशिक्षण** आपकी तैयारी है। आप इस अनुभव को पाने का फैसला करते हैं, ताकि आप अपनी **परीक्षा** में सफल होने की तैयारी कर सकें। जीवात्मा जगत में उच्च भली आत्माओं की मदद से आप उस प्रशिक्षण को चुनते हैं जिसे आप पृथ्वी पर अपने जीवन काल में पूरा करना चाहते हैं। आप यह भी चुनते हैं कि आप किन विशेष आत्मिक गुणों की परीक्षा देना चाहेंगे। बहरहाल, परीक्षाओं की प्रकृति, उनका विस्तार और उनका समय आपके द्वारा तय नहीं किया जा सकता, बल्कि आपके अवचेतन मन द्वारा अपने आप तय किया जाता है। उदाहरण के लिए, युनिवर्सिटी में आप अपनी पसंद के विषय चुनते हैं, हालांकि साल के अंत में आप अपनी परीक्षा के प्रश्नपत्र के लिए प्रश्नों का चयन नहीं करते। जीवन के अलग-अलग दौर में ऐसी अनेक परीक्षाएं आपके सामने आएंगी और आपको उनका सामना तब-तक करते रहना होगा जब-तक कि आप उनमें बिल्कुल अच्छी तरह सफल न हों। प्रशिक्षण आपकी जीवात्मा को सबल बनाता है और आपको कुछ सच्चाइयों से परिचित कराता है। प्रशिक्षण आपकी आत्मा को कुछ ऐसे गुण प्रदान करता है जो आपके लिए परीक्षाओं में सफल होने और अपना जीवन कार्य पूरा करने में आपकी मदद करते हैं। प्रशिक्षण कई प्रकार की परिस्थितियों के रूप में होता है जिनका आपको सामना करना पड़ता है और इससे आपको सीखने और विकास करने में मदद मिलती है। प्रशिक्षण कई रूपों में हो सकता है, जो आपकी आत्मा की ज़रूरतों के आधार पर आपके द्वारा चुने गए विकल्पों पर निर्भर करता है। तब आपकी इस बात के लिए परीक्षा ली जाएगी कि आपने उन सच्चाइयों या शिक्षाओं को सीखा है, या नहीं और वे आपके जीवन के अंग बने हैं, या नहीं।

आपने आध्यात्मिक पाठ सीखे हैं, या नहीं, इसे तय करने के लिए परीक्षाएं होती हैं।

जब आप कोई पाठ अच्छी तरह सीख लेते हैं तो उसकी परीक्षा दुबारा नहीं ली जाती। आप एक विशेष परिस्थिति से गुज़रकर उसके पार निकल चुके होते हैं, जिसका यह अर्थ होता है कि आप इस संघर्ष के उच्चतर अभिप्राय को समझ चुके हैं।

मान लें आपको अपनी सफलता पर घमंड है। आप ऐसे हालातों से होकर गुजरेंगे जिनमें आप

असफलता का अनुभव करेंगे, और यही आपका प्रशिक्षण होगा। यदि आप इस असफलता के स्वभाव को समझ लें, कि इसे आपके सामने इसलिए रखा गया है ताकि आप विनम्रता का पाठ पढ़ सकें, और आप वास्तव में विनम्र बनते हैं, तो आपने सबक सीख लिया होता है और इस तरह आप परीक्षा में सफल होते हैं। आप एक नकारात्मक आत्मिक गुण (अहंकार) को हटाकर, एक सकारात्मक आत्मिक गुण (विनम्रता) ग्रहण करते हैं। जब यह परिवर्तन सच्चे रूप से होता है तो आपकी परीक्षा सही मायने में सफल होती है। इस तरह आपकी आत्मा प्रशिक्षित होती है। ज्यों-ज्यों आप आध्यात्मिक रूप से प्रगति करते हैं, आपकी परीक्षाएं और आपके प्रशिक्षण की प्रकृति उच्च रूप की होती जाती है और आपको जीवात्मा जगत से अतिरिक्त मदद हासिल होती है।

परीक्षाओं का अस्तित्व इसलिए भी होता है, ताकि वे आपके नैतिक बल को परख सकें। क्या आप इस तथ्य को अन्देखा कर आसान रास्ते को चुनेंगे, जब कि ऐसा करना नैतिक रूप से ग़लत है, अथवा आप मुश्किल होते हुए भी सही राह को ही चुनेंगे? कर्म, परीक्षा और प्रशिक्षण आपस में जुड़े हुए हैं, लेकिन वे एक ही बात नहीं हैं। कहने का मतलब यह, कि चाहे कोई भी परिस्थिति आपके सामने आए, उसका साहसपूर्वक और ख़ुशी-ख़ुशी सामना करें, लेकिन हर हाल में सजग रहें। **परीक्षाएं आपके सामने तब आती हैं जब आप दूर-दूर तक उनकी उम्मीद नहीं करते।**

आध्यात्मिक परीक्षा अचानक होती है। आपने सचमुच आध्यात्मिक सबक सीख लिया है, या नहीं इसे जानने का केवल यही एक रास्ता है। आध्यात्मिक रूप से सजग होने के लिए अपने अवचेतन मन से संचालित हों ताकि आप स्वाभाविक रूप से वही करेंगे जो सही है। यदि आप भौतिक मन से संचालित होते हैं तो आध्यात्मिक परीक्षा की घड़ी में आप ग़लत स्नायु (अर्थात् भौतिक मन) का प्रयोग कर रहे होते हैं। इसलिए, हो सकता है कि आप परीक्षा में बेहतर न कर पाएं या पूरी तरह असफल ही हो जाएं। परीक्षा की घड़ी में डर से स्तब्ध रह जाते है या फिर क्रोधित और तनावग्रस्त होने से शुरुआत में ही अवचेतन मन से आपका संपर्क टूट जाता है और आपकी दिशा ग़लत हो जाती है। आप ग़लत पेशी अर्थात् भौतिक मन को सक्रिय कर लेते हैं। आपकी शुरुआत ही सबकुछ है। ज्यों ही आप ग़लत पेशी को सक्रिय करते हैं आप इसी का प्रयोग करते रह जाते हैं। आखिरकार जब आप परीक्षा में असफल हो जाते हैं तब आपको अनुभव होता है कि आपने क्या कर लिया है। जब आप किसी परीक्षा में असफल होते हैं, आपको दुबारा इसका सामना करना पड़ता है, लेकिन अब यह पहले से अधिक कठिन हो जाती है। आपको सबक तो वही सीखना होता है, लेकिन अब जो परीक्षा आपको देनी होती है वह अलग प्रकार की होती है। इस तरह आध्यात्मिक परीक्षा अचानक होती है। जब तक आप सबक सीख नहीं लेते, वही समस्याएं आपके सामने बार-बार तब तक आती रहती हैं जब तक आप उन पर विजय नहीं प्राप्त कर लेते।

दूसरा नियम है, आप ज्यों-ज्यों आध्यात्मिक रूप से प्रगति करते हैं आपकी परीक्षा कठिन होती जाती है। यह ऐसा ही है कि स्कूल में आप जैसे-जैसे ऊपर के दर्ज़े में जाते हैं, आपको कठीन

परीक्षा से गुज़रना पड़ता है। यदि आपके पास आध्यात्मिक ज्ञान है और आप तब भी अपनी समस्याओं से भाग रहे हैं, तो आपका पतन अधिक तेजी से होगा। भागने का आपका कारण चाहे जो भी हो-डर, अहंकार या अन्य कुछ भी, आध्यात्मिक नियम यह है कि यदि आपके पास ज्ञान है, तो अपने कर्मों को स्वीकारने, प्रशिक्षण से गुज़रने और अपनी आध्यात्मिक परीक्षाओं में सफल होने की आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है।

पृथ्वी पर ऐसे बहुत से लोग हैं जो बड़े ज्ञानी हैं लेकिन वे निम्न लोकों से संबंधित हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि ज्ञानी होने के बावजूद वे अपने ज्ञान का उपयोग अपने सुधार के लिए नहीं करते। यदि वे बुरी राह पर चलें तो उन्हें कोई बचा नहीं सकता, यहां तक कि यदि वे अपने ज्ञान को दूसरों में बांटें तब भी नहीं। इसलिए, आध्यात्मिक ज्ञान वास्तव में आपको अधिक नीचे भी गिरा सकता है। ज्ञान होने के बावजूद ग़लत करना यह दिखाता है कि आध्यात्मिक नियमों की आप पूरी तरह अवहेलना करते हैं और इससे आपके कर्मों का ऋण बढ़ेगा। एक ही तरह के बुरे कार्य करने वाले दो लोगों का पतन अलग-अलग हो सकता है। जिसके पास ज्ञान है, वह व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से अधिक नीचे गिरेगा और अधिक नकारात्मक कर्म संचित करेंगा।

क्या आप हमें आध्यात्मिक परीक्षाओं के कुछ और उदाहरण दे सकते हैं?

१. डर। आपके डर की परीक्षा होगी क्योंकि आपको साहसी होने की जरूरत है।

२. शक्ति। आपके हाथों में कोई बड़ा पद और क्षमता सौंपी जाती है, ताकि यह देखा जा सके कि आप इसका प्रयोग भलाई के लिए करते हैं या नहीं।

३. धन। कभी-कभी आपको धनवान बनाया जाता है, ताकि यह देखा जा सके कि इससे आप एक इंसान के तौर पर कहीं बदल तो नहीं जाते, अथवा आपको कभी-कभी भ़रपूर धन नहीं दिया जाता, ताकि यह देखा जा सके कि आपके अन्दर अब भी संतोष है या नहीं।

४. वरदान। आपको कोई वरदान या प्रतिभा यह देखने के लिए दी जाती है कि आप इसका उपयोग कैसे करते हैं-अच्छे के लिए या बुरे के लिए।

५. क्षमा। आपका कोई क़रीबी आपको दु:ख पहुंचा सकता है। ऐसे में नकारात्मक बनकर उस व्यक्ति पर क्रोधित होने के बजाए क्या आप उचित कदम उठाते हुए, अर्थात् अपनी अंदरूनी स्थिति को बदलकर और सकारात्मक सोच के साथ, उसे क्षमा कर सकते हैं?

कर्मों का हिसाब चुकाने में अवचेतन मन की क्या भूमिका होती है?

आप एक भली आत्मा हों, तो इसलिए आपके कर्म आप तक तेज़ गति से पहुंचते हैं, क्योंकि आपका अवचेतन मन जागृत होता है। इसका अर्थ यह है कि यदि आप थोड़ा भी ग़लत करें तो

आपको आपके कर्मों के फल तुरंत मिलेंगे और आप उसका हिसाब भी जल्दी चुका पाएंगे। लेकिन, यदि आपका अवचेतन मन सुप्त है, तो आपके कर्म जमा होने लगते हैं और उनका हिसाब चुकाने में आपको देर लगेगी। समय के साथ, बहरहाल, किसी न किसी रूप में आपके कर्म आप तक जरूर पहुंचते हैं। ऐसा न सोंचें कि दुष्ट आत्माओं को बुरा करने की छूट मिली होती है। उनके कर्म संचित हो रहे हैं जिनका भुगतान उन्हें करना ही होगा।

परंतु, यही नियम व्यक्ति की परीक्षा और उसके प्रशिक्षण पर लागू नहीं होता है। मनुष्य अपनी परीक्षा और प्रशिक्षण से बचकर निकलने का फैसला कर सकता है। यदि आपका अवचेतन मन सुप्त है तो इस कारण आप अपने आध्यात्मिक विकास के लिए जरूरी अपनी परीक्षा और प्रशिक्षण से वंचित रह जाते हैं। साथ ही, आप कभी पृथ्वी पर अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य और उद्देश्य को नहीं जान पाएंगे। जब आप आध्यात्मिक पथ पर नहीं होते, तब आपने खुद को उसी रास्ते से भटकाने के लिए अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग किया होता है, जिसे आपने जीवात्मा जगत में चुना था। आपका अब ऐसी परिस्थितियों और ऐसे लोगों से सामना नहीं होता जो आपकी आत्मा के प्रशिक्षण के लिए आवश्यक होते हैं। इसके बजाए, आपको ऐसी परिस्थितियां और ऐसे लोग मिलते हैं जो आपके अहंकार का पोषण करते हैं और आपको पूरी तरह एक भौतिकवादी और सांसारिक व्यक्ति बना देते हैं। फिर तो आप अपनी जीवात्मा के महत्व को ही भूल जाते हैं। आपकी जीवात्मा का पोषण पूरी तरह ठप पड़ जाता है और आप इसी स्थिति में ख़ुश रहने लगते हैं। लेकिन यह ख़ुशी एक धोखा है, क्योंकि यह पूरी तरह भौतिक मन की उपज है। आध्यात्मिक राह से दूर हटकर पृथ्वी पर कुछ लोग आराम का अनुभव करते हैं और भौतिक मन से आने वाली झूठी शांति का अनुभव पा कर संतुष्ट हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें परिवर्तन और सुधार के लिए होने वाले संघर्षों से होकर नहीं गुज़रना पड़ता। वे अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए सही तरीके नहीं चुनना चाहते और उनसे बच निकलने के लिए आसान रास्ते पर चल पड़ते हैं। शांति का यह झूठा अनुभव आपको अपने ही अहंकार द्वारा कराया जाता है, क्योंकि यह नहीं चाहता कि मनुष्य द्वारा उसे नष्ट किया जाए।

क्या यही कारण है कि पृथ्वी पर इतना अधिक अन्याय दिखाई पड़ता है – निम्न आत्माओं का अवचेतन मन सुप्त होता है और इसी कारण, उनका अपनी परीक्षा और अपने प्रशिक्षण की ओर मार्गदर्शन नहीं होता?

यह अन्याय जैसा दिखता है लेकिन याद रखिए कि इन आत्माओं ने बुरे कर्म संचित कर रखे हैं। वे अपने प्रशिक्षण और परीक्षा का सामना भी नहीं करते। यह सब कुछ दर्ज होता जाता है। यह सब कुछ संचित होता है और नकारात्मक आत्माओं को आखिरकार इस सच्चाई का सामना करना ही पड़ता है। पृथ्वी पर, इन आत्माओं के पास ओहदा होता है और वे इससे ख़ुश दिखाई पड़ती हैं। साथ ही, पृथ्वी पर स्पंदन अभी नकारात्मक हैं, इसलिए यह नकारात्मक स्पंदन नकारात्मक आत्माओं की मदद करते हैं। दुर्भाग्य से, यह नकारात्मक स्पंदन भली आत्माओं को भी प्रभावित करता है। ये नकारात्मक आत्माएं अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग दूसरों को

नुकसान पहुंचाने में करती हैं और फलस्वरूप भली आत्माओं को कष्ट भोगना पड़ता है, जबकि यह उनकी परीक्षा, उनका प्रशिक्षण या कर्मों का फल नहीं होता।

उदाहरण के लिए, हत्या कभी भी ईश्वर की योजना का हिस्सा नहीं होती। यह ऐसी चीज नहीं होती जिसे आप जीवात्मा जगत में कर्मों का हिसाब चुकाने अथवा परीक्षा और प्रशिक्षण से गुज़रने के लिए चुन सकते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी की हत्या करता है और यह आत्मरक्षा के लिए नहीं की गई होती है, अर्थात् यदि हत्या पूर्वनियोजित है, अथवा बदले की भवना से की गई है, तो परिस्थिति चाहे कुछ भी हो, हत्यारे को सीधे जीवात्मा जगत के निम्नतम लोक में जाना पड़ता है और बड़े पैमाने पर उसके नकारात्मक कर्म निर्मित होते हैं। इस जीवन में किसी की हत्या करने का यह अर्थ नहीं कि भविष्य के जीवन में कोई आपकी या आपके किसी क़रीबी की हत्या कर देगा। ईश्वर कभी भी हत्या जैसे पाप को आध्यात्मिक योजना का हिस्सा नहीं बनने देंगे, क्योंकि ऐसी चीजें जीवात्मा जगत में चुनी ही नहीं जा सकतीं। निम्नस्तरीय आत्मा को पृथ्वी पर अगले जन्म में बेहद कठिन परीक्षाओं और कष्टों से होकर गुज़रना पड़ता है और ऐसी आत्मा को चौथे लोक तक पहुंचने में भी काफी लंबा समय लग जाता है।

लेकिन ऐसी भली आत्माओं का क्या होता है जिन्होंने निर्दोष होकर भी अपने किसी प्रियजन को खोया हो?

जब आप जीवात्मा जगत में होते हैं, तब आपको पता होता है कि पृथ्वी किस प्रकार की जगह है। तब आपको पता होता है कि पृथ्वी के जोख़िम क्या होते हैं और आप यह भी जानते हैं कि कोई नकारात्मक आत्मा अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग आपको नुकसान पहुंचाने में कर सकती है। यह सब जानकर भी आप पृथ्वी पर जन्म लेने का फैसला करते हैं क्योंकि आप जीवात्मा जगत की तुलना में पृथ्वी पर अधिक तेज़ गति से उन्नति कर सकते हैं। यदि आप जोख़िम नहीं उठाते तो आप जीवात्मा जगत में ही रहेंगे और आपकी प्रगति धीमी होगी (कुछ असाधारण किस्सों को छोड़कर)। यही कारण है कि बहुत सी आत्माएं पुनर्जन्म लेना नहीं चाहती और यह सम्पूर्ण रूप से उन पर ही निर्भर करता है, क्योंकि जीवात्मा जगत में भी स्वतंत्र इच्छा प्रचलित होती है। स्वतंत्र इच्छा का नियम प्रत्येक ब्रह्मांड में प्रचलित होता है।

मान लीजिए एक नौजवान की हत्या हो जाती है। यह उसकी अंतिम तारीख नहीं थी, लेकिन धरती पर उसकी यात्रा पूरी होने से पहले ही उसके जीवन का अंत कर दिया जाता है। मान लीजिए इस नौजवान के माता-पिता अभी जीवित हैं और उन्होंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया है कि उन्हें इस तरह का दुःख भोगना पड़े। शारीरिक रोग जैसे प्राकृतिक कारण से बच्चे को खोना माता-पिता के कर्म हो सकते हैं, लेकिन किसी अप्राकृतिक कारण से नहीं।

यदि माता-पिता भली आत्माएं हैं, तो ईश्वर अपने फ़रिश्ते भेजेंगे, जो प्रार्थनाओं के जरिए उन्हें राहत देंगे और उन्हें भरपूर बल प्रदान किया जाएगा, ताकि वे इस दुःख को झेल सकें। माता-

पिता के ऐसे कर्म हो सकते हैं जिनका हिसाब चुकाना बाकी हो (पृथ्वी पर ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके पास हिसाब चुकाने के लिए कोई कर्म न हो) और यदि माता-पिता इसके लिए सहमत हों तो इस कष्ट का उपयोग उनके कर्म के भुगतान में किया जा सकता है। यह समझौता बिना उनके चेतन ज्ञान के किया जाता है। यह समझौता उनके अवचेतन मन और उनके संबंधित लोक की उच्च भली आत्मा के बीच होता है। वे अतिरिक्त प्रार्थनाओं और सुरक्षा के साथ जीते हैं और पृथ्वी पर अपनी जीवन यात्रा पूरी करते हैं। यदि वे इस जीवन यात्रा को अच्छी तरह व्यतित करते हैं, तो उनके कर्म का एक बड़ा हिस्सा मिट जाता है।

असह्य मुश्किलों की परिस्थितियों में, प्रवेशक एक दूसरा विकल्प है।

आइए मान लेते हैं कि आप पृथ्वी पर एक भली आत्मा हैं और आपकी स्थिति आपकी सहनशीलता और आपकी समझदारी से अधिक कठिन है। इसे इस तरह समझें कि आप पांचवें दर्जे में हैं और आपको दसवें दर्जे का इम्तिहान देना पड़े तो यह आपके लिए असंभव होता है। ऐसी स्थिति में, जीवात्मा जगत के पांचवें अथवा उससे ऊंचे लोक की एक भली आत्मा अथवा प्रवेशक पृथ्वी पर आकर आपके शरीर को ग्रहण कर लेता है। आपकी मानवीय आत्मा अस्थाई रूप से जीवात्मा जगत में चली जाएगी और जब मुश्किल समय बीत जाएगा, तब यह आपके शरीर में वापस लौट आएगी और वह जीवात्मा वापस जीवात्मा जगत में लौट जाएगी। केवल आपका अवचेतन मन ही इसे जान पाएगा। आपके अवचेतन मन और प्रवेशक के अवचेतन मन के बीच आपसी समझौते के कारण ऐसा होता है। प्रवेशक बड़े दुर्लभ होते हैं और वे केवल बहुत मुश्किल परिस्थितियों में ही पृथ्वी पर आते हैं। सावधानी के तौर पर, पृथ्वी पर जन्म लेने से पूर्व जीवात्मा जगत में आप अपने लिए एक प्रवेशक चुन लेते हैं, ताकि मुश्किल घड़ी में आपको उनकी मदद मिल सके।

क्या प्रवेशक और भूतबाधा एक ही चीज है?

नहीं। भूतबाधा और प्रवेशक एक ही चीज नहीं है। भूतबाधा स्वतंत्र इच्छा के विरुद्ध होती है। जीवात्माएं कभी भी पृथ्वी के मनुष्य वशीकरण नहीं करतीं। ऐसा केवल अवकाशी आत्माएं ही करती हैं। अवकाशी आत्माएं केवल नकारात्मक लोगों से ही आकर्षित होती हैं और उनके शरीर पर अपना नियंत्रण जमा लेती हैं। यह आध्यात्मिक रूप से ग़लत है, क्योंकि ऐसा करने के लिए वे मनुष्य के अवचेतन मन से अनुमति नहीं लेतीं और यह स्वतंत्र इच्छा के बिल्कुल विरुद्ध है।

भाग्य क्या है? क्या कर्म, परीक्षा और प्रशिक्षण भाग्य से अलग होते हैं?

जो लोग **भाग्य** में विश्वास रखते हैं वे इस तरह जीते हैं मानों वे शक्तिहीन हों। उन्हें लगता है कि चाहे वे कुछ भी करें "होगा वही जो पहले से तय है।" यह सोचने का सही तरीका नहीं है, क्योंकि

भविष्य की परिस्थितियां आपके वर्तमान कर्मों से निर्धारित होती हैं। यदि आप एक भली आत्मा हैं, तो आप अपनी परीक्षा और अपने प्रशिक्षण से केवल तभी गुजरेंगे जब आपका अवचेतन मन जागृत हो। आपके कर्म आपके पास अपने आप पहुंचेंगे और आप उनका भुगतान जल्द कर पाएंगे। साथ ही, आपको अतिरिक्त परीक्षा और प्रशिक्षण की ओर केवल तभी ले जाया जाएगा जब आप अपने वर्तमान प्रशिक्षण और परीक्षा में बिल्कुल सफल रहे हों। पहले से कुछ भी तय होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। सबकुछ आपके वर्तमान कर्मों पर आधारित होता है। कर्म चाहे अच्छे या बुरे हों, आपके पिछले और वर्तमान कार्यों के कारण उत्पन्न होते हैं, लेकिन आपके पास यह विकल्प होता है कि आप समस्याओं का सामना अच्छी तरह कर बुरी परिस्थितियों को बीत जाने दें। जीवात्माएं आपको शक्ति देंगी। भाग्य में विश्वास करने से आपके मन में यह धारणा बैठ जाती है कि चाहे आप कुछ भी कर लें आपकी परिस्थिति में परिवर्तन नहीं आएगा। इससे आपका संघर्ष बढ़ता जाएगा और अंतहीन जान पड़ेगा।

आपका भाग्य नहीं, बल्कि आप खुद अपनी परिस्थितियों के निर्माता होते हैं। पृथ्वी पर आपकी राह में जो भी अच्छा या बुरा आता है, वह वही होता है जिसे आपने खुद जीवात्मा जगत में, अपने इस जीवन या पिछले जीवन में किये अच्छे या बुरे कर्मों के फल के रूप में चुना होता है। यदि आप भाग्य में विश्वास रखते हैं तो आप यह मानने लगते हैं कि आपको जो कुछ भी मिलेगा वह तय है और आपके कर्मों का इससे कोई सम्बन्ध नहीं।

आशा है, कि कर्म के बारे में यह ज्ञान कुछ हद तक उस दु:ख की व्याख्या कर पाएगा जो मनुष्य अपने जीवन में सहता है। कर्म को उदास भाव से, डर के साथ अथवा चिंतित होकर नहीं देखा जाना चाहिए। यह आध्यात्मिक विकास के लिए जरूरी है। यदि आप किसी को मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक अथवा आध्यात्मिक रूप से चोट पहुंचाते हैं, तो यह चोट वापस आपकी ओर आएगी। इसी तरह शुद्ध मन से किए गए अच्छाई भरे छोटे-छोटे कार्मों के कारण मिलने वाले आशीर्वाद भी आपको मिलेंगे।

आध्यात्मिक आशीर्वाद और वरदान कभी भौतिक प्रकृति के नहीं होते। वे – सुखी परिवार, वफादार दोस्त, प्रतिभा, सुकून, पालतू जीवों, सच्चे गुरू अथवा मार्गदर्शक (जो सच्चे हों, पाखंडी नहीं), उच्चतर मानसिक क्षमताओं जैसे स्वचलित लेखन, प्रतिभाशाली संतान, अच्छी अभिव्यक्ति, निरोगकारी शक्ति, मानवता की सेवा के लिए आपके द्वारा किए गए अनुसंधान और आविष्कार, अच्छा स्वास्थ्य, आपके और आपके प्रियजनों के लिए नकारात्मकता से सुरक्षा, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक ज्ञान, समस्याओं से निपटने के लिए ईश्वर की ओर से दी गई शक्ति, अपने कर्मों के जल्द भुगतान का अवसर और अपने जीवन कार्य को अच्छी तरह पूरा करने तथा दूसरों की सहायता करने के लिए प्रतिभाओं के रूप में आपको मिलते हैं।

ऋण चुकाने ही पड़ते हैं। अपनी परीक्षाओं से बचकर, अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़कर अथवा ग़लत राह पर चलकर, ऋण चुकाने की बात अगले जीवन पर न टालें। बीमारी के इलाज

के लिए आपको दवा की आवश्यकता होती है, लेकिन दवा कभी-कभी कड़वी भी हो सकती है। लेकिन दवा लेने के बाद आप राहत महसूस करते हैं। इसी तरह, कर्म के ऋण आपको कष्ट पहुंचा सकते हैं लेकिन उनको चुकाने पर आप खुद को हल्का और सबल महसूस करते हैं और आपकी समझदारी उच्च रूप की बनती है। हमेशा यह याद रखें कि आप उन सभी समस्याओं से निपटने में सक्षम हैं जो जीवन में आपके सामने खड़ी होती हैं। जीवात्मा जगत में आपने अपने लोक की उच्च भली आत्मा और साथ ही तीन ज्ञानी आत्माओं की सलाह प्राप्त की होती है, जिन्होंने आपको आपकी क्षमता के अनुसार राह चुनने में मदद की होती है। आपकी क्षमता के अनुसार आपके लिए परीक्षा, प्रशिक्षण और कर्म की व्यवस्था की जाती है। आपकी क्षमता से बाहर आपके जीवन में कोई भी समस्याएं नहीं आएंगी। यदि आपको लगता है कि आप किसी परिस्थिति को संभाल नहीं पाएंगे, तो दुबारा सोचिए। संभव है कि आपको यह विश्लेषण करने की आवश्यकता हो कि आपसे कहां चूक हो रही है।

पृथ्वी पर आपका जीवनकार्य

“हम सभी ने ईश्वर के साधनों के रूप में जन्म लिया है, पर उनके साधन के रूप में कार्य करना जारी रखना या नहीं, यह फैसला सम्पूर्ण रूप से हमारा है।”

“कभी भी दुष्ट लोगों के प्रति अच्छाई न दिखाएं या उन्हें प्रोत्साहित न करें। दुष्टता से संघर्ष करें।”

पृथ्वी पर आपका जीवनकार्य क्या है?

कई लोग सोचते हैं कि उनके जीवन का कोई अर्थ नहीं, या समस्याओं के सिवा उनके जीवन में कुछ भी नहीं। ऐसी आत्माएं कैसे अपने जीवन के अर्थ को समझ पाएंगी?

सबसे पहले, अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं से कभी न डरें; वे आपको मजबूत बनाती हैं। साथ ही यह भी सोच कर न बैठें कि धरती पर आप केवल मुश्किलें झेलने के लिए आए हैं। कर्म, परीक्षा व प्रशिक्षण के अस्तित्व का कारण आपमें बदलाव लाना और आपकी आत्मा को निर्मल करने में सहायता करना होता है। लेकिन ईश्वर ने पृथ्वी पर आपको कुछ अद्‌भुत करने का भी एक अवसर दिया है: जो आपका **आध्यात्मिक जीवनकार्य** है।

प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसके जीवन का कुछ अर्थ हो, और यह तब होता है, जब आपको अपने जीवन कार्य का पता चल जाए। उस उद्देश्य को ही आपके जीवन कार्य के रूप में जाना जाता है, जो आपकी आत्मा और ईश्वर के बीच किया एक वचन होता है...एक शपथ होती है, जो पृथ्वी पर आने से पहले जीवात्मा जगत में आप लेते हैं। प्रत्येक आत्मा एक आध्यात्मिक ख़ोज के मार्ग पर चलती है। यही वह मार्ग है, जिसे आपने पृथ्वी पर पुनर्जन्म लेने से पहले चुना है। जब आप पृथ्वी पर आते हैं, तो अपनी जीवात्मा के विकास के लिए पुनर्जन्म लेने के उद्देश्य को भूल जाते हैं।

प्रत्येक मनुष्य के तीन जीवन कार्य होते हैं।

१. आध्यात्मिक रूप से सुधरना।

२. दूसरों की निःस्वार्थ रूप से मदद करना।

३. ईश्वर की ओर से मिले विशेष उपहारों और प्रतिभाओं का दूसरों के विकास के लिए उपयोग करना।

पृथ्वी पर मनुष्य भलाई के नाते खुद में परिवर्तन लाने के लिए आते हैं। आप भौतिक शरीर में एक जीवात्मा के रूप में अपनी पूरी क्षमता को केवल तभी महसूस कर सकते हैं, जब आप अंदर से बदलते हैं। **आत्म सुधार** का अर्थ है, कि चाहे जो भी परिस्थितियां अथवा बाधाएं उत्पन्न हों, आप अपने-आप को बदलकर ईश्वरीय अच्छे मार्ग पर चलें, और यही आपका पहला जीवनकार्य है। पृथ्वी पर हमेशा नकारात्मक शक्तियां मौजूद रहेंगी। पृथ्वी एक आध्यात्मिक रणभूमि है, और अपनी नैतिक मज़बूती को सिद्ध करने का एक मात्र तरीका होता है, घने अंधेरों में प्रकाशवान मार्ग को चुनना। दुष्टता से लड़ने का अर्थ यह नहीं है कि आप इसके बारे में स्वर उठाएं...लोगों की आलोचना करें या उनका अनावरण करने के लिए किसी भी हद तक चले जाएं। **दुष्टता पर से पर्दा हटाना महत्वपूर्ण होता है, पर खुदको या अपने प्रियजनों को खतरे में डाल कर ऐसा नहीं करना चाहिए।** हालांकि आप इसका सहारा लेकर कायर भी नहीं बन सकते। दुष्टता से लड़ने का सबसे श्रेष्ठ तरीका यह है कि आप साहसी बनें और हर बार जो सही हो, बस वही करें। इसी को कहते हैं, ईश्वरीय अच्छे मार्ग पर चलना। बिना परिवर्तन के किसी भी प्रकार का विकास नहीं हो सकता।

जब आप अपने अवचेतन मन के मार्गदर्शन का पालन करते हैं, तो परिवर्तन आपके जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा बन जाता है, तथा आप गरीमा के साथ कदम दर कदम खुदमें परिवर्तन करते हैं। जब आपमें गरीमा के साथ परिवर्तन होता है, तो आप अपनी परीक्षाएं और प्रशिक्षण का सामना कर सकते हैं, और आप अपने नकारात्मक कर्मों का हिसाब चुकाने में सक्षम होते हैं...क्योंकि तब आप अपने अवचेतन मन का उपयोग कर रहे होते हैं। साथ ही आप अपने अच्छे कर्म, अर्थात अपने आध्यात्मिक उपहार तथा आशीर्वादों का उपयोग और अधिक भलाई के लिए कर सकते हैं। यह आपको केवल तभी प्राप्त होते हैं, जब आप सही मार्ग पर चलेंगे। जब आप गरीमा के साथ खुदमें बदलाव लाते हैं, तो आप ईश्वर की योजनाओं को लागू करने में अपना सर्वोत्तम प्रयास कर रहे होते हैं।

जब आप अपने अवचेतन मन के मार्गदर्शन का पालन करने में असफल रहते हैं, तो आप अपने-आप में होने वाले परिवर्तन को रोकते हैं। आप परिवर्तन को इसलिए रोकते हैं, क्योंकि आप भौतिक मन द्वारा दी गई गलत भ्रांतियों के सामने हार मान लेते हैं, जो आपको यह बताता है कि आपके साथ कुछ भी गलत नहीं है और आपको बदलने की कोई आवश्यकता नहीं। भौतिक मन को परिवर्तन पसंद नहीं होता; इसलिए यदि आप अवचेतन मन के अनुरूप नहीं चलेंगे, तो परिवर्तन स्वाभाविक रूप से आप तक नहीं पहुंच सकता। तब आप गरीमा के साथ परिवर्तन

नहीं कर पाएंगे। पर चूंकि आप बुरी आत्मा नहीं हैं और आपका अवचेतन मन अभी भी थोड़ा जागृत है, तो आपको एक भौतिक झटका लगेगा। आपके जीवन में कुछ ऐसा घटित होगा...आपकी आंखें खोलने के लिए कोई नुकसान झेलना होगा या आपको झटका लगेगा, जैसे आर्थिक या स्वास्थ्य संबंधित नुकसान।

मनुष्यों की सबसे खेद-जनक बात यह है कि वे मार्गदर्शन, आनंद और आशीर्वाद को तो आसानी से अनदेखा कर देते हैं, पर वे दर्द को अनदेखा नहीं कर पाते। इसलिए, दर्द आपको जगाने के लिए आता है। एक बार जब आप जाग जाते हैं, तो आपको अहसास होता है कि आप गलत मार्ग पर हैं और इसलिए आपको बदलने की ज़रूरत है। यदि आपने अपने अवचेतन मन की बात सुनी होती, तो आपको दर्द पाकर जागने की ज़रूरत नहीं पड़ती। यदि भौतिक झटके के बाद भी आप बदलने से इन्कार कर देते हैं, तो वे झटके भी लगने बंद हो जाएंगे...क्योंकि आपका अवचेतन मन निष्क्रिय हो चुका होता है। इसलिए यह मान कर मत चलिए कि चूंकि आपके बाहरी जीवन में सब कुछ अच्छा है, इसलिए आप सही रास्ते पर चल रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, संभव है कि आप और भी अधिक बुरे हो चुके हों।

यह तब होता है, जब आप जान-बूझकर गलत रास्ते पर चले जाते हैं। जब आपमें बुराइयां आती हैं और आप एक सीमा को पार कर जाते हैं, तो आपका अवचेतन मन पूरी तरह से बंद हो जाता है...और आपको अपनी गलतीयों का अहसास अपनी मृत्यु के बाद ही होता है– यानि जब आप जीवात्मा जगत के निम्नतम लोकों में चले जाते हैं। यह एक बड़ी भयानक चीज़ है कि जो आत्माएं यह सोचती हैं कि वे पृथ्वी पर एक अच्छी राह पर चल रही हैं, जीवात्मा जगत में पहुंचने पर, अपना स्थान देखकर स्तब्ध रह जाती हैं।

आत्म-सुधार या परिवर्तन सही कारणों के लिए ही करना चाहिए। कभी-कभी लोग कई कार्य गलत कारणों के लिए कर बैठते हैं...जैसे कि दूसरों से सम्मान पाने के लिए; आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर अपने अहं की संतुष्टि करने के लिए, बुद्धिमान और ज्ञानी दिखने के लिए ज्ञान पाने की इच्छा की संतुष्टि के लिए; या स्वर्ग में जगह पाने के लिए अथवा नर्क में जाने के भय से अच्छे काम करने के लिए। ये बदलाव के सही कारण नहीं होते। आपको इसलिए बदलना चाहिए, क्योंकि आप अच्छाई पर भरोसा करते हैं और एक बेहतर मनुष्य बनना चाहते हैं। **अच्छाई के वास्ते ही अच्छाई का मार्ग चुनें।** आध्यात्मिक महत्वाकांक्षा पालने और लक्ष्य पर केंद्रित होने के बजाए, बदलाव इसलिए लाएं कि इससे आप अच्छा महसूस करते हैं। इस यात्रा का आनंद लें। सातवां लोक, नौंवा स्तर केवल इसी लक्ष्य पर केंद्रित न हों। –आपका ध्यान केंद्रित होना चाहिए इस मार्ग, अथवा इस बदलाव पर।

कभी-कभी लोग कहते हैं, "मैं बदलना चाहता हूं, पर मैं ऐसा करने में सक्षम नहीं हो पाता।" क्या वे ऐसा ईमानदारी से कहते है?

जो लोग ऐसा कहते हैं, उनकी भावनाएं अच्छी होती हैं...पर वे दुविधा में होते हैं कि क्यों वे स्वयं में परिवर्तन नहीं कर पा रहे। इसका एक सरल कारण है। सच्चा बदलाव अवचेतन मन से आता है, पर इसमें भौतिक मन को सहयोग करना होता है। लोग जब परिवर्तन लाने में असमर्थ होते हैं, तो इसका अर्थ यह होता है कि वे बदलाव के प्रति समर्पित नहीं होते– उनमें सच्ची इच्छा नहीं होती। उन्होंने परिवर्तन करने का फैसला किया, पर अधूरे मन से; आपको पूरे मन से, सही कारण के साथ बदलने का प्रयास करना होगा।

इसलिए यहां पहला चरण दिया जा रहा है: अपने-आप को बदलने के लिए तथा ईश्वरीय अच्छे मार्ग पर चलने के लिए, आपको वह **ज्ञान** होना चाहिए, जो सही-गलत में फ़र्क करने में आपकी सहायता करे। आपको यह पहचानने की आवश्यकता होगी कि आपको क्या बदलने की ज़रूरत है। इसलिए पहले चरण में आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना होता है। यह बात निश्चित कर लें कि आप ज्ञान के उस स्रोत पर विश्वास करते हैं। पृथ्वी पर आजकल बहुत गलत ज्ञान कों आध्यात्मिकता के रूप में देखा जाने लगा है...पर ईश्वर ने आपको एक अवचेतन मन दिया है, जो आपको सच्चे ज्ञान की ओर ले जाएगा। यदि आप कोई सरल तरीका ढूंढ रहे हैं, यदि आप बदलाव को रोकते हैं, तो आप सच्चे जिज्ञासु नहीं हैं और आपका भौतिक मन आपको गलत ज्ञान की ओर ले जाएगा। अधूरा ज्ञान होना एक खतरनाक चीज़ होती है। **अपने अहं की बजाए, अपनी आत्मा के लिए जो सर्वोत्तम हो, आप वहीं करें।**

कोई व्यक्ति एक सच्चे गुरू की पहचान कैसे कर सकता है?

कुछ ही लोगों को अपने जीवन में एक सच्चा गुरू पाने का सौभाग्य मिलता है, पर आध्यात्मिक ज्ञान सामान्य तौर पर उपलब्ध हो जाता है। इसलिए ज्ञान को अपना गुरू बनाएं और यदि आप सच्चाई पूर्वक खोज़ेंगे तो आपको सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो जाएगी। जब एक गुरू को खोज़ने की बात आती है, तो अपनी सामान्य समझ का उपयोग करें। कई लोगों के पास ज्ञान होता है...पर वे उस ज्ञान का उपयोग गलत तरीके से करते हैं। एक सच्चा गुरू, ज्ञान का उपयोग कभी भौतिक लाभ के लिए नहीं करता। **सच्चे गुरू, निःस्वार्थ होते हैं** तथा अपने ज्ञान का उपयोग केवल अपने और दूसरों के आध्यात्मिक विकास के लिए करते हैं। **ऐसे गुरू कभी आपको बिगाड़ेंगे नहीं; वे आपकी जीवात्मा को प्रशिक्षण देंगे।** कई लोग अपने-आप को समझा लेते हैं के उनके पास सही गुरू हैं, क्योंकि उनके गुरू उन्हें जो ज्ञान देते हैं, वह उन्हें पसंद आता है। उस ज्ञान को पचाना आसान है, इसके लिए उन्हें बदलने की ज़रूरत नहीं...और इसमें भौतिक विकास शामिल होता है। यदि आप सत्य की खोज़ में हैं, तो आपको यह समझना चाहिए कि सत्य सामान्य तौर पर आसानी से स्वीकार नहीं होता। यदि आपमें अहं है, तो सत्य को स्वीकार करना हमेशा मुश्किल होगा...क्योंकि अहं आपको सच्ची समझ प्राप्त करने से रोकता है।

एक सच्चा गुरू आपको कभी निर्बल नहीं बनाएगा। एक सच्चा गुरू आपको अपने अन्दर के गुरू को खोज़ने में मदद करेगा। आप किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे; आप आत्मनिर्भर हो जाएंगे।

आप ऐसे गुरू से दूर न भागें, जो आपको सत्य का दर्शन कराता हैं। बल्कि ऐसे गुरू से दूर भागें जो आपके अहं को संतुष्ट करता है। उस गुरू से दूर रहें, जो आपकी जीवात्मा को निर्बल करता है, और आपके आत्म-सम्मान एवं आत्म-मूल्य को कम करता है। अपने विवेक और सहज बोध का प्रयोग करें, तब आपको सही गुरू अथवा ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।

कभी-कभी मनुष्य सोचता है कि यदि वह जिवात्मिक संपर्क करे, तो उसे भौतिक मदद या दूसरों के बारे में जानकारी मिल सकती है। यह संभव नहीं है, क्योंकि जीवात्माएं कभी दूसरों की जानकारी को व्यक्त नहीं करतीं; न ही वे कभी भौतिक चीज़ों की चर्चा करती हैं, और न ही वे किसी प्रकार की भविष्यवाणियां करती हैं। हालांकि अवकाशी आत्माएं ऐसा जरूर करती हैं। जीवात्माएं केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन से वास्ता रखतीं हैं, इसलिए ऐसे शिक्षकों से सावधान रहें, जो आपको इसके अलावा और अन्य चीज़े प्रदान कर रहे हों। साथ ही जीवात्माओं का अस्तित्व होता है, या ईश्वर होते हैं, इसका प्रमाण पाने की कोशिश न करें। यदि आप प्रमाण की तलाश में हैं, तो अपनी परीक्षा में आप असफल हो जाएंगे। यदि आप विश्वास रखते हैं, तो आपने अपेक्षा भी न की होगी, उस रूप में, आपको यह प्रमाण प्राप्त होता है।

अब हम आत्म-सुधार के अगले चरण की ओर बढ़ते हैं। ज्ञान ही पर्याप्त नहीं होता। सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में ज्ञान केवल पहला चरण होता है। **अपने दोषों को स्वीकार करना** अगला चरण है**।**

नीचे दी गई चित्रारेख आध्यात्मिक ज्ञान और परिवर्तन के चक्र को दर्शाती है।

नीचे की दिशा में तीर के निशान जीवात्मा जगत से पृथ्वी की ओर होने वाले ज्ञान के प्रवाह को दिखाते हैं। यह ज्ञान ईश्वर द्वारा दिया गया होता है; यह ईश्वर से जीवात्माओं को मिलता है, और वहां से यह पृथ्वी की आत्माओं को प्राप्त होता है। पृथ्वी पर इस ज्ञान को आत्माएं प्रवाहित करती हैं। पृथ्वी पर वे फिर अवतार लेती हैं, और अंधेरे युग में प्रकाश फैलाती हैं। इसलिए आपको इन आत्माओं की पहचान करनी होगी, क्योंकि आपको उनसे सच्चा ज्ञान प्राप्त होगा।

यदि छात्र में सच्ची इच्छा होगी, दूसरे शब्दों में, यदि वह तैयार है, तो आध्यात्मिक रूप से उसे आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए गुरू प्रकट होंगे। आपको जब यह आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो जाए, तो आपको इसका उपयोग अपने सही-गलत कार्यों को परखने में करना चाहिए। दूसरा चरण है अपने दोषों को स्वीकार करना। प्रत्येक मनुष्य में दोष होते हैं। आप उन दोषों का विश्लेषण करें, ताकि आप उनपर विजय प्राप्त कर सकें...और उनपर विजय प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता है, कर्म करने का।

कर्म, तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण चरण है। व्यक्ति को अपने दोषों के बारे में पता हो सकता है, लेकिन यह संभव है, कि वह परिवर्तन की इच्छा नहीं रखता। इसे अस्वीकृति कहते हैं। दोषों को सच्चे मन से स्वीकार करने का अर्थ होता है, अपने-आप में इस हद तक बदलाव लाना, कि आपके उन दोषों का अस्तित्व ही न रहे। इसी प्रकार के आध्यात्मिक कर्म की आवश्यकता होती है। दूसरों की सहायता करने के लिए, सबसे पहले स्वयं खुदकी सहायता करना आवश्यक होता है। किसी अन्य व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव ड़ालने के लिए, पहेले आपको स्वयं आध्यात्मिक मज़बूती की अवस्था में होना चाहिए। यदि आप चाहते हैं कि आपका कोई प्रियजन या मित्र विनम्र बने और आप उनके दोषों को व्यवहार कुशल तरीके से इंगित करते हैं, तो यह ठीक है। पर यदि आप एक घमंडी व्यक्ति हैं, तो किसी और के बदलने की अपेक्षा न करें। खुद को बदलें। अपना उदाहरण सामने रखें। अपने-आप को बदलने से पहले दूसरों के बदलने की अपेक्षा न रखें...और याद रखें कि नम्रता के बगैर किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता । एक बार जब आप उस दिशा में कदम उठा लेते हैं, तो आप एक चक्र पूरा कर लेते हैं, और उसकी फिर से शुरुआत होती है। आपको और अधिक आध्यात्मिक ज्ञान मिलेगा, ताकि आप पुनः स्वयं का विश्लेषण कर सकें और अधिक प्रयास कर सकें। यह चक्र जन्मों तक चलता रहता है।

कई बार आपको अनुभव होगा कि आप अपनी प्रगति करने में सक्षम नहीं हो पा रहे। आप अपने-आप में परिवर्तन लाना चाहते हैं, पर सुधरने की बजाए आपको लगेगा कि आप किसी दलदल में जा फंसे हैं। यह इसलिए होता है कि आपके पास थोड़ा आध्यात्मिक ज्ञान है, पर आपने अपने दोषों को स्वीकार नहीं किया है। और चूंकि आपने सुधार का कोई प्रयास नहीं किया, ईश्वर के नियमों के प्रति आपकी समझ सीमित रहती है। ज्ञान तो अपने-आप में एक जानकारी है। जब उस जानकारी को दूसरों के साथ बाँटा जाता है, तो यही ज्ञान बन जाता है। और जब ज्ञान को आप अपने दैनिक जीवन के व्यवहार में उतार लेते हैं, तो आपको आध्यात्मिक सीख और विवेक की प्राप्ति होगी, क्योंकि आप अपने आध्यात्मिक पाठ सीख लेते हैं। केवल तभी आपको जीवात्माओं से अधिक ज्ञान की प्राप्ति होगी, जिसे अनुभव के जरिए विवेक में बदला जा सकता है। इसी प्रकार आप अपनी आत्मा के विकास के लिए जीते हैं। ये तीन चरण– ज्ञान, स्वीकृति तथा कर्म, आपको अपने पहले जीवनकार्य, अर्थात आत्म-सुधार को पूरा करने में मदद करेंगे।

आपका दूसरा जीवनकार्य है– **निःस्वार्थ सेवा।**

सेवा, संतोष की कुंजी है। पर आपके भौतिकवादी जगत में लोग इसे नहीं समझेंगे। सच्चा संतोष निःस्वार्थ सेवा से आता है। पृथ्वी पर ऐसे कई मनुष्य हैं, जो भले लोग होते हैं। वे किसी को नुकसान नहीं पहुंचाते...और अपने परिवार के साथ मिलकर सरल..शांत जीवन जीते हैं...व अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। ऐसी आत्माएं, अपने-आप और दूसरों को नुकसान पहुंचाने...और अंधकार को बढ़ावा देने वाली आत्माओं से कहीं बेहतर होती हैं। पर इन भली आत्माओं को अपनी सच्ची क्षमता के बारे में पता नहीं होता।

केवल अपने कर्तव्यों को पूरा करने से आप आध्यात्मिक विकास नहीं कर सकते।

दुर्भाग्यवश दुनिया इतनी नकारात्मक स्थिति में है कि कोई व्यक्ति जो बस केवल अपने कर्तव्यों का पालन करता है और किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता, ईश्वर का आदमी माना जाता है। जबकि ऐसा व्यक्ति उस मंजिल की राह के मध्यांतर तक भी नहीं पहुंचा होता। आपको दूसरों तक पहुंचकर उनकी मदद करनी चाहिए– यानि निःस्वार्थ सेवा के मार्ग पर चलना चाहिए। पृथ्वी पर आप दूसरों की शांत रहकर सहायता करने के लिए ईश्वर के एक साधन के रूप में आए हैं। सराहना मिलने का इंतजार किए बिना ही काम में जुट जाएं। **प्रकाश का सेवक, एक शांत सेवक होता है।** ईश्वर का साधन केवल वही काम करता है, जो सही होता है। अपने अच्छे कर्मों से वह अंधेरे पर विजय प्राप्त करता है, और कभी अपने अच्छे कार्यों के बारे में चर्चा नहीं करता। यहां तक कि गर्व उत्पन्न ना हो, इसलिए वह कभी उनका विश्लेषण भी नहीं करता। याद रखें कि ईश्वर के फ़रिश्ते आप पर नज़र रखे हुए हैं और उन्हें आपके कर्मों के बारे में सब पता होता है। यदि आपको यह पता है, तो आपकी आत्मा कभी सराहना पाने की इच्छा नहीं करेगी। केवल आपका अहं ऐसा चाहता है। जिस वक़्त आप अपने किए किसी अच्छे काम के बारे में चर्चा करते हैं, या उस विषय पर ज्यादा सोचते हैं, तो उसी वक़्त उसकी अहमियत खत्म हो जाती है। जिस व्यक्ति को सहायता की आवश्यकता थी, निश्चित रूप से उसकी मदद हुई, पर आपकी प्रगति नहीं हुई, क्योंकि आपने निःस्वार्थ सेवा का सही अर्थ नहीं समझा। 'निःस्वार्थ' का अर्थ है, आपने औरों के लिए जो किया, उसके बारे में कम से कम सोचना। यही ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति है। दूसरों की सेवा कर आप ईश्वर की सेवा करते हैं।

भक्ती क्या है?

पृथ्वी पर ईश्वर के प्रति भक्ति का संबंध कर्मकांड तथा रीति-रिवाज़ों से होता है। काफी सारे पैसे खर्च करना और भव्य समारोहों एवं कर्मकांड का आयोजन करना सेवा [३५] नहीं होती। ईश्वर के प्रति आपकी भक्ति इस पर निर्भर नहीं करती कि आप कितना धन परोपकार या रस्मों में खर्च करते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी भक्ति शांत और निःस्वार्थ सेवा पर आधारित होती है। जब आप दूसरों की मदद करें, तो बगैर किसी अपेक्षा के करें। जिस क्षण आपने यह सोचा कि दूसरों की मदद करने से आपको क्या मिला, उसी वक़्त आपका उद्देश्य अपवित्र हो जाता है। आपने जो किया उसे भूल जाएं। बस आगे बढ़ जाएं। जब आप कोई अच्छा काम करते हैं, तो आपको

आनंद का अनुभव होता है। यह स्वाभाविक होता है कि जब आप किसी के जीवन को बेहतर बनाते हैं, तो आपको प्रसन्नता का अनुभव होता है। पर इसका ध्यान रखें कि इस एहसास से आप में अहंकार न आ जाए। **इस सत्य के लिए आभारी रहें कि इश्वर, अपने कार्य के लिए एक साधन के रूप में आपका उपयोग कर रहें हैं।** इसी के कारण आपको आशीर्वाद मिला है। उस आशीर्वाद का उपयोग करें। दूसरों की मदद करने में, उस पवित्र अनुभव का उपयोग करें। यदि आप बस उस एहसास पर ही अटक जाते हैं और अधिक सेवा कार्य नहीं कर पाते, तो वह एहसास शीघ्र ही गायब हो जाएगा। आध्यात्मिक प्रगति की तरह सेवा भी कभी न ठहरने वाला एक चक्र होता है। ज्योंही आपको यह अनुभव होगा कि आपका कार्य पूरा हो चुका है, और अब आप आराम लेना चाहते हैं, उसी क्षण आप अपने आप को रोकें। आपका कार्य कभी खत्म नहीं हो सकता। बल्कि करने के लिए हमेशा कहीं ज्यादा कार्य बचा होता है। अपने-आप में फिर से ऊर्जा संजोएं... पर आराम न करें। और जब भी कोई व्यक्तिगत तकलीफ़ का अनुभव हो, तो उस तकलीफ़ को सेवा कार्य में बदलने की कोशिश करें। यही वह सबसे निःस्वार्थ चीज़ है, जो आप कर सकते है।

आप ईश्वर के दिए उपहारों तथा प्रतिभाओं का उपयोग, अपनी तकलीफ़ को सेवा के कार्य में बदलने के लिए कर सकते हैं। यह आपका तीसरा जीवन-कार्य हैः यानि **आपको मिले ईश्वरीय उपहारों तथा प्रतिभाओं का दूसरों की प्रगति के लिए प्रयोग करें।** पहले दो जीवन कार्य, यानि आत्म-सुधार तथा निःस्वार्थ सेवा सभी लोगों के लिए समान है। प्रत्येक व्यक्ति का एक तीसरा जीवन कार्य भी होता है, पर तीसरे जीवन कार्य की प्रकृति अलग-अलग होती है। आपका तीसरा जीवन कार्य ईश्वर की तरफ से आपको मिले उपहारों से जुड़ा होता है। उपहार आपके अंदर की कोई प्रतिभा हो सकती है...उदाहरण के लिए गायन, नृत्य, लेखन, अभिनय, खेल-कूद की क्षमता इत्यादि। लेकिन आपका उपहार बुज़ुर्ग व्यक्तियों से एक विशेष लगाव भी हो सकता है। आपका शायद बच्चों और जानवरों के साथ लगाव हो...आप शायद एक बेहतरीन रसोइए हों, या आपमें बागवानी एवं सुतारी का हुनर हो सकता है। ये उस तरह के उपहार हैं, जो आपके हुनर होते हैं और इसे कई जन्मों के बाद प्राप्त किया जाता है। **याद रखिए कि पृथ्वी के प्रत्येक मनुष्य में खूबीयाँ होती है। ईश्वर कभी अपनी संतान को पृथ्वी पर अपने आशीर्वाद के बिना नहीं भेजते।**

जैसे आपके नकारात्मक कार्य बुरे कर्म का निर्माण करते हैं, उसी प्रकार आपके सकारात्मक कार्य अच्छे कर्म का निर्माण करते हैं। **इन अच्छे कर्मों के बदले में, आपको एक आध्यात्मिक उपहार मिलता है,** जो एक ऐसा हुनर होता है, जिससे आपको संतोष मिलता है एवं आप दूसरों की मदद भी कर सकते हैं। यदि आप किसी चीज़ को लेकर स्वाभाविक रूप से अच्छे हों, तो आपकी आत्मा ने उस उपहार को कई जन्म लेने पर प्राप्त किया होता है...पर आपके भौतिक मन को इस जीवन में पहली बार इसका ज्ञान होता है। आप अपनी प्रतिभा की खोज़ नहीं करते बल्कि आप उसे फिर से पहचानते हैं। आपको ईश्वर से जो भी उपहार मिले हैं, आपको उनका उपयोग अच्छाइयों के लिए करना चाहिए। प्रतिभा से संपन्न अधिकतर व्यक्ति दौलत और शोहरत हासिल करने में जुटे रहते हैं, जो आपका अंतिम उद्देश्य नहीं है। कुछ ऐसा निर्माण करें जो

मानवता के लिए एक सकारात्मक योगदान सिद्ध हो। यदि आपको सौभाग्य से शोहरत भी मिली हो, तो आप उस मंच का उपयोग आध्यात्मिक ज्ञान फैलाने में करें। अपने प्रतिष्ठा-पद का उपयोग लोगों के दु:ख-दर्द मिटाने, उन्हें खुश करने, उनका उत्थान करने में करें। आपको ईश्वर से मिले अपने उपहारों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करना चाहिए...ईश्वर का एक साधन बनकर आप इसके प्रति न्याय करें। पूरी मेहनत करके, आप अपने व्यवसाय के शिखर पर अवश्य पहुंचें, पर अपने उपहार का उपयोग केवल सांसारिक उद्देश्यों के लिए ही करके उन्हें सीमित न करें। अपने उच्च आध्यात्मिक उद्देश्य की शोध करें।

क्या हमारे पास अपने तीसरे जीवन कार्य को जानने का कोई तरीका है?

आपका तीसरा जीवन कार्य कुछ ऐसा है, जिसकी तरफ आप स्वाभाविक रूप से खिंचे चले जाते हैं और जिसके प्रति आपको भव्य लगाव होता है। आप हर रोज किसी दफ्तर या किसी कारखाने में काम कर जीवन गुज़ार सकते हैं, पर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप कहां हैं, अपनी खूबियों का उपयोग, एक सकारात्मक प्रभाव लाने के लिए करें। सकारात्मक प्रभाव होता है, किसी को प्रेरित करना, उसकी जीवात्मा का उत्थान करना और करुणाभरे छोटे-छोटे कार्यों के जरिए उनके जीवन में आशा की किरण जगाना। यदि आप अहंकारी हैं, भयभीत हैं, या भौतिकवादी हैं, तो आपका भौतिक मन आपको आपके जीवन कार्य से दूर ले जाने का प्रयास करेगा। यदि आप पृथ्वी पर अपने आध्यात्मिक जीवनकार्य को पूरा नहीं करते, तो चाहे आप कितनी भी उपलब्धियां क्यों न पा लें, आपका जीवन व्यर्थ माना जाएगा और आपकी यात्रा अधूरी रह जाएगी।

पृथ्वी पर कुछ लोगों को अपना जीवन-कार्य पता होता है जब कि अन्यों को नहीं। ऐसा क्यों?

१. अपने जीवनकार्य को जानने के लिए आपको एक बेहतर आध्यात्मिक स्तर पर होना चाहिए। यदि आप गलत मार्ग पर हैं, तो आप आत्म सुधार के पहले जीवन कार्य से ही बहुत दूर हैं...इसलिए यहां सेवा का प्रश्न ही नहीं उठता।

२. आपको अपने अवचेतन मन को जागृत करना होगा, ताकि आप अपने जीवनकार्य को पहचान सकें। यदि आप अत्यंत तार्किक हैं और अपने सहज बोध को अनदेखा करते हैं, तो आप अपने सच्चे उद्देश्य से दूर भाग रहे हैं। आपका भौतिक मन यदि बहुत अधिक सवाल-जवाब करता हो, तो वह एक बाधा सिद्ध हो सकता है।

३. आपका जीवनकार्य केवल तभी आपको बताया जाएगा, जब आप इसके लिए तैयार हो जाएंगे। यदि आपको इसके बारे में बहुत शीघ्र पता चल जाए, तो यह आप पर हावी हो सकता है अथवा आपमें अहंकार जन्म ले सकता है। आपको इस जीवनकार्य की

जिम्मेदारियों को स्वीकार करने के लिए तैयार होना होगा तथा उसे संभालने के योग्य बनना होगा।

४. आपकी वचनबद्धता का स्तर अहम होता है। आप अपने आध्यात्मिक मार्ग के प्रति कितने समर्पित हैं? यदि आप लगातार प्रयास करते हैं और आध्यात्मिकता का आपके जीवन में महत्त्व है, तो आपका मार्गदर्शन अपने सच्चे उद्देश्य की तरफ होगा। कभी-कभी मनुष्य अपने जीवनकार्य को समझने का जो प्रयास करता है, वह अधूरे मन से होता है। इसलिए उनमें सुधार नहीं हो पाता, अथवा उनका विकास नहीं हो पाता।

पृथ्वी पर आप ईश्वर के कार्यों के लिए एक माध्यम के रूप में हैं; यदि आप गलत राह पर चलकर स्वयं को दूषित कर लेंगे, तो आप अपने जीवनकार्य को पूरा करने के अवसर की अवहेलना करते हैं, और ईश्वर से मिले उपहारों को खो देंगे। यदि आप एक अपवित्र माध्यम हैं, तो आप जीवात्मा जगत से मिले मार्गदर्शन को नहीं पा सकेंगे, जो आपको आपके जीवन उद्देश्य तक पहुंचाता है, और उसे पूरा करने में आपकी सहायता करता है। प्रत्येक आत्मा एक उद्देश्य के लिए जन्म लेती है, पर वह उद्देश्य का बोध उसे तभी कराया जाता है, जब वह अपनी आध्यात्मिक यात्रा का आरम्भ करती है। और जब आपको वह उद्देश्य मिल जाता है एवं आप अपने जीवनकार्य को पूरा करने में जुट जाते हैं, तो आप सच्चे अर्थ में खुश रहेंगे और आपको शांति प्राप्त होगी।

आपने कहा कि कोई प्रवाह स्वयं को दूषित कर सकता है। क्या अच्छे प्रवाह भी गलतीयां कर सकते हैं?

हां। उदाहरण के लिए पृथ्वी पर कई लोग हैं, जिन्हें आत्मिक क्षमताओं का ईश्वरीय वरदान प्राप्त हुआ है। पर यदि वे लगातार अपने कार्यों के लिए भौतिक प्रतिफल की इच्छा रखते हैं, तो उनका अपना विकास सीमित हो जाता है। वे अच्छे काम करते हैं, पर चूंकि उन्हें धन-संपत्ति चाहिए, तो उनका उस तरह का विकास नहीं हो पाता, जैसा कि पूरी तरह से निःस्वार्थ रहकर होता। अच्छा कार्य हो रहा है... उसे लेकर कोई शंका नहीं... अवचेतन मन जीवनकार्य को पहचानता है। पर जब आपको सफलता मिल जाती है, तो यह एक परीक्षा होती है और आपको उसे खुदको गलत राह पर ले जाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। ईश्वर के दिए उपहार हमारी यह परीक्षा लेते हैं, कि हम उनका उपयोग कैसे करते हैं।

क्या कर्तव्य और सेवा एक ही होते हैं?

नहीं। यहां अंतर है। आपका पहला कर्तव्य अपने खुदके स्वास्थ्य की देखभाल करना है। आपका शरीर आपकी आत्मा की पोशाक होती है, जो आपको ईश्वर की ओर से मिलता है। इसका ध्यान रखा जाना चाहिए...इसकी देखभाल की जानी चाहिए और इसे मान दिया जाना चाहिए। आत्मा

के लिए यह एक अत्यंत जरूरी साधन होता है, जिसकी मदद से आप आगे बढ़ते हैं और अपने जीवन कार्य को पूरा करते हैं। एक अस्वस्थ शरीर एक अशांत मन को जन्म देता है, और अशांत मन एक अस्वस्थ शरीर को। इससे आत्मा नाखुश और अनअन्वेषित बनकर रह जाती है, जो उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती, जिसके लिए उसने पुनर्जन्म लिया है। आपका शरीर एक मंदिर है...इसलिए आपको इसका सम्मान करना चाहिए।

किसी की फिक्र करना, जैसे माता-पिता या दादा-दादी की देखभाल करना अथवा अपने बच्चों का अच्छी तरह से पालन पोषण करना, आपका कर्तव्य है। इसे आप इस तरह से करें मानों आपने कोई त्याग नहीं किया। मनुष्य इतना स्वार्थी हो चुका है कि जब किसी को दयालुता के कार्य करते देखता है, तो उसे आश्चर्य होता है। यदि आप दयालु और करुणामय स्वभाव के नहीं हैं, तो अपने-आप से पूछें कि आप कहां गलत जा रहे हैं। अपने परिवार और मित्रों की मदद करने के अवसर को चूकने का अर्थ है कि आपने अपना वचन तोड़ दिया।

व्यक्ति का कर्तव्य निम्नांकित लोगों के प्रति होता है:

१. बच्चे

२. माता-पिता

३. पति-पत्नी

४. परिवार के अन्य सदस्य

५. दोस्त

केवल उन लोगों के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने का ध्यान रखें, जो सही राह पर चलते हों। यदि वे भटक रहे हों, तो उन्हें मार्गदर्शन दें। हालांकि यदि वे जान-बूझकर गलत मार्ग पर चलना जारी रखते हैं, तो आपको अपने विवेक का उपयोग करना होगा। लोगों को अपना फायदा न उठाने दें। याद रखें कि दूसरों की मदद करना आपकी जिम्मेदारी है। वास्तव में 'मदद' जैसी कोई चीज़ नहीं होती। आपने 'मदद' की व्याख्या इसलिए विकसित कर ली है क्योंकि आज यह काफी दुर्लभ हो गई है। पुराने दौर में 'मदद' महज एक कर्तव्य हुआ करता था। 'मदद' जैसी कोई चीज़ नहीं थी। माता-पिता, बच्चों तथा मित्रों के रूप में यह आपका कर्तव्य है कि आप वह करें जिसकी ज़रूरत है। यह एक ऐसा सामान्य कार्य होना चाहिए, जिसपर सावधानीपूर्ण विचार करने की आवश्यकता न हो। दुर्भाग्यवश, इन दिनों आपको सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि आजकल सहायता लेने तथा देने की प्रक्रिया में लोगों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पर तब भी यह कुछ ऐसा है, जो मनुष्य में स्वाभाविक रूप से आना चाहिए।

सेवा और मदद करना, महज व्यक्ति का कर्तव्य होता है...पर आजकल लोग इसमें फ़र्क करते हैं, क्योंकि उन्हें इस वास्तविकता का जरा भी बोध नहीं होता। मनुष्य स्वार्थी हो चुका है। जीवात्माएं दूसरों की मदद करके प्रेरणा पाती हैं। उनका उद्देश्य पृथ्वी की आत्माओं के बीच ईश्वर के नियमों के बारे में जागृती फैलाना है, और वे आशा करते हैं कि यह भली आत्माएं इस ज्ञान को आपस में बाँटें और उसका उपयोग बदलाव लाने के लिए करें।

क्या कोई ऐसा उपाय है, जिसके जरिए कोई व्यक्ति अपने जीवन कार्य की तैयारी कर सके?

यदि आप आध्यात्मिक मार्ग पर हैं, तो यह स्वाभाविक रूप से होता है। परीक्षा तथा प्रशिक्षण ही तो आपको अपने जीवन कार्य की ओर ले जाते हैं एवं उसे सिद्ध करने के लिए, आपको सक्षम बनाने में आपकी सहायता भी करते हैं। उदाहरण के लिए जब आप जीवात्म जगत में थे, तब आपने न्याय देने के जीवनकार्य का चयन किया हो। पृथ्वी पर आपको अपने जीवन कार्य की तैयारी के लिए एवं उसे पहचानने के लिए परीक्षा तथा प्रशिक्षण से होकर गुजरना पड़ता है। इसलिए एक बच्चे या एक किशोर के रूप में हो सकता है कि आपका सामना अन्याय से कराया जाए, ताकि आपको पता चले कि पृथ्वी पर अन्याय का अस्तित्व कितना बढ़ चुका है। ये स्थितियां आपके प्रशिक्षण के रूप में आती हैं।

पर आपकी परीक्षा ऐसे होती है: अहं पर अन्याय बहुत जोर का आघात करता है। तो क्या आप न्याय पाने के लिए गलत या अनैतिक तरीके अपनाएंगे? पुलिस अधिकारी, वकील या एक न्यायाधीश बनने के बाद क्या आप भ्रष्टाचारी बन जाएंगे? यदि आप अपने अवचेतन मन की आवाज़ सुनेंगे, तो आप इस नकारात्मक अनुभव का उपयोग सीख पाने के लिए करेंगे और यह आपको अपने जीवन कार्य तक पहुंचा देगा– अर्थात एक ईमानदार व्यक्ति बनना, जो कानून-प्रशासन की बहाली करता हो।

आपकी परीक्षा और प्रशिक्षण की गंभीरता आपके जीवन कार्य की प्रकृति पर निर्भर करती है...क्योंकि इन्हें पूरा करने के लिए आपको कुछ विशेष गुणों अथवा आत्मा लक्षणों की आवश्यकता होती है। सभी परीक्षाओं तथा प्रशिक्षणों में अहं को कुचला जाता है...क्योंकि यदि आप अहं से संचालित हैं तो आप अपनी जीवात्मा को प्रशिक्षित नहीं कर पाएंगे।

आपको मिलने वाले आध्यात्मिक प्रशिक्षण के दौरान ध्यान में रखने योग्य पहला चरण है कि यह सब आपको शिक्षा प्रदान करने के उच्च उद्देश्य से हो रहा है। आप को जिसके लिए प्रशिक्षण मिल रहा है, उसे समझें। आप जिस कठिन परिस्थिति में हैं, उसका विश्लेषण करें और ऐसी कमज़ोरियों का पता लगाएँ जो आपको नकारात्मक और असंतुलित बनाती हैं। आपको सकारात्मक होने से और उस स्थिति से बाहर निकलने से क्या रोक रहा है, इसके बारे में स्वयं से पूछें। यह आपकी कमज़ोरी है और यही ऐसा क्षेत्र है जहां आपकी जीवात्मा को प्रशिक्षण की

आवश्यकता होती है। यही सबक तो आपको सीखना है। इसलिए उसी विषय पर आपकी परीक्षा होगी।

एक प्रमुख क्षेत्र ऐसा है, जिस पर पृथ्वी के हर मनुष्य की परीक्षा होती है। **यह है श्रध्दा की परीक्षा– जो आपकी सबसे बड़ी परीक्षा है।** श्रध्दा की परीक्षा ईश्वर में आपका भरोसा दर्शाती है। भले ही आप ईश्वर को देख नहीं सकते, पर क्या आपमें उनपर भरोसा रखने की विनम्रता और साहस है? यदि आप इस परीक्षा में खरे नहीं उतरेंगे, तो वास्तव में सच्ची आध्यात्मिक यात्रा नहीं हो सकती। पृथ्वी पर कई मनुष्य हैं, जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते, पर वे तब भी सही राह पर चलते हैं। यह उससे तो कहीं बेहतर है कि आप ईश्वर में भरोसा करते हों, और ईश्वर का नाम लेकर दूसरों और अपने-आप को भी नुकसान पहुंचाते हों। पर याद रखें, ईश्वर में भरोसा करने में असफल रहने का अर्थ है आप एक बहुत बड़ी परीक्षा, अर्थात विश्वास की परीक्षा में असफल हो गए। कई लोग कहते हैं कि यदि ईश्वर खुदको उनके सामने प्रकट करें, या अपने अस्तित्व का प्रमाण दें तो वे उनपर विश्वास कर सकते हैं। पर यही तो परीक्षा है। यही कारण है कि आपका अवचेतन मन जीवात्म जगत की स्मृतियों को भौतिक मन के सामने नहीं लाता।

विश्वास की परीक्षा में सफल होने के लिए, आपको भौतिक मन की बजाए अवचेतन मन को महत्व देना होगा। जिस क्षण आप अपने अवचेतन मन को जागृत करेंगे, आपको अनुभव होगा कि ईश्वर का अस्तित्व है, क्योंकि अवचेतन मन जानता है कि ईश्वर हैं। यह तो केवल आपका भौतिक मन है, जिसे प्रमाण की ज़रूरत पड़ती है। यदि आप केवल अपने भौतिक मन का विकास करते हैं, तो आप श्रध्दा की परीक्षा में स्वतः ही असफल हो सकते हैं।

आपकी कमज़ोरियां ही आपके प्रलोभन हैं।

हमेशा ध्यान रखें कि आपकी कमज़ोरियों की परीक्षा होगी। जब अधिकतर लोग प्रलोभन के बारे में सोचते हैं, तो वे भौतिक चीज़ों के बारे में ही सोचते हैं, जैसे सम्भोग, ड्रग्स, भोजन, शराब, धन इत्यादि। इसमें कोई शक नहीं की वे प्रलोभन हैं, पर प्रलोभन दूसरे स्तर के भी होते हैं, जैसे अहंकार, संदेह, क्रोध, बदले की भावना तथा ईर्ष्या इत्यादि। आपकी आत्मा के ये नकारात्मक गुण, जो आपको ईश्वरीय पवित्र राह से दूर ले जाते हैं, आपके प्रलोभन हैं...और उन क्षेत्रों में आपको निरंतर प्रशिक्षित कर आपकी परीक्षा ली जाएगी, ताकि आप अपने दोषों को जान पाएं। आप ईमानदारी और साहस के साथ निरंतर अपने अंदर झांकें, और अपने दुर्गुणों को स्वीकार करने का हौसला बनाए रखें। यदि आपको अपने दोषों के बारे में पता ही न हो, तो आप उन्हें ठीक कैसे कर पाएंगे?

इसके अलावा, केवल अपने दोषों को नियंत्रित करने के ही बारे में न सोचें। उनसे छुटकारा पा कर, उन्हें बदलकर उच्च प्रकृति के अच्छे गुणों का संचार करें। इसलिए यदि आपमें अहंकार है, तो आप न केवल उस पर काबू पाएं, बल्कि विनम्र भी बनें। यह भी सुनिश्चित करें कि अपने अंदर

की अच्छाई को भी आप स्वीकार करें। आत्म-महत्व तथा आत्म-प्रेम बहुत महत्वपूर्ण होता है, जिसका अर्थ होता है– अपनी जीवात्मा के लिए प्रेम और सम्मान की भावना। अपनी कमज़ोरियों के गुलाम बनने के बजाए अपने सदगुणों का उपयोग करें। नकारात्मक आत्मलक्षणों से छुटकारा पाने के लिए आप अपने अंदर की अच्छाइयों... अपनी आत्मा के सकारात्मक लक्षणों का अवश्य उपयोग करें।

आत्महत्या

"जीवन का अंत करना पूरी तरह ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है।"

"ईश्वर ने यह जीवन आपको दिया है; आपको इसे समाप्त करने का कोई अधिकार नहीं है।"

"आपको अपनी समस्याओं से जूझना है। आपको दुष्टता से लड़ना है। आपको अपनी आत्मा को शुद्ध करना है।"

पृथ्वी पर ऐसे बहुत सारे लोग हैं, खासकर युवा, जो आत्महत्या कर लेते हैं। इन आत्माओं का क्या होता है?

जब ये आत्माएं जीवात्मा जगत में आती हैं तो वे बहुत दुःखी महसूस करती हैं, क्योंकि उन्हें अहसास हो जाता है कि उन्होंने बहुत गलत फैसला लिया है। पृथ्वी पर रहकर अपनी जीवन यात्रा पूरी करने के बजाए वे इसे बीच में ही छोड़कर अपनी जिंदगी को समाप्त कर लेते हैं। पृथ्वी पर यह आपके सबसे बुरे फैसलों में से एक होता है। अपनी जिंदगी को अपने ही हाथों समाप्त करना आपकी आत्मा को पहुंचाया जाने वाला सबसे बड़ा नुकसान है।

लोग जिस तर्क का उपयोग करते हैं, वह यह है, कि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छा होती है। क्या हम अपने जीवन को समाप्त करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं?

अपने जीवन को समाप्त करने का फैसला आपका हो सकता है, लेकिन आप ईश्वर के नियमों के अधीन ही रहेंगे और जब आप उन नियमों को तोड़ते हैं तो उनके परिणाम भी आप ही को भुगतने होते हैं। आपका शरीर आपका मंदिर है।

ईश्वर द्वारा आपको यह शरीर इसलिए दिया गया है ताकि यह आपकी जीवात्मा के लिए एक स्वस्थ वाहन के रूप में काम कर सके। जब आप इस मंदिर को ध्वस्त करते हैं तो आप सृष्टि के मूल तत्व जीवन को ही नकार देते हैं। आत्महत्या से असली नुकसान आपकी जीवात्मा को होता है। आध्यात्मिक रूप से आप एक पूरा लोक नीचे गिर जाते हैं और अपनी आत्मा के लिए आप

बड़ी मात्रा में नकारात्मक कर्म संचित कर लेते हैं। आपको पृथ्वी पर फिर से आना होगा और दुगुनी मुश्किलों से भरी, उन्हीं परिस्थितियों का सामना फिर से करना होगा। आपकी परीक्षा और आपका प्रशिक्षण भी दुगुने मुश्किल हो जाते हैं। जब कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो वह ईश्वर को दी गई अपनी कसम तोड़ता है।

कभी-कभी मनुष्य जिस दुःख से गुजरता है वह उसके लिए असहनीय होता है। हम सभी पृथ्वी पर अपने कर्मों का हिसाब चुकाने और अपनी आत्मा के विकास के लिए परीक्षा और प्रशिक्षण से गुज़रने के लिए आते हैं। कभी-कभी हमें ढेर सारे कर्मों का हिसाब चुकाना होता है अथवा हमने बहुत मुश्किल परीक्षाओं को चुन लिया होता है। जिस कष्ट से होकर हमें गुजरना पड़ता है, और जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, वे बहुत ही गंभीर और कठिन हो सकती हैं, लेकिन हमें हर हाल में अपनी जीवन यात्रा पूरी करनी चाहिए। मनुष्य जो महसूस नहीं कर पाता है, वह यह है कि उसका दुःख असहनीय होने के बावजूद भी जो दुःख वह आत्महत्या के द्वारा दूसरों को देता है वह उतना ही असहनीय है। **आत्महत्या एक स्वार्थी कर्म भी है।**

जिस वक़्त व्यक्ति दुःख से घिरा होता है, वह दूसरों के बारे में नहीं सोचता। जिस दुःख से होकर आप गुजरते हैं वह केवल आपको अपने बारे में सोचने के लिए मजबूर करता है। लेकिन जरा सोचिए आपके प्रियजनों का क्या होगा? जरा सोचिए, उन सब का क्या होगा जिन्हें आप अपने पीछे छोड़कर जाएंगे? आप न केवल अपने बुरे कर्म बढ़ाकर अपनी ही जीवात्मा को नुकसान पहुंचाते है, बल्कि दूसरों की जीवात्माओं को भी नुकसान पहुंचाकर कर्मों का बोझ बढ़ाते हैं। कुछ लोग कहेंगे कि उनका कोई नहीं है, और इसी कारण उन्हें लगता है कि उन्हें उपनी जान दे देनी चाहिए। लेकिन शायद यह उनके कर्मों का फल है, अथवा शायद उन्हें जांचा जा रहा है कि इस अकेलेपन के बावजूद भी वे कितने साहसी बने रह सकते हैं। आपके स्वार्थ के कारण आपकी समस्याएं अपने वास्तविक रूप से अधिक गंभीर दिखाई पड़ती हैं।

इन दिनों अकेलापन एक बड़ी समस्या बन गया है। लोगों के परिवार होने के बावजूद वे अकेला महसूस करते हैं। पृथ्वी पर इतना अकेलापन क्यों है?

अकेलेपन की इस भावना के पीछे दो कारण हैं। पहला, पृथ्वी पर आप एक पूर्ण आत्मा नहीं होते। क्योंकि अब आप जुड़वां आत्माओं की अवधारणा से परिचित हो चुके हैं, आप यह महसूस करेंगे कि आप पूर्ण आत्मा का केवल आधा हिस्सा हैं, और जो अकेलापन आप महसूस करते हैं वह अपनी जुड़वां के लिए होता है। बहरहाल, जब आप इसे समझ लें तो आपको इस बात का पूरा ख़याल रखना चाहिए कि आपको पृथ्वी पर उस पूर्णता के अहसास को हासिल करना है, क्योंकि यह आपकी परीक्षा है। अपने आध्यात्मिक जीवन कार्य को पूरा करने से पृथ्वी पर पूर्णता का अहसास करना बिल्कुल संभव है। **एक बार जब आपको अपने जीवन का सही उद्देश्य पता चल जाएगा तो आप शांति का अनुभव करेंगे।** खालीपन की भावना तब उठती है जब आपका अवचेतन मन आपसे यह कहता है कि आप धरती पर अपने जीवन कार्य

को पूरा नहीं कर रहे। दूसरी बात, आपका अवचेतन मन जानता है कि पृथ्वी आपका असली घर नहीं है। वह जीवात्मा जगत, उच्चतर लोकों की शांतता और अपनी समूह आत्माओं और प्रियजनों की संगत के लिए व्याकुल रहता है। असंतुष्टी का अनुभव करने के लिए आप इसे बहाना नहीं बना सकते। संतुष्ट महसूस करना पृथ्वी पर आपकी सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक है और इसमें आपको किसी भी तरह असफल नहीं होना है। शांति प्राप्त करने के लिए मृत्यु की प्रतीक्षा मत कीजिए। जीवात्मा जगत में शांति पाने के लिए आपको पहले पृथ्वी पर शांति प्राप्त करना सीखना होगा। अकेलापन इसी संघर्ष का एक हिस्सा है और इससे अच्छी तरह निपटा जाना चाहिए।

क्या इसका यह अर्थ है कि पृथ्वी पर हम हमेशा अकेला महसूस करेंगे?

नहीं, बिल्कुल नहीं। ऐसा नहीं कि आप पृथ्वी पर ख़ुश नहीं रह सकते और आपको हमेशा अकेलापन का अनुभव करना होगा। लेकिन अकेलापन ऐसी चीजों में से एक है जो मनुष्य को दुःख और उदासी की ओर ले जाता है। यदि यह उदासी लगातार बनी रही तो वह आपको आत्महत्या की ओर ले जा सकती है।

क्या यह सच है कि अपने हाथों से अपने जीवन का अंत करने के लिए बल और साहस चाहिए?

यह सच नहीं है। अपने जीवन का अंत करने की आपकी इच्छा का मतलब यह है कि **आपको अपनी जीवात्मा को मज़बूत बनाने की आवश्यकता है।** विश्वास रखिए कि यह ताकत आपके अन्दर है और यह भी जानिए कि ईश्वर आपको ऐसी स्थिति का सामना कभी नहीं करने देते जिसे आप संभाल न सकें। आपमें शक्ति है, इसका उपयोग कीजिए। दूसरी ग़लत अवधारणा यह है कि कभी-कभी आत्महत्या करना सम्मान जनक होता है। अपने जीवन का स्वयं अंत करना कोई 'सम्मान' की बात नहीं है। आपकी आत्मा को पृथ्वी पर अपने कर्तव्य और जीवन कार्य पूरे करने के लिए जिस वाहन (शरीर) की जरूरत है, उसी को नष्ट कर आप अपनी आत्मा का अपमान न करें। सम्मानित मनुष्य बनने के लिए जिम्मेदारी उठाइए और वही कीजिए जो आध्यात्मिक रूप से सही है। बहुत से लोग, जिन्होंने अपने जीवन का अंत किया है, उन्होंने ऐसा दबाव में आकर किया। उन्होंने ऐसा दूसरे लोगों और समाज में प्रचलित ग़लत धारणाओं के प्रभाव में आकर किया। ऐसा करना कौन सी सम्मान की बात है? बजाए इसके, आध्यात्मिक जीवन अपनाइए और ईश्वर का सम्मान कीजिए। केवल उन्हीं की राय है, जो वास्तव में मायने रखती है। पृथ्वी पर बेशक कभी-कभी ऐसा होता है कि आत्मा के लिए शरीर में रहना असहनीय हो जाता है, लेकिन यह परिवर्तन की घड़ी को सूचित करता है। अपने आप को खत्म कर लेना, इस समस्या का समाधान नहीं है।

लेकिन जब मनुष्य अपने जीवन के सबसे अधिक हताशा भरे और कमज़ोर क्षण का सामना करता है, तब उसे क्या करना चाहिए?

जब आप ऐसी स्थिति से गुजरें तो समझिए कि ईश्वर आपके बल की परीक्षा ले रहे हैं। यह दिखाने के लिए कि आपमें साहस है और आप हारेंगे नहीं, आपको बस एक सकारात्मक कदम उठाने की जरूरत होती है। जब आप अपने कर्मों का भुगतान कर अपनी परीक्षा में सफल हो जाएँगे, तब आपकी परिस्थितियां बदल जाएंगी। ईश्वर आपकी सहायता के लिए अपने फ़रिश्ते भेजते हैं। वे विशिष्ट जीवात्माएं होती हैं जो आत्महत्या करना चाहने वाले लोगों की सहायता करने का चयन करती हैं। ये जीवात्माएं खासतौर पर प्रशिक्षित होती हैं और व्यक्ति के जीवात्मिक मार्गदर्शक के साथ मिलकर काम करती हैं और प्रक्षेपण तथा प्रार्थना के जरिए पृथ्वी पर मनुष्य की सहायता करती हैं। वे उन्हें जीने का बल प्रदान करने के लिए उनके अवचेतन मन के जरिए संदेश भेजती हैं। यह विशिष्ट जीवात्माओं का अस्तित्व इसलिए होता है, क्योंकि ईश्वर नहीं चाहते कि पृथ्वी पर मनुष्य अपनी जान लेने जैसी ग़लती करे, क्योंकि **इसका परिणाम बहुत गंभीर होता है।** अपनी आंखें खोलिए और उन उद्देश्यों के बारे में सोचिए जिनके कारण आपको पृथ्वी पर जीना हैः आपका आध्यात्मिक जीवन कार्य, सेवा और प्रगति। साथ ही यह भी समझ लीजिए कि कभी-कभी तो अपनी जान लेने का कारण पूरी तरह अर्थहीन होता है। उदाहरण के लिए, स्कूल, कॉलेज की परीक्षाओं में असफल होकर युवा अपने माता-पिता का सामना करने के डर से अपनी जान ले लेते हैं। इन दिनों बहुत से माता-पिता अपने बच्चों के प्रति बहुत कठोर होते हैं और उन्हें इतना आतंकित कर देते हैं कि वे ग़लत फैसले कर बैठते हैं। कुछ बच्चों को प्रताड़ित किया जाता है, उनका बलात्कार किया जाता है और उन्हें डराया-धमकाया जाता है। ऐसी परिस्थितियों में अगर बच्चे के पास ऐसा कोई नहीं जिसपर वह विश्वास कर सके, तो वह घबराहट में आत्महत्या जैसा कदम उठा सकता है। माता-पिता के मार्गदर्शन का यह अर्थ नहीं कि वे अपने बच्चों के प्रति कठोर हों। बल्कि उसका अर्थ है बच्चे की भावनाओं को समझना और उसकी आत्मा के लिए जो श्रेष्ठ हो, वही करना। कभी-कभी माता-पिता की उपेक्षा, निर्दयता और नासमझी के कारण बच्चे आत्महत्या की ओर रुख़ कर सकते हैं।

कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जो इसलिए खिड़की से कूद जाना चाहते हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता के लगातार दोषारोपण अथवा उनकी असहनीय निर्दयता को बर्दाश्त नहीं कर पाते। ऐसी स्थितियों में आत्मा के लिए शरीर में रहना बेहद मुश्किल हो जाता है। ढेर सारे बच्चों ने अपने जीवन का अंत गैर-महत्वपूर्ण बातों को लेकर किया है। जब वे जीवात्मा जगत में आते हैं तब उन्हें अहसास होता है कि उन्होंने जो किया वह अधीरता में उठाया हुआ कदम था और उनका डर कितना बेमतलब था। ऐसे लोगों को यह जानना चाहिए कि असफलता क्षणिक होती है। दरअसल, असफलता सफलता तक पहुंचने का एक पायदान है। जिस तरह सुख को महसूस करने के लिए आपको दु:ख का अनुभव करना जरूरी है, उसी तरह सफलता का आनंद लेने के लिए असफलता का स्वाद चखना भी जरूरी है। असफलता तो बस मनुष्य को सिखाने वाला एक अनुभव मात्र है। हर माता-पिता की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को प्रेम सिखाएं, न

कि डर, और उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करें। जब यह ज्ञान बच्चे के अन्दर रच-बस जाता है, तब बच्चा अन्दर से खुलता है और उसके अंतर-स्वर फूट पड़ते हैं। माता-पिता सबसे अहम बात भूल जाते हैं: उन्हें एक अच्छा इंसान बनाना। इसके बदले, वे अपने बच्चों को यह शिक्षा देकर कि भौतिक जगत की उपलब्धियां ही सबसे महत्वपूर्ण हैं, उन्हें ग़लत दिशा की ओर बढ़ने को प्रेरित करते हैं। इस तरह वे अपने बच्चों को सफलता के बारे में झूठी धारणा देकर उन्हें ग़लत राह दिखाते हैं।

इन आत्माओं की मदद किस प्रकार की जा सकती है?

कभी-कभी तनाव और निराशा से किसी को बाहर निकालने के लिए **अच्छाई भरा एक छोटा कार्य भी काफी होता है,** जो उनमें दूसरों और उनके खुद के प्रति फिर से विश्वास जगाता है। यदि आपको यह पता हो कि कोई व्यक्ति बहुत बुरे समय से गुज़र रहा है तो उस तक पहुंचने की कोशिश कीजिए। यदि आप किसी व्यक्ति को उसकी परेशानियों और उसके दु:खों का सामना करने में मदद करते हैं, तो आपको आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। जो नकारात्मक आत्माएं दूसरों को अपना जीवन अंत करने के लिए मजबूर करती हैं उनका अंजाम कल्पना से भी परे होता है। **जो व्यक्ति किसी दूसरे को आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है, उसका पाप हत्या के बराबर होता है।**

कभी-कभी लोग आत्महत्या का उपयोग किसी के साथ भावनात्मक रूप से छल करने के लिए करते हैं। दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, कुछ साबित करने के लिए या किसी से बदला लेने के लिए भी लोग आत्महत्या का प्रयास करते हैं, अथवा खुद अपनी जान ले लेते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि दूसरे व्यक्ति में अपराधबोध जगे। ऐसा करने से उनका पतन होता है और पास बहुत सारे नकारात्मक कर्म संचित हो जाते हैं।

जब आपके मन में कोई नकारात्मक स्वभाव के अथवा आत्महत्या के विचार आने लगें तो उस समय ध्यान में रखने योग्य कुछ बातें यहां दी जा रही हैं। ये विचार तत्काल रोक देने चाहिए क्योंकि वे आखिरकार आपको ग़लत राह पर ले जाएंगे:

१. जब कोई नकारात्मक विचार आपके मन में आए तो उससे तुरंत छुटकारा पाइए। अपना ध्यान उससे हटाकर सकारात्मक कार्यों में लगाइए। आप इसके बारे में जितना सोचेंगे, उतना ही बल आप इस विचार को देंगे। ऐसे विचारों से छुटकारा पाने के लिए अपने मन को किसी दूसरी जगह केंद्रित कीजिए। भौतिक रूप से व्यस्त रहिए। कभी भी इतनी देर नहीं हो चुकी होती, कि खुद को बदला न जा सके।

२. अध्ययन कीजिए। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कीजिए। जब आप यह समझ लेते हैं कि आपके जीवन में कुछ घटनाएं क्यों हो रही हैं, और उनका कारण क्या है, तो आपके लिए उन्हें

स्वीकार कर उनसे निपटना आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब आप कर्म के सिद्धांत से परिचित हो जाते हैं तो आपके लिए कठिन समय से गुज़रना आसान हो जाता है।

३. अपने अवचेतन मन को जागृत किजिए क्योंकि यही वह जगह है जहां आपकी असली शक्ति छिपी होती है। मुश्किल समय के दौरान, अवचेतन मन आपको मार्गदर्शन और बल प्रदान करता है।

४. इसकी चिंता मत कीजिए कि लोग क्या कहते हैं। उनकी कही बातों से खुद पर नकारात्मक प्रभाव न होने दें। यदि जो आप कर रहे हैं वह अच्छा और सही कर्म है और आप ईश्वर की भली राह पर हैं, तो भले आपके माता-पिता भी आपके ख़िलाफ क्यों न हों, आप दृढ़ बने रहिए। लेकिन यह जरूर निश्चित कर लें कि आप सही मायने में ईश्वर की भली राह पर हों और अपने आप को धोखा न दे रहे हों, अथवा आप जो कर रहे हैं वह अपने अहंकार की उपज न हो।

५. यदि आपने ग़लती की हो, तो इसे स्वीकारिए और सुधारिए, लेकिन अपने अन्दर अपराधबोध को हावी न होने दें। गलतियाँ इंसान से ही होती हैं। महत्वपूर्ण तो यह है कि आप ग़लतियों से सबक लें और उन्हें कभी भी न दुहराएं। साथ ही, ग़लतियों पर परदा डालने की कोशिश भी न करें, अन्यथा इससे आप और अधिक ग़लतियां कर बैठेंगे। अपनी ग़लतियों की जिम्मेदारी लें।

६. अपनी पूरी शक्ति लगाकर, हृदय की गहराई से, सच्चे मन से प्रार्थना कर ईश्वर से विनती कीजिए कि वह आपकी मदद के लिए फ़रिश्ते भेजें। ईश्वर से मार्गदर्शन और रक्षा की मांग करना महत्वपूर्ण है।

७. सारा दिन, २४ घंटे एक प्राकृतिक ज्योत जलाए रखें। प्रकाश नकारात्मक ऊर्जा को अवशोषित कर लेता है ओर आपके आसपास के स्पंदनों को स्वच्छ रखता है।

८. नकारात्मक संगतों और ग़लत राह पर ले जाने वाले लोगों से दूर रहें।

९. यदि आपकी कोई समस्या है तो इसके बारे में अपने किसी भरोसेमन्द व्यक्ति से चर्चा करें। दूसरे के नजरिए को जानकर आपको अपनी समस्या को साफ-साफ समझने का अवसर मिल सकता है। यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति न हो जिसपर आप भरोसा करते हों, तो वह सबसे खूबसूरत व्यक्ति जिससे आप अपनी बात कह सकते हैं, वह है आपका अवचेतन मन, जो जीवात्मा जगत से जुड़ा है।

१०. याद रखिए कि दु:ख क्षणिक होता है। अच्छा वक़्त भी हमेशा के लिए नहीं रहता। आपकी मुसीबतें एक दिन गुज़र जाएंगी।

११. अपने भौतिक मन को व्यस्त रखिए। कुछ न कुछ रचनात्मक करते रहिए, क्योंकि खाली रहने पर आपका भौतिक मन आपको ग़लत राह की ओर ले जाता है। अपने आसपास अच्छे लोगों को जुटाए रखें।

१२. थोड़ा व्यायाम कीजिए। सक्रिय रहिए, टहलने जाइए। ताजी हवा में सांस लीजिए, हमेशा घर के अन्दर मत रहिए। मन, शरीर और आत्मा के लिए योग बड़े कमाल की चीज है।

१३. औषधि सहायता लेने से डरिए मत। प्रार्थनाओं में बड़ी ताकत होती है लेकिन कभी-कभी आपको औषधि सहायता की भी आवश्यकता होती है। इसलिए ऐसा करने से न शर्माएं। इसे असफलता के रूप में मत देखिए। समस्याओं के बीत जाने पर आप पहले से अधिक सबल हो जाएँगे। आप पहले से अधिक समझदार हो जाएँगे और फिर परिवर्तन कर सकेंगे। बहरहाल, औषधों के आदी भी मत बनिए।

१४. अपने स्वास्थ्य का खयाल रखिए। पृथ्वी पर बहुत सारे लोग अपने शरीर को शराब, ड्रग्स और सिगरेटों से बरबाद कर रहे हैं। अधिक खाना भी हानिकारक होता है। यह सब करना एक तरह से आत्महत्या करने जैसा ही है क्योंकि इस तरह आप अपने शरीर को धीरे-धीरे खत्म और अपने जीवन को छोटा कर रहे होते हैं, और इस वजह से आपकी आत्मा पृथ्वी पर अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाती। जब आप ड्रग्स अथवा शराब के नशे में होते हैं, तो आप सही निर्णय नहीं कर पाते और मन से आप बेहद कमजोर हो जाते हैं। आपके नकारात्मक ऊर्जा और प्रक्षेपित नकारात्मक विचारों के संपर्क में आने की संभावना प्रबल हो जाती है और आप ऐसे आवेग के तहत काम करने लगते हैं जो आपके अन्दर से नहीं आता बल्कि नकारात्मक शक्तियों द्वारा आप पर प्रेक्षिपित किया गया होता है। दूसरी बात, जिसे आपको धरती पर बहुत ही गंभीरता से लेनी चाहिए, वह है यौन असावधानी। एक कमजोर क्षण आपको जीवन भर की तकलीफ़ दे सकता है। मनुष्य अपनी इच्छाओं के आगे तुरंत झुक जाता है और अपने शरीर का खयाल रखने के मामले में बहुत लापरवाह हो जाता है। यौन असावधानी भी एक तरह से आत्महत्या है, क्योंकि आप पर इसके कारण होने वाली बीमारियों की चपेट में आने का जोख़िम बना रहता है, जो आपके साथ-साथ आपके संपर्क में आने वाले दूसरे लोगों के लिए भी जानलेवा हो सकता है। यह आपका कर्म नहीं है। आप गैर-जिम्मेदारी से कार्य करने का विकल्प चुनते हैं और इसके जो परिणाम होते हैं वह आपके चयन का ही नतीजा होता है।

१५. खुद दुःख में होने के बावजूद भी दूसरों की मदद करने का प्रयास कीजिए। खुद तकलीफ में होकर भी दूसरों के प्रति करुणा रखकर आप खुद अपने आप को सबल बनाते हैं। ऐसा करने पर ईश्वर आपकी सहायता जरूर करते हैं, लेकिन आपका हेतु बिल्कुल निःस्वार्थ होना चाहिए।

मानव शरीर का सम्मान किजिए और इसका लाभ लीजिए। आपको एक मन, शरीर और जीवात्मा दी गई है, ताकि आप अच्छी तरह जीवन जी सकें और दूसरों की सहायता कर सकें। कभी-कभी पृथ्वी पर ऐसा वक़्त भी आ सकता हैं जब आपको बहुत अधिक तकलीफ़ उठानी पड़े, खासकर तब जब आपने अपना प्रियजन खोया हो। ईश्वर को दोष देने अथवा “मैं ही क्यों?” यह प्रश्न पूछने के बजाए बहादुरी दिखाइए और जीवन के सुनहरे पहलू की ओर नज़र डालिए।

आत्महत्या किसी भी समस्या का हल नहीं है। जब आप जीवात्मा जगत में जाते हैं और अपने जीवन पर नज़र डालते हैं तब आपको हमेशा यह महसूस होता है कि आपमें अपने जीवन की समस्याओं को संभालने की बहुत अधिक क्षमता थी। आत्महत्या तो कोई समाधान ही नहीं था। आपका जीवन ईश्वर की अमानत है, और किसी को उसका अंत करने का अधिकार नहीं। आत्महत्या आत्मा के लिए अधःपतन का कारण होता है।

जीवन के उपहार के अलावा, ईश्वर ने आपको एक सुन्दर अवचेतन मन और एक जीवात्मिक मार्गदर्शक दिया है। ईश्वर ने आपको एक भौतिक मन भी दिया है जो ज्ञान को ग्रहण करता है और उसे इस प्रकार प्रशिक्षित किया जा सकता है कि वह अवचेतन मन के अधीन काम करे और सही-ग़लत को समझने में आपकी मदद करे। आपको इतनी सहायता और इतनी सुरक्षा दी गई होती है की आपको यह विश्वास रखना चाहिए कि चाहे कितनी भी बाधाएं आपके जीवन में क्यों न आएं, आप उनका सामना कर सकते हैं।

ईश्वर

“हमें खुदके अस्तित्व का प्रमाण देने की, ईश्वर को आवश्यकता नहीं होती। प्रमाण तो हमें ईश्वर को देना है।”

“यदि आप सबूत की मांग करेंगे, तो आपको यह नहीं मिलेगा। लेकिन यदि आप इसकी मांग न करते हुए मन में आस्था रखेंगे, तो आपको सबूत मिल जाएंगा।”

“ईश्वर आपको सज़ा नहीं देते; सज़ा तो आपको अपना अवचेतन मन देता है।”

“आप लोगों को बेवक़ूफ़ बना सकते हैं, आप खुद अपने आप को धोखे में रख सकते हैं लेकिन आप सर्वशक्तिमान ईश्वर को कभी धोखा नहीं दे सकते।”

“एक सरल, ईमानदार, नेक और निःस्वार्थ कर्म बिना एकाग्रता के घंटों किए जाने वाली प्रार्थनाओं और लोगों, तथा हमारे सर्वशक्तिमान ईश्वर को छलने के उद्देश्य से दिए जाने वाले हजारों के दान से अधिक महत्वपूर्ण है।”

शुरुआती संदेशों में से एक था: “जीवात्मा जगत में कोई धर्म नहीं होता। हम केवल एक ही ईश्वर की आराधना करते हैं।” तो फिर, पृथ्वी पर इतने सारे विभिन्न धर्म क्यों हैं?

हालांकि पृथ्वी पर इतने सारे धर्म हैं, लेकिन वे सब अंततः हमें उसी सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर ले जाते हैं। आपकी पृथ्वी को अच्छे से बुरे और बुरे से फिर अच्छे के चक्रों से होकर गुजरना पड़ता है। जब पृथ्वी पर नकारात्मकता बहुत बढ़ जाती है, तब ईश्वर उच्चतर ब्रह्मांड से एक बहुत ही उच्च आत्मा को पृथ्वी पर लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए भेजते हैं। वह **पैगम्बर** कहलाता है। वह लोगों में ज्ञान फैलाता है ताकि वे उन्नति कर सकें और भली आत्माएं बन सकें। प्रत्येक पैगम्बर के अनुयाइयों को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। दुर्भाग्य से, सैकड़ों सालों के दौरान बहुत से पैगम्बरों की शिक्षाओं को मनुष्य ने तोड़-मरोड़ डाला है। बहरहाल, जीवात्मा जगत में कोई धर्म नहीं होता।

ईश्वर में विश्वास करना सामान्य तौर पर, मनुष्य के लिए कठिन क्यों होता है?

आपके जीवनकाल में ईश्वर के प्रति आपकी धारणा बदलती रहती है। कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनका अपनी युवावस्था के दिनों में ईश्वर पर भरपूर विश्वास होता है, लेकिन आयु बढ़ने के साथ उनका यह विश्वास कम हो जाता है। ऐसा होने का एक कारण यह है, कि यदि आप कुछ पाने के लिए पूरे मन से प्रार्थना करते हैं और फिर भी आपको वह नहीं मिलता, तो आप यह मान लेते हैं कि ईश्वर ने आपकी बात नहीं सुनी, और यह भी कि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं हैं। लेकिन, सच तो यह है कि जब प्रार्थना का प्रत्युत्तर न मिले, तो इसका अर्थ है कि आप जो पाने की प्रार्थना कर रहे थे, वह आपके आध्यात्मिक विकास के लिए ठीक नहीं। ईश्वर पर से आपका विश्वास तब भी उठ जाता है, जब आपके साथ अन्याय होता है और आप खुद से पूछते हैं कि क्यों ईश्वर न्याय नहीं करते। उस अन्याय के रूप में यह आपका कर्म, परीक्षा अथवा प्रशिक्षण हो सकता है। कभी-कभी जब आपकी सेहत खराब होती है और आप ठीक होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, लेकिन आपकी सेहत नहीं सुधरती और आपका ईश्वर पर से भरोसा उठ जाता है। जो बात आप नहीं समझ पाते वह यह, कि बुरी सेहत की तकलीफों से गुजरकर, हो सकता है, कि आप अपने बुरे कर्मों का हिसाब चुका रहे हों।

कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनका अपनी युवावस्था में ईश्वर पर कोई विश्वास नहीं था, लेकिन समय के साथ होने वाले अनुभवों के कारण उनके अन्दर ईश्वर के प्रति विश्वास जगता है। चाहे आपके अनुभव जो भी हों, यह ध्यान में रखिए कि ईश्वर को मानने, या न मानने का फैसला करना, आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण फैसला है। जब आप पृथ्वी पर होते हैं, तब जीवात्मा जगत की आपकी स्मृति आपके भौतिक मन से मिटा दी जाती है। लेकिन, अवचेतन मन के जरिए जीवात्मा जगत से आपका संबंध अब भी बना रहता है। यह आपका अवचेतन मन ही है जो पृथ्वी पर आपका मार्गदर्शन करता है और ईश्वर के अस्तित्व में आपको भरोसा दिलाता है।

आज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण पाने के लिए, हमेशा वैज्ञानिक व्याख्या, अथवा सबूत चाहता है। अवचेतन मन अनन्त होता है। लेकिन मनुष्य की बुद्धि की उपज होने के कारण विज्ञान सीमित होता है। मानवीय बुद्धि ईश्वर को समझने में सक्षम नहीं होती।

ईश्वर को अपने आप को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं। प्रमाणित तो हमें अपने आप को ईश्वर के समक्ष करना है।

पृथ्वी पर हम इसी कारण तो हैं। हम यहां ईश्वर की परीक्षा लेने के लिए नहीं आए हैं। परीक्षा तो हमारी इस बात पर हो रही है कि भौतिक मन के बजाए हम अवचेतन मन के निर्देशो को मानते हैं या नहीं। कुछ लोग बहुत अधिक तार्किक होते हैं और उन्हें हर बात के लिए तार्किक जवाब चाहिए होता है। आस्था और सहजबोध उनके दैनिक जीवन में न के बराबर भूमिका निभाते हैं। ये ऐसे लोग हैं जो मुख्य रूप से अपने भौतिक मन द्वारा अथवा अपनी बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं। इसके विपरीत, ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें हर बात के लिए तार्किक उत्तर की आवश्यकता

नहीं होती। वे तार्किकता और सांसारिक बुद्धि की सीमा से परे जीवात्मा की तरह सोचने की क्षमता रखते हैं। मनुष्य यदि ईश्वर का अनुभव कर सकता है तो वह केवल अपने अवचेतन मन के द्वारा ही। आप पृथ्वी पर ईश्वर को पूरी तरह कभी नहीं समझ पाएंगे। लेकिन अच्छाई का चयन करके आप ईश्वर को महसूस जरूर कर सकते हैं। बुद्धिमता एक बड़ा वरदान है, लेकिन केवल तभी, जब इसका इस्तेमाल अवचेतन मन के वरदानों, अर्थात आस्था और विवेक के साथ किया जाए।

यह तथ्य कि आप ईश्वर को देख नहीं सकते, यह सिध्द नहीं करता कि उनका अस्तित्व नहीं है। सत्य यदि दिखाई न पड़े, तो भी सत्य ही रहता है। पृथ्वी पर यह हमारी परीक्षा है कि हम अपने अंतर्मन की आवाज के आधार पर कुछ ऐसे तत्वों पर विश्वास करें जो हमें दिखाई नहीं पड़ते।

कभी-कभी मनुष्य की ईश्वर में बड़े प्रमाण में आस्था होती है। लेकिन, अगर कुछ बहुत ही दुःखद घटित होता है, जैसे कि बच्चे अथवा पति या पत्नी को खो देना अथवा कोई बहुत ही भयानक अन्याय, तो व्यक्ति ईश्वर को दोष देने लगता है और उसका उनपर से भरोसा उठ जाता है। हां, इसमें कोई शक नहीं कि आप दुःख का अहसास करते हैं, लेकिन इस दुःख के कारण अपनी आस्था खोने के बजाए ईश्वर से प्रार्थना करें कि वे आपको इसका सामना करने की ताकत दें। पृथ्वी एक ऐसी जगह है जहां कदम-कदम पर अन्याय होता है। अच्छे लोग दुःख झेलते हैं और बुरे लोग प्रायः ताकतवर होते हैं और सुख का उपभोग करते दिखाई पड़ते हैं। इस समय पृथ्वी पर भारी असंतुलन की स्थिति है, लेकिन यह असंतुलन हमारी परीक्षा है और संघर्ष हमारा शिक्षक। आपके साथ होने वाले सभी अन्यायों के बावजूद, क्या आपमें अब भी इतना साहस है कि आप ईश्वर और उनके न्याय में विश्वास करते हैं?

एक दिन ऐसा आएगा जब अच्छाई की दुष्टता पर जीत होगी, लेकिन तब तक अंधेरा हमारे लिए चुनौती है। ईश्वर अंधेरे के अस्तित्व की अनुमति देते हैं ताकि भली आत्माओं की परीक्षा हो सके और उन्हें प्रशिक्षण मिले। आखिरकार, जब पृथ्वी पर अच्छाई का बोल-बाला होगा तब ईश्वर में विश्वास करना आसान होगा। उस समय, विश्वास किजिए, आप ईश्वर के अस्तित्व का भरपूर अनुभव करेंगे। लेकिन यदि आप इस वक़्त ईश्वर में विश्वास नहीं रखते तो आप अपनी परीक्षा में सफल नहीं हो पाएंगे।

अपने जीवन में आप बहुत सी चीजें देखेंगे। आपने बच्चों को बदहाली झेलते हुए देखा होगा, निर्दोष लोगों को युद्ध पीड़ितों के रूप में देखा होगा और आपने यह भी देखा होगा कि हत्यारे छूट जाते हैं और निर्दोषों को जेल जाना पड़ता है। आपने कभी भयंकर से भयंकर अपराधों और अन्याय का सबसे घिनौना रूप देखा होगा। उस समय आपने अपने आप से यह पूछा होगा कि: कहां है ईश्वर? यदि ईश्वर हैं तो फिर वे कुछ करते क्यों नहीं? वे यह सब क्यों नहीं रोकते?

लेकिन, ध्यान दीजिए कि यह सब ईश्वर ने शुरू ही नहीं किया है, बल्कि इंसानों ने किया है। ईश्वर

ने मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा दी और मनुष्य ने अपनी स्वतंत्र इच्छा का उपयोग नकारात्मक फैसले करने में किया। इसलिए इन दिनों नकारात्मकता बढ़ती जा रही है और भली आत्माओं की परीक्षा ली जा रही है। उनका विश्वास डगमगा जाता है। उन्हें डर और क्रोध ने घेर रखा है। वे ग़लत राह पर चलने के प्रलोभन में फंस रहे हैं। **एक समय पेसा आएगा जब प्रकृति खुद ही इस नकारात्मकता को मिटा देगी।** उस समय, अधिक से अधिक आत्माएं आध्यात्मिकता की ओर बढेंगी। लेकिन उस क्षण के आने की प्रतीक्षा मत कीजिए।

इसी वक्त सकारात्मक विकल्प चुनिए ताकि जब वह क्षण आए, तब तक आप अपनी परीक्षा में सफल हो चुके हों।

जब रोशनी भरपूर है तब उसकी तरफ जाना बहुत आसान है। उस समय प्रलोभन भी बहुत कम होते हैं। लेकिन रोशनी की तरफ बढ़ना तब बड़ा मुश्किल होता है, जब पृथ्वी पर इसकी कमी हो। और बुरी आत्माएं आपको इससे दूर ले जाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देतीं हैं।

अपने आप को एक योद्धा के रूप में देखिए और पृथ्वी को अपनी आध्यात्मिक रणभूमि मानिए।

क्या आप इसलिए अन्धेरे के सामने झुक जाएंगे कि ऐसा करना बहुत आसान है? अथवा क्या आप इसलिए अन्धेरे के सामने झुकेंगे कि यह आपमें ताक़त और क्षमता का भ्रम पैदा करता है? या फिर आप डर के कारण ऐसा करेंगे? अथवा, क्या आपमें वह विवेक है कि आप जान सकें कि यह अंधकार एक परीक्षा है और आपमें इससे लड़ने और ईश्वर और ईश्वरीय प्रकाश को चुनने का साहस होना चाहिए, चाहे ऐसा करना कितना ही मुश्किल क्यों न हो?

असली जिज्ञासु की शक्ति उसके अवचेतन मन की शक्ति पर निर्भर करती है। यही कारण है कि आप इसके विकास के लिए जीवात्मा जगत में इतना अधिक समय व्यतित करते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि आप कैसी जगह पर जाने वाले हैं और वहां आप किन कारणों से जाएंगे। अच्छाई और दुष्टता के अस्तित्व का यही कारण है कि आप दुष्टता से दूर जा सकें और अच्छाई को चुन सकें।

नकारात्मकता का अस्तित्व होता है, ताकि आपकी स्वतंत्र इच्छा की परख हो सके। यदि नकारात्मकता न होती, तो प्रलोभन भी न होता और तब स्वतंत्र इच्छा के उपयोग का अवसर आपको नहीं मिलता।

सही विकल्प चुनिए। प्रतिरोध सबसे पहली आवश्यकता है। प्रलोभन का प्रतिरोध कीजिए। कर्म करने की बात इसके बाद आती है। ईश्वर हमारे सृजनकर्ता हैं। वह सर्वोच्च सत्ता है जो ज्ञानी, न्यायी और प्रेमल हैं। आप उन्हें अच्छाइयों के द्वारा जान सकते हैं। आप ईश्वर का विश्लेषण जितना अधिक करेंगे उतना ही अधिक आप खुद को उनसे दूर पाएंगे और उतना ही आप उनके

द्वारा दी जाने वाली शांति से खुदकों वंचित रखेंगे। ईश्वर केवल एक विचार या सोच नहीं है। उनका भी एक रूप है, लेकिन पृथ्वी पर वे स्वयं को खास कारण से अदृश्य रखते हैं। यही हमारी परीक्षा है।

हम सबकी देखभाल करुणामय, ज्ञानी और न्यायी ईश्वर द्वारा की जाती है। वे सचमुच सर्वशक्तिमान हैं, और वे अपनी संपूर्ण सृष्टि का पालन करते हैं और चाहते हैं कि हम सब सही राह पर चलें। हम सब को उनके आशीर्वाद पाने का अवसर मिलता है, लेकिन उनके आशीर्वाद पाने के लिए हमें सबसे पहले अच्छाई का चयन करना होगा। ईश्वर को जानने का अर्थ है खुद अपने आप को जानना, अपने अस्तित्व का अनुसंधान करना और अपने भीतर उनकी महानता और अच्छाइयों की शोध करना।

प्रार्थना

“सबसे ताकतवर प्रार्थना वह होती है जो किसी दूसरे के आध्यात्मिक विकास के लिए की जाती है।”

“लोग दिखावे के लिए प्रार्थना करते हैं, लोग दूसरों को यह जताने के लिए प्रार्थना करते हैं कि वे सचमुच धार्मिक हैं। प्रार्थना संक्षिप्त और मधुर होनी चाहिए। वह सकारात्मक, सच्ची और पूर्ण निःस्वार्थ भावनाओं से भरी होनी चाहिए।”

प्रार्थना का उद्देश्य क्या होता है?

प्रार्थना आध्यात्मिकता का एक महत्वपूर्ण भाग है। प्रार्थना के बिना आप विकास नहीं कर सकते। जिस तरह मानव शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी तरह आत्मा को प्रार्थना की आवश्यकता होती है। हम सब के लिए ईश्वर की प्रार्थना ज़रूरी है क्योंकि इससे हमें उनकी कृपा प्राप्त होती है और हमें पृथ्वी तथा जीवात्मा जगत में आध्यात्मिक उन्नति के लिए शक्ति और विवेक प्राप्त होता हैं। पृथ्वी पर नकारात्मक शक्तियां काफ़ी प्रबल होती हैं और भली आत्माओं के लिए अच्छे काम करना मुश्किल होता जा रहा है। ऐसा नहीं कि भली आत्माएं अच्छे और बुरे का अन्तर नहीं कर सकतीं। वे ग़लत इसलिए कर बैठती हैं क्योंकि उनमें प्रलोभन का प्रतिरोध करने की ताक़त नहीं होती। इसलिए प्रार्थना करना जरूरी है। प्रार्थना हमें आध्यात्मिक ज्ञान को कार्यरूप देने में मदद करती है। यह आध्यात्मिक मांस-पेशी का निर्माण करती है। इस आध्यात्मिक मांस-पेशी के निर्मित हो जाने पर आप सही काम करने के लिए पर्याप्त रूप से सबल हो जाते हैं और आप पर प्रलोभनों का असर नहीं होता। अंततः, ज्ञान को व्यवहार में उतारने के कार्य के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, आत्मा को पोषण प्राप्त होता है।

प्रार्थना आत्मा को पोषित करती है। प्रार्थना सच्ची और हृदय से निकली हुई होनी चाहिए। केवल प्रार्थना करने की प्रक्रिया से नहीं, बल्कि प्रार्थना से निकलने वाली शक्ति को चक्रीय रूप से बार-बार प्राप्त करते रहने और फिर सही कार्य करने से आपको शांति मिलती है और आपकी आत्मा को विकसित होने में सहायता मिलती है।

लोग पृथ्वी पर जैसा सोचते हैं उसके विपरीत सच यह है कि प्रार्थना अदृश्य नहीं होती।

जब आप प्रार्थना करते हैं, आपके विचार, शब्द और आपकी भावनाएं जीवात्मा जगत की ओर प्रकाश किरणों के रूप में प्रवास करतीं हैं। जीवात्मा जगत में, हम पृथ्वी से अपनी ओर आने वाली लाखों करोड़ों प्रकाश किरणों को देख सकते हैं। प्रत्येक प्रकाश किरण की चमक या उसकी ताक़त, प्रत्येक प्रार्थना की सच्चाई और प्रार्थना करने वाले की आवश्यकता पर निर्भर करती है।

ईश्वर ने जीवात्मा जगत में भली आत्माओं को अपने साथ कार्य करने और प्रार्थनाओं के उत्तर देने में उनकी सहायता करने के लिए चुना है। ये जीवात्माएं मानवीय मदद की पुकारों के उत्तर देने के लिए खासतौर पर प्रशिक्षित होती हैं। किसी प्रार्थना का उत्तर देने के लिए ये आत्माएं पृथ्वी पर उस व्यक्ति की ओर सकारात्मक प्रकाश किरणें वापस भेजती हैं। यही कारण है कि प्रार्थना के लिए अंग्रेजी शब्द 'प्रेयर' (prayer) में 'रे' (ray) शब्द निहित होता है। प्रार्थनाएं, वास्तव में प्रकाश की सकारात्मक किरणें हैं।

क्या ईश्वर हमारी प्रार्थना सुनते हैं?

जब आप प्रार्थना करते हैं, तब ईश्वर आपकी प्रार्थना सुन रहे होते हैं। हालांकि, ऐसा वे अपने फ़रिश्तों के जरिए करते हैं जो उन प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर देते हैं। कभी-कभी लोग अपनी या अपने प्रियजनों की ज़िंदगी के लिए प्रार्थना करते हैं। यदि वे भली आत्माएं हैं, तो उन्हें आरोग्यकारी शक्ति प्रदान की जाती है ताकि उनमें स्वस्थ होने की शक्ति अथवा अगर यह उनका कर्म फल हो, तो उनमें शारीरिक कष्ट को भोगने की क्षमता आ जाए। कभी-कभी लोग इसलिए भी प्रार्थना करते हैं, क्योंकि उन्हें कुछ समझ में नहीं आ रहा होता। वे नहीं जानते कि अपनी खुद की अथवा अपने करीबी व्यक्तिओं की किस प्रकार मदद की जाए। इसलिए उनकी प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर मार्गदर्शन अथवा उनके अवचेतन मन के जरिए मिलने वाले संदेश के रूप में दिया जाता है। इस संदेश को प्राप्त कर व्यक्ति के सामने सबकुछ साफ हो जाता है और उसकी दुविधा दूर हो जाती है। मदद की कुछ पुकारें इतनी अधिक आवश्यक और इतनी अधिक उलझी हुई होती हैं कि जीवात्माओं को अपने लोक की उच्च भली आत्मा की सलाह लेनी पड़ती है। लेकिन कृपया करके यह समझ लीजिए, कि आख़िरकार प्रार्थनाओं के प्रत्युत्तर देने वाली सारी आत्माओं को चूंकि ईश्वर के ही मार्गदर्शन और आशीर्वाद के साथ कार्य करना होता है, **इसलिए बेशक, ईश्वर ही आपकी प्रार्थनाओं को सुनते हैं, बशर्ते वे सच्ची और हृदय से निकली हों।**

ऐसा क्यों होता है कि बहुत सारी प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर नहीं मिलता? कुछ लोग सच्चे मन से और अपने अन्दर की गहराई से प्रार्थना करते हैं और तब भी उनकी प्रार्थनाओं को कोई उत्तर नहीं मिलता। ऐसा क्यों होता है?

आपकी प्रार्थना को प्रत्युत्तर तभी प्राप्त होता है जब:

१. आप प्रार्थना द्वारा जो माँग रहे हैं, वह आपके हित में हो।

प्रायः आप जिस चीज के लिए प्रार्थना करते हैं वह आपकी दृष्टि में आपके लिए सही होती है। अकसर जब आप किसी चीज को अपने लिए सही मानते हैं तो इसके पीछे आपंका भौतिक दृष्टिकोण होता है। लेकिन, आपको उन्हें आध्यात्मिक संदर्भ में देखना चाहिए। आप जिस चीज के लिए प्रार्थना करते है यदि वह आपके आध्यात्मिक विकास में बाधक है तो आपकी प्रार्थना का प्रत्युत्तर कभी नहीं दिया जाएगा। इसलिए जब आप अगली बार प्रार्थना करें और उसका प्रत्युत्तर न मिले, तो समझ लें, कि जिस बात के लिए आपने प्रार्थना की वह आपकी आत्मा के लिए सही नहीं है। साथ ही, प्रार्थनाओं का सही समय पर प्रत्युत्तर मिलना भी आपके नियन्त्रण में नहीं होता। यह केवल ईश्वर के हाथों में होता है। जब आप पीछे मुड़कर अपनी किसी अनसुनी प्रार्थना पर दृष्टि डालते हैं, तो आप अहसास करते हैं कि ईश्वर द्वारा आपकी इच्छा पूरी करने का वह सही समय नहीं था। कभी-कभी मनुष्य उस चीज को संभाल पाने की स्थिति में नहीं होता जिसके लिए वह जी जान से प्रार्थना कर रहा होता है। **ईश्वर से कहिए कि वे आपके लिए जो श्रेष्ठ हो, वही करें।** इस तरह आप यह सुनिश्चित करेंगे कि आपके साथ जो भी होगा वह आपके आध्यात्मिक विकास के लिए होगा। जब आप ईश्वर से अपने लिए जो श्रेष्ठ हो, वह करने की प्रार्थना करते हैं, तो आप अपने जीवन की डोर को, एक उच्चतर शक्ति के हाथों में सौंप देते हैं, जिसे सबकुछ पता होता है। ऐसी प्रार्थना वास्तव में समर्पण की प्रार्थना होती है।

२. आपकी प्रार्थना सच्ची और दिल से की गई हो।

यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। आपकी प्रार्थना सच्ची होनी चाहिए। यह आधे मन से की हुई अथवा दिखावटी नहीं होनी चाहिए। आपकी प्रार्थना की सच्चाई और श्रध्दा ही वे तत्व हैं जो इसे शक्ति प्रदान करते हैं, और फ़रिश्तों द्वारा आपकी प्रार्थना का प्रत्युत्तर दिया जाना, पूरी तरह, सहायता के लिए आपकी पुकार की शुद्धता और उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है। यदि आपकी प्रार्थना सच्ची है और फिर भी उसे प्रत्युत्तर नहीं मिलता, तो इसका अर्थ है कि आप जिस चीज के लिए प्रार्थना कर रहे हैं वह आपके आध्यात्मिक विकास के लिए ठीक नहीं है।

३. आपकी प्रार्थना निःस्वार्थ और भौतिकता से रहित होनी चाहिए।

पृथ्वी पर आपके जीने के लिए भोजन, वस्त्र और आवास की आवश्यकता होती है, लेकिन विलासिता की चीजों की मांग करना ग़लत है। विलासिता असंतुलन पैदा करती है जिससे आपकी उन्नति बाधित होती है। ईश्वर से आप इतना मांग सकते हैं जो आपके आराम से जीने के लिए पर्याप्त हो। और, यदि आप केवल भौतिक समृद्धि की प्रार्थना करने वाले व्यक्ति हैं,

तो आपकी प्रार्थना सुनी नहीं जाएगी। सबसे महत्वपूर्ण बात याद रखें कि आपको दूसरों के आध्यात्मिक विकास के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। इससे आपकी प्रार्थना निःस्वार्थ होती है।

४. आपकी प्रार्थना आपके कर्मों में हस्तक्षेप न करती हो।

पृथ्वी पर आपके होने का मुख्य कारण है आपके द्वारा अपने किए हुए कर्मों का फल भोगना। कभी-कभी लोग खुद से पूछते हैं कि ईश्वर उनकी मदद क्यों नहीं करते, जबकि वे पूरे मन से ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। लेकिन यदि आपकी प्रार्थना आपके किसी ऐसे कर्म को प्रभावित करती हो जिसका फल भोगना आपके लिए आवश्यक है, तो ऐसी प्रार्थना सुनी नहीं जाएगी। अपनी प्रार्थना का प्रत्युत्तर न मिलने पर यदि आप प्रार्थना नहीं करते, अथवा ईश्वर में अपना विश्वास खो देते हैं, तो फ़रिश्ते आप तक रोशनी नहीं पहुंचा पाएंगे, और तब पृथ्वी पर मुश्किलों से होकर गुजरना आपके लिए अधिक कठिन हो जाएगा। पृथ्वी पर ऐसे बहुत से लोग हैं, जो तब प्रार्थना शुरू करते हैं, जब उनसे कुछ बुरा हो जाता है। उनकी धारणा यह होती है कि प्रार्थना के जरिए वे अपने पापों को मिटा लेंगे। याद रखिए, **प्रार्थना से आपके कर्म कभी मिटाए नहीं जा सकते।** सच्ची प्रार्थना आपको आपके कर्मों का फल सही तरह से भुगतने की शक्ति देती है, यह आपके कर्मों के हिसाब को मिटा नहीं सकती।

५. यदि आप सही रास्ते पर चल रहे हों।

पृथ्वी पर ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जो ग़लत राह पर चलते हैं। लेकिन, जब वे कुछ पाना चाहते हैं तो प्रार्थना करने लगते हैं। ऐसी आत्माओं की प्रार्थनाएं सुनी नहीं जा सकतीं। वास्तव में, ग़लत राह पर चलने वाली ऐसी आत्माओं को ईश्वर से केवल विवेक प्रदान करने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि वे खुदको सुधार सकें। आध्यात्मिक रूप से निम्नस्तरीय लोगों की केवल इसी एक प्रार्थना का प्रत्युत्तर जीवात्माओं द्वारा दिया जाता है। लेकिन, यदि आप ईश्वरीय सन्मार्ग पर हैं, तो आपको सुरक्षा और आरोग्य प्राप्त होगा, आपकी प्रार्थना का प्रत्युत्तर दिया जाएगा।

यदि आपको सचमुच यह विश्वास है कि ईश्वर के फ़रिश्ते आपकी प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं, तो आपको पूरे मन से प्रार्थना करने में कोई मुश्किल नहीं होगी। आपके फ़रिश्ते, आपकी प्रार्थनाओं को सुन रहे हैं, और ईश्वर के नियमों के अंतर्गत, वे आपके लिए जो कुछ कर सकते हैं, वह कर रहे हैं। इसलिए एक बार फिर, खुद को यह भरोसा दिलाइए कि कोई आपकी प्रार्थनाओं को सुन रहा है। विश्वास रखिए कि वे ज्ञानी हैं, वे जीवात्मा जगत से पूरा चित्र देख सकते हैं और वे वह सब करेंगे जो आपके लिए श्रेष्ठ है। सबसे बढ़कर, प्रार्थना की शक्ति को पहचानिए। यह प्रकाश की एक अविश्वसनीय शक्ति है और इसमें जीवन को बदल देने की क्षमता है। इस बात पर आपको अपने संपूर्ण हृदय से विश्वास करना चाहिए।

मनुष्य प्रार्थना के मामले में इतना अनियमित क्यों होता है?

मनुष्य प्रार्थना के मामले में मुख्य रूप से इसलिए अनियमित होता है, क्योंकि जब उसके साथ सबकुछ अच्छा हो रहा होता है तब वह ईश्वर को भूल जाता है और उसे लगता है की अब प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है। केवल तभी उसकी आँखें खुलती हैं, जब उसके साथ कुछ बुरा होता है, और तब वह ईश्वर को याद करता है। लगातार प्रयास करने के विषय में, मनुष्य थोड़ा कमज़ोर है। आप सही राह पर चलना चाहते हैं और जीवन में आध्यात्मिकता को प्राथमिकता देना चाहते हैं, लेकिन आप अपनी आध्यात्मिक प्रक्रियाओं में नियमित नहीं होते। बहरहाल, इसके लिए एक आसान उपाय है। **आपके कार्यों में सामंजस्य नहीं होता क्योंकि आप आध्यात्मिकता के मूल्य और उसकी शक्ति को नहीं समझते।** यदि आपको लगता है कि प्रार्थना उबाऊ है, यह एक प्रक्रिया है और इसमें वक़्त बरबाद होता है तो आपने इसके मूल्य को नहीं समझा है। प्रार्थना का अर्थ है कि आप सर्वशक्तिमान ईश्वर से बात कह रहे हैं। तो फिर, इससे बढ़कर और क्या जरूरी हो सकता है? यह जानकर आपको खुशी मिलनी चाहिए। यदि आप आस्था के साथ प्रार्थना करते हैं और आपको यह विश्वास है कि ईश्वर आपकी बात सुन रहे हैं, तो आप कभी भी प्रार्थनाओं के मामले में आलसी नहीं बनेंगे और जब आपको पता है कि प्रार्थना आपके लिए क्या कुछ कर सकती है तो स्वाभाविक रूप से प्रार्थना में आपकी रूचि जगेगी।

प्रार्थना हमारी किस प्रकार मदद करती है?

प्रार्थना के सकारात्मक प्रभाव, यहाँ निम्नांकित हैं:

१. आपको शांति का अनुभव होगा।
चाहे आपके पास कितनी भी भौतिक संपदा क्यों न हो, या पृथ्वी पर आपकी पद-प्रतिष्ठा चाहे जो भी हो, मन की शांति केवल ईश्वरीय सन्मार्ग पर चलकर ही प्राप्त हो सकती है। इस भौतिक जगत में मनुष्य को अनेक उतार चढ़ावों का सामना करना पड़ता है। लेकिन, जब प्रार्थना आपके जीवन का हिस्सा बन जाती है, तब आप अपने अवचेतन मन को सक्रिय करते हैं और आपका अवचेतन मन आपको उन उतार-चढ़ावों के पीछे की वास्तविकता बताता है। आप किसी भी समस्या को, खुदको पराजित करने की अनुमति नहीं देंगे और न ही आप सफलता को अपने मन में अहंकार संचित करने की अनुमति देंगे।

प्रार्थना आपको शांत रखती है और मुसीबत के क्षणों में शांति की जरूरत सबसे अधिक होती है। यदि आप शांत और सकारात्मक हैं, और मुश्किल घड़ियों में आप सही कदम उठाते हैं, तो आप अपनी परीक्षा में सफल होते हैं। और जब आप परीक्षा में सफल हो जाते हैं तब आपका मुश्किल समय भी गुज़र जाता है। तो, इस प्रकार आप अपनी आंतरिक शक्ति (शांति) द्वारा बाहरी तत्वों (मुश्किल समय) को बदल देते हैं।

यदि आप मन को स्थिर नहीं रखेंगे तो आपके अन्दर की शांति मुश्किल समय में, अथवा नकारात्मक बाहरी शक्तियों द्वारा भंग कर दी जाएगी। आप अधीर और भ्रांत हो जाएंगे और आपके अन्दर इतनी स्थिरता नहीं होगी कि आप आध्यात्मिक परीक्षा में सफल हो पाएं और जब तक आप परीक्षा में सफल नहीं होते तब तक मुश्किल समय बना रहेगा। वास्तव में परीक्षा में सफल होने में आपको जितनी देर होगी आपकी परीक्षा उतनी ही कठिन होती जाएगी। मुश्किल समय और भी अधिक मुश्किल हो जाता है, क्योंकि आपने बाहरी शक्तियों को अपने अन्दर की शांति को भंग करने की छूट दे दी होती है।

२. आपके स्पंदनों में सुधार होगा।

प्रत्येक प्रार्थना में स्पंदन या ऊर्जा होती है। जब आप प्रार्थना करते हैं तो इससे सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। ये सकारात्मक स्पंदन आप और आपके आसपास के लोगों पर आरोग्यकारी प्रभाव डालता है। इस तरह आप अपने आसपास के नकारात्मक स्पंदनों को प्रार्थना के जरिए हटा रहे होते हैं। जब नकारात्मक लोग आपके आसपास हों तब उनकी ऊर्जा आपको प्रभावित करती है और आपको नुकसान पहुंचाती है। इसलिए, नकारात्मक ऊर्जा धारण करने वाले लोगों के प्रति, अधिक से अधिक सावधान रहिए। यदि आपमें डर, अहंकार, क्रोध, निराशा, जैसे नकारात्मक भाव हैं, तो इससे आप अपने ही स्पंदन को कमजोर करते हैं और अपनी जीवात्मा को दुर्बल बनाते है। प्रार्थना आपको अपने आस-पास की नकारात्मक ऊर्जा को हटाने में मदद करती है, ताकि सकारात्मक स्पंदन का निर्माण हो सके।

३. आपके निर्णय की गुणवत्ता सुधरती है।

जब आप प्रार्थना करते हैं, तब आपके अपने स्पंदन स्वच्छ होते हैं और नकारात्मकता मिटती है। आपको घेरे रहने वाली नकारात्मकता के काले बादल छंट जाते हैं और आपका उच्च-स्व सक्रिय हो जाता है, अर्थात् आपका अवचेतन मन जागृत होता है और आप अन्दर से शांत, स्थिर और विमल हो जाते हैं और आपके निर्णय की गुणवत्ता बढ़ जाती है। जब आपके निर्णय की गुणवत्ता बढ़ती है, तब आप अधिक सकारात्मक विकल्प चुनने में सक्षम होते हैं। इस तरह, आप निःस्वार्थ कर्म करने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं। परिणामस्वरूप, आध्यात्मिक रूप से आप उन्नत होते हैं।

४. आपको जीवात्मा जगत से सुरक्षा प्राप्त होती है।

प्रार्थना सृष्टिकर्ता से सम्पर्क करने का विषय है। आपको ईश्वर से मार्गदर्शन और सुरक्षा की मांग करनी चाहिए। बिना इनकी मांग किए आपको ये नहीं मिलेंगे। यहां तक कि यदि आपके लिए कोई चीज सही है और आप उसे पाने के हकदार हैं, तब भी जीवात्माएं बिना मांगे

आपको ये नहीं दे सकतीं। वे आपकी स्वतंत्र इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकतीं। इसलिए आपके लिए जो श्रेष्ठ हो, वह करने की मांग आप ईश्वर से जरूर करें। जब आप ईश्वर से रक्षा करने की विनती करते हैं, तो जीवात्माओं द्वारा भेजी गई स्वास्थ लाभकारी ऊर्जा, आपकी प्रार्थना के सकारात्मक स्पंदनों के साथ मिलकर आपके इर्द-गिर्द एक सुरक्षा कवच बना देती है, जो नकारात्मक शक्तियों से आपकी रक्षा करता है।

५. आप बीमारी से मुक्त होने का अनुभव करेंगे।

यदि आप निष्ठा और सच्चाई के साथ प्रार्थना करते हैं, तो आपको अपनी प्रार्थना की स्वास्थ लाभकारी क्षमता पर आश्चर्य होगा। दवा जरूरी है, लेकिन इस भौतिक जगत में प्रार्थना की ताक़त के समान दूसरा कुछ नहीं। यदि आप इसकी ताक़त में विश्वास करें और यदि आप स्वास्थ लाभ पाने के हकदार हैं, तो यह आपको अवश्य दिया जाएगा। यह बात निश्चित कर लें, कि आपका भौतिक मन शांत और विरल हो, और अपने अवचेतन मन को अधिक से अधिक जागृत करना सीखें। इससे आपको स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

६. आपको अपने आध्यात्मिक ज्ञान को कार्यरूप देने की शक्ति मिलेगी।

केवल आध्यात्मिक ज्ञान होना ही काफी नहीं। आपको सही-ग़लत का अन्तर पता हो सकता है, लेकिन आपको उस शक्ति की आवश्यकता है, जो आपको प्रलोभन का प्रतिरोध करने के लिए सक्षम बनाए और आपको सही विकल्प चुनने में मदद करे। प्रार्थना आपके लिए यही करती है। यह आपको अपने अवचेतन मन की इच्छा को लागू करने की शक्ति देती है।

७. आपमें आस्था विकसित होती है।

हमेशा याद रखिए कि जिस आस्था के साथ आप प्रार्थना करते हैं वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आप आस्था के साथ प्रार्थना करते हैं, तो आपकी प्रार्थना में शक्ति होगी और उसे प्रत्युत्तर अवश्य मिलेगा। वह प्रत्युत्तर आपके अंदर और अधिक आस्था जगाएगा, तथा इससे आपकी प्रार्थना में और अधिक शक्ति आएगी, और यह चक्र इसी तरह चलता रहेगा।

८. काले जादू से आपकी रक्षा होगी।

पृथ्वी के स्पंदन का इतना निम्न होने का कारण यह है कि बहुत से लोग काला जादू अथवा अन्य जादू-टोनों में लगे रहते हैं। यह पूरी तरह ईश्वर के नियमों के ख़िलाफ़ है, क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा के विरुद्ध होता है और इसमें व्यक्तिगत लाभ के लिए, दूसरों को नियंत्रित करने, उन्हें नुकसान पहुंचाने, अथवा ग़लत तरीके से बेवक़ूफ बनाने के लिए अंधेरे की ताक़त का प्रयोग किया जाता है। अधिक प्रमाण में प्रक्षेपित नकारात्मक ऊर्जा को काला

जादू कहते हैं। आपके लिए यह मानना बड़ा मुश्किल होगा कि इसका अस्तिव होता है। आपका तार्किक मन आपसे कहेगा कि इस तकनीकी युग में ऐसी चीजें संभव नहीं। यदि हम आज पृथ्वी पर होते, तो हमारे लिए भी इन बातों पर विश्वास करना कठिन होता। लेकिन काला जादू खतरनाक होता है और यह पृथ्वी पर हजारों साल से चला आ रहा है। हमें लोगों को इसके बारे में जागरूक करना होगा ताकि वे प्रार्थना और सकारात्मक चिंतन के माध्यम से इससे अपनी रक्षा कर सकें। सभी काले कर्म ईश्वर के नियमों के बिल्कुल विरुद्ध हैं। जिस तरह प्रार्थना भरपूर प्रकाश उत्पन्न करती है, उसी तरह काला जादू भारी मात्रा में नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करता है। इससे डरने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि ज़रूरत है जागरूक होने और यह समझने की, कि प्रार्थना आपको इस नकारात्मक ऊर्जा से बचाने के लिए आवश्यक है और इसलिए हमें हर वक्त, पूरी तरह सकारात्मक और निडर रहना चाहिए।

कितने समय के लिए प्रार्थना करनी चाहिए?

जरूरी नहीं कि आप घंटों प्रार्थना करें। **प्रार्थना संक्षिप्त और सच्ची होनी चाहिए।** यह धारणा ग़लत है कि आप जितनी देर तक प्रार्थना करेंगे उतने ही धार्मिक होंगे। छोटी प्रार्थना करें लेकिन, सच्चे मन से और नियमित करें, ताकि अपने दैनिक जीवन में आप जो भी फैसले करें वह प्रार्थना से उत्पन्न होने वाली शक्ति का परिणाम हो। कुछ लोग लंबे समय तक प्रार्थना करना पसंद करते हैं। यह अच्छी बात है, बशर्ते यह सच्चे मन से की गई हो। ध्यान रखें कि जब आपके होंठ प्रार्थना के शब्द बोल रहे हों, तब आपका मन इधर-उधर न भटक रहा हो। निश्चिंत भाव से, एकाग्र होकर और आनंद के साथ प्रार्थना करें। जब आप डरे हुए हों उस वक़्त प्रार्थना न ही करें तो अच्छा।

क्या प्रार्थना करने के लिए किसी धार्मिक स्थान पर होना आवश्यक है?

प्रार्थना कोई रीती-रिवाज़ नहीं है। पूजा स्थलों का निर्माण इसलिए हुआ ताकि लोग प्रार्थना के लिए एक साथ इकटठे हो सकें और उनके अवचेतन मन साथ मिलकर अधिक सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न कर सकें। इसके अलावा, जब लोग समूह में प्रार्थना करते हैं, तो प्रार्थना की शक्ति बढ़ जाती है। लेकिन यदि आप पूजा स्थल नहीं जा सकते हों, तो मन में कोई अपराधबोध न रखें। घर में प्रार्थना करना तो बहुत ही लाभदायक है, क्योंकि आप ऐसी जगह के स्पंदनों को शुद्ध बना रहे होते हैं, जहां आप अधिकतर समय बिताते हैं। इसलिए आप जहां हों वहीं प्रार्थना करें – गाड़ी में, अपने व्यवसाय की जगह पर, स्कूल में या फिर कहीं भी। लेकिन, जब प्रार्थना घर में करें तो किसी एक निश्चित स्थान पर करें। उस स्थान को अपना मन्दिर बनाएं। ऐसा केवल पूजन सामग्रियों को उस स्थान पर जुटा कर नहीं बल्कि अपनी प्रबल आस्था और शुद्ध उद्देश्य के साथ करें। आपका पूजा स्थल तो आपकी प्रार्थनाओं से ही बनता है।

कुछ ऐसी खास चीजें हैं जिन्हें हम आपको बताना चाहेंगे:

जब आप सुबह जगते हैं तब बिस्तर छोड़ने से पूर्व, यानि इससे पहले कि आपके पैर जमीन को छुएं, प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है ताकि आपका प्रभा मंडलीय क्षेत्र सुबह की उस पहली प्रार्थना को अपने भीतर समेट कर सारा दिन इसे सुरक्षित रख सके। एक बार जब आपके पैर जमीन को छू लेते हैं, तो आपकी सुरक्षा भूमि की ओर प्रवाहित हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पृथ्वी के स्पंदन नकारात्मक हैं, और जमीन पर पांव रखने से पूर्व आपकी प्रार्थना आपके चारों ओर एक सुरक्षा कवच बना देती है। आपकी प्रार्थना सुरक्षित रहती है, और वह शुद्ध और शक्तिशाली स्पंदन दिन भर के लिए आपके प्रभामंडलीय क्षेत्र में संचित हो जाता है। अपने दिन की शुरुआत इस तरह करना बड़ा अहम है।

इसी तरह जब आप रात को सोने जाते हैं, तब फिर से अपनी रक्षा और मन की शांति के लिए प्रार्थना करें और इस प्रार्थना को भी आपका प्रभामंडलीय क्षेत्र अपने अन्दर समेट कर सुरक्षित रख लेता है। इसके बाद, सारा दिन छोटी-छोटी सच्ची प्रार्थनाएं करते रहें। प्रार्थना धीरे-धीरे करें, इसमें कोई जल्दबाजी न करें। अपने कहे हुए हर शब्द की भावना सच्ची होनी चाहिए। जो आप कह रहे हों, जिस चीज की आप मांग कर रहे हों, ईश्वर से जिस बात की आप विनती कर रहे हों, उसे ठीक से समझें। यह हमेशा याद रखें कि प्रार्थनाएं निःस्वार्थ होनी चाहिए। **सबसे शक्तिशाली प्रार्थना वह होती है जो किसी दूसरे के आध्यात्मिक विकास के लिए की जाती है।**

हम आपको एक संक्षिप्त और सरल प्रार्थना के बारे में बता रहे हैं जिससे आपकी रक्षा होगी और आप शांत रहेंगे। याद रखिए कि जीवात्मा जगत में कोई विशिष्ट धर्म नहीं होता, इसलिए यह प्रार्थना ऐसी है जिसे कोई भी कर सकता है।

दिन में तीन बार यह प्रार्थना लगातार तीन बार दोहराई जानी चाहिए।

मेरे सबसे प्यारे हे सर्वशक्तिमान ईश्वर,
कृपया हे प्रभु,
देना हमें हर दुष्टता से बचने की ताकत
और दुष्टों से बचाना हमें।
अपने हाथों में लेकर हमें,
कृपया हमारा मार्गदर्शन करना।
हम तुम्हारे हैं प्रभु, सदा रहेंगे तुम्हारे।
प्रभु, रखना हमें अपनी शरण में हमेशा,
ताकि आपका आशीर्वाद हम पर सदैव बना रहे
और केवल आप ही मदद करना हमारी
मार्गदर्शक बनकर हमारा।
हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, धन्यवाद आपका।

प्रार्थना में कहीं भी 'मैं' शब्द नहीं आया है। ऐसा इसलिए क्योंकि अपने परिवार और दोस्तों के लिए और पृथ्वी की भली आत्माओं के लिए प्रार्थना करना महत्वपूर्ण होता है।

"अपने हाथों में लेकर हमें, कृपया हमारा मार्गदर्शन करना।" पंक्ति का अर्थ है कि हम अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग ईश्वर के प्रति समर्पित होने में कर रहे हैं। पूर्ण विश्वास के साथ, हम अपनी इच्छा से खुद को ईश्वर के हाथों में सौंप रहे हैं।

आप शायद अपने आप से यह पूछेंगे कि प्रार्थना जैसी सकारात्मक चीज में 'दुष्टता' शब्द का उपयोग क्यों किया गया है। पृथ्वी पर बुरी शक्तियां हमें आध्यात्मिक मार्ग पर चलने से रोकती हैं। 'दुष्टता' (EVIL) का अर्थ 'जीवन' (LIVE) के विपरीत होता है। हर वह चीज जो हमें आध्यात्मिक उन्नति के रास्ते से हटने के लिए हमें प्रलोभन में डालती है, वह दुष्ट है। हमें ईश्वर से यह कहना पड़ता है कि वे हमें नकारात्मक शक्तियों से बचाएं।

आखिरकार, हम ईश्वर से कहते हैं कि वे हमें 'हमेशा' अपने साथ रखें। संपूर्ण हृदय से हम उनसे कहते हैं कि वे हमारा इस जन्म, अगले जन्म और हमेशा के लिए मार्गदर्शन और देखभाल करें।

इस प्रार्थना के अंत में, ईश्वर से विनती करें कि वे आपको सही काम करने का बल और विवेक दे। इसके बाद अपने परिवार और प्रियजनों के लिए प्रार्थना करें। अंत में, अपना विस्तार करते हुए ऐसी भली आत्माओं के लिए प्रार्थना करें, जो अपके परिवार के सदस्य या आपके मित्र न

हों, बल्कि सामान्य तौर पर जिन लोगों को सहायता की आवश्यकता हो। लेकिन प्रार्थना का यह सुनहरा नियम याद रखिए। **ईश्वर से कहिए कि वे उस व्यक्ति के लिए वही करें, जो उसके लिए श्रेष्ठ हो।** पृथ्वी पर आप किसी व्यक्ति के कर्म, परीक्षा और प्रशिक्षण को नहीं समझ पाएंगे, इसलिए जो ईश्वर को श्रेष्ठ लगता है, उनसे वह करने की प्रार्थना कर आप संबंधित व्यक्ति की सहायता, बिना उसके मार्ग, अर्थात् उसकी परीक्षा, प्रशिक्षण और कर्म में बाधा डाले, सकारात्मक ऊर्जा भेजकर करते हैं। यह बात ध्यान में रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है। चाहे कुछ भी हो आप किसी दूसरे की जीवन यात्रा को पूरी तरह नहीं समझ सकते, इसलिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए कि आपके, आपके परिवार, आपके प्रियजन और वह हर व्यक्ति, जिसके लिए आप प्रार्थना करते हैं, उन सबके लिए जो श्रेष्ठ हो, वे वही करे। जब आप प्रार्थना करें, तब आशा की किरण जगाए रखें। अपेक्षा आपको निराश कर सकती है, लेकिन आशा आपको गतिशील रखती है। यह जान लें कि ईश्वर आपके लिए वही करेंगे, जो आपके लिए सबसे श्रेष्ठ हो। इसीलिए तो आप ईश्वर को अग्रिम धन्यवाद देते हैं क्योंकि आपको पता होता है कि उन्होंने आपकी प्रार्थना सुन ली है और वे आपको कभी निराश नहीं करेंगे। प्रार्थना केवल बुरे समय में ही नहीं, बल्कि रोज़ाना करें। अच्छे समय में ईश्वर की प्रार्थना करना और उन्हें धन्यवाद देना न भूलें। प्रार्थना जितनी लगन के साथ कर सकें, करें, लेकिन हमेशा ईश्वर की योजनाओं का सम्मान करें, उनके लिए जगह रखें। मार्ग में बाधक बनने की बजाए, राह से हटकर स्वर्ग को अपनी सहायता करने दें।

सकारात्मक सोच

"सकारात्मक बनिए।"

"समान वस्तुएँ एक दूसरे को अकर्षित करती हैं।"

"अपने मन पर नियंत्रण रखिए और हर समय शांतता का अनुभव करने की कोशिश कीजिए। धैर्यवान बने, शांत रहें और अच्छी नींद करें।

विचार किस तरह ताक़तवर होते हैं?

आपके सोचने का तरीका आपकी आत्मा के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। आपका व्यक्तित्व आपके विचारों, शब्दों और कर्मों का मेल है। विचार पहले उत्पन्न होते हैं। फिर, सकारात्मक या नकारात्मक विचार से ही शब्द और कर्म उत्पन्न होते हैं। इसीलिए सकारात्मक सोच होना बहुत महत्वपूर्ण है। अंततः सारे विचार ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, इसलिए इस बात के प्रति सतर्क रहिए कि आप किस प्रकार की ऊर्जा का निर्माण कर रहे हैं।

पहली बात, यह समझने की कोशिश कीजिए कि पृथ्वी पर लोग नकारात्मक क्यों बन जाते हैं।

नकारात्मकता किसी आत्मा का अपना लक्षण हो सकता है अथवा यह वास्तविक जीवन में ग़लत प्रशिक्षण के कारण भी विकसित हो सकती है। लेकिन मुख्य रूप से, मनुष्य तब नकारात्मक हो जाता है जब उसे वह नहीं मिलता जो वह चाहता है।

सकारात्मक चिंतन की ओर पहला कदम है इस तथ्य को स्वीकार करना कि समस्याएं हर हाल में होंगी ही। जिन लोगों को देखकर ऐसा लगता है कि उनकी कोई समस्याएं नहीं हैं, वे या तो समस्याओं का सामना अच्छी तरह कर रहे होते हैं अथवा उनसे दूर भाग रहे होते हैं। नकारात्मक चिंतन वह मुख्य कारण है जो बहुत से लोगों की आध्यात्मिक यात्रा को संपन्न नहीं होने देता।

नकारात्मकता एक बहुत ही सामान्य आत्मिक लक्षण है। यह गलत समझ के कारण और एक

दुर्बल, अनियंत्रित एवं अप्रशिक्षित मन की उपज होती है। इसके अलावा, मनुष्य में नकारात्मकता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि पृथ्वी के स्पंदन बहुत नकारात्मक हो चुके हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप इस पर विजय पाने के लिए सकारात्मक रूप से सोचें, क्योंकि आखिरकार आपके विचार भावनाओं के रूप में प्रकट होते हैं। यही कारण है कि विचार ताक़तवर होते हैं। वे शारीरिक और भावनात्मक रूप से प्रकट होते हैं और उन्हीं से आपकी आत्मा को आकार मिलता है।

कोई व्यक्ति यह कैसे जान पाएगा कि वह नकारात्मक हो रहा है?

नकारात्मकता के निम्नलिखित लक्षण हैं:

१. डर

नकारात्मक रूप से सोचने और विश्वास तथा समझ की कमी के कारण ही डर पैदा होता है। यदि आपकी ईश्वर में पूरी श्रध्दा है, तो फिर डर का कोई कारण ही नहीं होता। आप इंसान हैं और आपको मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन यदि आपमें आस्था और विश्वास है तो इन परिस्थितियों से जूझने के लिए आपमें साहस पैदा किया जाएगा। डर को जीतने के लिए पहला काम यह करें कि अपने विश्वास को मजबूत करें। इन दिनों नकारात्मकता मनुष्य के जीवन का हिस्सा बन चुकी है। इसका एक कारण है। भली आत्माओं को डर लगता है, क्योंकि पृथ्वी पर स्पंदन नकारात्मक हो चुके हैं और ये नकारात्मक स्पंदन मनुष्य को बेचैन करते हैं। यह इस कारण कि जिस ऊर्जा से आप घिरे होते हैं, वह आपकी ऊर्जा से भिन्न होती है। आपको ग़लत राह पर जाने का भी डर लगता है। आपका अवचेतन मन इस डर को समझता है, लेकिन आपका भौतिक मन नहीं। भौतिक मन केवल यह जानता है, कि वह डरा हुआ है। **बहरहाल. आपका अवचेतन मन कभी भी डरता नहीं। वह सतर्क होता है।**

यदि आप किसी ऐसे स्थान पर रहते हैं जहां का स्पंदन सकारात्मक है तो आपको डर महसूस नहीं होगा। अपने घर को सरल और साफ-सुथरा रखिए। सूरज की रोशनी और पौधे सकारात्मक स्पंदनों के निर्माण में सहायता करते हैं और इससे आप डर से बचेंगे। डर बचावकारी सहजबोध से भी पैदा होता है, जो आपकी अपनी सुरक्षा के लिए जरूरी है। उदाहरण के लिए, यह स्वाभाविक है कि आग पर हाथ रखने से आप डरेंगे। यह अपने अस्तित्व रक्षा का सहजबोध है।

हालांकि यह अजीब लग सकता है, लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सकारात्मक होने से डरते हैं। शायद अतीत में उनका अनुभव बुरा रहा हो और वे आशावादी होने से डरते हों। इसलिए, उन्होंने अपने मन को यह मानने के लिए बाध्य कर लिया होता है कि जिंदगी बुरी

है और वे अपने जीवन में कुछ भी सकारात्मक पाने के लायक नहीं हैं। वे अपने आप को निराशा से बांध लेते हैं। उनका तर्क यह होता है कि वे यथार्थवादी हैं, जबकि असल में वे नहीं होते। यथार्थवादी दृष्टिकोण है-जीवन के उतार-चढ़ावों को अच्छी तरह समझना। इसलिए अच्छे समय की उम्मीद करना बिल्कुल स्वाभाविक है। चाहे आपके अतीत का अनुभव कुछ भी रहा हो, **मनुष्य के अस्तित्व के लिए उम्मीद जरूरी है।** कभी-कभी लोग परिवर्तन से डरते हैं क्योंकि वे उस नकारात्मक स्थिति में सुरक्षित महसूस करते हैं।

२. चिंता

लगातार चिंता, आपको निम्न स्तर पर ले जाती है। लोग चिंता इसलिए करते हैं क्योंकि उनका विश्वास खो गया होता है और वे परिणामों के साथ खुदको अधिक जोड़ लेते हैं। आपके हाथों में परिणाम नहीं होता, बल्कि प्रक्रिया होती है। इसलिए आप जो कर सकते हैं, अच्छे से अच्छा कीजिए और सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दीजिए। पूर्ण समर्पण का अर्थ है यह जान लेना है, कि आपके द्वारा अपना कर्तव्य अच्छी तरह निभा लेने पर ईश्वर वह अवश्य करेंगे जो आपके लिए सबसे श्रेष्ठ होगा। कार्य का फल ईश्वर को समर्पित कर दें और यह समर्पण लगातार करते रहें। ईश्वर में, फ़रिश्तों में, अपने प्रियजनों में और खुद अपने आप में विश्वास रखना जरूरी है। विश्वास वह ऊर्जा है जो आपको आगे की ओर बढ़ने की प्रेरणा और शांति प्रदान करती है। बिना विश्वास का मनुष्य कुछ इस तरह है, जैसे बिना पेट्रोल की गाड़ी। **अपना कर्तव्य श्रेष्ठ रूप से निभाएं और बाकी सब ईश्वर पर छोड़ दें।**

३. संदेह

जब आप खुद पर, अपने आध्यात्मिक शिक्षक पर, और सबसे महत्वपूर्ण कि ईश्वर पर लगातार संदेह करते हैं तो इसका अर्थ है कि आप नकारात्मक हो रहे हैं। प्रश्न करना ठीक है लेकिन यदि आप आध्यात्मिक मार्ग पर हैं तो आपको अपने संदेह की जगह मन में विश्वास स्थापित करना चाहिए। **अपने मार्गदर्शकों पर भरोसा रखें।** यदि आप उनपर संदेह करना जारी रखते हैं और उनसे ज्ञान और समझ प्राप्त करने के बाद भी आप उनसे सबूत की मांग करते हैं, तो आप नकारात्मक हो रहे हैं।

एक ऐसा व्यक्ति है जो हर रात पूरे मन से प्रार्थना करता है। अपनी प्रार्थना के अंत में वह हमेशा ईश्वर से खुदके लिए जो श्रेष्ठ हो, वही करने को कहता है। लेकिन किसी कारणवश, उसके जीवन में कोई बदलाव नहीं आता। वह समझ नहीं पाता कि क्यों ईश्वर उसकी प्रार्थनाएं नहीं सुनते। एक दिन, एक फरिश्ता उसके सामने प्रकट होता है और कहता है, "मेरे पास तुम्हारे लिए एक उपहार है।" व्यक्ति बड़ा खुश होता है। फ़रिश्ता उससे अपनी हथेली फैलाने को कहता है। उपहार स्वीकार करने के लिए आदमी हथेली फैला देता है।

फ़रिश्ता आदमी की हथेलियों की ओर देखता है और उनपर फूंक मारता है। “तुम्हारा स्वागत है।” फ़रिश्ता कहता है। व्यक्ति कुछ समझ नहीं पाता क्योंकि उसकी हथेलियां अब भी खाली हैं। वह पूछता है, “लेकिन मेरा उपहार कहां है?” फ़रिश्ते ने कहा “वह तो तुम्हें मिल चुका है।” “तुम्हारी हथेलियों में संदेह भरा था। मैंने उसे हटा दिया।” कभी-कभी आपको जो मिलता है उससे बड़ा उपहार आपके पास से कुछ ले लिया जाना होता है।”

यह सुनिश्चित करें कि आपका ईश्वर पर भरोसा हो, न कि उनपर संदेह। जब आप लगातार संदेह करते हैं तो आपकी जीवात्मा कमजोर हो जाती है, क्योंकि आपकी जीवात्मा ईश्वर के विश्वास पर जिंदा रहती है।

४. दोषारोपण या डांट-फटकार

दोषारोपण या डांट-फटकार आध्यात्मिक रूप से ग़लत है। यह एक प्रकार का मानसिक उत्पीड़न है, शब्दों का एकतरफा प्रहार है। यह अहंकार से और समझ की कमी से पैदा होता है और यह स्वार्थपूर्ण होता है क्योंकि इसमें आदमी हर कीमत पर अपनी ही बात रखना चाहता है और चाहता है कि चाहे जो भी हो, सबकुछ उसके अपने हिसाब से ही होना चाहिए। जब माता-पिता अपने बच्चों को फटकारते हैं तो यह बहुत ही हानिकारक होता है, हालांकि उनका उद्देश्य बच्चे का भला करना हो सकता है, लेकिन जब आप डांट-फटकार करते हैं, तब आप ईश्वर की दी हुई स्वतंत्र इच्छा के विरूद्ध जाते हैं। डांट खाने वाला व्यक्ति आपकी बात बिल्कुल नहीं सुनेगा और यदि डांट-डपट जारी रही तो वह आपके कहे का ठीक उलटा करता है।

५. लगातार शिकायत करना और दुःखी रहना

नकारात्मक प्रवृत्ति के लोग ख़ुशी का मतलब नहीं जानते। यदि आप जीवन भर शिकायत और विलाप करते रहते हैं, आप अपनी ओर दुःख को निमंत्रण देते हैं। कुछ लोग सहानुभूति दिखाकर इस प्रवृत्ति को दूसरों में बढ़ावा देते हैं। अपने आशीवार्दों का सम्मान करना महत्वपूर्ण है। सकारात्मकता पर जोर डालिए, नकारात्मकता पर नहीं।

६. जरूरत से ज्यादा समस्याओं का बोझ उठाना

कुछ लोग दुनिया को यह दिखाना चाहते हैं कि वे कितना कुछ करते हैं, और उन्हें कितनी अधिक परेशानी है। ऐसे लोग केवल खुदका नुकसान करते हैं। यदि आप दूसरों से सहायता नहीं मांग पाते, तो इसका अर्थ है कि आप अहंकारी और नकारात्मक हैं। आप पृथ्वी पर सहअस्तित्व सीखने के लिए आए हैं, न कि सब कुछ अकेले हाथों, खुद अपने आप करने। यह साबित किए जाने की चाह कि, आप हर कार्य को खुद से संभाल सकते

हैं, आपके अहंकार की उपज है। यह अस्वाभाविक है। कोई भी आपसे अतिमानव होने की आशा नहीं करता।

७. ईर्ष्या

मनुष्य से उसकी ख़ुशी छीनने वाली चीजों में से एक है ईर्ष्या। जब आप लगातार अपनी तुलना दूसरों से करते हैं, तो यह आपको प्रगति करने से रोकता है। अपने उपहरों से संतुष्ट रहिए और दूसरों की उपलब्धियों से प्रसन्नता और प्रेरणा पाने की प्रवृत्ति रखिए। जीवात्माएं इसी तरह रहती हैं और इससे हमें सच्ची प्रसन्नता मिलती है। जो कुछ आपके पास है, उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दीजिए और संतुष्ट रहने की कला सीखिए।

८. दूसरों पर दोषारोपण

हमेशा अपने अन्दर झांकिए, आपको अपने दुःखों का स्रोत मिल जाएगा। आपके दुःख की शुरुआत दूसरों के हाथों केवल तभी हो सकती है, जब यह पहले से ही आपके अन्दर हो। इसलिए दुःख की जड़ तक पहुंचिए। दूसरों पर ध्यान केन्द्रित मत कीजिए। स्वयं आपके भीतर जो असंतुलन है, उसे दूर कीजिए, सबसे पहले खुद अपने आप में सुधार लाइए और फिर दूसरों को बदलने में सहायता करने की कोशिश कीजिए।

९. नकारात्मक विचारों का आदी होना।

जो लोग लगातार नकारात्मक सोचते हैं, वे समय के साथ इस तरह की प्रवृत्ति के इतने आदी हो जाते हैं, कि इसके बिना उनका काम ही नहीं चलता। यदि उनकी कोई समस्याएं न हों, तो भी वे समस्या में होने का दिखावा कर लेते हैं। अकसर आदमी की दयनीयता और उसकी निरसता, उसकी आदत बन जाती है। इसकी शुरूआत छोटे स्तर पर होती है, लेकिन धीरे-धीरे यह काफी बड़ी और नुकसानदेह समस्या बन जाती है।

१०. अधीरता

जब आप अपने अन्दर धैर्य विकसित करना सीखते हैं, तो आपको अधिक शांति मिलती है। अधीरता से आप असंतुलित हो जाते हैं। याद रखिए कि चीजें हमेशा सही वक्त पर ही होती हैं, और वह ईश्वर के हाथों में होता है। जब आप अधीर होते हैं, तब आप ईश्वर को निर्देश देने का असफल प्रयास करते हैं। ऐसा करने से, आप ईश्वर को उनकी योजना को अलग रखकर, आपकी अपनी योजना को कार्यरत करने को कहते हैं। आपकी योजना हमेशा सीमित होती है, जबकि ईश्वरीय योजना अनंत।

नकारात्मकता हमें शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से किस प्रकार प्रभावित करती है?

नकारात्मकता कई लोगों की आदत, और उनकी जीवनशैली बन जाती है। यदि जीवन में सब ठीक हो, तब भी वे निराश, सनकी, कठोर और पराजित अनुभव करने के इतने आदी हो जाते हैं, कि वे लगातार ऐसी ही ऊर्जा को प्रेक्षेपित करते हैं। समान चीजें एक दूसरे को आकर्षित करती हैं। इसलिए नकारात्मक लोग नकारात्मक लोगों और परिस्थितियों को ही आकर्षित करते हैं और यह उनकी आत्मा के लिए बहुत ही बुरा होता है। नकारात्मक प्रवृत्ति से छुटकारा पाइए और इसकी जगह पर सकारात्मकता विकसित कीजिए। बदलाव से डरिए मत। नकारात्मकता के दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं:

१. आपके फैसले ग़लत होते हैं

नकारात्मक होने पर आपके फैसले ग़लत होते हैं। इसका दैनिक जीवन में आप जो फैसले करते हैं, उनपर प्रभाव पड़ता है और आध्यात्मिक रूप से आप नीचे गिरते हैं।

२. आप छोटी-छोटी ख़ुशियां खो देते हैं।

छोटी-छोटी ख़ुशियों के साथ ज़िंदगी आपकी प्रतीक्षा कर रही है। जब आप नकारात्मक होते हैं, तब इन ख़ुशियों को आप देखकर भी नहीं देख पाते और उन्हें स्वीकार नहीं कर पाते। यदि आप नकारात्मक हैं, तो आप अपने अवचेतन मन के उन निर्देशों को नहीं सुन पाते जो आपको इन ख़ुशियों की ओर ले जाना चाहते हैं। समय के साथ आपकी ऊर्जा इतनी स्याह हो जाती है, कि रोशनी की प्रकृति रखने वाली ये ख़ुशियां आप तक नहीं पहुंच पातीं। समान चीजें एक दूसरे को आकर्षित करती हैं, इसलिए ऐसी स्थिति में आप ख़ुशियों के बजाए समस्याओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

३. लोग आपके असंतुलन को भांप लेते हैं।

विनम्रता की तरह, सकारात्मकता भी मनुष्य की एक स्वाभाविक अवस्था है। भले लोग आपके चारों ओर के नकारात्मक स्पंदनों को महसूस कर लेते हैं, उन्हें असहज महसूस होता है और वे आपके साथ अधिक समय बिताना नहीं चाहते। क्योंकि आपके निर्णय गलत होते हैं, इसलिए आप यह समझने में असफल रहते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है और आप अपने अन्दर के असंतुलन को समझने के बजाए दूसरों के प्रति नकारात्मक बन जाते हैं।

४. आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

विचार बहुत ही शक्तिशाली होते हैं। आपके विचार और आपकी भावनाएं हमेशा शारीरिक तौर पर प्रकट होतीं हैं। नकारात्मक विचार और भावनाएं बीमारियों अथवा चोट के रूप में प्रकट होतीं हैं। यदि आपके अन्दर कड़वाहट और गुस्सा भरा है, तो इसका प्रभाव आपके शरीर पर होगा। खुद को अथवा दूसरों को क्षमा कर पाने की आपकी अक्षमता आपकी अस्वस्थता के रूप में प्रकट होती है। क्षमा करने से आरोग्य प्राप्त होता है। यह क्षमता आपके भले के लिए है और आपके विकास के लिए जरूरी है।

५. आप अपनी परीक्षा में असफल होते हैं।

अधिकतर लोगों को मुश्किल परिस्थितियों में सकारात्मक बने रहने की मूल परीक्षा से गुजरना पड़ता है। वे परिस्थितियां व्यक्ति के कर्म के कारण बनी हुई न भी हों, बल्कि ये उसकी जीवात्मा की परीक्षा अथवा उसका प्रशिक्षण हो सकती हैं। यदि वे नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया दें और इस संपूर्ण प्रक्रिया से शिकायत करते हुए और खुद के बारे में अफसोस महसूस करते हुए गुजरें, तो ऐसी परिस्थितियां तब तक बार-बार बनती रहती हैं, जब तक कि मनुष्य सबक न सीख ले। मुश्किल समय में सकारात्मक बने रहने की प्रक्रिया सीखना आपकी परीक्षा है, न कि वह परिस्थिति।

आप इस प्रक्रिया से होकर किस प्रकार गुज़रते हैं, यह महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए बीमार होना कोई नहीं चाहता, लेकिन यदि आप ऐसे मनुष्य हैं जो अपने बीमार होने पर शिकायत करते हैं और इस कारण अपने आसपास के लोगों को मुश्किल में डालते हैं, तो आपको एक पाठ सीखने की आवश्यकता है कि अपनी बीमारी के दौरान आपको सकारात्मक बने रहना चाहिए और दूसरे लोगों द्वारा की गई सहायता के लिए धन्यवाद देना चाहिए। बीमारी के दौरान सकारात्मक रहना आपकी परीक्षा है। दूसरी परीक्षा डर को लेकर हो सकती है। यदि आप स्वास्थ्य प्रमाणपत्रों से भयभीत हो जाते हैं, तो आप ऐसी परिस्थितियों में आते हैं, जिनमें आपको औषधि जांच बार-बार करवानी पड़ती है। आपके लिए परीक्षा यह है कि आप पूरी प्रक्रिया के दौरान निडर बने रहें।

६. जरूरत से ज्यादा विश्लेषण

अपने अन्दर झांकना अच्छी बात है, लेकिन जब आप अति विश्लेषण करने लगते हैं, तो आप गतिशील नहीं रहते। आप मंथन ही करते रह जाते हैं और वास्तव में कुछ कर नहीं पाते। परिस्थिति का आप जरूरत से ज्यादा विश्लेषण करते हैं और आप उसे स्वीकार नहीं कर पाते। न ही आप अगला कदम उठा कर आगे बढ़ पाते हैं।

७. आप अपने अवचेतन मन को कमजोर बनाते हैं।

नकारात्मक विचार केवल भौतिक मन से ही आते हैं। अवचेतन मन मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण से चीजों को देखता है। इसलिए जब आप नकारात्मक विचारों को महत्व देते हैं, तो आप अपने अवचेतन मन के बचाए भौतिक मन का चयन करते हैं। भौतिक मन को वह मिल जाता है जो वह चाहता है। इस तरह आप उसे बिगाड़ते हैं और आपका अवचेतन मन उपेक्षित रह जाता है।

नकारात्मक व्यक्ति अच्छे के लिए खुद को किस प्रकार बदल सकता है?

एक बड़ा ही आसान शब्द है जो आपको जीवन के हर क्षेत्र में ग़लत करने से रोकने के लिए, आपका बहुत साथ निभाता हैं: नियंत्रण। **अपने भौतिक मन को नियंत्रित और प्रशिक्षित कर अपने विचारों को नियंत्रित करें।** जिस क्षण आपके मन में कोई नकारात्मक विचार प्रवेश करे, उसका विश्लेषण न करें। इससे तुरंत छुटकारा पा लें। अपनी आदत के कारण आप ऐसे विचारों को अपना समय देंगे, लेकिन आपको यह आदत बदलनी होगी। शुरू में यह मुश्किल हो सकता है। जब आप अपने नकारात्मक विचारों से छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे, तब आपके अन्दर एक डर की भावना भी आ सकती है। “अगर मैंने इसका विश्लेषण नहीं किया तो क्या होगा? अगर ऐसा हुआ तो क्या होगा? अगर? अगर? आप यह बताइए कि चिंता मनुष्य को कौन सा फायदा पहुंचाती है? यह पूरी तरह हानिकारक है, इसलिए नकारात्मक विचारों को नियंत्रित रखें। आपका पहला कदम यही होना चाहिए। अगला कदम, जो अधिक महत्वपूर्ण है, यह है कि नकारात्मक विचारों की जगह सकारात्मक विचारों को अपनाया जाए। सकारात्मक होने का अर्थ है चीजों की उच्चतर प्रकृति, उनके असली स्वरूप को समझना। आपका रास्ता चाहे कोई भी हो, इसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखना सीखें। इससे आपको समस्याओं का सामना कर पाने में सहायता मिलेगी, क्योंकि आपमें यह समझ आ जाएगी कि वे महत्वहीन हैं। समस्याओं से सामना होने पर, मानसिक और शारीरिक तौर पर पूरी तरह व्यस्त रहिए।

समस्याएं कभी आपका रास्ता नहीं रोकतीं। वे तो खुद आपका रास्ता हैं।

खुशियां और समस्याएं, दोनों ही जीवन यात्रा के अंग हैं।

जब आपको निराशाओं का सामना करना पड़े, उस समय आप सकारात्मक कैसे रह सकते हैं? इसका उपाय है, कि आप यह जान लें कि निराशाएं शिक्षा प्राप्त करने की प्रक्रिया के अंग हैं। इसलिए मन में बिना अपेक्षा पाले कार्य करें। आशा को जीवित रखना, बड़ी सुंदर चीज है, और उसे हर हाल में जीवित रखना चाहिए लेकिन अपेक्षा एक मांग है, जो आपके अहंकार से पैदा होती है। आशा परिणामों के विषय में नहीं होती। आशा का अर्थ है कि आप संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान सकारात्मक बने रहें और यह भरोसा रखें कि परिणाम जो भी होगा आपके विकास के लिए श्रेष्ठ होगा। हमें परिणाम ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए और कर्म की संपूर्ण प्रक्रिया के दौरान सकारात्मक और आशावान रहना चाहिए। आशा वह है जो आपकी जीवात्मा को जीवित रखती

है। अपेक्षा आपकी जीवात्मा पर दबाव डालती है।

यदि आप ऐसे व्यवसाय में हों जिसे आप पसंद नहीं करते, तो यहां सकारात्मक होने का अर्थ है यह समझना कि हो सकता है यह आपकी परीक्षा हो और आप अपने कर्मों का ऋण चुका रहे हों। शायद आपको अपनी राह में आने वाली किसी अच्छी चीज का सम्मान करने की आवश्यकता हो, अथवा शायद आप उस व्यवसाय में कुछ ही समय के लिए हैं, ताकि आपके द्वारा दूसरों की मदद हो सके।

जब आपका कोई अपना आपसे बिछड़ता है, तो यह स्थिति आपके लिए बड़ी दु:खद हो सकती है। ऐसे में टूट जाना स्वाभाविक है, लेकिन जीवात्माएं नहीं चाहतीं कि आप उनके लिए विलाप करें। यदि वे भली आत्माएं हैं, तो वे अच्छे स्थान में होंगी, इसलिए आप अपने मन को स्वस्थ्य करें। यह ध्यान रखें कि आप खुदको हर प्रकार से स्वस्थ्य रखने का हेतु रखें, क्योंकि यही आपके प्रियजन चाहते हैं। जीवात्माएं नहीं चाहतीं कि पृथ्वी की आत्माएं जीवन भर शोक मनाती रहें। आपके हाथ कटने पर खून बहता है, लेकिन समय के साथ घाव भर जाता है। दु:ख के साथ भी ऐसा ही होता है। भले ही मनुष्य दु:ख का सामना करता है, लेकिन समय के साथ, उसके घाव भर जाते हैं।

जीवात्मा जगत में आकर हम खुश हैं। हम जीवित हैं और ठीक हैं। सबसे बड़ी बात यह कि हम अब भी आपके साथ हैं। हमें आपको इस बात का यकीन दिलाना है। जब दु:ख हद से बढ़ जाए, तब इस सत्य पर मन केन्द्रित करें और अडिग रहें। दु:खद नुकसान की स्थिति में सकारात्मक होने से हमारा यही मतलब है। इस सत्य से शक्ति प्राप्त करें कि हम अब भी आपके साथ हैं और यदि आप अनुमति दें तो हम आपका मार्गदर्शन कर सकते हैं। कभी-कभी हमारे माता-पिता हमारे बिना, इतना निराश और असहाय महसूस करते थे कि हमारे लिए उन्हें शांत करना और उन्हें खुश करना, जीवात्मिक संपर्क के बिना मुश्किल हो जाता। हमने उन्हें बताया कि जब वे दु:खी होते हैं, तो इससे हमें भी दु:ख होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि, हमने उन्हें यह समझाया कि पृथ्वी पर हमारे होने की तुलना में हम आज उनके बहुत ज्यादा करीब हैं और हम उन्हें बहुत प्यार करते हैं।

जब सबकुछ ठीक-ठाक चल रहा हो, तब सकारात्मक होना आसान होता है। असली परीक्षा तो तब होती है जब जीवन में कठिनाइयां आएं और चीजें ग़लत होती जाएं। इसी तरह आपके व्यक्तित्व का विकास होता है। **परिस्थिति चाहे जो भी हो, सकारात्मकता हर हाल में अपनानी चाहिए।**

कभी-कभी आप अपने मन को नियंत्रित करने में असफल होते हैं अथवा कभी-कभी ऐसा करने में सफल भी रहते हैं, लेकिन आप सकारात्मक होना नहीं जानते। इसका एक बड़ा ही साधारण सा कारण है, जो आपके फैसले पर निर्भर करता है। आपको परिवर्तन के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध

होना चाहिए और अपनी इच्छा शक्ति का उपयोग करना चाहिए। इसलिए, भौतिक मन को भी आपके साथ सहयोग करना ही पड़ता है। व्यक्ति के असफल होने का कारण यह है कि उसकी प्रतिबद्धता कमजोर होती है। उनके प्रयत्न अधूरे मन से किए गए होते हैं और परिवर्तन के प्रति वे पूरी तरह समर्पित नहीं होते। आप सकारात्मक बनने का फैसला करते हैं। आप किसी को माफ करने का फैसला करते हैं। आप विनम्र रहने का फैसला करते हैं। आप संतुष्ट रहने का फैसला करते हैं। सफलता या असफलता आपके चयन की शक्ति पर निर्भर करते हैं। मान लेते हैं कि आपको ऐसे किसी व्यक्ति को माफ करने में मुश्किल हो रही है जिसने आपको बहुत दुःख पहुंचाया हो। ज्ञान प्राप्त होने के बावजूद यदि आप उसे माफ नहीं करते, तो इसका अर्थ यह है कि आप माफ करना ही नहीं चाहते, न कि यह, कि आपको पता नहीं कि माफ किया कैसे जाए।

जब जीवन में बुरा समय चल रहा हो, तब बहादुरी के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना ही सच्चे अर्थ में सकारात्मक होना है। उम्मीद का दामन कभी मत छोड़िए, चाहे परिस्थिति कितनी ही गंभीर क्यों न हो।

सकारात्मक चिंतन के मुख्य उपाय:

१. ईश्वर में पूर्ण विश्वास रखें। याद रखिए कि वह वही करेंगे जो आपके लिए श्रेष्ठ है।

२. अपने कर्म, परीक्षा और प्रशिक्षण को स्वीकार कीजिए। इनका प्रतिरोध मत कीजिए।

३. प्रार्थना कीजिए। ईश्वर से शक्ति मांगिए। किसी परिस्थिति में सकारात्मक बने रहने की शक्ति केवल प्रार्थना से ही मिल सकती है और यह आपको केवल मांगने पर ही प्राप्त होती है। आपकी प्रार्थना आपके आस-पास सकारात्मक स्पंदनों का निर्माण करती है और आपके निर्णय की गुणवत्ता को बढ़ाती है जिससे आप जीवन में सही कदम उठा सकेंगे।

४. अपने अवचेतन मन को सक्रिय कीजिए। समस्याओं से जूझते समय इसका उपयोग कीजिए। भौतिक मन की सीमित समझ का उपयोग न करें।

५. समस्याओं को अपने विकास के अवसर के रूप में देखिए।

६. व्यायाम शारीरिक क्रियाकलाप, जैसे योग (इसके लिए अच्छे शिक्षक की तलाश करना महत्वपूर्ण है।), नृत्य, तैराकी और खेलकूद जरूरी होते हैं। मन, शरीर और आत्मा – तीनों को स्वस्थ होना चाहिए।

७. ईश्वर के प्रति समर्पण कीजिए। ईश्वर के प्रति समर्पित होने का अर्थ है ईश्वरीय सन्मार्ग पर चलना, अपनी क्षमता के अंतर्गत हर अच्छे काम करना और अपने कर्म के परिणाम ईश्वर पर छोड़ देना।

८. अपनी पसंद के काम कीजिए। व्यस्त रहिए। वे ऐसे कार्य होने चाहिए जो आपको मन की शांति देते हैं, जैसे अध्ययन, संगीत, खाना पकाना, बागवानी, तैराकी या ऐसा कुछ भी जो

आपके मन और आत्मा को पोषित करे।

९. लोगों के साथ मिलकर जीना सीखिए। अपना समय और अपने अनुभव उन लोगों के साथ बांटिए जिनपर आप विश्वास करते हों और आपको प्रेरित करने वाले लोगों के साथ समय बिताइए जिनका आप पर सकारात्मक प्रभाव हो।

१०. दूसरों की मदद कीजिए। कभी-कभी जब आप तकलीफ में होते हैं, तब ऐसा करना सबसे श्रेष्ठ होता है। अपने दु:ख से ध्यान हटाने के लिए ऐसा परिवर्तन आपके लिए अच्छा होता है और साथ ही आप नि:स्वार्थ होना भी सीखते हैं।

११. हंसिए। हल्के-फुल्के बने रहिए।

अपने जीवन का आनंद उठाइए। पृथ्वी पर आप खुद को अथवा दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना अपने जीवन का आनंद उठाने के लिए आए हैं। आपको खुशी देने वाली चीजों के बारे में जानिए और उन चीजों के बारे में भी सतर्क रहें, जो आपको निराश करती हैं। **यह दृष्टिकोण न अपनाएँ कि पृथ्वी पर आप दु:ख झेलने के लिए आए हैं। हां, आपके कर्मों के ऋण अवश्य चुकाए जाने चाहिए, लेकिन पृथ्वी पर आपकी जीवन यात्रा आनंददायक होनी चाहिए।** जीवन को बहुत गंभीरता से मत लीजिए। हास्यबोध विकसित कीजिए। हल्के-फुल्के रहिए। एक बार फिर से ध्यान दीजिए कि संतुलन सुखद जीवन की कुंजी है। परिस्थितियों के प्रति बहुत गंभीर होने की कोशिश न करें, साथ ही निरर्थक होकर अपनी जिम्मेदारियों से न भागें।

पृथ्वी पर अपने भौतिक जीवन को खुलकर जिएं। हास्यबोध और चुलबुल भावना ईश्वरीय प्रकाश का बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। जीवात्मा जगत में हर किसी के पास हास्यबोध होता है। हम जो करते हैं हमें उससे प्यार होता है, हम अपने अस्तित्व से प्यार करते हैं और खूब हंसते हैं। यहां भी संगीत, नृत्य और उत्सव होता है। उत्सव का सही मतलब आप जीवात्मा जगत में आकर ही जान पाएंगे। उत्सव मनाने का अर्थ है यह अनुभव करना कि आपका सृजन ईश्वर ने किया है, आप उन्हीं के कार्यों को करने में लगे हैं, और यह कि अपार ज्ञान अब भी प्राप्त होना बाकी है, जो हम जीवात्माओं को भी फिलहाल हासिल नहीं हुआ। हां, हम अपनी यात्रा के उस अज्ञात का उत्सव मनाते हैं, जो आगे हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हम आनन्दमग्न होते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि यदि हम अपने अस्तित्व के हर स्तर पर खुश हैं, तो ईश्वर के और निकट पहुंचने के क्रम में सातवें ब्रह्मांड तक पहुंचने पर हम कितने खुश होंगे। निश्चित रूप से यह ऐसी बात है जिसका उत्सव मनाया जाना चाहिए।

अहंकार और विनम्रता

"अपने अहंकार को निकाल फेकें।"

"विनम्र बनने का ढोंग न करें। विनम्र बनें।"

मनुष्य को अहंकार या अहं क्यों होता है?

अहंकार मनुष्य के सबसे आम दोषों में से एक है। हर मनुष्य में कुछ न कुछ अहंकार या **अहं** रहता ही है। यदि वे तुरंत नियंत्रित न किए जाएं, तो ये काफी खतरनाक हो सकता है। विनम्रता के बगैर कोई आध्यात्मिक यात्रा शुरु नहीं होती। मनुष्य के जीवन में किसी न किसी पड़ाव पर अहंकार लागू पड़ता है। कुछ लोगों में धन को लेकर अहंकार आता है, तो कुछ में उनके सुंदर शरीर, अपनी प्रतिभा इत्यादि को लेकर...पर आश्चर्य की बात यह है कि अधिकतर लोगों में यह तब होता है, जब उनमें गौरव करने जैसी कोई चीज़ नहीं होती। यह अरक्षितता तथा मानसिक ग्रंथियों के कारण होता है। ऐसे लोग अपने बनाए झूठे बाहरी चित्र को सुरक्षित करने के लिए दीवारें खड़ी करते हैं। वे सच्चे नहीं होते तथा सत्य के मार्ग से दूर जा रहे होते हैं। आज की दुनिया में व्यक्ति के पतन का सबसे बड़ा कारण अहंकार है, क्योंकि सभी को यह लगता है कि वे जो कर रहे हैं, वही सही है। लोग यदि इस अहंकार पर नियंत्रण न रखें, तो उनके फैसले गलत हो जाएंगे...क्योंकि वे सच्ची समझदारी का अनुभव करने में सक्षम नहीं होंगे। भले ही एक आम इंसान का इस सांसारिक दुनिया में कोई रुतबा न हो, पर यदि वह विनम्र है, तो भौतिक सफलता वाले एक अहंकारी व्यक्ति की तुलना में जीवात्मा जगत में उसका सम्मान होगा। एक विनम्र व्यक्ति अच्छे लोगों को आकर्षित करता है, न कि चापलुसों को। लोग उसके पास सही सलाह पाने के लिए आते हैं। पर जो लोग अहंकारी होते हैं, वे हमेशा अकेले रह जाते हैं। वे अपने आस-पास के लोगों के प्रति सशंकित रहते हैं और कभी सच्चे अर्थ में लोग उन्हें पसंद नहीं करते।

लोगों में अहंकार आने का दूसरा कारण यह होता है कि वे सांसारिक प्रसिद्धि और सफलता चाहते हैं। कभी-कभी समान प्रतिभा वाले लोग सफलता के अलग-अलग स्तरों पर होते हैं। यह उनकी परीक्षा, प्रशिक्षण तथा कर्म पर निर्भर करता है। **सफलता और असफलता, दोनों ही एक परीक्षा के बराबर होती हैं।** ताकि आप उन दोनों का सामना कैसे करते हैं, इसकी परख हो

सके। सफलता तथा असफलता से कोई बड़ा या छोटा नहीं होता। यदि सही दृष्टिकोण से देखा जाए, तो असफलता एक तरह का आशीर्वाद होती है, क्योंकि यह आपके अहंकार को नष्ट कर देती है और आपको विनम्रता का पाठ सिखाती है। इसके अलावा, कई बार सफलता, उस समय आपके लिए अच्छी नहीं हो सकती। जब आप विनम्र होते हैं, आप अपनी सफलता को अच्छी तरह से संभाल सकते हैं। इसलिए जब आपको किसी लक्ष्य की प्राप्ति हो जाए, तो अपने मन में अहंकार को जड़ न जमाने दें। इसके बजाए आप यह सोचें कि आपकी मदद एक उच्च शक्ति द्वारा की गई है। इस सच्चाई से अवगत रहें कि जब आप किसी बड़े कार्य को पूरा करते हैं, तो हमेशा कुछ लोग आपका साथ पाने के लिए आपको अनावश्यक रूप से महत्व देने लगेंगे। याद रखें कि जब आपको सफलता प्रदान की जाती है, तो वह आपके लिए एक परीक्षा होती है। कभी-कभी बगैर अधिक प्रयास के जल्द मिल जाने वाली सफलता से आप स्वयं को अजेय समझ बैठते हैं। जल्द मिल जाने वाली सफलता भी एक तरह की परीक्षा होती है। इससे अहंकार की भावना नहीं आनी चाहिए। इसलिए सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए धीरे-धीरे, निरंतर कदम बढ़ाने चाहिए। **सच्ची सफलता आध्यात्मिक सफलता होती है, न कि भौतिक सफलता।** भले ही आप पृथ्वी की भौतिकवादी दुनिया में रहते हैं, पर आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का विचार रखें। इसलिए सांसारिक सफलता मिलने के बाद भी आपका ध्यान आध्यात्मिक रूप से ऊंचा उठने में लगा होना चाहिए और आपको अपनी सांसारिक सफलता का उपयोग मानवता की भलाई के लिए करना चाहिए। यही वह तरीका है जिससे आप पृथ्वी पर एक संतुलित जीवन व्यतीत कर सकते हैं। अहंकार के कारण मनुष्य में उत्पन्न हुए दोषों का कोई अंत नहीं। पर यदि आप एक संवेदनशील इंसान हैं, तो आप महसूस करेंगे कि आपकी ये कमजोरियाँ खतरनाक होती हैं...क्योंकि वे धीरे-धीरे ही सही, पर निश्चित रूप से आपकी जीवात्मा को नष्ट करती हैं। अहंकार के कारण जब-जब आप स्वयं के अजेय होने का अनुभव करते हैं, तब अपने आप को याद दिलाएं कि आप मनुष्य हैं और आपका जीवन क्षण भर में बदल सकता हैं। **स्वयं को महान समझने के बजाए आप कृतज्ञता का अहसास करें।**

अहंकार किस प्रकार हानिकारक होता है?

अहंकार से निम्न परिणाम उत्पन्न होते हैं:

१. निर्णय क्षमता समाप्त हो जाती है।

आप पर जब अहंकार हावी हो जाता है, तब आप पूरी तरह से अपने भौतिक मन के हाथों संचालित होने लगते हैं...और भौतिक मन को तो सही आध्यात्मिक निर्णयों से कुछ भी लेना-देना नहीं होता। तब आपका निर्णय आध्यात्मिक रूप से असंतुलित हो जाता है, क्योंकि आप अपने अवचेतन मन की बात नहीं सुनते और आपका अहं किसी दूसरे की बात आपको सुनने नहीं देता। इससे आप एकमात्र अपने ही दृष्टिकोण को सही मान लेते हैं। साथ ही आप दूसरों के विचारों के प्रति इतने चिंतित रहते हैं, कि आप खुद को उनके

विचारों के अनुरूप बनाने में जुट जाते हैं। आपके निर्णयों का तब सच्चाई से कोई संबंध नहीं रह जाता।

२. आध्यात्मिक पतन

अहंकार आपको ईश्वर की सत्ता को मानने से रोकता है। इससे आप यह समझ बैठते हैं, कि दुनिया में कोई उच्च शक्ति नहीं होती। यह आपको समझाता है कि आप एक बौद्धिक व्यक्ति हैं और इसलिए ईश्वर में भरोसा करने के लिए आपके पास एक उचित और तार्किक कारण होने चाहिए। आपका अहंकार, आपकी बुद्धि को बहुत अधिक महत्व देता है, और आपके अवचेतन मन को कोई महत्व नहीं देता, जब की वह ईश्वर के अस्तित्व को पहचानता है। सही प्रकार से संतुलित मनुष्य की बुद्धि और अवचेतन मन सही तालमेल के साथ कार्य करते हैं।

३. निम्न स्पंदन

यदि आप कुछ भी नकारात्मक करते हैं, तो उसका नतीजा भी नकारात्मक ही होगा। इस नकारात्मक ऊर्जा को आप अपने सिर के चारों ओर छाए एक काले बादल के रूप में सोचें, जो आप तक प्रकाश आने नहीं देगा। यदि प्रकाश (विवेक) नहीं आए, तो आपके निर्णय और अधिक असंतुलित हो जाएँगे। इससे एक चक्र का निर्माण होता है, जहां आप और भी अधिक कमज़ोर फ़ैसले लेते हैं। बुरे कर्मों से नकारात्मक स्पंदन उत्पन्न होते हैं। आपके निम्न स्पंदन आपको तथा आपके आस-पास के लोगों को प्रभावित करते हैं। वे आपके चारों ओर के इस नकारात्मक बादल का अहसास कर लेंगे, और आपसे दूर हो जाएंगे। इसके अलावा आपके चारों ओर की नकारात्मक ऊर्जा और अधिक नकारात्मक ऊर्जा को अपनी ओर आकर्षित करने लगती है।

४. अन्याय

अहंकार के कारण आप हमेशा खुद को सही मानने लगेंगे, चाहे आप गलत ही क्यों न हों। इसलिए खुले दिमाग के होने के बजाए परिस्थितियों को समझने की आपकी क्षमता सीमित हो जाएगी...और आप अपनी राय दूसरों पर थोपने लगेंगे। इस प्रकार आप उनकी स्वतंत्र इच्छा के विरूद्ध चले जाते हैं, जो एक बड़ा अन्याय है। दुर्भाग्यवश आप इसे समझ नहीं पाते, क्योंकि अपने अहं के कारण आप अंधे हो चुके होते हैं।

५. ईर्ष्या

यह आपका अहं ही होता है, जो आपकी यात्रा की तुलना किसी और के साथ करवाता है।

ईश्वर से आपको जो प्रतिभा मिली है, उसे कृतज्ञ होकर स्वीकार करने के बजाए, आपका अहं आपका ध्यान उस चीज़ पर केंद्रित कर देगा, जो दरअसल आपके पास है ही नहीं। इतना ही नहीं, दूसरों की प्रतिभाओं और उपलब्धीयों को आप नापसंद करने लगेंगे। अहं के कारण आप एक अशांत...ईर्ष्यालु इंसान बन बैठेंगे।

६. असंतोष

पृथ्वी पर इंसान के सीखने के लिए सबसे अहम सबक होता है- संतुष्ट रहना। अहं भौतिक मन का परिणाम होता है। यह आपमें अधिक से अधिक इच्छाओं को उत्पन्न करता है। यदि आपमें अहं है, तो आप हमेशा अपने भौतिक मन को उत्तेजित करते हैं...और इसे कहीं अधिक शक्ति प्रदान कर देते हैं। भौतिक मन आपकी सांसारिक ज़रूरतों से अधिक के बारे में सोचने लगता है और अधिक इच्छाएं जगाने लगता है। आप तब उन इच्छाओं के सामने झुक जाते हैं और धन-दौलत, रुतबा और प्रसिद्धि पाने में जुट जाते हैं। यहां तक कि उन्हें हासिल कर लेने के बाद भी आप संतुष्ट नहीं हो पाते हैं; आपको इन्हें हासील करने के बाद भी संतोष नहीं होता। अहं आपमें और अधिक चीज़ों की इच्छा जगाता है, पर जब वे पूरी हो जाती हैं, तो नई इच्छाएं जाग उठती हैं। आप निरंतर रूप से उन इच्छाओं को पूरा करने में जुटे रहते हैं। आप उन्हें अधिक महत्व और शक्ति प्रदान करते चले जाते हैं। पर यदि आप विनम्र हैं, तो आप अवचेतन मन का संचालन करते हैं...और अवचेतन मन की आवश्यकताएं केंद्रित और सरल हैं, यह केवल आध्यात्मिक रूप से सही चीज़ों के बारे में ही सोचता है। **इसके अलावा जब आप अपने अवचेतन मन को विनम्रता पूर्वक सुनते हैं, तो बदले में यह आपको शांति का अनुभव कराता है। संतोष, अवचेतन मन की सलाह को मानने का नतीजा होता है।**

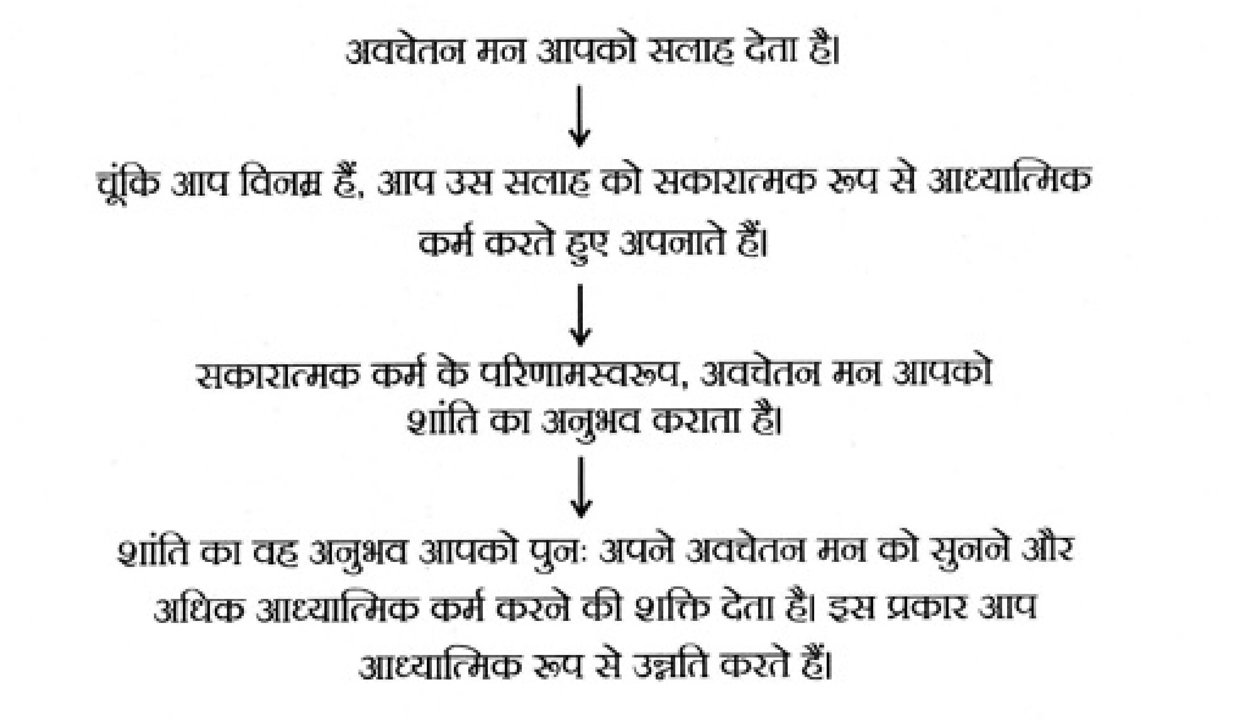

७. शत्रु

उतावलेपन और दुर्व्यवहार के कारण, आप अपने शत्रु पैदा कर लेते हैं। उस वक्त आपका अहं आपसे कहेगा, “मुझे इसकी कोई परवाह नहीं।” पर बाद में, काफी देर हो जाने पर आपको इसका पछतावा होता है।

८. संबंधों की हानि

संबंध सहअस्तित्व पर आधारित होते हैं। पर अहं सहअस्तित्व के विरूद्ध होता है, क्योंकि यह स्वयं की श्रेष्ठता को महत्व देता है। इसलिए स्वस्थ संबंधों का निर्माण असंभव हो जाता है, क्योंकि अहं इसमें हमेशा बाधाएं उत्पन्न करता है।

९. अपेक्षाएं

अहंकार से अपेक्षाओं का निर्माण होता है। इसका अपना एक निश्चित कार्यक्रम होता है। इसके सोचने का ढंग इस प्रकार होता है: चाहे कुछ भी हो, यह तो करना ही है; ऐसा तो होना ही चाहिए। इत्यादि। दुःख का सही कारण यही है, क्योंकि जब अहं का उद्देश्य पूरा नहीं होता, तो वह इसे सहन नहीं कर सकता। यह बेचैन हो जाता है और यह नहीं समझ पाता कि **समय की डोर उच्च शक्ति के हाथ में होती है।** इसके अलावा अपेक्षाएं चिंता

भी उत्पन्न करती हैं, क्योंकि वे आप पर अनावश्यक दबाव डालती हैं। अहं के कारण आप स्वयं और दूसरों से अपेक्षाएं करने लगते हैं व अन्य व्यत्तियों की झूठी अपेक्षाओं पर जीने की गलत आवश्यकताओं को उत्पन्न करता है। अपेक्षाएं पालने का प्रयास न करें, बल्कि हमेशा अपनी उम्मीद कायम रखें। उम्मीद के बारे में अहं को कुछ भी पता नहीं होता, क्योंकि इसके लिए आपको अपने अंतर से बाहर की कुछ चीज़ों पर निर्भर रहना पड़ता है। जिसका अर्थ है नतीजा का पूर्ण समर्पण करना तथा ईश्वरीय योजना के लिए स्थान रखना। अहं यह नहीं कर सकता, क्योंकि यह केवल स्वयं और दूसरों पर नियंत्रण करना जानता है।

उम्मीद रखने का सही अर्थ क्या है?

उम्मीद रखने का अर्थ जिद्द करना नहीं, बल्कि समझदारी रखना है। यह आपके लिए एक अजीब सा विचार हो सकता है, क्योंकि आम बोलचाल में कहा जाता है, "उम्मीद बनाए रखिए." उम्मीद गलत नहीं है, पर उसके परिणामों से बंधे मत रहिए। उम्मीद का अर्थ निश्चित अपेक्षाएं रखना नहीं। इसका अर्थ होता है- उत्साहपूर्ण तथा जोशपूर्ण तरीके से आगे बढ़ना। एक अर्थ में यह किसी व्यक्ति का हर दिन सकारात्मक रूप से जीना और भविष्य के प्रति भरोसा रखना होता है। 'उम्मीद जिंदा रखने' के लिए, आप किसी भी परिस्थिति को सकारात्मक रूप से और अधिक से अधिक अच्छे तरीके से उसका सामना करें। आप यह जानें कि ईश्वर वहीं करेंगे जो आपके लिए सर्वोत्तम होगा। इस प्रकार आप परिणाम से बंधे नहीं होते, पर आपने प्रक्रिया के महत्व को समझ लिया है। अहं केवल परिणाम पर निष्ठा रखता है। जबकि समर्पण करना, अवचेतन मन की स्वाभाविक प्रक्रिया होती है।

अहं से कैसे निपटें?

अहं और अवचेतन मन के बीच जीवन भर संघर्ष चलता रहता है, पर आप तबतक आध्यात्मिक यात्रा आरम्भ नहीं कर सकते, जबतक आप अपने अहं को समाप्त करने के लिए जोरदार प्रयास नहीं करते। इस रास्ते पर चलने के लिए यहां तीन सरल उपाय दिए जा रहे हैं:

१. स्वयं का विश्लेषण करें

अहं की मात्रा अलग-अलग होती है। कुछ लोगों में यह ज्यादा होता है, तो कुछ में कम। हालांकि सभी लोगों में कमोबेश यह होता ही है। हां, अमीरी, प्रसिद्धि, शक्ति, सुंदरता, उपहार, प्रतिभाएं इत्यादि ऐसी स्पष्ट चीज़ें हैं, जिनसे अहंकार उत्पन्न होता है। पर आध्यात्मिक अहंकार- विचारों का अहंकार, 'मैं' का अहंकार सबसे बुरा अहंकार होता है, जैसे- "मैं सही हूं," "मैं विनम्र हूं," "यह मेरे कारण ही तो संभव हो पाया," "इतने सारे

लोग मेरे पास मदद और मार्गदर्शन के लिए आते हैं," "मैं कई सामाजिक कार्य करता हूं," "मैं लोगों के दु:ख दूर करता हूं," "कई सारे लोग मेरे पास खिंचे चले आते हैं," "मैंने कई अस्पतालों और पाठशालाओं का निर्माण किया है" "मैं अत्यंत धार्मिक प्रवृत्तियों वाला इंसान हूं," "मुझे पता है," "मुझे बहुत सारी सफलताएं मिलीं हैं," "मैं अपना काम/ नौकरी/व्यवसाय कुशलतापूर्वक करता हूं।"

जिस क्षण 'मैं' का एहसास होता है, वही अहं का संकेत होता है...और वही आपके आध्यात्मिक पतन का पहला चरण होता है। आपको सभी सफलताएं, प्रतिभाएं इत्यादि ईश्वर की ओर से मिलती हैं। हम उनके साधन हैं और उन्होंने हमें यह सारे उपहार लोगों के साथ बांटने तथा दूसरों की सेवाओं के लिए दिए हैं। हमें ईश्वर का आभार मानना चाहिए और उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। उन्होंने हमें जो दिया है, उसे हम विनम्रतापूर्वक स्वीकार करें और कभी यह न सोचें- 'मैंने' यह किया।

अब अपने-आप का विश्लेषण करें और इस सच्चाई को स्वीकार करें कि आप एक अहंकारी व्यक्ति हैं। कभी-कभी जब आप इसे सही तरह से सोचते हैं, तो आपको अपने अहंकार पर हंसी आएगी। ईश्वर से विनती करें और उनसे मार्गदर्शन करने को कहें। आप अहंकारी हैं और सच्चे **अर्थ में बदलना चाहते हैं, इसका एहसास करना और इसे स्वीकार करना** सबसे कठिन पायदान होता है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलना कठिन होता है, क्योंकि इसके लिए परिवर्तन की आवश्यकता होती है। अहं को यह पता होता है कि अंततः उसे हटना ही होगा...और वह यही तो नहीं चाहता। इसलिए वह आपको बदलने से रोकता है। इस लिए आपका संकल्प आपके अहं से कही अधिक शक्तिशाली होना चाहिए।

२. अपने अहंकार पर नियंत्रण रखें

याद रखें कि अहं **आपके विचारों** में होता है। जब आप कुछ अच्छे काम करते हैं या कुछ उपलब्ध करते हैं, तो आपमें एक अहंकार की भावना उत्पन्न हो सकती है। लेकिन आप अपनी सोच और व्यवहार में, अहंकार को जगह न दें। अपने मन को किसी दूसरी ओर केंद्रित कर, अहंकार से दूर ले जाएं। शुरुआत में आपको अपने-आप पर नियंत्रण करना मुश्किल जान पड़ेगा-उसी तरह जैसे अपनी किसी बुरी आदत को छोड़ना कठिन जान पड़ता है। आपका भौतिक मन इस बुरी आदत का इतना आदी हो जाता है कि आप सोचना शुरु कर देते हैं कि आपका काम उसके बिना नहीं चलेगा।

धीरे-धीरे ये विचार कम होने लगेंगे और जल्द ही गायब हो जाएंगे। दबाव बना रहेगा, पर आपके हार न मानने की ही तो परीक्षा होगी। भले ही आप शुरुआत में असफल हो जाएं, पर गुस्सा न करें या नकारात्मक न बनें। **इसके बजाए आप विनम्र बन कर यह समझें कि शुरुआत में आपको असफलता मिल सकती है।** धैर्य रखें और पुनः प्रयास करें।

मुख्य बात यह है कि सफलता मिलने तक आप ईमानदारी पूर्वक प्रयास करते रहें। यदि आप दृढ़ रूप से आगे बढ़ रहे हैं और सकारात्मक हैं, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। आप ध्यान देंगे कि चीज़ें आसान और स्पष्ट होती चली जाती हैं..और आप सही मार्ग पर आगे बढ़ना शुरू कर देंगे। सबसे अहम होता है- अपने-आप पर नियंत्रण बनाए रखना।

३. अहंकार भरे विचारों को अपने मन से हटाकर, विनम्रता भरे विचारों को वहां स्थान दें।

अपने अस्पष्ट विचारों अथवा भावनाओं को लिख लें, ताकि उन्हें स्पष्ट किया जा सके और सही विचारों और सही समझ से बदला जा सके। इस तरीके से, वह छोटा-सा अहंकारी विचार एक बड़े अहंकार में विकसित नहीं हो पाएगा। हालांकि समय-समय पर अहं की भावना तब भी आती रहेगी, पर आप अपने मन को नियंत्रित करना सीख जाएंगे। अपना प्रयास लगातार जारी रखें।

क्या मनुष्य में अहंकार जन्म से ही होता है, या समय के साथ ग्रहण किया जाता है?

मनुष्य के पास भौतिक मन होता है, जिसका अर्थ है कि पृथ्वी पर उसके संपूर्ण रूप से अहंकारी होने की काफी संभावना रहती है। कुछ लोगों में दूसरों के मुकाबले कम अहंकार होता है, और कुछ में अधिक। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कुछ आत्माओं ने अपने पूर्व जन्म में अपने अहं पर विजय पाने का प्रयास किया होता है, और अब वे विनम्र हैं। जबकि दूसरे, विनम्रता के गुण को ग्रहण करने में असफल रहे होते हैं और वे अहं को मिटाने के उद्देश्य से फिर पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आते हैं। दुर्भाग्यवश पृथ्वी पर अहं को और बढ़ावा मिलता है, जिससे और अधिक दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

यहां इसका एक सरल उदाहरण दिया गया है:

बदला लेना भी एक बड़ा पाप होता है, क्योंकि यह योजनाबद्ध तरीके से होता है। यह नकारात्मक उद्देश्य से किया जाता है। आइए चौथे लोक के पांचवे स्तर के एक व्यक्ति की स्थिति पर विचार करते हैं। वह बदला लेने वाला इंसान नहीं है, इसका अर्थ है कि उसकी आत्मा बदला लेने वाली प्रवृत्ति की नहीं है, पर किसी कारणवश वह अहंकारी बन जाता है। उसकी बाहरी दुनिया में कुछ ऐसी चीज़ें घटती हैं, जो शायद सांसारिक उपलब्धि रही हो, जो उसके अहं को बढ़ावा देती है। उसका अवचेतन मन उसे संकेत देता है कि उसमें अहंकार उत्पन्न हो रहा है, पर वह उसकी बातों पर ध्यान नहीं देता, क्योंकि अहंकार की भावना से उसे आनंद मिल रहा है।

अहंकार के साथ यही तो समस्या है। यह आपको शक्तिशाली होने का अनुभव कराता है और आपको इसकी आदत पड़ जाती है। समय के साथ यह अहंकार और बढ़ता जाता है और भयानक रूप धारण कर लेता है। अब यह अपने चारों ओर की हर चीज़ पर, विशेषकर दूसरों की उपलब्धियों पर अपना नियंत्रण रखना चाहता है। जब कोई कुछ अच्छा करता है, तो अहं उत्तेजित हो जाता है, क्योंकि वह तो हमेशा स्वयं को श्रेष्ठ देखना चाहता है। लोगों की दृष्टि में खुद को अत्यंत महत्वपूर्ण बनाना चाहता है। उसे इस बात का अनुभव नहीं होता कि ईश्वर ने सभी को ख़ास और एक जैसा बनाया है। इसलिए तुलना करना गलत होता है। अहं जब तुलना करना आरम्भ करता है, ईर्ष्या उत्पन्न होती है। तुलना करना यदि आगे भी जारी रहा, तो व्यक्ति अंदर से जलने लगता है और उसमें क्रोध उत्पन्न होता है। वह जलन एक अत्यंत नकारात्मक भावना होती है और जंगल की आग की तरह फैलती है। यह इतनी अधिक फैल जाती है कि घृणा में बदल जाती है। जब आप उस स्तर पर पहुंच जाते हैं, जहां आपके अंदर घृणा भर जाती है, तब आप अपने अवचेतन मन को सुप्त होने की अनुमति देते हैं, इसलिए आपके ऊपर इसका कोई असर नहीं पड़ता और कोई भी तर्क आपको शांत नहीं करता। आप उस घृणा से अंधे हो जाते हैं और आपमें बदला लेने की भावना आ जाती है। जब आप किसी से बदला लेते हैं, तब अवचेतन मन सुप्त हो जाता है और आपके उबरने का मौका लगभग खत्म ही हो जाता है। इसलिए चौथे लोक के पांचवे स्तर की उस आत्मा में शुरुआत में बदले की भावना जन्म नहीं लेती, पर चूंकि वह अपने अहं पर काबू नहीं रख पाया, इसलिए उसका आध्यात्मिक पतन हो जाता है।

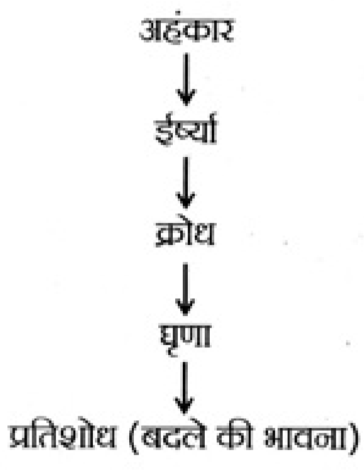

प्रतिशोध मनुष्य का एक निम्नतम गुण होता है और आध्यात्मिक नियमों में बदले की भावना वाले लोगों के लिए कोई रियायत नहीं होती। इसलिए अहंकार के प्रति सचेत रहें। यदि समय पर नियंत्रित न किया जाए, तो यह एक बहुत प्रबल नकारात्मक ताकत बन सकता है...जो जीवात्मा को हानि पहुंचाता है। व्यक्ति प्रतिशोध अलग-अलग तरीकों से ले सकता है। प्रतिशोध का अर्थ शारीरिक नुकसान पहुंचाना नहीं; जो कि इसका शाब्दिक अर्थ है। आप किसी को नीचे गिराकर, उसे छोटेपन का अनुभव करवाकर या उसे गलत काम करवाने के लिए तैयार कर भी प्रतिशोध ले सकते हैं। जब आप जानबूझ कर किसी को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक या

आध्यात्मिक रूप से नुकसान पहुंचाते हैं, तो आप उससे प्रतिशोध लेते हैं।

विनम्र बनने का क्या अर्थ है?

१. इस बात को ध्यान में रखना कि आपकी रचना एक उच्च शक्ति द्वारा कि गई है।

आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला एक सच्चा जिज्ञासु, एक विनम्र व्यक्ति ही होता है। सृजन के बारे में, ऐसे व्यक्ति की समझ स्पष्ट होती है और उसे पता रहता है कि उसका सृजन ईश्वर ने किया है। विनम्र होने का अर्थ, कभी इस सच्चाई को नहीं भूलना है। हम सभी का निर्माण ईश्वर द्वारा किया गया है और हम सभी उनसे जुड़े हैं। एक ज्ञानी, न्यायप्रिय और करुणामय ईश्वर से जुड़ना एक आशीर्वाद है, और यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम विनम्र बने रहकर इस रिश्ते को सदैव बनाए रखें।

२. यदि अहंकार का अर्थ स्वार्थी होना है, तो वहीं विनम्रता का अर्थ निःस्वार्थ होना है।

ईश्वर और उनकी खूबियों को जानने के लिए उनकी खूबियों को जीवन में उतारें। ईश्वर का सबसे पहला गुण है विनम्रता। विनम्रता स्वाभाविक रूप में होती है। यदि आप प्रकृति पर ध्यान देंगे, तो पाएंगे कि ईश्वर ने सुंदरता का निर्माण किया है...और उनके सृजन को जो चीज़ सुंदर बनाती है, वह न केवल रूप-रंग है बल्कि यह सच्चाई कि प्रकृति में विनय होता है। यह पूरी तरह से निःस्वार्थ होती है। यह निःस्वार्थता की खूबी ही तो आध्यात्मिकता का मूल होता है। इसके अलावा प्रकृति सहजीवी होती है: जल-धाराएं नदियां बनती हैं, नदियां सागर बनती हैं और सागर महासागर। प्रकृति में संतुलन, एकता, लयबद्धता मौजूद होती हैं... और उससे भी बड़ी बात है कि इसमें विनम्रता होती है। जल की धाराएं कभी खुदको नहीं कहतीं कि वह महासागर बनना चाहती हैं। उसे इस संसार में अपनी जगह के बारे में ज्ञान होता है। वह अपने कार्य को नम्रतापूर्वक, खुशी-खुशी स्वीकार करती है और एक महान उद्देश्य के लिए निरंतर कार्य करती रहती है। ईश्वर मनुष्य से भी यही चाहते हैं। आध्यात्मिकता की सच्ची कला है, निःस्वार्थ सेवा, जो प्रकृति की एक बड़ी विशेषता है।

३. विनम्र होने का ढ़ोंग न करें, बल्कि वास्तव में विनम्र बनें।

जैसे अहंकार विचारों में होता है, उसी प्रकार विनय भी विचारों में आता है। अहं अपनी अपवित्र भावना को सही और अच्छे रूप में छिपाए रखने में प्रबल होता है... और आपको इस बात को लेकर मूर्ख बनाता है कि आप जो कर रहे हैं सही कर रहे हैं। यह इसलिए कि अहं स्वार्थी होता है और उसे किसी भी कीमत पर अपना उद्देश्य पूरा करना होता है। यह कीमत आपका अपना अवचेतन मन और आत्मा हो सकती है। कई सारे मनुष्य विनय का मुखौटा लगाए रहते हैं। उनके कार्य और वाणी से ऐसा प्रतीत होता है कि वे विनयशील हैं...पर उनके विचार में अहंकार और श्रेष्ठ होने की भावना कूट-कूट कर भरी होती है। वे कुछ समय के लिए लोगों को मूर्ख बना सकते हैं, पर एक न एक दिन इन लोगों का भेद खुल ही जाता है।

४. आप यदि आध्यात्मिक मार्ग पर हैं, तो अहंकारी और सही होने के दंभ को न पालें।

यदि आप आधात्मिक मार्ग पर हैं, तो इसे लेकर अहं न पालें। पृथ्वी पर जीने की खातिर जब आपको सभी आवश्यक ज्ञान उपलब्ध हों, और तब भी आप गलत राह ही अपना लें, तो आपका आध्यात्मिक पतन तेज और ज्यादा गंभीर हो जाता है। पृथ्वी पर कई सारे लोग ऐसे हैं, जिन्हें लगता है, कि वे ईश्वर का कार्य कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि ज्ञान फैलाकर और लोगों को जीने का सही तरीका दिखाकर, वे दुनिया में प्रकाश फैला रहे हैं। पर कई सारे तथाकथित आध्यात्मिक गुरुओं को इस बात का घमंड होता है कि वे ज्ञानी हैं। **यह आध्यात्मिक अहंकार है, जो सबसे बुरा अहंकार होता है।** यह जीवात्मा का सबसे अधिक स्तर का दुराचरण है। यदि आप आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर उन्नत होना चाहते हैं, तो सही गुरू चुनना सबसे अहम बात होती है। याद रखें कि बहुत सारे गुरु सत्ता के इतने भूखे होते हैं कि उन्हें सही तरह से पता होता है कि अपने शिष्य को चालाकी से किस प्रकार संचालित किया जाए। वे अपने विद्यार्थी के अहं को बढ़ावा देते हैं, और उसके भय का प्रयोग उसे चालाकी पूर्वक संचालित करने में करेंगे। आध्यात्मिक मार्ग आसान नहीं होता। इसमें कठिन सत्य मौजूद रहते हैं। इसपर चलने के लिए आपको अपने-आप में झांकना होगा और अपने दुर्गुणों को स्वीकारना होगा। गलत गुरु आपको वही चीज़ें देंगे, जो आप सुनना चाहते हैं। वे आपको ऐसी चीज़ें नहीं देंगे जिसकी आपको वास्तव में ज़रूरत हो। **जबकि सच्चा गुरु हमेशा एक विद्यार्थी भी होता है।** आपका गुरु विनयशील है या नहीं, इसे परखने की यह पहली निशानी है।

५. हमेशा याद रखें कि आप ईश्वर के विद्यार्थी हैं।

आपके पास जितना भी ज्ञान हैं, जितने गुण हैं और आपके अंदर जितनी भी अच्छाइयां हैं, वे आपकी अपनी नहीं हैं। ये सभी आपसे होकर बहती हैं। आपका मन, शरीर तथा जीवात्मा सौभाग्यशाली होती हैं कि वे अच्छाइयां उनसे होकर प्रवाहित होती हैं। यह प्रवाह आपको सही मार्ग पर बनाए रखेगा। पर जब आप उस प्रवाह को अपने नियंत्रण में करने लगते हैं..और यह सोचना शुरु कर देते हैं कि इन सारी चीज़ों के लिए आप खुद जिम्मेदार हैं, तो आप धीरे-धीरे ही सही पर निश्चित रूप से उस प्रवाह को बाधित करने लगते हैं। और एक दिन वह प्रवाह कमजोर होता जाएगा और आखिरकार समाप्त हो जाएगा। अच्छाइयों के प्रवाह ने आपको नहीं छोड़ा है... बल्कि आपने उसे छोड़ दिया है। आपने उसे अहंकार से ग्रस्त होकर छोड़ा है। आध्यात्मिक नियमों के अनुसार, वह प्रवाह विनम्रता की ओर बहता है। इसलिए अब वह एक दूसरे माध्यम की ओर मुड़ जाएगा, जो दुराचारी जीवात्मा नहीं होती ...एक ऐसा माध्यम जो सेवा की अवधारणा को समझने के लिए खुला होता है। माध्यमों के रूप में आप ही तो सेवाकर्ता होते हैं। सेवा कार्य कर आप सह-सृजनकर्ता बन जाते हैं। पर जिस क्षण आपमें अहं आता है, आप अकेले चलना शुरु कर देते हैं और अपने-आप को ईश्वर से अलग कर लेते हैं। तब आप अपने मन और शरीर के भरोसे रह जाते हैं, जो अत्यंत सीमित होते हैं। जाहिर है आपकी जीवात्मा तब आपके मन और शरीर की तुलना में तेजी से अवनत होने लगती है...क्योंकि यही वह चीज़ है जो ईश्वर के बिना जीवित

नहीं रह सकती। यह अपने स्रोत से पोषण लिए बिना नहीं रह सकती।

मूल्यवान होने के लिए आपको आध्यात्मिक संपत्ति और शक्ति की आवश्यकता होती है। अहं को चीज़ों पर नियंत्रण करना अच्छा लगता है...इसलिए वह आपको कहेगा कि ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने पर आप शक्तिहीन हो जाएंगे। अहं आपको ईश्वर से तोड़ कर आपके सामने शक्ति की झूठी माया उत्पन्न करता है। यह आपको निरंतर रूप से भौतिक संपत्ति और प्रसिद्धि प्राप्त करने के पीछे लगाएगा। यह आपको बेचैन कर देगा...और आपको वह बेचैनी एक सकारात्मक उद्देश्य के जैसी महसूस होगी...और आप अपने भौतिक दुनिया में ज्यादा से ज्यादा पाने की तरफ दौड़ पड़ेंगे। अहं को पालकर और अपने अवचेतन मन की तुलना में अपने भौतिक मन को अधिक महत्व देकर, आप पूरी तरह से अपनी जीवात्मा को अनदेखा करने लगते हैं और अहं के खतरनाक हाथों को और मजबूत बना देते हैं। वह भ्रम केवल तभी टूटता है, जब आपकी मृत्यु होती है। जब आपकी जीवात्मा का मूल्यांकन होता है, तब आपका भ्रम टूट जाता है। भ्रम टूटने की वास्तविक स्थिति देर से आती है...और आपको एहसास होता है कि आपकी अमर जीवात्मा ही एक ऐसा तत्व है, जिसका सच्चा मूल्य होता है। आप अपना पूरा जीवन उन चीज़ों पर खर्च कर डालते हैं, जो अस्थाई होती हैं। आप अपनी सारी शक्ति को भौतिक तथा सांसारिक सत्ता को अर्जित करने में लगा देते हैं। **सत्ता के बारे में मत सोचिए। आध्यात्मिक शक्ति के बारे में सोचिए।** आप जिन चीज़ों को देखते हैं, वे अस्थाई हैं...आप जिन्हें नहीं देख पाते वे अनंत हैं। यदि आप इस सत्य को ध्यान में रखकर जीवन जिएं, तो आप कभी न खत्म होने वाली धन-संपत्तियों और प्रसिद्धि की लालच नहीं करेंगे। दरअसल जब वह धन-संपत्ति और प्रसिद्धि आप तक पहुंचेगी, तो आप ईश्वर के प्रति कृतज्ञ महसूस करेंगे। आपको इस बात का एहसास होगा कि आपको उस मजबूत स्थिति में इसलिए रखा गया है, ताकि आप दूसरों को प्रेरित कर सकें और ईश्वर के कार्य कर सकें। **ईश्वर के कार्य करने का अर्थ है, अपनी स्थिति का उपयोग दूसरों के विकास के लिए करना।** लोगों को उनके दुःख-परेशानियों से बाहर निकालना, उन्हें शक्ति प्रदान करना, और आखिरकार किसी दूसरे की जीवात्मा को ऊंचा उठाने में मदद करना ही प्रत्येक मनुष्य का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

कुछ लोगों को ऐसा क्यों लगता है कि विनम्रता एक कमजोरी है?

ऐसा उन्हें इसलिए लगता है, क्योंकि वे विनम्रता का असली अर्थ नहीं समझते। आत्म-सम्मान और विनम्रता साथ-साथ चलते हैं। इसका अर्थ यह है कि चाहे जो भी हो जाए, आप वही करेंगे जिससे आपकी या किसी और व्यक्ति की जीवात्मा को कष्ट न पहुंचे। इसका अर्थ है सही निर्णय लेना, अपनी सीमाओं को जानना और किसी और को दुःख न दें, या उनका अपमान न करना। विनम्रता को कभी कमज़ोरी के रूप में नहीं देखना चाहिए। बल्कि अहंकार तो आपकी कमज़ोरी है, जो आपको अपने दुर्गुणों को स्वीकार करने से रोकता है। विनम्रता आपको अपने अवचेतन मन से काम करने में मदद करती है...और अवचेतन मन रूप-रंग, बाहरी बनावट की बात नहीं सोचता। यह आपके अहं को कुचलता है, और वही करता है, जो सही है। कभी-कभी आप

अपने दुर्गुणों का स्वीकारते हैं, पर आप तब भी अप्रसन्नता का अनुभव करते हैं। अपने दोषों को स्वीकार करने से शांति मिलनी चाहिए, न कि दुःख। कुछ लोगों को अपनी गलतियों को स्वीकार करने में लंबा समय लगता है। यह एक स्पष्ट संकेत है कि आपका अहंकार अपने काम में जुटा है। विनम्रता का सर्वोच्च मूल्य है क्योंकि यह आपको अपने अंदर की नैतिक सच्चाई तक जा पहुंचाती है और आपको अपना मार्गदर्शक बनने में मदद करती है। वह कमज़ोरी कैसे हो सकती है? विनम्रता आपको अपने-आप के प्रति ईमानदार बनाती है। आप क्षण भर में यह जान सकेंगे कि आपके अहं को चोट लगी है, या आप अपने विश्वास पर अडिग हैं। नैतिक निर्णय लेना एक अच्छी बात है, क्योंकि आप अपने आध्यात्मिक अंतर्मन से कार्य करते हैं। **विन्रमता का अर्थ दुष्टता को सहन न करना है।** कई सारे लोग कायर बनकर विनम्रता को एक बहाना बना लेते हैं, और निश्चित रूप से यह एक कमज़ोरी है। विनम्रता का अर्थ है दुष्टता को हतोत्साहित कर उससे लड़ना..और यह जानना कि ऐसा करने की शक्ति ईश्वर के द्वार से प्राप्त होती है।

कोई व्यक्ति यह कैसे जान सकता है, कि वह अहंकारी है?

अहंकार के लक्षण इस प्रकार है:

१. आपको ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं होता।

२. अपने दोषों को स्वीकार करना आपके लिए मुश्किल होता है।

३. जब आप यह अहसास करते हैं कि आप ग़लत थे और दूसरा सही, तो यह बात आप सह नहीं पाते।

४. आप सच्चाई से भागते हैं।

५. आपको लगता है कि आप दूसरों से बढ़कर हैं।

६. आप मानते हैं कि केवल आप ही प्रतिभाशाली हैं।

७. आपको यह लगता है कि आपके बिना कुछ नहीं हो सकता।

८. आप मानने लगते हैं कि आप सबकुछ जानते हैं, और आध्यात्मिक ज्ञान पाने की आपको आवश्यकता नहीं है।

९. आप केवल अपने ही दृष्टिकोण को सही मानते हैं।

१०. आप लोगों को लगातार नीचा दिखाते हैं और उन्हें छोटे होने का अहसास दिलाते हैं।

११. आप इस बात की परवाह नहीं करते कि आपने किसी की भावनाओं को चोट पहुंचाई है।

१२. आप अपनी सारी उपलब्धियों का श्रेय खुद को देते हैं।

१३. आप यह स्वीकार नहीं कर पाते कि बहुत से लोग ऐसे हैं जो किसी न किसी मायने में आपसे बढ़कर हैं।

१४. आप प्रार्थनाओं को महत्व नहीं देते।

१५. आप इस बात को नहीं समझते कि दोष हर किसी में होता है और हर आदमी ग़लतियां करता है।

१६. आप केवल अपने बारे में सोचते हैं।

१७. आप एक अधीर, क्रोधी (दूसरों की ग़लतियों से आप चिढ़ते हैं) और बहुत अक्खड़ व्यक्ति हैं।

१८. आप परिवर्तन का प्रतिरोध करते हैं।

१९. दूसरे अगर आपसे असहमत हों तो आप बर्दाश्त नहीं कर पाते।

मनुष्य विनम्रता कैसे हासिल करे?

१. अपने अवचेतन मन को जागृत कीजिए। जब आप अपने अवचेतन मन द्वारा संचालित होते हैं, तब विनम्रता आपका स्वाभाविक गुण बन जाता है।

२. प्रार्थना कीजिए। जब आप सच्चे मन से और नियमित प्रार्थना करते हैं, तो आपको हमेशा इस सच का अहसास होता है कि आप ईश्वर द्वारा रचे गए हैं। यह सत्य आपको विनम्र बनाए रखता है।

३. सह-अस्तित्व और एकता को समझिए। ईश्वर ने हर किसी को समान बनाया है। इसलिए जिस क्षण आपको लगे कि आप दूसरों से बढ़कर हैं, समझ लीजिए कि आपकी सोच में कोई दोष है। हम सभी पृथ्वी पर अपनी परीक्षाओं, प्रशिक्षण और जीवन कार्य पूरे करने के लिए अपनी-अपनी खूबियां लेकर आए हैं। इसलिए, एक का दूसरे से बढ़कर होने का तो सवाल ही नहीं उठता।

४. दूसरों की सेवा करना सीखें। अहंकार चाहता है कि केवल उसकी ही इच्छा पूरी हो, लेकिन विनम्रता आपको सेवा के मार्ग पर ले जाती है।

५. खुले विचार रखिए और दूसरों के दृष्टिकोण को समझिए।

६. अपने दोषों को स्वीकार कीजिए। ऐसा करने से ही आप खुदको बदल सकते हैं।

७. आध्यात्मिक ज्ञान के लिए अपने मन का द्वार हमेशा खुला रखिए। एक विनम्र व्यक्ति हमेशा एक विद्यार्थी भी होता है। **बहरहाल, आध्यात्मिकता में बहुत अधिक गहरे भी मत जाइए।** हमारे कहने का अर्थ है कि केवल लिखित ज्ञान में मत उलझिए। विद्यार्थी के रूप

में, क्रमिक रूप से अपनी सीखी हुई चीजों को लागू कीजिए। **जब आप अपनी शिक्षा को अमल में लाते हैं, तो आप अपनी जीवात्मा को सबल बनाते हैं, लेकिन यदि आप ज्ञान में ही उलझे रहते हैं और उसके जरिए खुदको भीतर से बदलने की कोशिश नहीं करते, तो आप अपने अहंकार को शक्ति प्रदान कर रहे हैं।**

८. दयालु और सहृदय बनिए। दूसरों की भावनाओं को ध्यान में रखिए। दूसरों की परवाह कीजिए और उनकी परिस्थितियों को समझिए।

९. धैर्य रखिए। याद रखिए कि लोग आध्यात्मिक विकास के अलग-अलग स्तरों पर होते हैं और उनकी परीक्षाएं, उनके प्रशिक्षण और कर्म भी अलग-अलग होते हैं। उनके आध्यात्मिक ज्ञान का स्तर भी समान नहीं होता। **उन्हें तौलिए मत, बस उनके विकास में मदद कीजिए।**

१०. जब आपके साथ कुछ अच्छा होता है, या फिर जब आप भौतिक जगत में कुछ उपलब्ध करते हैं, तो हमेशा इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दें और पृथ्वी पर आपकी मदद करने वाले आपके आसपास के लोगों और जीवात्मा जगत के अपने परिजनों को भी धन्यवाद दें।

११. जब आप संदेह में हों, तो ऐसे व्यक्ति से सलाह लें जिसपर आपका भरोसा हो। आज की एक सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोग अपने अहंकार के कारण किसी से मदद या सलाह मांगने में संकोच करते हैं। वे इसे कमजोरी का लक्षण मानते हैं। आपको मदद की आवश्यकता है, इस सच को खुलकर स्वीकारने के लिए भी आपके अन्दर शक्ति होनी चाहिए। लेकिन मदद नहीं मांगना और अपने आप को यह भरोसा दिलाना कि आप बिना किसी की सहायता के अपनी समस्याएं सुलझा लेंगे, यह अहंकार का लक्षण है।

१२. ईश्वर के आगे समर्पण कीजिए। सही रास्ते पर कायम रहने के लिए अपना पूरा प्रयास कीजिए, लेकिन यह जान लीजिए, कि परिणाम केवल ईश्वर के हाथों में है। जैसा आप सोचते हैं, ईश्वर की योजना उसकी तुलना में कहीं ऊंचे स्तर की होती है।

आध्यात्मिकता में अहंकार को नष्ट करना शामिल होता है और अहंकारी लोगों के लिए यह एक डरावनी चीज होती है। इसलिए यदि आप बहुत अहंकारी हैं तो आपके लिए आध्यात्मिक यात्रा बड़ी मुश्किल होगी। अहंकारी मनुष्य के लिए खुद को बदलना असंभव नहीं होता, लेकिन उसे बदलने के लिए बड़ी मेहनत करनी होगी क्योंकि उसका अहंकार अपनी पूरी ताक़त से उसे बदलने से रोकेगा। वर्षों से अपने अहंकार के कारण आपकी जड़ें इस भौतिक और सांसारिक जगत में गहराई तक फैल चुकी हैं। आध्यात्मिकता का अर्थ है उन जड़ों को काटना और उच्चस्तरीय ज्ञान की जड़ों को रोपना। अहंकार का बोझ लिए कोई उड़ान संभव नहीं। विनम्रता आपको उड़ान भरने तथा जमीन पर पांव जमाए रखने, इन दोनों में ही एकसाथ मदद करती है।

अक्ष का स्थानांतरण

"स्थानांतरण पूरी तरह मानव-निर्मित है, जो मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न ऊर्जा के कारण होगा। अपराध और पाप जितने अधिक होंगे, स्थानांतरण उतनी ही जल्दी होगा।"

"स्थानांतरण का सामना करने का एकमात्र उपाय है ईश्वरीय सन्मार्ग पर चलना।"

अक्ष का स्थानांतरण क्या है?

प्रकृति सजीव होती है। इसलिए, यह ऊर्जा के प्रति बहुत संवेदनशील होती है। चूकि प्रकृति तटस्थ होती है, इसलिए जब मनुष्य बुरी राह पर चलते हैं तो उनके कर्मों द्वारा नकारात्मक स्पंदन उत्पन्न होते हैं और ये नकारात्मक स्पंदन प्रकृति द्वारा अवशोषित कर लिए जाते हैं। मनुष्य में प्रकृति के क्रम को अच्छे या बुरे के लिए बदलने की क्षमता होती है। जब मनुष्य लगातार ग़लत मार्ग का अनुसरण करता है और ईश्वर, अपने परिजनों और प्रकृति के प्रति सम्मान नहीं दर्शाता है, तो भव्य प्रमाण में नकारात्मक ऊर्जा संचित होने लगती है। परिणाम स्वरूप प्रकृति की प्रतिक्रिया नकारात्मक होती है। इस कारण भूकंप, बाढ़, बवंडर, ज्वालामुखी, आग इत्यादि जैसी प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं पृथ्वी पर बढ़ जाती हैं। यह प्रकृति का अपना तरीका है मनुष्य को चेतावनी देने, उसे रोकने, सोचने को मजबूर करने और बदलने का। इंसान ने भले ही जबरदस्त तकनीकी प्रगति कर ली हो, लेकिन यह सच्ची प्रगति नहीं है। शक्ति का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए न कि व्यक्तिगत लाभ अथवा नकारात्मक उद्देश्यों के लिए। अच्छाई के मूलाधार प्रेम, निःस्वार्थता और मैत्री अब पृथ्वी से लगभग गायब हो चुके हैं। यह प्रगति के नहीं बल्कि पतन के संकेत हैं।

प्रकृति मनुष्य की परछाईं है। यह वही दर्शाती है जो आपके अन्दर है। सारे उतार-चढ़ाव जो आपकी दुनिया में होते हैं, वे मनुष्य के अन्दर चलने वाली अशांति को दर्शाते हैं। साथ ही, आपकी ऊर्जा को प्रकृति द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। यदि आप सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करेंगे, तो प्रकृति इसे शांति और सामंजस्य के रूप में परावर्तित करेगी। यदि आप नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करेंगे, तो प्रकृति की प्रक्रिया भी नकारात्मक होगी। यदि आप एक

स्थान पर परमाणु परीक्षण करेंगे, तो किसी अन्य स्थान पर भूकंप पैदा होगा। दुर्भाग्य से हम यह भूल चुके हैं कि संपूर्ण पृथ्वी हमारा घर है और यह भी कि हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं। इस समय मनुष्य भले मार्ग से भटककर इतनी दूर निकल आया है कि प्रकृति संकेत देने लगी है। आप ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहां लोग ईश्वर के बारे में बोलने अथवा आध्यात्मिक रास्ते पर चलने से भी डरते हैं, या लज्जित महसूस करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि उनका ईश्वर में विश्वास है, लेकिन क्षण भर के लिए भी वे ईश्वर की शिक्षाओं के अनुरूप जीवन नहीं जीते। वे ईश्वर की अच्छाइयों से इतने दूर होते हैं कि कल्पनाओं से परे बुरे काम करते हैं। कुछ ऐसे भी लोग है जो केवल अहंकार की पुष्टि के लिए अथवा अपनी जिम्मेदारियों से बचने के लिए आध्यात्मिक यात्रा पर निकल पड़ते हैं और अपने आप को यह भरोसा दिलाते हैं कि वे ईश्वर को प्राप्त करने चले हैं। ईश्वर के नियम कुछ इस तरह बनाए गए हैं, कि जब मनुष्य एक सीमा से आगे बढ़ जाता है, जब अच्छाई के साथ मनुष्य का सामंजस्य पूरी तरह टूट जाता है और एक बड़ा असंतुलन पैदा होता है, तब प्रकृति उन्हें चेतावनी देती है कि वे ग़लत रास्ते पर चल रहे हैं। यदि मनुष्य बदलाव की ओर नहीं बढ़ता, तो प्रकृति हर असंतुलन को एक शुद्धिकरण प्रक्रिया के जरिए बदलेगी क्योंकि आख़िरकार ईश्वर की रचना (मनुष्य तथा प्रकृति दोनों) को अपने अभीष्ट रूप में, शुद्ध, उदार और शांतिप्रिय होकर रहना है। इस शांति के फिर से स्थापित किए जाने से पहले नकारात्मक ऊर्जाओं को हटाना होगा। शुद्धिकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, लेकिन इस बार प्रकृति तब तक नहीं रुकेगी जब तक पृथ्वी फिर से शुद्ध न हो जाए। पृथ्वी को फिर से ऐसे स्थान के रूप में विकसित होना होगा जहां मनुष्य आपस में प्रेमभाव और प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जिएं और सर्वशक्तिमान ईश्वर के साधन के रूप में कार्य करें। ईश्वर के सच्चे साधन के रूप में कार्य करने का अर्थ है ईश्वर में पूर्ण आस्था के साथ निःस्वार्थ होकर उच्चतर अच्छाई के लिए जीना।

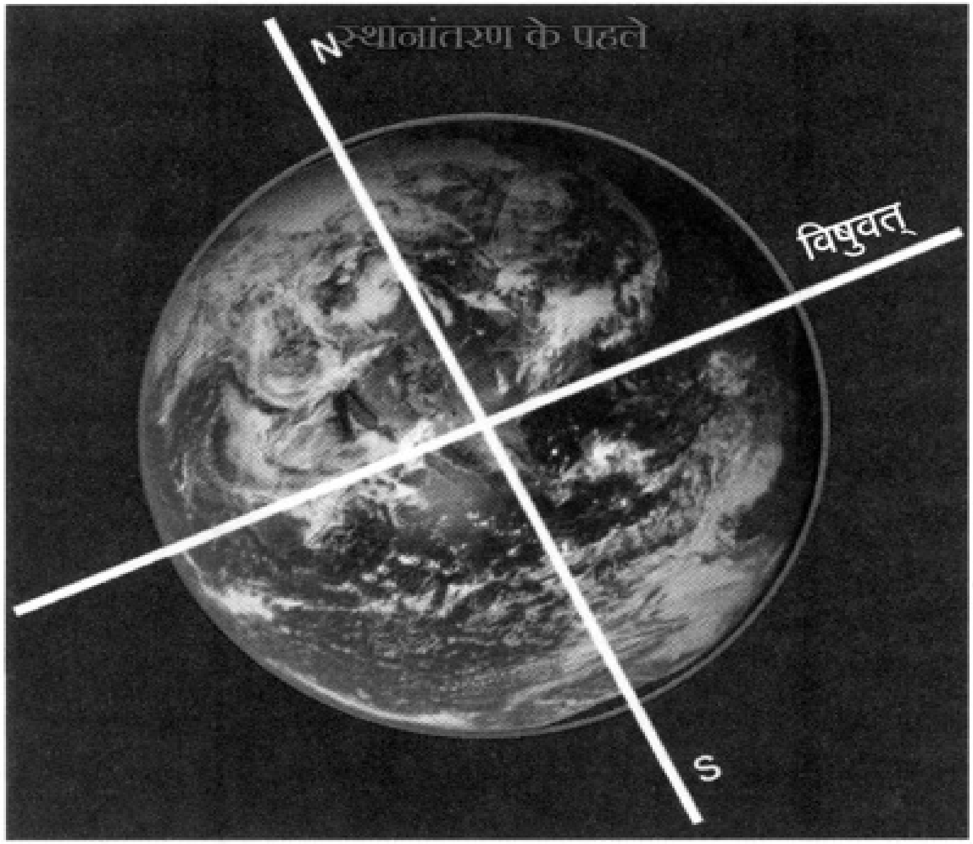
स्थानांतरण के पहले
N
विषुवत्
S

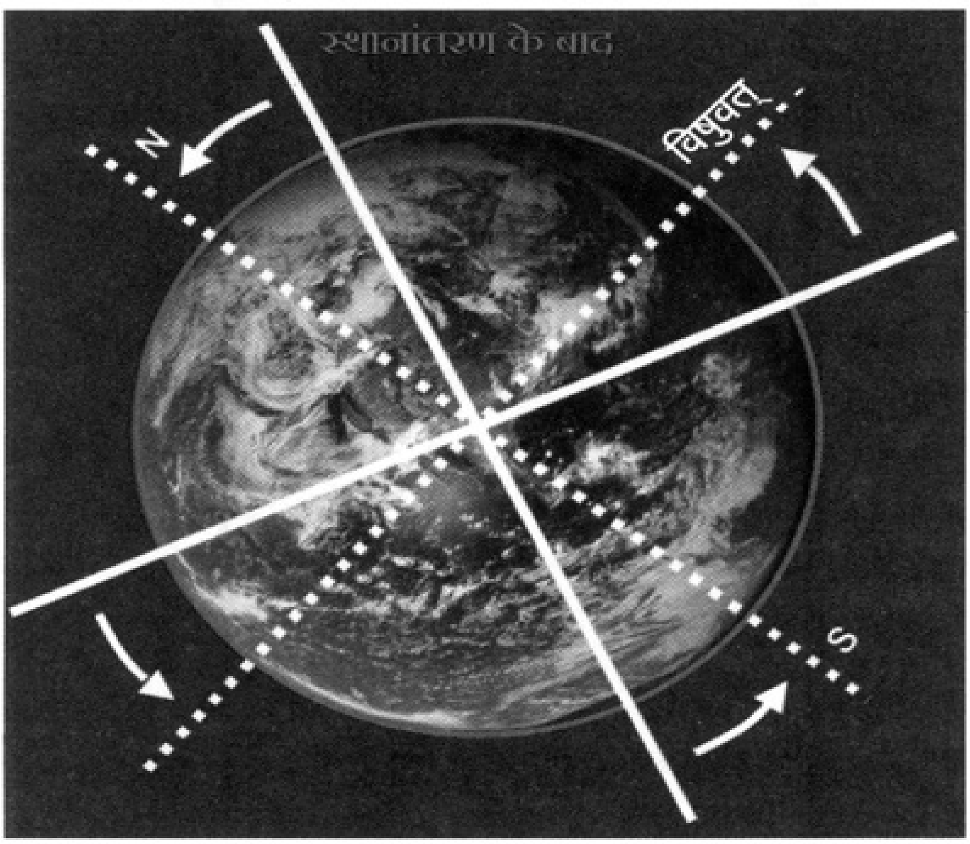
स्थानांतरण के बाद
N
विषुवत्
S

मनुष्य को प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर चलना होगा और इश्वरीय सन्मार्ग पर चलकर आध्यात्मिक प्रगति करनी होगी। बहरहाल पृथ्वी पर जीवन चक्र इस प्रकार है कि कभी-कभी अच्छाई का प्रसार होता है और बुराई संकुचित होती है, अथवा कभी-कभी इसके विपरित होता है। यह चक्र लगातार चलता रहता है। कभी-कभी नकारात्मकता बहुत बढ़ जाती है और इसमें इतनी अधिक वृद्धि के कारण शुद्धिकरण की प्रक्रिया अनिवार्य हो जाती है क्योंकि बुराई अर्थात नकारात्मकता के एक बड़े हिस्से को हटाना जरूरी हो जाता है। क्योंकि सफाई की प्रक्रिया प्रकृति द्वारा चलाई जाएगी, इसलिए प्राकृतिक आपदाओं का स्वरूप इतना विशाल होगा कि 'ध्रुव के स्थानांतरण' की स्थिति बनेगी। पृथ्वी का अक्ष भौगोलिक रूप से स्थानांतरित होगा। महाप्रलय लाने वाले भूकम्पों की एक श्रृंखला चलेगी जिसके कारण बड़ा असंतुलन पैदा होगा जिसके बाद बाढ़, ज्वारीय तरंग, आग और अधिक भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट जैसी बड़ी प्राकृतिक आपदाओं का जन्म होगा। इनके कारण नकारात्मकता का एक बड़ा भाग पृथ्वी से मिट जाएगा। इस जानकारी का मकसद आपको डराना नहीं है। इसका उद्देश्य केवल आपको परिवर्तन करने के लिए सचेत करना है।

अक्ष के स्थानांतरण को कौन निर्मित करता है? ईश्वर या मनुष्य?

ईश्वर ने मनुष्य को अच्छा-बुरा चुनने की स्वतंत्र इच्छा दे रखी है। इसलिए, स्थानांतरण पूरी तरह मानव-निर्मित होता है, क्योंकि यह मनुष्य के नकारात्मक कर्मों के फलस्वरूप उत्पन्न ऊर्जा के कारण होता है। स्थानांतरण कार्य-कारण सिद्धांत से संबंधित है और मनुष्य के क्रियाकलापों पर यह प्रकृति की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह पूरी तरह मनुष्य के हाथों में है। अवचेतन मन के मार्गदर्शन को अन्देखा कर मनुष्य आध्यात्मिक मार्ग से पूरी तरह भटक गया है। यही मुख्य कारण है कि स्थानांतरण बहुत जल्द होगा। यदि आप प्रकृति के चमत्कारी और नाज़ुक संतुलन को बिगाड़ेंगे, तो इसके परिणाम बहुत भीषण होंगे।

स्थानांतरण की अवधि क्या होगी?

कुछ ही घंटों के अन्दर विनाश का बड़ा हिस्सा घटित हो चुका होगा। इसकी गति बहुत तेज होगी। उस समय, जब बड़े प्रमाण में लोग अपने प्रियजनों को खोएंगे, तब भले लोगों द्वारा उन्हें मार्गदर्शन मिलेगा और राहत पहुंचाई जाएगी, जिससे उनमें जीने के लिए और आशा कायम रखने के लिए शक्ति का संचार होगा।

अक्ष का स्थानांतरण कब होगा?

इसका समय पूरी तरह मनुष्य के हाथों में है। अपराध और पाप जितने अधिक होंगे, उतनी ही

जल्दी स्थानांतरण घटित होगा।

स्थानांतरण के बाद कौन बचेगा?

इससे बचना बिल्कुल आपके अपने हाथों में है। शुद्धिकरण की प्रक्रिया का अर्थ है कि नकारात्मकता का एक बड़ा हिस्सा साफ किया जाएगा। बचे रहने के लिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आप उस नकारात्मकता का हिस्सा न बनें, जिसे हटाया जाना है। आध्यात्मिक रूप से उन्नत बनें।

दुनिया में कितने प्रतिशत जनसंख्या बचेगी?

दुनिया की जनसंख्या का २५% भाग बच पाएगा।

स्थानांतरण कहां से शुरू होगा?

महाप्रलयकारी भूकंप के साथ स्थानांतरण एक साथ सारी दुनिया में शुरू होगा जिसके बाद दुनिया भर में, शुद्धिकरण की प्रक्रिया पूरी होने तक एक के बाद एक भीषण प्राकृतिक आपदाएं आती रहेंगी। पृथ्वी के कई हिस्से, जो आज जमीन हैं, वे समुद्र बन जाएंगे; बड़े पैमाने पर आग लगने की घटनाएं होंगी; और जहां-जहां परमाणु हथियार, गोले-बारूद रखे गए हैं वहां-वहां भयानक विस्फोट होंगे। पृथ्वी को अत्यंत भयानक विनाश से गुजरना होगा।

पृथ्वी के कौन-कौन से हिस्से स्थानांतरण के समय और उसके बाद सुरक्षित बचेंगे?

सकारात्मक स्पंदनों वाले स्थान सुरक्षित रहेंगे जैसे कनाडा, न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के कुछ हिस्से। जिन स्थानों के स्पंदन नकारात्मक हैं, उनके बचने की संभावना बहुत कम होगी।

स्थानांतरण के बाद क्या सुरक्षित स्थानों में औषधों की आवश्यकता होगी?

शुरुआती तौर पर औषधों की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए घर में औषधों को जमा रखना बेहतर होगा। साथ ही, प्राथमिक उपचार और आपदा प्रबन्धन पाठ्यक्रम कर लेना ठीक रहेगा ताकि आपको यह पता हो कि यदि कोई घायल हो जाए, तो उसे बचाने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

स्थानांतरण का हमारे आध्यात्मिक विकास से क्या संबंध है?

आपने ऐसे समय में परिवर्तन करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया है, जबकि अत्याधिक नकारात्मकता के कारण खुद को बदलना बहुत मुश्किल है। मुश्किल समय में पृथ्वी पर आकर और एक सकारात्मक आध्यात्मिक जीवन जीते हुए आप प्रगति करने की कोशिश करते हैं। सबसे पहला काम जो आपको करना है वह है खुद में परिवर्तन लाना। आपको यह परिवर्तन जल्दी लाना होगा, अक्ष के स्थानांतरण की घटना होने से पहले, क्योंकि यही आपकी परीक्षा है। यह वह परीक्षा है जिसे आपने खुद चुना है। स्थानांतरण होने पर शुद्धिकरण की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी और पृथ्वी के स्पंदन बदलेंगे और पृथ्वी पर प्रलोभन कम हो जाएंगे। इसलिए, अभी इसी वक्त परिवर्तन लाना एक परीक्षा है। जीवात्माएं परिवर्तन लाने में आपकी मदद करना चाहती हैं, लेकिन हमें आपका सहयोग चाहिए। यदि आपमें परिवर्तन की इच्छा नहीं है, तो हम आपको इसके लिए मजबूर भी नहीं कर सकते। यह कभी न कहें कि आपके पास आध्यात्मिक परिवर्तन के बारे में सोचने का समय नहीं है। जब आप भौतिक जीवन में बहुत ज्यादा उलझे जाते हैं, तब यह भूल जाते हैं कि पृथ्वी पर आप किस लिए आए हैं। अपने आप को भाग्यशाली समझिए कि आपका जन्म मुश्किल घड़ी में हुआ है। आध्यात्मिक रूप से प्रगति करने पर भौतिक चीजों के साथ आपका लगाव कम होता जाएगा और आप अपने कर्तव्यों को निभा पाएंगे और पृथ्वी पर अपना जीवन कार्य पूर्ण कर पाएंगे। अंत में यह समझ लीजिए कि इस समय, जबकि नकारात्मकता अपने चरम पर है, निःस्वार्थ भाव से भला काम करना आपको बहुत जल्दी प्रगति की ओर ले जाएगा। यदि यही भला काम आप स्थानांतरण के बाद करेंगे जब पृथ्वी पर स्पंदन सकारात्मक हो जाएंगे और अच्छाई का बोलबाला होगा, तो आपकी प्रगति उतनी तेजी से नहीं होगी।

स्थानांतरण के विषय में जीवात्माएं पृथ्वी की आत्माओं को किस प्रकार मदद कर रही हैं?

इस समय हम पृथ्वी की आत्माओं के सुधार के लिए बहुत कठिन प्रयास कर रहे हैं, ताकि वे स्थानांतरण में सुरक्षित बच सकें। हम भली आत्माओं को सुरक्षित स्थानों में ले जाने का भी कार्य कर रहे हैं। पृथ्वी पर हर तरफ इतनी गतिविधियाँ चल रही हैं, जिनका आपको अंदाज़ा भी नहीं। हम इस समय बहुत अधिक सतर्क हैं और पृथ्वी पर होने वाले एक-एक परिवर्तन पर नज़र रख रहे हैं। स्थानांतरण शुद्धिकरण की एक जरूरी प्रक्रिया है। पृथ्वी के इतिहास में यह नियमित अंतरालों पर होता रहा है। बहरहाल इस बार, मनुष्य अपने ग्रह को नष्ट करने के बहुत करीब पहुंच चुका है। यही ग्रह उसे जीवन और आश्रय देने के साथ उसके विकास में मदद करता है। मनुष्य को प्रकृति के साथ पूरी एकता और सामंजस्य के साथ जीना सीखना होगा। इस तरह यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन को सरल बनाएं और सच्चे रास्ते का अनुसरण करें। एक बार फिर हम आपको बताएं, कि आपके लिए बचने का केवल एक ही मार्ग है, अच्छाई के नाते परिवर्तन लाना और सच्ची राह पर चलना।

स्थानांतरण के दौरान मनुष्य को किस प्रकार मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त होंगे?

उच्चतर लोकों के मनुष्य सुरक्षित रहेंगे। उड़नतश्तरियां (यूएफओ) पृथ्वी पर आकाशगामी किरणें भेजकर उन भली आत्माओं को बचाएंगी जो खतरनाक स्थानों में फंसीं हों। इन किरणों को हर कोई देखेगा और भयभीत होगा लेकिन उच्चतर लोकों की भली आत्माएं सच्चाई समझ जाएंगी और उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त होगा कि उन्हें क्या करना है। यहां तक कि यदि भली आत्माएं मलबे के नीचे दबी होंगी और किसी को दिखाई नहीं पड़ेंगी, तब भी उन्हें 'ढूंढकर' बचा लिया जाएगा। ये आत्माएं किरणों की ओर निर्देशित होंगी जो उन्हें अंतरिक्ष यानों में ले जाएंगी। जो मनुष्य उच्चतर लोकों के नहीं होंगे और जिनके स्पंदन बुरे होंगे, वे इन किरणों से डरेंगे और चाहकर भी उन्हें छू नहीं पाएंगे अथवा उनमें जा नहीं पाएंगे। अंतरिक्ष यान में, मनुष्य को जीवित रहने के तरीके सिखाए जाएंगे और फिर उन्हें समुद्र में उभरे हुए विभिन्न द्वीपों पर उतार दिया जाएगा। मनुष्यों के लिए यह सबसे कठिन परीक्षा होगी और स्थानांतरण से पहले, इसके दौरान और इसके बाद उन्हें बहुत अधिक शक्ति और सकारात्मक प्रवृत्ति धारण करने की जरूरत होगी। अब तो आप समझ गए होंगे कि हम आपसे क्यों जल्दी से जल्दी तरक्की करने की बात कर रहे हैं?

क्या स्थानांतरण के बाद परिवार साथ रह पाएगा?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि **परिवार का प्रत्येक सदस्य कितना भला है। स्थानांतरण के दौरान केवल आपके लोक को ध्यान में रखा जाएगा और आपके लोक के अनुसार ही आप अपने परिवार के साथ रहेंगे, या उनसे बिछड़ जाएँगे।**

यदि किसी गर्भवती मां के स्पंदन नकारात्मक हैं और उसके पेट का बच्चा भली आत्मा है तो उनका भाग्य कैसा होगा?

स्थानांतरण के दौरान कोई भी भली आत्मा बुरी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेगी।

आत्मविश्लेषण प्रपत्र

यहां एक आत्मविश्लेषण प्रपत्र दिया जा रहा है।

इसमें मनुष्य के सभी संभावित नकारात्मक आत्मिक लक्षण दिए गए हैं। एक मनुष्य के तौर पर बदलने के लिए, आपका यह जानना जरूरी है कि क्या बदलना है। इसलिए इस सूची को खुले दिमाग से पढ़िए और उन सब लक्षणों पर निशान लगाइए जो आप पर लागू होते हैं। विश्लेषण दिन के अंत में रोज करना चाहिए और आपको उस दिन खुद पर लागू होने वाले लक्षण पर चिन्ह करना चाहिए। यह याद रखिए कि यह विश्लेषण का विचार आपके प्रति कठोरता नहीं है। शालीन नज़रिए से और ग्रहणशील विनम्र मन से यह आपकी अपनी आत्मा की जाँच-परख करना है। यह आपकी आत्मा को समझदारी के प्रकाश से नहलाना है, ताकि जो कुछ भी नकारात्मक है वह इस प्रकाश में धुल जाए। यह प्रक्रिया शुरू में मुश्किल हो सकती है लेकिन कृपया करके भरोसा रखिए कि आख़िरकार यह आपके सुधार के लिए है।

जो कुछ भी आपमें अच्छा है, आपके सकारात्मक आत्मिक लक्षण, उन्हें भी विनम्रता के साथ स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। इसलिए उनकी जानकारी रखिए और उनसे शक्ति प्राप्त कीजिए। उनका उपयोग नकारात्मकता पर विजय पाने में कीजिए लेकिन अपनी खूबीयों पर कभी घमंड मत कीजिए। महानता का अनुभव करने के बजाए, कृतज्ञता का अनुभव कीजिए।

ईश्वर आप पर कृपा करें!

आत्मविश्लेषण प्रपत्र

खुद के प्रति ईमानदार बनिए -वीआरआरपी

क्रम सं.	विश्लेषण के बिन्दु	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि
१.	प्रतिशोध																												
२.	अहंकार																												
३.	धार्मिक और सामाजिक कट्टरता (अपने आप को अलग दूसरों को)																												
४.	आत्म-दया																												
५.	स्वार्थ																												
६.	दिखावा ([illegible])																												
७.	[illegible]																												
८.	[illegible]																												
९.	[illegible]																												
१०.	[illegible]																												
११.	[illegible]																												
१२.	[illegible]																												
१३.	कायरता ([illegible])																												
१४.	अनुशासन की कमी																												
१५.	आलस्य																												
१६.	[illegible]																												
१७.	[illegible]																												
१८.	[illegible]																												
१९.	[illegible]																												
२०.	ईर्ष्या																												
२१.	झूठ																												
२२.	नफरत/घृणा																												
२३.	क्रोध																												
२४.	चिड़चिड़ापन																												
२५.	लोभ																												
२६.	[illegible]																												
२७.	[illegible]																												
२८.	[illegible]																												
२९.	[illegible]																												
३०.	[illegible]																												
३१.	द्वेष																												
३२.	दूसरों को धोखा देना																												
३३.	[illegible]																												
३४.	दूसरों पर [illegible] करना																												
३५.	[illegible]																												
३६.	[illegible]																												
३७.	[illegible]																												
३८.	[illegible]																												
३९.	[illegible]																												
४०.	अपनी गलतियों का दोष दूसरों को देना																												
४१.	अपनी [illegible] दूसरों पर [illegible]																												
४२.	अपने वादे पर अमल नहीं करना																												
४३.	अपने [illegible] के लिए किसी को [illegible] करना																												
४४.	किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना																												
४५.	दूसरों का मजाक उड़ाना																												
४६.	अपनी क्षमता से अधिक खर्च करना																												
४७.	कंजूसी																												
४८.	[illegible]																												
४९.	[illegible] नहीं करना																												
५०.	अपने आप पर मानसिक और शारीरिक नियंत्रण नहीं रखना																												
५१.	लापरवाही																												
	कुल																												

निर्देश

रोज रात को अपने दिन भर के व्यवहार के बारे में सोचें और गलतियों को न दुहराने की ठानें अपने खुद के प्रति विश्वास और ईमानदार रहें

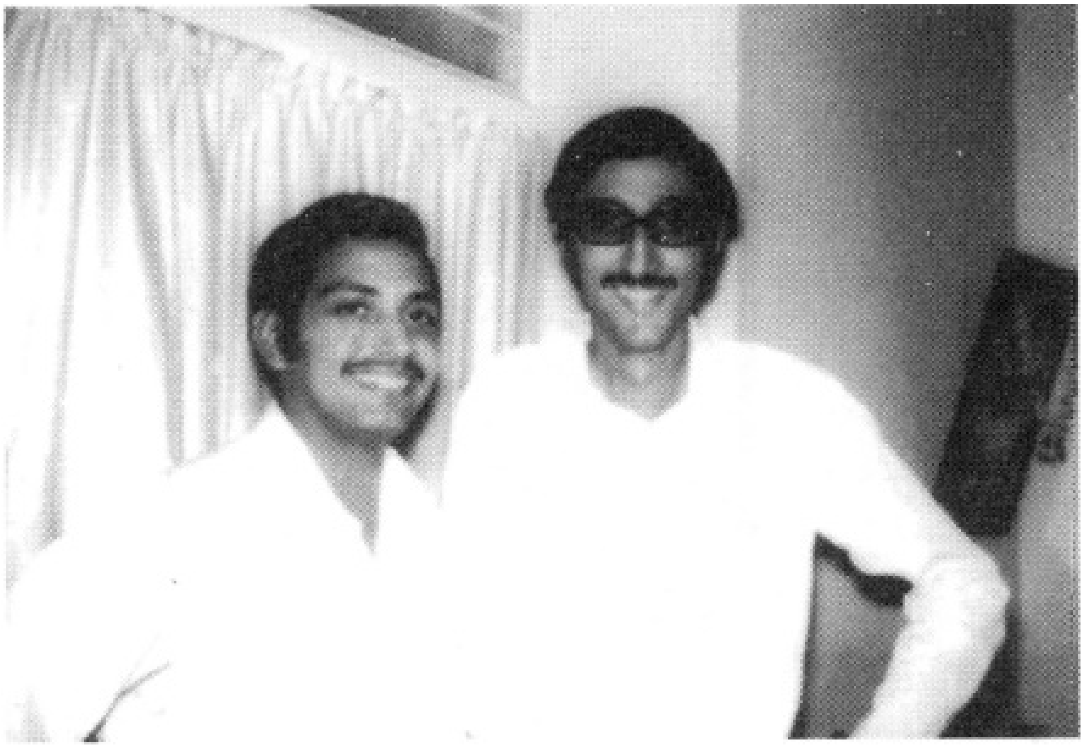

अपने दोस्त के साथ रतू (बाएं)

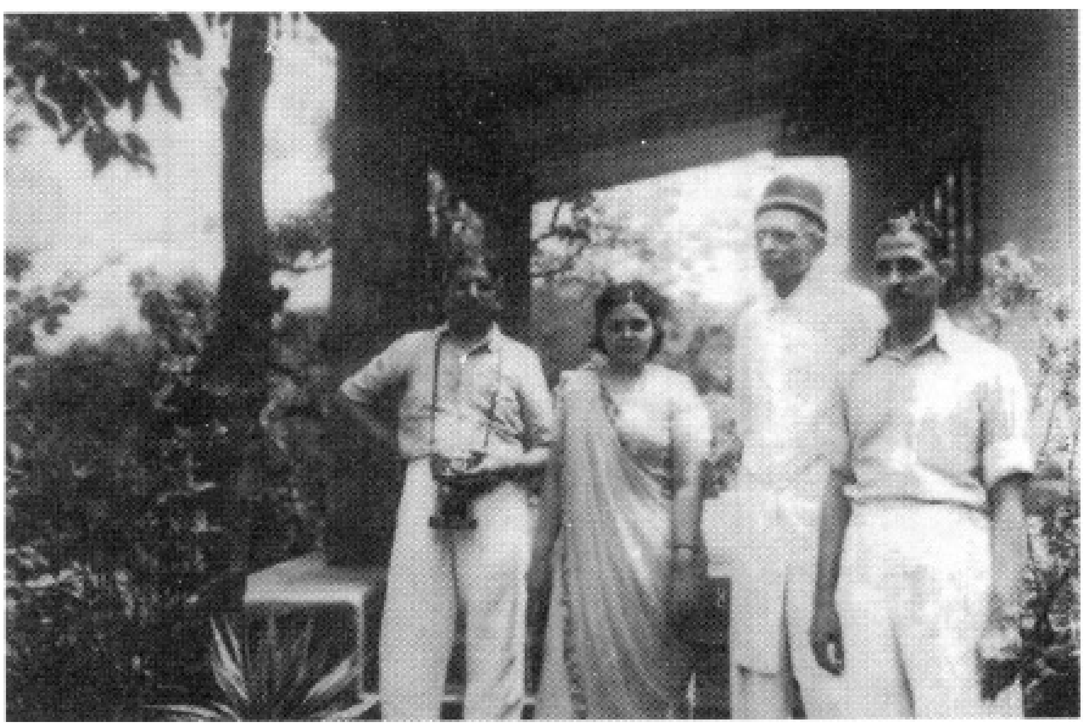

खोरशेद (बाएं से दूसरे) और रूमी (सबसे दाएं) अपने शुरुआती दिनों में

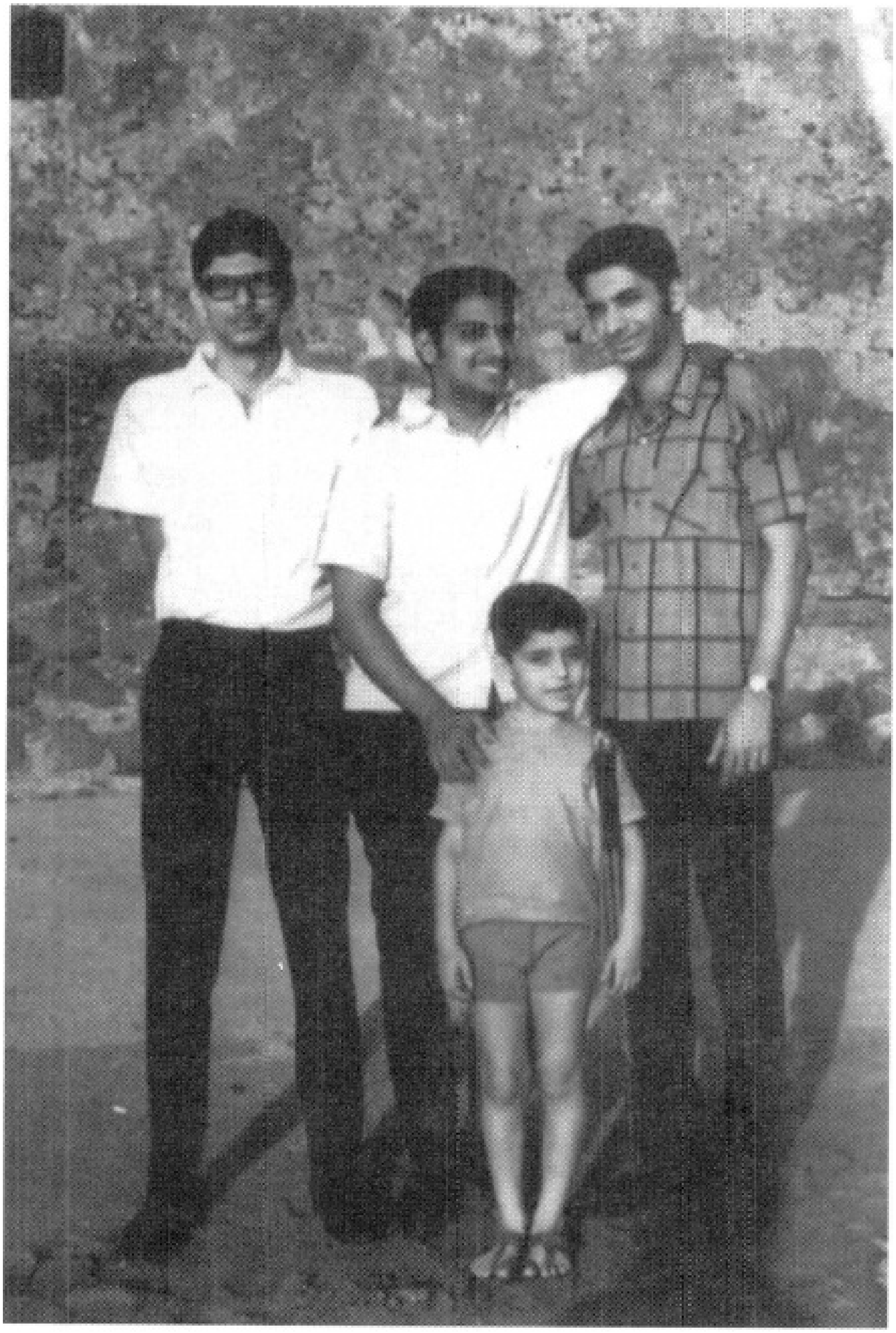

अपने दोस्तों के साथ रतू (बीच में)

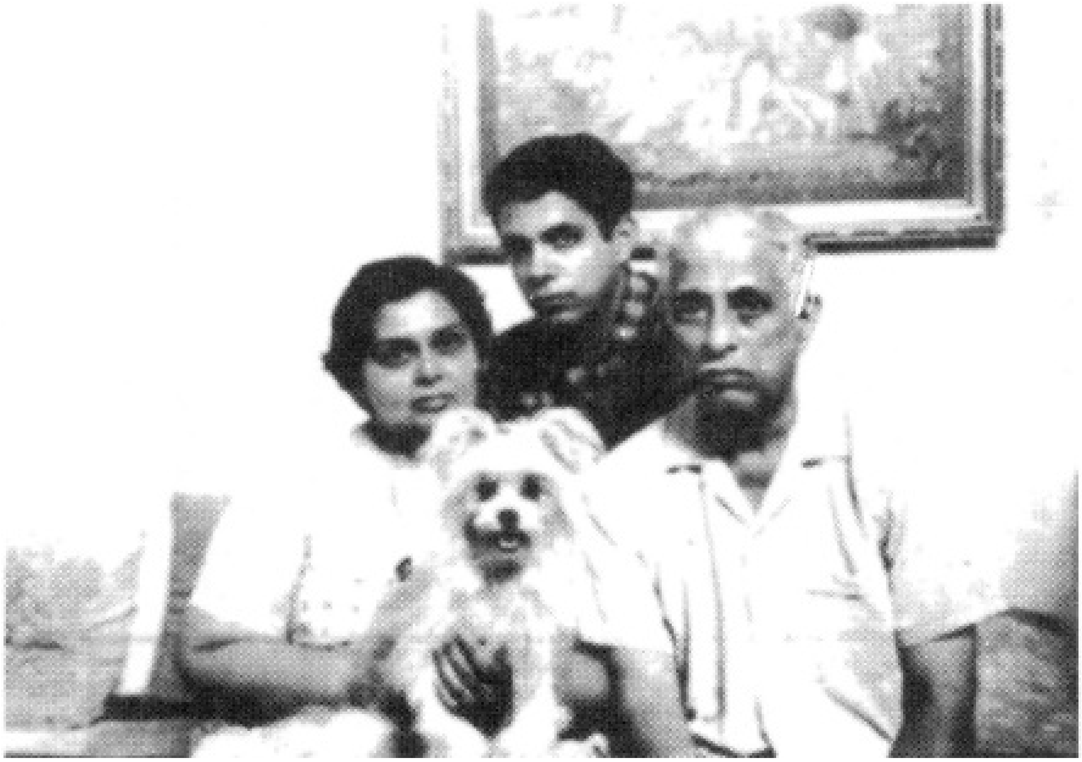

खोरशेद, विस्पी और रूमी अपने पालतू कुत्ते चूचू के साथ

खोरशेद, रतू और रूमी

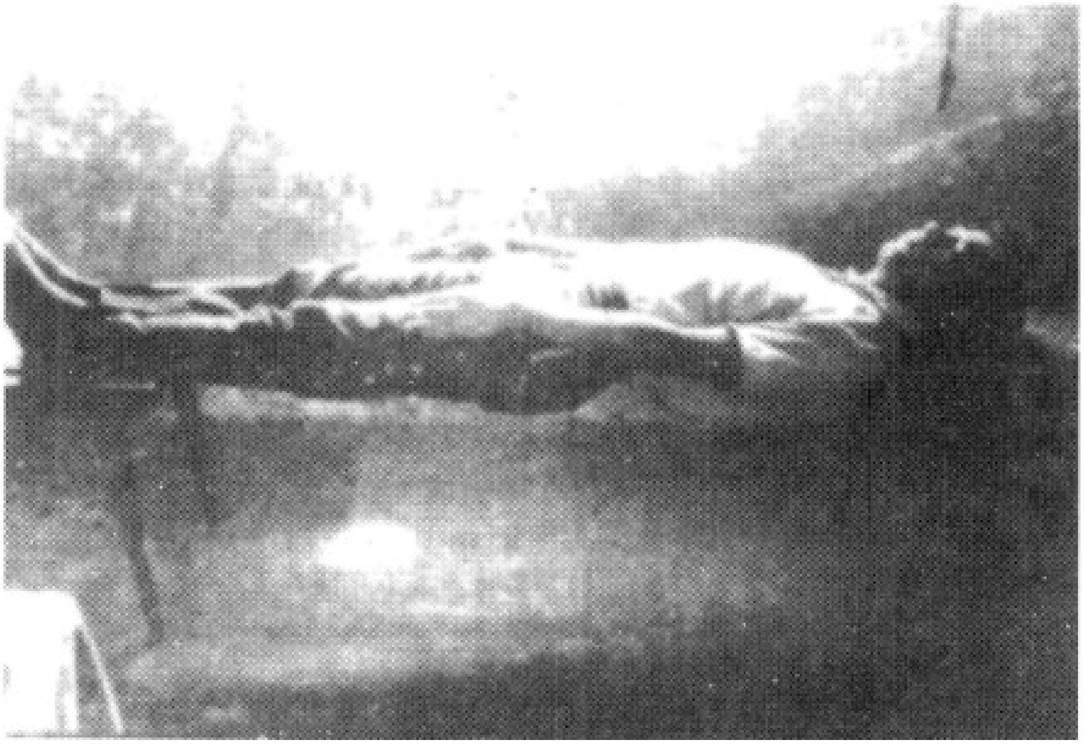

विस्पी अपने संपूर्ण शरीर को दो कुर्सियों के बीच अपने एड़ियों और सिर के पिछले हिस्से के सहारे मजबूती से संभाल सकता था।

अभागी गाड़ी नं. MRF २०७

अपने नवजोत उत्सव के बाद रतू भावनगरी, १ अप्रैल, १९५९

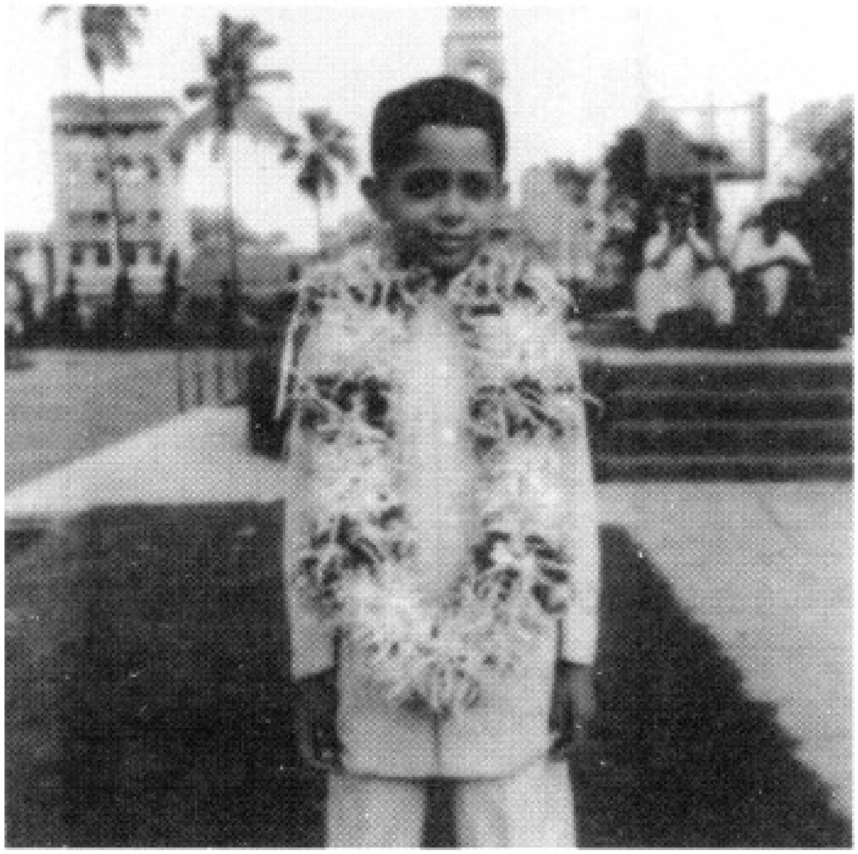

अपने नवजोत उत्सव के बाद विस्पी भावनगरी, १ अप्रैल, १९५९

अपनी शादी के दिन रूमी और खोरशेद ६ अक्टूबर, १९४९

खोरशेद और रूमी भावनगरी जानवरों, विशेषकर कुत्तों से बहुत प्यार करते थे।

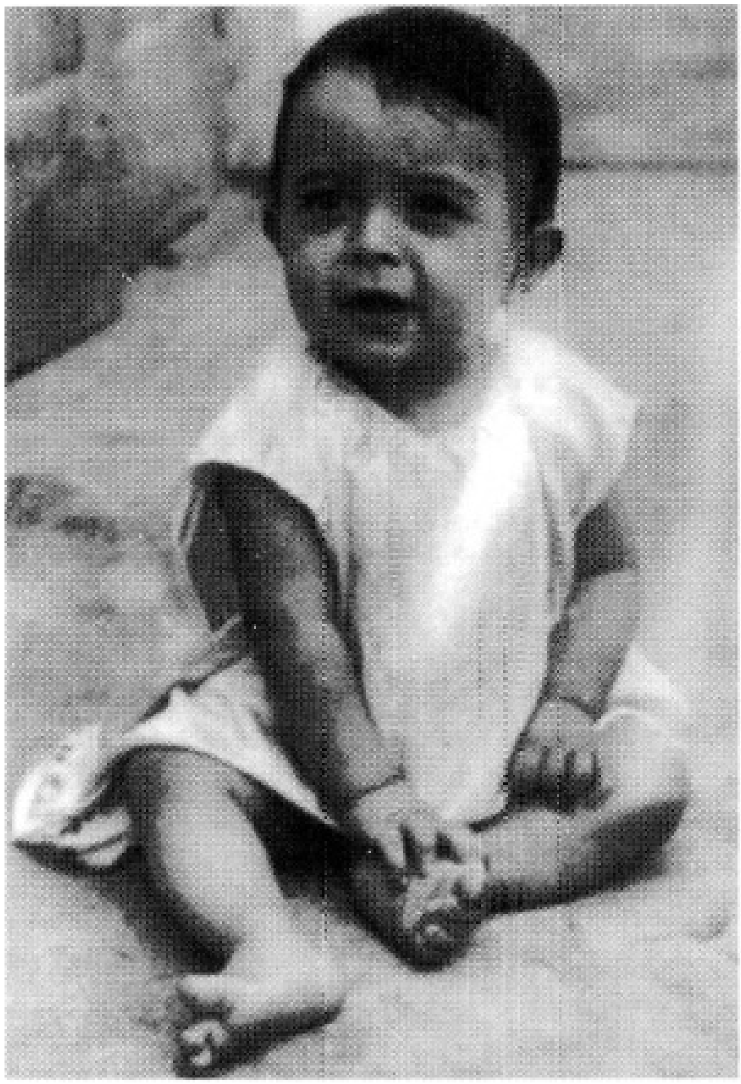

विस्पी भावनगरी जन्म ९ अगस्त, १९५०

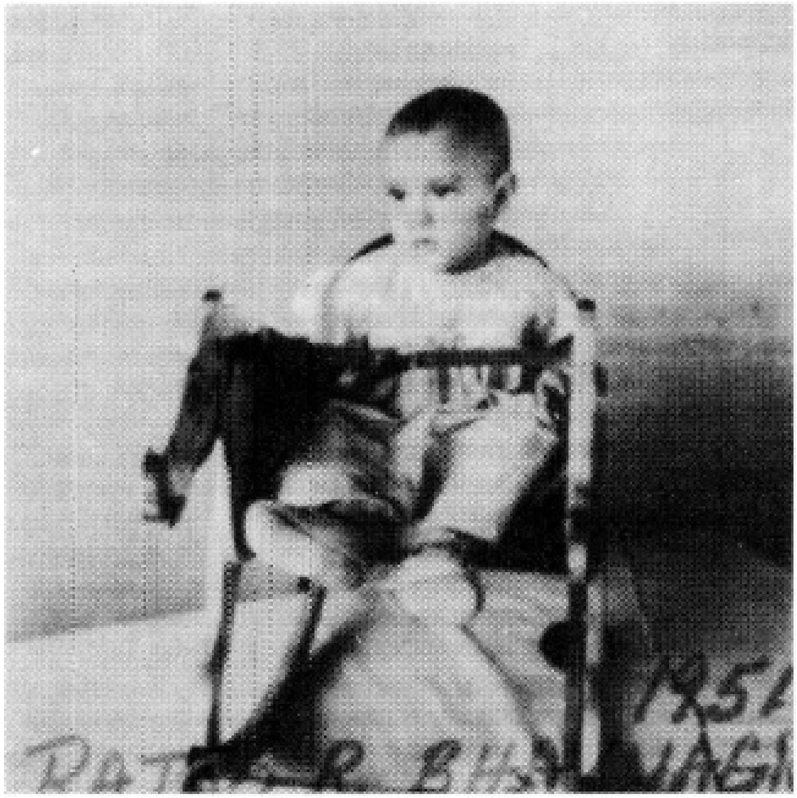

रतू भावनगरी जन्म १३ दिसंबर, १९५१

खोरशेद रूमी भावनगरी के साथ एक साक्षात्कार

लोगों की मदद करना आपने कैसे शुरू किया?

जब हमारे बेटों की मौत हो गई तब मेरे पति और मेरी ज़िन्दगी बिल्कुल दयनीय हो गई और हमें यह समझ नहीं आ रहा था कि हम ज़िन्दगी का सामना किस तरह करें। तब, हमारे बेटों ने हमसे सम्पर्क स्थापित करके और हमें आशा और साहस के संदेश दे कर हमारी मदद की। बाद में जब मेरी स्वचलित लेखन की शक्ति अच्छे से विकसित हो गई, तब उन्होंने हमसे कहा, "हमारा लक्ष्य आप दोनों के जरिए जीवात्मा जगत से पृथ्वी पर लोगों की मदद करना है।"

आपके बेटों के संदेश मिलने पर आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी? क्या आत्मा संबंधी चीजों में आपका विश्वास था?

हम बहुत उत्तेजित हुए, और हां, हमने आत्मा संबंधी चीजों में हमेशा विश्वास किया है। उनकी मृत्यु के पहले, विस्पी और मैं मृत्यु के बाद की ज़िन्दगी और पुनर्जन्म के बारे में बातें किया करते थे। जब मैं सात साल की थी, तब से मुझे उस विषय के ज्ञान की उत्सुकता थी। मेरे साथ एक वाक़या हुआ था, जिसकी याद आज भी मेरे साथ है। रूमी, बच्चे और मैं शहर के बाहर कुछ रिश्तेदारों के साथ एक यात्रा पर जा रहे थे। मैं हमेशा अपने साथ सफर के दौरान कुछ मिठाइयां लेकर चला करती थी, लेकिन इस बार मैं भूल गई थी, तो मैंने रूमी को कार रोककर कुछ मिठाइयां लाने को कहा। मैं कार में अकेले बैठकर उनके वापस आने का इंतज़ार कर रही थी, तभी मैंने एक रोते हुए बैल को देखा। मैंने उसके चेहरे पर आंसू बहते देखा और मैं सोच में पड़ गई कि ऐसा क्यों हो रहा है। क्या उसे कोई कष्ट है? उस बैल ने मेरी तरफ मुंह घुमाकर अपना जबड़ा मेरी खिड़की के पास रखा, जहां मैंने अपना हाथ रखा था। बैल ने मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मुझसे कहने की कोशिश कर रहा हो, 'आपको पता है कि मैं क्यों रो रहा हूं, मुझे बहुत कष्ट हो रहा है।' ठीक उसी समय रूमी, बच्चे और मेरे संबंधी वापस आए और मुझे बैल के साथ बातें करते देख हैरान रह गए (विस्पी ने हमारे सम्पर्क के दौरान बताया था कि बुरी आत्माएं यदि जल्दी उन्नति चाहते हैं, तो उनका धरती पर पुनर्जन्म भार ढोनेवाले जानवर के रूप में होता है)। मुझे इस घटना से इतना पता लग गया कि भार उठाने वाले जानवर बहुत ज्यादा कष्ट झेलते हैं, हालांकि मैंने यह बहुत बाद में जाकर समझा।

आपको लड़कों की मौत के एक महीने बाद कैसा लगा और विस्पी ने आपके दुःख और उदासी को कैसे कम किया? आपको यह कैसे विश्वास हुआ कि आप उनसे सम्पर्क स्थापित कर रहे हैं?

हमसे सम्पर्क के दौरान, विस्पी ने वो सारी बातें बताई जो सिर्फ उसे ही पता थीं। उन्होंने मुझे कुछ अनजाने लोगों के भी नाम दिए और उन्हें मिलकर कुछ संदेश देने को कहा। हमने उन बिल्कुल अनजाने लोगों का पता लगाया और उन्हें वो संदेश भी दिए, जैसा कि हमें कहा गया था– यह हमारे लिए सबूत था कि उन लोगों का वास्तव में अस्तित्व है और विस्पी के संदेश सही थे। जब हम उदास थे, हमारे बेटों ने चुटकुले सुनाकर हमें उत्साहित किया और किस तरह जिंदगी को खुशी से जिया जाए, उसका रास्ता दिखाया। उन्होंने हमें हंसाया और हमारा मार्गदर्शन किया और बताया कि क्या करना है, कैसे करना है।

क्या लोगों ने आपसे अकसर पूछा है कि आप मृतकों को क्यों परेशान करते हैं?

हां, अकसर। मैंने भी विस्पी से कई बार पूछा है कि हम उनसे सम्पर्क स्थापित करके उनकी उन्नति में कोई बाधा तो नहीं डाल रहे, और क्या हम उन्हें किसी तरह का कोई नुकसान पहुंचा रहे हैं या फिर उनकी उन्नति रोक तो नहीं रहे। अगर हम ऐसा कर रहे होते, तो भले ही हमें उनसे प्यार हो, लेकिन हम सम्पर्क स्थापित करना बंद कर देते। विस्पी ने कहा, “इसके विपरीत हम सभी कहीं ज्यादा तेजी से उन्नति कर सकते हैं, क्योंकि हम सम्पर्क के दौरान आपका मार्गदर्शन कुछ क्षणों में ही कर सकते हैं, चूंकि हमें आपकी मदद किसी भी तरह करनी ही है। आप सुनने के लिए कुछ दिन या कुछ महीने तक का समय ले सकते हैं और फिर भी जो सही है, वह नहीं कर पाते, लेकिन हमारे दो तरफा सम्पर्क से यह बहुत अच्छे से हो सकता है।” उसने हमें यकीन दिलाया कि उनकी उन्नति किसी भी तरह बाधित नहीं होगी। मैंने उसपर विश्वास किया और सम्पर्क करना जारी रखा। उसने यह भी कहा कि धरती पर जीवात्मा जगत की तुलना में आध्यात्मिक रूप से उन्नति करना कहीं अधिक आसान है और यह शीघ्रता से किया जा सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि हम अपनी ज़िन्दगी किस तरह जीते हैं।

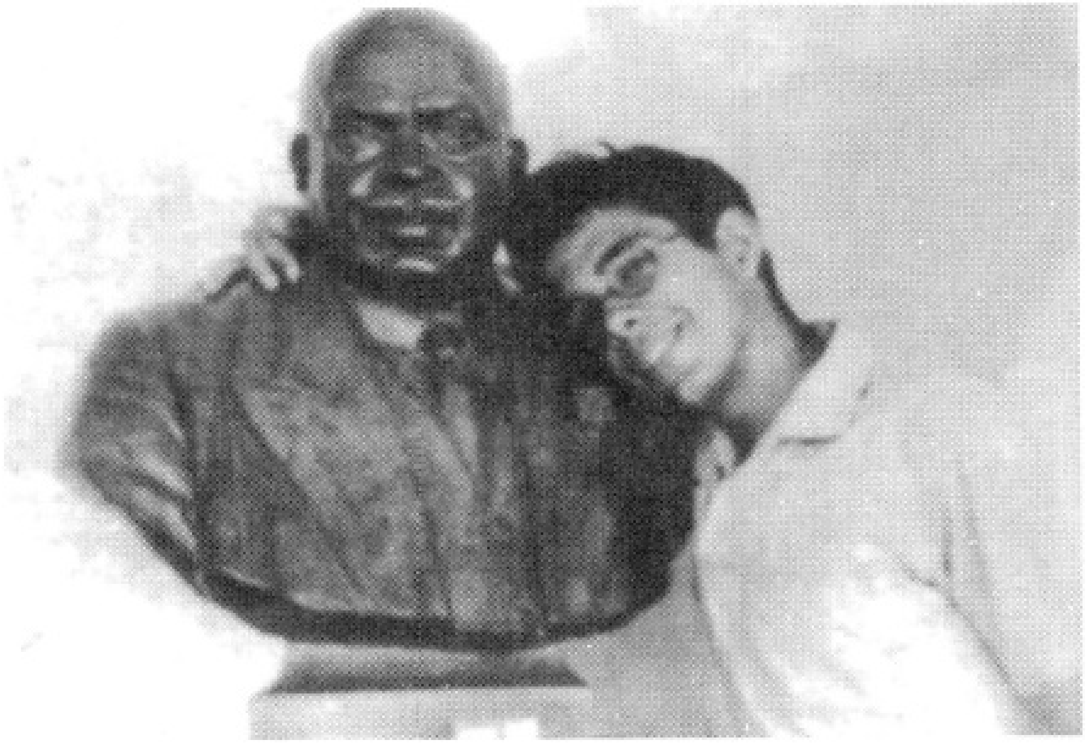

रुस्तम बाग पैवेलियन में विस्पी भावनगरी

अपनी कार में रतू भावनगरी

आपको दूसरों के लिए संदेश लेना कैसा लगता है? क्या यह एक बड़ी जिम्मेदारी नहीं हैं?

बिल्कुल, यह एक बड़ी जिम्मेदारी है। इसी वजह से लोगों की मदद करने के लिए ज्यादा आध्यात्मिक ज्ञान ज़रूरी है। शुरूआत में, मैं किसी को ग़लत संदेश देने से बहुत डरती थी। कुछ लोगों ने मेरे दिए संदेश पर भरोसा नहीं किया और मेरी एक न सुनी। बाद में संदेश न सुनने का उनको अफसोस हुआ और यह एक सबूत था, जो मुझे उस समय चाहिए था जब मेरे लिए संदेश के सही होने का प्रमाण ज़रूरी था। शुरुआत में विस्पी मेरी कलम चलाता था, लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ने लगी, संदेशों को दूरसंवेदन द्वारा लेने लगी। अब मैं उनको अपने मन में सुन सकती हूं।

एक व्यक्ति सही है या ग़लत, इसका अनुमान लगाने वाले हम कौन होते हैं?

'अनुमान लगाना' यह शब्द सही नहीं होगा। मैं किसी के बारे में अनुमान नहीं लगा रही, लेकिन विस्पी और रतू के सहयोग से मैं यह सहजता से बता सकती हूं कि किसी व्यक्ति का स्पंदन अच्छा है या बुरा, या फिर वह निम्न स्तरीय हैं या नहीं। जैसे-जैसे आप आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठते हैं, और अधिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, आपका अवचेतन मन आपका अधिक से अधिक मार्गदर्शन करता है और आप अपने सहजबोध पर ज़्यादा भरोसा करने लगते हैं। आपको नकारात्मक शक्ति वाले लोगों के साथ बेचैनी होती है और आप उनसे दूर जाना चाहते हैं। अच्छे लोगों के साथ इसकी उलटी स्थिति होती है, जो अपनी उन्नति के लिए बहुत कठिन प्रयास करते रहते हैं– आप सहजता से उनकी तरफ आकर्षित होते हैं।

क्यों कुछ लोग जीवात्मा जगत में विश्वास नहीं करते और सोचते हैं कि जो लोग विश्वास करते हैं, वे पागल हैं?

बहुत सारे कारण हैं, जिनसे लोगों को विश्वास नहीं होता। कुछ लोग उन चीजों से भयभीत होते हैं, जिन्हें वे देख या समझ नहीं सकते; कुछ लोगों का जबरन बचपन से ही मन बदल दिया जाता है; कुछ लोग बस यह दर्शाते हैं कि उन्हें ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं है; कुछ लोग इसलिए भी इसमें विश्वास करने से कतराते हैं, क्योंकि उन्हें डर लगता है कि उनके परिवारजन और मित्र उनपर हंसेंगे; कुछ लोग इसलिए नहीं विश्वास करते हैं, क्योंकि वे खुद दोषी होते हैं: कुछ के लिए ग़लत रास्ते पर टिके रहना आसान है, क्योंकि वे कमज़ोर होते हैं। मेरे पास आने वाले ज्यादातर लोग, २० से ३५ की उम्र वाले यूवा होते हैं। वृद्ध लोग बहुत कम होते हैं। वृद्ध लोग अपनी सोच पर अडिग रहते हैं और मृत्यु के बाद की ज़िन्दगी को नहीं मानते, और आमतौर पर जीवात्मा जग़त से डरते हैं। जो लोग दोषी होते हैं, वे नहीं आते, क्योंकि वे अपनी ग़लतियों को स्वीकारने से डरते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि उन्होंने क्या किया है; वे आमतौर पर ग़लत करना ज़ारी रखते हैं और नहीं चाहते कि दूसरों को इस बात का पता चले, इसलिए वे इस ज्ञान से बचना

चाहते हैं।

विस्पी, रतू और पॉप्सी के क्या शौक थे?

हमारे परिवार को हमेशा से संगीत और ड्राइविंग का शौक रहा है और पुरुषों को खेल में रुचि थी। विस्पी और मुझे पढ़ने में रुचि थी। उसे संगीत से लगाव था, खास तौर पर ज़िम रीव्स एवं नैट किंग कोल के संगीत से। विस्पी को कार और पानी के जहाजों के मॉडल बनाना पसंद था और उसने अपने स्पीकर्स भी बनाए थे। संगीत के कुछ रिकॉर्डिंग, जो उसने किए थे, वे अनोखे थे और उनमें से कुछ मेरे पास अभी तक हैं। हम सबको जानवरों से बेहद प्यार था, खासतौर पर कुत्तों से और हमारे पास बहुत सारे कुत्ते थे– कोलीज़, पॉमरेनियन, अल्सेशियन और एक लहासा एप्सो, जिन्हें विस्पी ने बहुत अच्छी शिक्षा दी थी।

क्यों रतू से ज़्यादा विस्पी को सुना जाता है और उसके बारे में ज़्यादा बातें होती हैं?

हम विस्पी के बारे में ज़्यादा सुनते हैं, क्योंकि रतू से अधिक वही पृथ्वी की आत्माओं को संदेश देकर उनकी मदद करता है। दूसरी तरफ रतू का काम प्रायः उन आत्माओं का मार्गदर्शन कर मदद करना है, जो अभी-अभी जीवात्मा जगत में आए हों। वह पृथ्वी की आत्माओं के साथ सम्पर्क स्थापित करके विस्पी की मदद भी करता है।

आपने किसी और के लिए कब पहली बार सम्पर्क स्थापित किया था?

सन् १९८१ में, मैंने अपने कुछ संबंधियों के लिए सम्पर्क स्थापित किया था।

मुख्य रूप से किसके लिए लोग आपके पास आते हैं?

करीब ५० प्रतिशत लोग मेरे पास आध्यात्मिक मार्गदर्शन और संदेश द्वारा आश्वस्त होने के लिए आते हैं। बाकी के ५० प्रतिशत परिवार की अशांति, माता-पिता और बच्चों की गंभीर समस्याओं, शादीशुदा ज़िन्दगी की समस्याओं से जूझने वाले लोग होते हैं। इनमें सबसे बुरी समस्या होती है, जब नकारात्मकता को दूसरों पर लादने वाले लोग होते हैं। जीवन के हर क्षेत्र से लोग मार्गदर्शन के लिए मेरे पास आते हैं और मैं इन सबकी मदद करने की कोशिश करती हूं– अगर वे स्वीकार करने, सीखने और सुधरने के इच्छुक हैं तो।

अगर पाठकों को आप कोई संदेश देना चाहें, तो वह संदेश क्या होगा?

इस पृथ्वी पर बहुत सी भली आत्माएं हैं, जो अपने प्रियजनों को खोने के बाद दु:ख नहीं झेल पाते और ग़लत रास्ते को चुन लेते हैं। हम उन लोगों को आश्वासन देना चाहते हैं कि वे अकेले नहीं हैं। उनके प्रियजन अब भी उनके साथ हैं और वे जीवात्मा जगत से उनकी देखभाल कर रहे हैं।

हमेशा याद रहे, जो विस्पी ने सालों पहले मुझसे कहा था, **'सच्चा और वास्तविक प्यार कभी नहीं मरता। धरती पर आपकी मृत्यु के बाद भी नहीं। प्रेम मृत्यु से बढ़कर है। प्रेम शाश्वत है। मृत्यु, बस एक रूपांतरण है– एक दुनिया से दूसरी दुनिया में, एक शरीर से दूसरे में। मृत्यु कोई बड़ी चीज़ नहीं होती, लेकिन प्रेम अद्‌भुत होता है।'**

शब्दावली

आकाशिक रिकॉर्ड

आकाशिक रिकॉर्ड को स्मृति कक्ष अथवा दैनिकी कक्ष भी कहा जाता है। आपके हर अच्छे बुरे कर्मों को यहां आपके आत्मिक नाम के नीचे दर्ज किया जाता है। आकाशिक रिकॉर्ड में आपके द्वारा पृथ्वी पर बिताए गए सभी जन्मों की स्मृतियां दर्ज रहती हैं। जब धरती पर आत्माएं गहरी स्वप्नहीन नींद में होती हैं, उनका अवचेतन मन आकाशिक रिकॉर्ड में सूचनाएं दर्ज करता है।

फ़रिश्ते

फ़रिश्ते पांचवें लोक के सातवें स्तर और उससे ऊपर की भली आत्माएं होती हैं और उनमें चमत्कार करने की क्षमता होती है। आपात स्थितियों में श्री सर्वोच्च भली आत्मा की आज्ञा लेकर वे मनुष्यों की मदद करने के लिए पृथ्वी पर भी आ सकते हैं। निम्नतर स्तर की आत्माएं फ़रिश्ते नहीं बन सकतीं, क्योंकि उन्हें पृथ्वी की आत्माओं का मार्गदर्शन करने के लिए प्रशिक्षण तथा और अधिक जानकारी प्राप्त करने की जरूरत होती है।

अवकाशी तल

अवकाशी तल पृथ्वी से ऊपर लेकिन जीवात्मा तल से नीचे का आयाम (पहलू) होता है। इस अर्थ में यह धरती और जीवात्मा जगत के बीच का स्थान है। अवकाशी तल में अवकाशी आत्माएं निवास करती हैं। ये अवकाशी आत्माएं पृथ्वी को तो अवकाशी तल से देख सकती हैं, लेकिन जीवात्मा तल अथवा जीवात्मा जगत को नहीं देख सकतीं।

अवकाशी आत्माएं

वे भटकी हुई आत्माएं होती हैं जिन्होंने अवचेतन मन की सलाह को नकार दिया होता है और जीवात्मा बनने से इनकार कर दिया होता है। अवकाशी आत्मा ऐसी आत्मा होती है जिसने

सांसारिक, भौतिक शरीर को त्याग दिया होता है लेकिन जीवात्मा का स्वरूप हासिल नहीं किया होता है। मृत्यु के बाद भी वे अपने मनुष्य-रूप जैसी ही दिखती हैं।

प्रभामंडल

प्रभामंडल प्रत्येक सजीव शरीर के चारों ओर बनने वाला ऊर्जा क्षेत्र है। इसका रंग और इसकी प्रबलता, जीव की तत्कालिक मानसिकता, उसकी भावनात्मक और शारीरिक अवस्था को दर्शाते हैं। कुछ मनुष्यों में प्रभामंडल देख सकने की क्षमता होती है।

स्वचलित लेखन

स्वचलित लेखन वह प्रक्रिया है जिसके जरिए जीवात्माएं पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के साथ संपर्क स्थापित करती हैं। जिस दौरान आप कलम को कागज पर हल्के हाथ से पकड़े होते हैं आपके संपर्क वाली जीवात्मा उसे चलाती है। धीरे-धीरे शब्द, फिर वाक्य बनते चले जाते हैं।

कभी भी स्वयं स्वचलित लेखन की कोशिश न करें। बिना किसी सुरक्षा कड़ी के, स्वयं स्वचलित लेखन आरंभ करना बहुत ज्यादा खतरनाक होता है।

काला जादू

काला जादू एक रहस्यमय विद्या है, जो पूरी तरह ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध होता है जहां मनुष्य बुरी अवकाशी आत्माओं और अपने बुरे विचारों का अपने स्वार्थी हितों के लिए प्रयोग करता है और दूसरों को नुकसान पहुंचाता है।

प्रवाह

वह माध्यम जिससे जीवात्माएं पृथ्वी के लोगों के साथ संपर्क स्थापित कर सकती हैं।

अंतरात्मा

इसे अवचेतन मन भी कहते हैं। इसके बारे में जानने के लिए अवचेतन मन पढ़िए।

अतिरिक्त संवेदनात्मक बोध

अतिरिक्त संवेदनात्मक बोध वह क्षमता है जिसकी मदद से मनुष्य पांच संवेदी बोधों स्पर्श, स्वाद,

श्रवण, दृष्टि और गंध से परे चीजों को जान सकता है।

भूत

पढ़िए अवकाशी आत्मा।

समूह आत्मा

ईश्वर एकसाथ कुछ आत्माओं की रचना करते हैं। ये आत्माएं पृथ्वी पर एकसाथ एक समूह में जन्म-जन्मांतर तक अवतरित होती रहती हैं, ताकि वे कर्मों का हिसाब चुकाने में एक दूसरे की मदद कर सकें, अपने जीवनकार्य पूरे कर सकें और आध्यात्मिक रूप से ऊपर उठ सकें। समूह आत्माओं को आत्मिक मित्र भी कहते हैं।

दैनिकी कक्ष

आकाशिक रिकॉर्ड पढ़िए।

शिक्षा कक्ष

शिक्षा कक्ष जीवात्मा जगत में वह स्थान है जहां जीवात्माएं ज्ञान प्राप्त करने आती हैं। यह आध्यात्मिक सत्य से भरपूर पुस्तकालय की तरह होता है। इसमें ईश्वर के नियमों, ब्रह्मांड की प्रकृति और ईश्वर की रचना के प्रत्येक पहलू के बारे में जानकारी रहती है। आत्मा की समझ के अनुसार उसे जानकारी दी जाती है।

स्मृति कक्ष

आकाशिक रिकॉर्ड पढ़िए।

विश्राम कक्ष

यदि पृथ्वी पर किसी आदमी की अचानक आकाल मृत्यु हो जाए तो उस आत्मा को विश्राम कक्ष में ले जाया जाता है। क्योंकि ये आत्माएं सदमे में रहती हैं उन्हें शांत करने के लिए स्वास्थ्य लाभकारी किरणें दी जाती हैं।

उच्च भली आत्मा

उच्च भली आत्मा छठे लोक के सातवें स्तर या उससे ऊपर की जीवात्माएं होती हैं।

किसी लोक की उच्च भली आत्मा

प्रत्येक लोक का शासक, राजा अथवा प्रमुख आत्मा को उस लोक की उच्च भली आत्मा कहते हैं। यह अगले ब्रह्मांड की एक पूर्ण आत्मा होती है।

श्री सर्वोच्च भली आत्मा

सातवें लोक सहित् अन्य सभी लोकों के शासक, राजा और प्रमुख आत्मा को श्री सर्वोच्च भली आत्मा कहते हैं। वह अगले ब्रह्मांड की एक पूर्ण आत्मा होती है।

उच्च स्व

अवचेतन मन पढ़िए।

सहजबोध

चीजों के बारे में अनायास महसूस करने की अवचेतन मन की क्षमता को सहजबोध कहते हैं। यह क्षमता आपको अपने और अपने आसपास के मनुष्यों की रक्षा करने के लिए दी जाती है।

कर्म

कर्म किसी आत्मा के विचारों, शब्दों अथवा कार्यों का परिणाम होता है। यह इस सिद्धांत पर काम करता है कि आप जैसा बोएंगे वैसा काटेंगे। कर्मफल आपके लिए कर्ज भी हो सकता है, या फिर यह आपको प्राप्त होने वाला वरदान हो सकता है।

कड़ी

स्वचलित लेखन के दौरान उच्चस्तरीय जीवात्माओं द्वारा प्रार्थनाओं और सकारात्मक ऊर्जा के जरिए पृथ्वी की आत्माओं और भली जीवात्माओं के बीच संपर्क करने में आपको सुरक्षा प्रदान की जाती है। जीवात्मा जगत से अनुमति मिलने के बाद यह कड़ी केवल अनुभवी और अधिकृत स्वचलित लेखकों द्वारा ही जोड़ी जाती है।

गुरु

गुरु आध्यात्मिक शिक्षक होते हैं। जीवात्मा जगत के उच्चतर लोकों से पृथ्वी पर आई हुई ज्ञानी आत्माएं, जिनका जीवनकार्य पृथ्वी पर आध्यात्मिक ज्ञान फैलाना होता है, वे गुरु कहलाते हैं।

माध्यम

माध्यम पृथ्वी पर वह व्यक्ति होता है जो जीवात्मा जगत के साथ संपर्क करने में सक्षम होता है।

उद्देश्य

व्यक्ति के विचारों, शब्दों अथवा कार्यों के पीछे काम करने वाली मंशा, कारण अथवा प्रेरक बल।

पिछले जीवन की स्मृति

आत्मा के पिछले जन्म में घटित किसी घटना या घटना के किसी हिस्से की याद।

पैगम्बर

जब पृथ्वी पर नकारात्मकता अपने चरम पर होती है, तब ईश्वर एक बहुत उच्च आत्मा को उच्चतर ब्रह्मांड से पृथ्वी पर भेजते हैं जो मनुष्य को राह दिखाता है। यह पैगम्बर पृथ्वी की आत्माओं को ज्ञान देते हैं ताकि वे आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर सकें। पृथ्वी पर पैगम्बरों का अवतार कभी-कभार ही होता है, केवल तब, जब पृथ्वी पर आध्यात्मिक संकट की घड़ी उत्पन्न हो जाए।

लोक

जीवात्मा जगत में अस्तित्व के सात लोक अथवा तल होते हैं जिसमें एक निम्नतम और सातवां उच्चतम होता है।

आत्मा-आह्वान बैठक

आत्मा-आह्वान बैठक लोगों के एक समूह की बैठक होती है जो अपने मृत परिजनों अथवा अन्य अतीन्द्रीय प्राणियों के साथ संपर्क करना चाहते हैं। यह बैठक एक ऐसे माध्यम द्वारा की जाती है, जो उस समूह और जीवात्माओं का संपर्क करवाने में सक्षम हो।

अक्ष का स्थनांतरण

ईश्वर के नियम इस तरह बने होते हैं कि जब आध्यात्मिक रूप से मनुष्य एक सीमा से अधिक ग़लत जाते हैं, प्रकृति उन्हें चेतावनी देती है कि वे ग़लत राह पर चल रहे हैं। यदि मनुष्य फिर भी नहीं बदलते, तो प्रकृति सफाई की प्रक्रिया के जरिए असंतुलन को सुधारती है। क्योंकि सुधारने की प्रक्रिया प्रकृति द्वारा चलाई जाती है, इसलिए इतनी भयानक प्राकृतिक आपदाएं धरती पर आती हैं कि पृथ्वी का अक्ष झुक जाता है और इस कारण "ध्रुव का स्थानांतरण" होता है।

रूपहली डोरी

रूपहली डोरी एक प्रकाश-किरण है जो आपकी जीवात्मा और आपके भौतिक शरीर को जोड़ती है।

आत्मा

आत्मा आपका शाश्वत जीवात्मिक शरीर है। जिस तरह पृथ्वी पर आपके पास भौतिक मन से संचालित एक भौतिक शरीर होता है उसी तरह आत्मा आपका अमर जीवात्मिक शरीर है, जो आपके अवचेतन मन द्वारा संचालित होता है।

आत्मिक लक्षण

आत्मिक लक्षण वे सकारात्मक अथवा नकारात्मक गुण होते हैं, जो अनेक जन्मों के दौरान किसी आत्मा द्वारा संचित किए जाते हैं।

आत्मिक मित्र

समूह आत्मा पढ़ें।

आत्मिक नाम

प्रत्येक आत्मा को, उसकी रचना होने पर, एक आत्मिक नाम दिया जाता है। जिस तरह आत्मा दो भागों में विभाजित होती है उसी तरह नाम भी दो भागों में बंटा होता है, जो आपके अस्तित्व के रहने तक रहता है। आपके कर्म आपके आत्मिक नाम के नीचे आकाशिक रिकॉर्ड में दर्ज किए जाते हैं।

जीवात्मा

जीवात्मा के अंतर्गत आपकी आत्मा और आपका अवचेतन मन शामिल होते हैं।

जीवात्मिक मार्गदर्शक

पृथ्वी पर प्रत्येक आत्मा के लिए जीवात्मा जगत में एक अभिभावक होता है, जो जन्म से मृत्यु तक पृथ्वी की आत्मा को राह दिखाता है। यह अभिभावक आपका जीवात्मिक मार्गदर्शक कहलाता है और आपको आध्यात्मिक मार्गदर्शन देना उसका कर्तव्य होता है।

जीवात्मा जगत

यह हमारा वास्तविक घर है। यह सात विभिन्न लोकों में विभाजित होता है। प्रत्येक लोक में १० स्तर होते हैं।

अवचेतन मन

अवचेतन मन को अंतरात्मा, उच्च मन, उच्च स्व अथवा अंतर्ध्वनि भी कहते हैं। यह आपका वास्तविक आध्यात्मिक मन है जो आपकी आत्मा को राह दिखाता है।

दूरसंवेदन

प्रक्षेपित विचारों के रूप में आपके अवचेतन मन द्वारा जीवात्माओं से संदेश प्राप्त करने की क्षमता दूरसंवेदन है।

जुड़वां आत्माएं

जब आत्मा चौथे लोक के पांचवें स्तर से अपनी यात्रा शुरू करती है तो यह दो भागों में विभाजित हो जाती है। एक नर आत्मा और एक नारी आत्मा। ये दो आत्माएं अलग-अलग रहती हैं और सातवें लोक के नौवें स्तर पर पहुंचने तक अपनी-अपनी सांसारिक जीवनयात्रा जारी रखती हैं। वहां पहुंचकर वे संयुक्त हो जाती हैं और एक पूर्ण आत्मा के रूप में अगले ब्रह्मांड की ओर प्रस्थान करती हैं।

स्पंदन

प्रत्येक सजीव या निर्जीव वस्तु में स्पंदन होता है। स्पंदन ऊर्जा की आवृत्ति होती है जो विभिन्न गतियों के साथ प्रवाहित होती है। स्पंदन अच्छे और बुरे दोनों होते हैं। अच्छा स्पंदन आपको शांत और सकारात्मक बनाए रखता है, जबकि बुरे स्पंदन से आप अशांत और नकारामक महसूस करते हैं (यह अनुभव आप तभी कर सकते हैं जब आप एक भली आत्मा हों और आपका

अवचेतन मन जागृत हो)।

प्रवेशक

यदि पृथ्वी पर परिस्थितियां इतनी मुश्किल हो जाएं कि आप उन्हें संभाल न सकें, और आपका रास्ता सही हो, तो एक भली आत्मा जीवात्मा जगत से आकर आपके शरीर में प्रवेश कर जाती है और मुश्किल घड़ी के बीतने तक वहां बनी रहती है। इस तरह की भली आत्मा को प्रवेशक कहते हैं। ऐसा कभी-कभी ही होता है और वह भी केवल आपात स्थितियों में।

अनुशंसित अध्ययन

अ सर्च फॉर द ट्रुथः रुथ मोंटगोमरी
हियर एंड हियर आफ्टरः रुथ मोंटगोमरी
अ वर्ल्ड बियोंडः रुथ मोंटगोमरी
द वर्ल्ड बिफोरः रुथ मोंटगोमरी
स्ट्रैंजर्स अमंग्स्ट असः रुथ मोंटगोमरी
बॉर्न टु हीलः रुथ मोंटगोमरी
थ्रेशोल्ड टु टुमॉरोः रुथ मोंटगोमरी
कम्पैनियन अलॉन्ग द वेः रुथ मोंटगोमरी
हेराल्ड ऑफ द न्यू एज़ः रुथ मोंटगोमरी
ऐलियंस अमन्ग असः रुथ मोंटगोमरी
द वर्ल्ड टु कमः रुथ मोंटगोमरी
डू द डेड सफर? : लॉरेंस बर्ट
टीचिंग्स ऑफ सिल्वर बर्चः सिल्वर बर्च
गाइडेंस फ्रॉम सिल्वर बर्च : सिल्वर बर्च
फिलॉसफी ऑफ सिल्वर बर्च : सिल्वर बर्च
मिस्ट्री ऑफ लाइफ, डेथ एंड द बियोंडः एफ. रुस्तमजी
लाइफ आफ्टर लाइफ : रेमंड मूडी जूनियर, एमडी
डेथ एंड इट्स मिस्ट्री बिफोर डेथ : कैमिले फ्लैमेरियन
यू विल सर्वाइव आफ्टर डेथ : शेरवुड एडी
लाइफ इन द वर्ल्ड अनसीन : एंथनी बॉर्गिया
अ लाइफ आफ्टर डेथ : डॉ. एस. राल्फ हर्लो
ट्वेंटी केसेज़ सजेस्टिव ऑफ रीइनकार्नेशन : इयान स्टीवेंसन, एमडी
फेथ इज़ द आंसर : नॉर्मन विंसेंट पील
मेनी लाइव्स, मेनी मास्टर्स : ब्रायन वेस, एमडी
मैसेजेज फ्रॉम द मास्टर्स : ब्रायन वेस, एमडी
एडगर केयस : द स्लीपिंग प्रॉफेट : जेस स्टर्न

मेनी मेंशन्स : द एडगर केयस स्टोरी ऑफ रीइनकार्नेशन : गिना सर्मिनारा
ऑन एटलांटिस : एडगर केयस
अर्थ चेंजेज अपडेट : हफ लिन केयस
वी द आर्कट्यूरियंस : डॉ. नोरमा मिलानोविच (विथ बेट्टी राइस एन्ड सिंथिया प्लोस्की)

उपसंहार

खोरशेद आंटी ने हमेशा कहा है, "आध्यात्मिकता एक 'हल्का-फुल्का' विषय है। इसकी ज्यादा गहराई में न जाएं।" आध्यात्मिकता का मतलब पहाड़ों में भाग जाना नहीं। बल्कि इसका मतलब है-लोगों के बीच में रहकर जीना, अपनी मुश्किलों का सामना करना और आपके कर्तव्यों तथा जिम्मेदारियों को निभाना है। इसका मतलब इस पृथ्वी पर अपने आध्यात्मिक जीवनकार्य को पूरा करना है। जब आप इसके सही संतुलन को समझ जाएंगे तो आपका जीवन आनंदमय हो जाएगा।

कोई व्यक्ति आध्यात्मिक सिर्फ इससे नहीं बन जाता कि उसने अध्यात्म से जुड़ी हज़ारों किताबें पढ़ ली हैं या किसी आध्यात्मिक समूह से जुड़ा है... और फिर इसके मुख्य लक्ष्य यानि निःस्वार्थ सेवा और सही कर्म में ही असफल रह जाए। आपको अपने ज्ञान को परखना होगा और क्या सही है तथा क्या ग़लत, इसका निर्णय आपको अपने सहजबोध पर छोड़ना होगा। किताबी ज्ञान को लेकर कट्टर होना और अपने अहं को यह सोचने की अनुमति देना कि बिना इसके वास्तविक अमल के भी आपको सब पता है, कोई मतलब नहीं होगा। इस छलावे में कई व्यक्ति फंसते हैं, और अपने प्रवचनों को व्यवहार में उतारे बिना खुद को गुरु कह बैठते हैं। अहं में अंधे होने के कारण, सालों-साल तक आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने का कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि आप उसका वास्तव में उपयोग नहीं करते...और इस आध्यात्मिक ज्ञान के अहंकार के कारण कोई आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो पाती। यह आध्यात्मिक अहंकार के कारण होता है, जो की मनुष्य के पतन का सबसे बड़ा कारण है। आपके अपने आध्यात्मिक कर्मों से ही आप आध्यात्मिक बनते हैं। केवल सच्चे निःस्वार्थ कर्म से ही सच्चा बदलाव आता है।

खोरशेद आंटी हमेशा अच्छाई भरे छोटे-छोटे कामों को पसंद करती थीं। वे हमेशा किसी समस्या के प्रति हमें पूरी श्रद्धा के साथ कदम दर कदम चलने के लिए प्रोत्साहित करती थीं। आध्यात्मिकता एक धीमा पर निश्चित रूप से होने वाला उत्थान है। हम सभी में दोष होते हैं, और हम सभी गलतियां करते हैं, पर हमें अपने-आप और दूसरों को क्षमा करना चाहिए। हमें उन्नति के लिए निरंतर रूप से अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए और अपने लक्ष्यों तक पहुंचना चाहिए। ईश्वर और उनके फ़रिश्तों की सहायता से हम ऐसा कर सकते हैं।

ठीक जैसे कि मर्यादाओं को तोड़कर पतंगे के डिम्भ बाहर निकलते हैं...फिर तितली बनकर खुली हवा में उड़ान भरते हैं, उसी प्रकार, चाहे आप माने या न माने, आपकी आत्मा भी शारीरिक सीमाओं से मुक्त होकर विकास के उच्च लोकों में जाती रहेगी, जबतक कि वह अपने सृजनकर्ता तक न पहुंच जाए।

ईश्वर आपका भला करें!

श्यामक

लेखिका का परिचय

खोरशेद भावनगरी (शादी से पहले स्क्रूवाला) का जन्म भारत के मुंबई शहर में, सन् १९२५ में हुआ था। बचपन से ही उनका सपना शिक्षक, मनोवैज्ञानिक या जासूस बनने का था। उन्हें बागवानी, खाना पकाना और संगीत, खासकर हवाइयन गिटार से बेहद प्यार था और उन्हें क्रिकेट में बहुत दिलचस्पी थी। सन् १९४९ में उनकी शादी रूमी भावनगरी से हुई और उनके दो बेटे हुए, विस्पी और रतू। उन्हें अनुभव हुआ कि उनके परिवार वालों की ही तरह वाहनों तथा ड्राइविंग में उनकी भी रुचि है। सन् १९८० में एक कार दुर्घटना में बेटों की मौत के बाद, उन्होंने स्वचलित लेखन द्वारा उनसे सम्पर्क करना शुरू किया। उनके बेटों ने उन्हें बताया कि पृथ्वी पर आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करना उनका जीवनकार्य था। सन् १९९८ में ७२ साल की उम्र में, वह वैनकूवर, कनाडा चली गईं, जहां उन्होंने बिना थके हुए लगातार अपने लक्ष्य की ओर काम किया। वहां अगस्त २००७ में उनकी मृत्यु हो गई। यह श्रीमती भावनगरी की इच्छा थी, कि यह किताब ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे।

अस्वीकार

इस किताब में जो भी संदेश हैं, वे स्वचलित लेखन की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त किये गये हैं और यह कॉपीराइट धारक के मत या विचार नहीं हैं, और न ही उनके, जो वीआरआरपी के आध्यात्मिक शिक्षण से जुड़े हैं। वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण (वीआरपी स्प्रिचुअल लर्निंग) अस्वीकरण की घोषणा करता है और इस बारे में किसी भी तरह की जिम्मेदारी और/ या दायित्व नहीं लेता एवं इस किताब के संदेश की विषय-वस्तु की यथार्थता, संपूर्णता, सामयिकता अथवा किसी भी उद्देश्य के लिए, इसकी संगतता से जुड़े किसी भी प्रकार का प्रतिनिधित्व या आश्वासन या भरोसा नहीं देता है।

इस किताब को पढकर, पाठक ऊपर लिखे अस्वीकरण को मानते हैं और यह पुष्टि करते हैं कि उनके द्वारा किए जानेवाले किसी भी तरह के संभावित क्रियाकलाप की जिम्मेदारी उनकी होगी और इस पुस्तक की सामग्रियों तथा/या किसी ऐसे क्रियाकलाप के लिए, जो पाठक या व्यक्ति द्वारा अथवा उसके अंतर्गत किसी व्यक्ति द्वारा दावा किया जाता है, वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण को जिम्मेदार नहीं ठहराएगा/ठहराएगी।

वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण, उन व्यक्तियों का एक समूह है जो “जीवात्मा जगत के नियम” में दिए ज्ञान के प्रसार के लिए समर्पित हैं। वे उन लोगों को सहायता प्रदान करने में मदद करते हैं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है और उन्हें आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हैं। कुछ ऐसे मामले सामने आए हैं, जिसमें कुछ जालसाज लोगों ने स्वयं को वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण का प्रतिनिधि बताया है, जिसके लिए वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण जिम्मेदार नहीं। कृपया वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण से संपर्क कर उन लोगों की प्रामाणिकता के बारे में पुष्टि कर लें, जो स्वयं को वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण का हिस्सा बताते हैं। इसके बाद ही उनके साथ आगे की बातचीत करें।

स्वचलित लेखन एक ऐसी प्रक्रिया या लिखित सामग्री होती है, जो कॉपीराइट धारक के चेतन मन द्वारा नहीं संचालित होता, बल्कि जीवात्मा जगत से संचालित किया जाता है। इसके लिए अभ्यास तथा नियंत्रण की आवश्यकता के साथ मार्गदर्शन तथा निगरानी की ज़रूरत होती है। केवल अधिकृत, अनुभवी तथा वर्तमान वीआरआरपी आध्यात्मिक शिक्षण से जुड़े सदस्य ही

आपके स्वचलित लेखन की कड़ी जोड़ सकते हैं। आप स्वयं स्वचलित लेखन करने का प्रयास न करें।

वेबसाइट: www.vrrpspirituallearning.com
ई-मेल: vrrp@vrrpspirituallearning.com

* शिर्डी के साईं बाबा भारतीय संत थे, जिनकी मृत्यु सन् १९१८ में हुई थी। फ़ारसी भाषा में साईं (सा'ईं) एक पवित्र आत्मा या संत को कहते हैं और भारत की भाषाओं में बाबा का मतलब 'पिता' होता है, इसलिए हम उन्हें "साधु बाबा" या "संत बाबा" भी कहते हैं।

१. जीवात्मा जगत में अस्तित्व के सात लोक या तल होते हैं, जिनमें एक सबसे निचला और सात सबसे ऊंचा होता है।

२. विस्पी के मुताबिक अवचेतन मन ही आपका सच्चा आध्यात्मिक मन होता है। इसे उच्च स्व या अंतरात्मा भी कहते हैं। इसलिए अवचेतन मन की अन्य परिभाषाओं से भ्रमित नहीं होना चाहिए।

३. छठे लोक के सातवें स्तर से ऊपर की जीवात्मा को उच्च भली आत्मा कहा जाता है।

४. यह आपके कर्मों के फल की ओर इंगित करता है – आप जो बोएंगे वही काटेंगे। सज़ा देने वाला ईश्वर नहीं होता। कर्म-फल परिणाम है आत्मा के अच्छे-बुरे कार्यों का। नकारात्मक कर्म-फल से जीवात्मा को केवल सज़ा ही नहीं मिलती, बल्कि इसका उच्चतर उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करना होता है। सकारात्मक कर्म-फल भी होते हैं- निःस्वार्थ भाव से किए गए अच्छे कामों के लिए मिले हुए आशीर्वाद।

५. दुष्ट माताओं तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिए पृष्ठ सं. ८८ पर सूरदास की कहानी पढ़ें।

६. प्रत्येक लोक के शासक, राजा अथवा प्रमुख को उस लोक की उच्च भली आत्मा कहा जाता है।

७. जीवात्माओं द्वारा पृथ्वी की आत्माओं को दूरसंवेदी विचारों के जरिए दिशा-निर्देश भेजा जाता है, जिन्हें प्रक्षेपित विचार कहते हैं। पृथ्वी की आत्माओं द्वारा अपने अवचेतन मन के जरिए इन विचारों अथवा संकेतों की व्याख्या की जाती है।

८. पैसा एक भारतीय सिक्का है। यह भारतीय मुद्रा 'रुपया' के १/१०० वें भाग के बराबर होता है।

९. देखें पृष्ठ २०१ पर "अपने अवचेतन मन को किस प्रकार जगाएं।"

१०. एक धर्मात्मा भिक्षुक या धार्मिक व्यक्ति।

११. हिंदुओं का एक पवित्र धर्मग्रंथ

१२. हिंदी में "दादा" का अर्थ स्थानीय गुंडा या सड़क छाप बदमाश होता है।

१३. योगी ऐसा व्यक्ति होता है जिसने योग के विभिन्न रूपों पर महारथ हासिल किया हो।

१४. जीवात्माओं और पृथ्वी पर स्थित आत्माओं के बीच सुरक्षित संपर्क के लिए उच्च जीवात्माओं की प्रार्थना और सकारात्मक उर्जा के माध्यम से दिया गया संरक्षण।

१५. सेवा का अर्थ है निःस्वार्थ सेवा

जयको पब्लिशिंग हाउस
जीवन में परिपक्वता लाए, आपके विश्व को बदलें

१९४६ में स्थापित जयको पब्लिशिंग हाउस, कुछ लब्धप्रतिष्ठित लेखकों के प्रकाशक व विक्रेता हैं जिनमें शामिल है श्री श्री परमहंस योगानंद, ओशो, रॉबिन शर्मा, दीपक चोपडा, स्टीफन हॉकिंग, एकनाथ एश्वरन, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, नीरद चौधरी, खुशवन्त सिंह, मुल्क राज आनंद, जॉन मॅक्सवेल, केन ब्लान्चर्ड और ब्रायन ट्रेसी. हमारी पुस्तक सूची २००० शीर्षकों को पार कर चुकी है और देश में सबसे ज्यादा वैविध्यपूर्ण है, जिनमें धर्म, आध्यात्म, मन/शरीर/आत्मा, आत्म सहायता, व्यवसाय, हास्य ज्ञान, पाक कला, करियर संबंधी विषय, आत्मकथाएं और विज्ञान शामिल है.

जयको द्वारा अपने कार्य का विस्तार इस प्रकार से किया गया है कि वे शिक्षा के क्षेत्र में और प्रबन्धन तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र की व्यावसायिक पुस्तकों में श्रेष्ठ बन सके. हमारी महाविद्यालय स्तरीय पुस्तकें और सन्दर्भ शीर्षकों का उपयोग संपूर्ण देश के विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है. हमारे शैक्षणिक व व्यावसायिक शीर्षकों की सफलता खासकर हमारे शैक्षणिक व कॉर्पोरेट विभाग के कारण है.

स्व श्री जमन शाह ने, जयको की स्थापना एक पुस्तक वितरण कंपनी के रूप में की थी. उस समय, चूंकि स्वतंत्रता प्राप्ति का समय था, उन्होंने अपनी कंपनी का नाम रखा “जयको” (भारत में “जय” का अर्थ विजय या जीत होता है). उस समय की मांग के अनुसार किफायती पुस्तकें प्रदान करने हेतु श्री शाह ने स्वयं का प्रकाशन प्रारंभ किया. जयको भारत में अंग्रेजी भाषा के पेपरबैक पुस्तकों के प्रथम प्रकाशक थे.

स्वयं की पुस्तकों के प्रकाशन व वितरण के साथ ही, जयको विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशकों के लिये भी वितरक का काम करते हैं जैसे मैक्ग्रोहिल, पियर्सन, सेंगेज लर्निंग, जॉन विली और ऐलसिविअर साईन्स. मुंबई में अपने प्रमुख कार्यालय के साथ ही जयको के कार्यालय अहमदाबाद, बैंगलोर, भोपाल, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता व लखनऊ में भी स्थित हैं. हमारी विक्रय टीम में ४० से भी ज्यादा कार्यकारी हैं, डायरेक्ट मेल ऑर्डर विभाग और वेबसाईट द्वारा ये सुनिश्चित होता है कि हमारी पुस्तकें देश के शहरी व ग्रामीण भागों में प्रभावी तरीके से पहुंचें।

जारको १९४८ से

**२२ फरवरी १९८० का दिन,
खोरशेद व रूमी भावनगरी के जीवन में भूचाल
बनकर आया और सब कुछ उजड़ गया।
एक महीने बाद ही एक नवीन विश्व का द्वार खुला।**

अपने दोनों पुत्रों, विस्पी व रतू के, एक मोटर दुर्घटना में दुखद निधन के बाद खोरशेद व रूमी भावनगरी का मानना था कि वे ज्यादा दिनों तक जी नही पाएंगे। उनकी ईश्वरीय श्रद्धा भी लगभग समाप्त हो चुकी थी। तभी, जीवात्मा जगत से मिले एक चमत्कारिक सन्देश ने उनकी आशा की ज्योति को प्रदीप्त किया और वे एक दिव्य मार्ग पर बढ़ चले।